लेखनकला
का
इतिहास
द्वितीय खण्ड
ईश्वरचन्द्र राही

हि० ग्रं० अ० प्रभाग ग्रन्थाङ्क : २६४

लेखन कला का इतिहास

(द्वितीय खण्ड)

लेखक

ईश्वर चन्द्र राही

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रभाग)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ—२२६००१

प्रकाशक

विनोद चन्द्र पाण्डेय

निदेशक,

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,

लखनऊ

शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय,

भारत सरकार की विश्वविद्यालयस्तरीय ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत,

हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रभाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित।

पुनरीक्षक

प्रोफ़ेसर डॉ० लल्लन जी गोपाल

विभागाध्यक्ष : प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं

पुरातत्त्व विभाग, कला संकाय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

वाराणसी।

प्रथम संस्करण : १९८३

प्रतियाँ : २२००

मूल्य : ८७ रुपया (सत्तासी रुपया)

मुद्रक

जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०

गोलघर, वाराणसी

प्रस्तावना

शिक्षा-आयोग (१९६४-६६) की संस्तुतियों के आधार पर भारत सरकार ने १९६८ में शिक्षा सम्बन्धी अपनी राष्ट्रीय नीति घोषित की और १८ जनवरी, १९६८ को संसद के दोनों सदनों द्वारा इस सम्बन्ध में एक सङ्कल्प पारित किया गया। उक्त सङ्कल्प के अनुपालन में भारत सरकार के शिक्षा एवं युवक सेवा मंत्रालय ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था करने के लिए विश्वविद्यालयस्तरीय पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का एक व्यवस्थित कार्यक्रम निश्चित किया। उस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार की शत-प्रतिशत सहायता से प्रत्येक राज्य में एक ग्रन्थ अकादमी की स्थापना की गयी। इस राज्य में भी विश्वविद्यालय स्तर की प्रामाणिक पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना ७ जनवरी, १९७० को की गयी।

प्रामाणिक ग्रन्थ-निर्माण की योजना के अन्तर्गत यह अकादमी विश्वविद्यालय स्तरीय विदेशी भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों को हिन्दी में अनूदित करा रही है और अनेक विषयों में मौलिक पुस्तकों की भी रचना करा रही है। प्रकाश्य ग्रन्थों में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जा रहा है।

उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत वे पाण्डुलिपियाँ भी अकादमी द्वारा मुद्रित करायी जा रही हैं जो भारत-सरकार की मानक-ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत इस राज्य में स्थापित विभिन्न अधिकरणों द्वारा तैयार की गयी थी।

प्रस्तुत पुस्तक इसी योजना के अन्तर्गत मुद्रित एवं प्रकाशित करायी गयी है। इसके लेखक श्री ईश्वर चन्द्र राही हैं। इसका पुनरीक्षण प्रो० डॉ० लल्लन जी गोपाल ने किया है। इन दोनों विद्वानों के इस बहुमूल्य सहयोग के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान उनके प्रति आभारी है।

श्री राही जी द्वारा प्रस्तुत 'लेखन कला का इतिहास' उनके विशद अध्ययन और अध्यवसाय का परिचायक है। उसमें उन्होंने समस्त विश्व की भाषाओं के उद्गम, लिपियों के आविष्कार और इतिहास के बदलते हुए चरणों का विकासक्रम दिखाते हुए प्रत्येक प्राचीन देश के मूल स्वरूप, उसकी जातिगत विशेषता तथा आधुनिक उपलब्धियों का वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है। लिपियों के उद्भव एवं विकास का निरूपण करते हुए प्राचीन मानक चित्रों द्वारा सभ्यता और संस्कृति के विकास में मानवजाति के सामूहिक योगदान का भी समुचित उल्लेख है। इस प्रकार भाषा, लिपि, पुरातत्त्व, काल निर्धारण और प्राचीन इतिहास के आधार पर सिन्धु-घाटी, दक्षिण एशियाई देशों, पश्चिम एशियाई देशों तथा मध्य व पूर्वी एशियाई देशों को लेखन कला के विकास के साथ-साथ नृविज्ञान के आधार पर समस्त मानवता का इतिहास भी रेखांकित किया गया है। राही जी ने ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न भण्डारों का आकलन कर विश्व मानक की जिज्ञासाओं के सहज विकास को वर्तमान दुर्धर्ष तकनीकी युग तक की मंगल यात्रा के रूप में निरूपित किया है। जहाँ तक मैं जानता हूँ भारतीय भाषाओं में यह अपने ढंग का अनन्य प्रयास है, निश्चित ही राही जी के इस ग्रन्थ के प्रकाशन से हिन्दी संस्थान गौरवान्वित हो सकेगा। वे हम सबके साधुवाद के पात्र हैं।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'
उपाध्यक्ष
उ० प्र० हिन्दी संस्थान,
लखनऊ

प्राक्कथन

मानव सम्यता और संस्कृति के इतिहास में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन समय-समय पर प्रस्फुटित हुए हैं। मानव समाज को नयी दिशा देनेवाले आविष्कारों के सापेक्षिक महत्त्व का निर्धारण दुष्कर है, तथापि इनमें लेखन-कला की उपयोगिता किसी से कम नहीं है। मानव के अन्य जीवों पर प्राप्य श्रेष्ठता के सूचक गुणों और उपलब्धियों में भावों और विचारों को अंकित करने की उसकी क्षमता विशिष्ट है। इसके कारण मानव के लिए यह सम्भव हो सका है कि वह ज्ञान का सर्जन, संरक्षण, संवर्धन और सातत्य बनाये रखे। वह अपने अनुभवों, विचारों और कल्पनाओं को भी मूर्त और स्थायी रूप दे सकता है।

लेखन कला के आविष्कार, उसमें सुधार और विकास की कथा अत्यन्त रोचक है। उससे कुछ कम रोमांचक नहीं है इन आविष्कारों की कथा और अनेक भूली-बिसरी लिपियों को पहचानने और समझने का आधुनिक विद्वानों का प्रयास। लेखन कला का इतिहास इतना विस्तृत है और तथ्यों की इतनी अधिकता है कि उनका विधिवत् अध्ययन और समुचित प्रस्तुतीकरण सरल नहीं है। इस क्षेत्र में श्री ईश्वरचन्द्र राही का प्रयास स्तुत्य है। अर्थाभाव के होते हुए भी उन्होंने दीर्घकालीन अध्ययन के द्वारा एक कठिन कार्य को सम्पादित किया है। मुझे स्वयं पता है कि किस प्रकार अनेक देशों की यात्रा करके, अनेक पुस्तकालयों में अध्ययन करके और विशिष्ट विद्वानों से परामर्श करके उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है। इस पुस्तक की रचना की अपनी एक रोचक कथा है जो किसी भी नैष्ठिक, कर्मठ और जिज्ञासु व्यक्ति के लिए प्रेरणा एवं स्फूर्ति का स्रोत सिद्ध होगी।

मुझे हर्ष है कि इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का संयोग मुझे प्राप्त हुआ है। मैंने इस पुस्तक का औपचारिक पुनरीक्षण भी किया है। हिन्दी ही नहीं अन्य किसी भाषा में इससे तुलनीय उद्देश्य, विस्तार और शैली के ग्रन्थ विरल हैं। मानव की सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायक यह पुस्तक विभिन्न समाजों में परस्पर सहयोग और आदान-प्रदान की प्रक्रिया स्पष्ट करके समता और सद्भावना के विचारों और प्रयासों को बल देगी।

श्री राही को उनके इस बहुमूल्य योगदान के लिए साधुवाद देते हुए माँ सरस्वती से मेरी प्रार्थना है कि उनको स्थायी यश का भागी बनाये।

प्रो० लल्लन जी गोपाल
एम० ए०, डी० फ़िल (इलाहाबाद),
पी एच० डी० (लन्दन),
विद्या चक्रवर्ती (मानद)

संकाय प्रमुख, कला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी – २२१००५

दो शब्द

जब मैं सन् १९२८ में ८ वर्ष की आयु में सर्वप्रथम एक सायकिल – विश्व – यात्री के सम्पर्क में आया तो मनरूपी कक्ष के एक कोने में यात्रा करने की प्रेरणा का बीजारोपण हो गया। चैतन्यता तथा उत्सुकता के खाद एवं पानी देने से वह बीज अंकुरित होकर बढ़ता रहा। २ जून १९३८ को वही बीज एक फल के रूप में परिवर्तित हो गया, जब मैंने अपनी प्रथम सायकिल-यात्रा दिल्ली से पंजाब की ओर इस आशय से आरम्भ कर दी कि मैं एक ऐतिहासिक खैंबर दर्रे को पार करके विदेश चला जाऊँगा। परन्तु अंग्रेजी राज्याधिकारियों ने मुझे अनुमति नहीं दी और मैं अपने देश 'अखण्ड भारत' को जानने व समझने में लग गया।

भारत के सुदूर पश्चिमी, दक्षिणी, पूर्वी तथा उत्तरी पर्वतीय भागों की यात्रा में मेरा ध्यान एक मुख्य समस्या की ओर आकर्षित हुआ और वह समस्या थी भाषा की अर्थात् बोली व लिपि की। अंग्रेज़ी राज्य में अंग्रेज़ी भाषा द्वारा अहिन्दी भाषा-भाषियों से विचार-विनिमय का कार्य चलता रहा, परन्तु समस्या, समस्या ही बनी रही और मन में कुलबुलाती रही। न समस्या का पूर्ण रूप और न उसके किसी निदान का रूप मस्तिष्क में आ सका।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक समस्याएँ कुछ आंशिक रूप में सुलझने लगीं और विद्वानों का ध्यान भारत की राष्ट्रभाषा के निर्माण एवं एकता की ओर अग्रसर होने लगा तो मेरे मन की वह कुलबुलानेवाली समस्या भी अपने स्थूल रूप में प्रकट होने लगी और मैंने सन् १९५८-६० में पुनः सायकिल – यात्रा आरम्भ कर दी। अब मैं ३८ वर्ष का एक विकसित मानव बन चुका था, विचारों में भी परिपक्वता आ चुकी थी। इसके अतिरिक्त भी मैं बम्बई में सन् १९५२ - ५४ तक केन्द्रीय सरकार की ओर से विदेशी यात्रियों के लिए एक पथ-प्रदर्शक भी रह चुका था, जिसने उसी कुलबुलाती समस्या को अत्यधिक प्रज्ज्वलित कर दिया था।

दूसरी बार की सायकिल – यात्रा ने भाषा एवं लिपि की समस्या पर मुझे कुछ गहरी दृष्टि से सोचने एवं समझने का अवसर प्रदान किया। एक प्रश्न, जिसका जन्म तो हो चुका था, परन्तु उसका स्पष्ट रूप सामने नहीं आया था, सदैव उठता रहा कि जब भारत की मुख्य १५-१६ भाषाएँ – बोली व लिपि और उनकी लगभग २६५ बोलियों के रूप में शाखाएँ हैं, जिनका एकीकरण असम्भव सा प्रतीत होता है तो विश्व की भाषाओं का एकीकरण तो एक युटोपियन विचार होगा।

अपने इसी सायकिल – यात्रा – काल में मैंने एक पुरातत्त्व-सम्बन्धी पुस्तक के लिए हैदराबाद में प्रान्तीय सरकार के पुरातत्त्व विभाग के तात्कालिक निदेशक श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद से भेंट की और उनसे कुछ चर्चा राष्ट्रभाषा

हिन्दी व उसकी देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में हुई तब उन्होंने कुछ प्राचीन लिपियों के अभिलेख दिखाये तथा उनकी एकता पर कुछ प्रकाश डाला। अब क्या था, अन्धे को दो आँखें मिल गयीं, अँधेरी राह पर चलने के लिए एक कभी न बुझनेवाला दीप मिल गया और कुछ अध्ययन के पश्चात् यह भी पता लग गया कि भारत की समस्त लिपियों का एक ही स्रोत ब्राह्मी है। उसी की खोज में लग गया और अध्ययन की सही दिशा में अग्रसर होने लगा।

जब एक देश में भाषाओं एवं लिपियों की समस्या है तो विश्व में कितनी समस्या होगी? क्या भारत की लिपि देवनागरी का सम्बन्ध विदेशों की लिपियों से है या हो सकता है? क्या भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी – देवनागरी विश्व-भारती के पथ पर अग्रसर हो सकती है? क्या एक भारतीय अपनी राष्ट्रभाषा के द्वारा विश्व की अन्य भाषाएँ सीख सकता है? क्या भारत की तरह विश्व की अन्य लिपियों का स्रोत भी एक है? ऐसे प्रश्नों ने मुझे न केवल विश्व की लिपियों के अध्ययन करने की प्रेरणा प्रदान की, अपितु भिन्न-भिन्न देशों की लिपियों के जन्म व विकास के विषय में शोध करने के लिए विश्व की सायकिल – यात्रा करने के लिए भी प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप मैं १९७४ में ५८ वर्ष की आयु में अपनी सायकिल – यात्रा पर निकल पड़ा और ३५ देशों की यात्रा दो वर्ष में पूरी कर ली। इस यात्रा के पूर्व ही मैंने इस विषय का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था और उसको चार पुस्तिकाएँ तथा एक बृहद् ग्रन्थ लिखकर एक रूप भी दे चुका था। इस विश्व – सायकिल – यात्रा में मैंने अनेक पुरातत्त्व – विभागाध्यक्षों से भेंट करके इस विषय पर विचार-विमर्श किया। इस विषय की ऐसी अनेक पुस्तकों व ग्रन्थों का अवलोकन किया जिनका भारत में उपलब्ध होना असम्भव था। स्वीडन तथा जर्मनी में मैंने स्वयं चार्ट्स बनाकर भारत तथा अन्य मुख्य देशों के वर्णों की प्रदर्शनियाँ कीं तथा भाषण दिये। इन कार्यों से मेरे ज्ञान का विस्तार हुआ तथा भारत की देवनागरी लिपि की सरलता का प्रचार हुआ तथा अनेक पाश्चात्य देशवासियों को लिपियों के तुलनात्मक अध्ययन करने का अवसर मिला।

इस पुस्तक में आदिकाल अर्थात् ५००० वर्ष पूर्व से वर्तमान काल तक की लगभग सभी लिपियों के जन्म व विकास की तथा अन्य लिपियों से उनके सम्बन्ध की, विस्तार से प्रमाणों सहित चर्चा की गयी है। जहाँ – जहाँ से प्राचीन लिपियाँ उत्खनन द्वारा निकाली गयीं, वे भिन्न-भिन्न देशों के सारे स्थान मानचित्रों में दिये गये हैं। साथ साथ उन लिपियों का काल एवं देश का – प्राचीन से अर्वाचीन तक का – इतिहास, प्राचीन मानव का लिपियों के विकास में योगदान का रूप तथा अर्वाचीन मानव का उनको पढ़ने का प्रयास, प्रमाण सहित इस पुस्तक में दिया गया है।

सम्भवतः हिन्दी भाषा एवं उसकी देवनागरी लिपि के माध्यम से विश्व की समस्त लिपियों की ध्वनियों को तथा उनके वर्णों को लिपिबद्ध करने का मेरे द्वारा यह प्रथम प्रयास होगा। वैसे तो इसके पूव भी एक पुस्तक उर्दू भाषा में विश्व की लिपियों पर श्री मोहम्मद ईशाक सिद्दीकी द्वारा लिखी जा चुकी थी। यह प्रयास एक अन्त नहीं, अपितु इस बात का श्रीगणेश है कि हिन्दी को विश्व-भारती बनाना है तो उसके बुनियाद की भाषा और लिपियों को विश्व की भाषा की दृष्टि से अन्वेषण-ग्रंथ तैयार करने होगें। भाषा से भी पहले लिपि को महत्त्व देना होगा। इस दृष्टि से भी यह हिन्दी या भारतीय भाषा में प्रथम पुस्तक होगी, ऐसी मेरी धारणा है।

अन्त में मैं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयास से इस प्रथम व अनोखे ग्रंथ को, प्रकाशित करने का भार वहन किया। मैं आंध्र प्रदेश के पुरातत्व-विभाग के भूतपूर्व निदेशक श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद खाँ का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय के अध्ययन की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया तथा मैं विश्व के सभी पुरातत्त्व-वेत्ताओं का, प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहासकारों का और सभी लिपि-सम्बद्ध शोधकर्ताओं का, लेखकों का, लिपियों के रहस्योद्घाटनकर्ताओं का तथा उत्खननकर्ताओं का अत्यन्त आभारी हूँ, जिनके अथक परिश्रम के परिणामों द्वारा मैं इस ग्रन्थ को पूरा कर सका। इससे भी अधिक मुझे आभारी होना चाहिए और आभारी हूँ, जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०, वाराणसी के श्री तरुण भाई का, जिनके प्रयास के फलस्वरूप यह ग्रन्थ मुद्रित हो सका। इसके अतिरिक्त भी इस विषय के विद्वानों स्व० श्री सी० शिवराममूर्ति, डॉ० लल्लन जी गोपाल, डॉ० गोबर्धन राय शर्मा, डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा, स्व० डॉ० राजबली पाण्डेय आदि का भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया है तथा अपने व्यक्तिगत सहयोग से प्रेरित करते रहे। मैं विश्व के अनेक मुख्य पुस्तकालयाध्यक्षों का तथा उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

इस बृहद् ग्रन्थ के प्रकाशन में समस्त विश्व की लिपियों के वर्ण, उनकी ध्वनियाँ, अभिलेखों के प्रतिदर्श आदि का यथासंभव प्रामाणिक एवं शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके मुद्रण में यदि कुछ अशुद्धियाँ एवं त्रुटियाँ रह गयी हों तो मैं पाठकगणों से क्षमा चाहूँगा तथा भविष्य में ग्रन्थ को त्रुटिरहित बनाने के लिए उनके बहुमूल्य सुझाव एवं विचारों का स्वागत करूँगा।

श्याम निवास,
बाग़ शेरजंग,
लखनऊ—२२६००३

ईश्वरचन्द्र राही

संकेताक्षर

A. S. I.	Archaeological Survey of India.
C. I. I.	Corpus Inscriptionum Indicarum.
C. I. V.	Civilization of Indus Valley.
E. I.	Epigraphica Indica.
E. R.	Epigraphic Researches.
F. E. M.	Further Excavation by Mackay.
I. A.	Indian Antiquary.
I. M. D.	Indus-Valley – Mohenjo-Daro.
I. M. P.	Inscriptions of Madras Presidency.
J.	Journal.
J. I. A. S.	Journal of Indian Asiatic Society.
J. A. S. B.	Journal of Asiatic Society.
J. R. A. S.	Journal of Royal Asiatic Society.
L. S. I.	Linguistic Survey of Indiaof Bengal.
M. D.	Mohenjo-Daro.
M. E. H.	Mackay's Excavation at Harappa.
M I. C.	Marshall's Indus Civilization.
N. Y.	New York.
P.	Page.
Pl.	Plate.
P. U. B.	Published.
S. I. I.	South-Indian Inscriptions.
Vol.	Volume.

आ०; आधु०	—	आधुनिक
ई०	—	ईसवी
ई० पू०	—	ईसा पूर्व
ई० स०	—	ईसवी सन्
फ० सं०	—	फलक संख्या
तृ०	—	तृतीय
श०	—	शताब्दी

प्रयुक्त शब्दों के विविध रूप

अमेरिका	:	अमरीका
अर्साकिड	:	अर्सासिड
असुरबनीपाल	:	अशुरबनीपाल
इङ्गलैण्ड	:	इंगलैण्ड
उद्देश्य	:	उद्देश्य
उद्भव	:	उद्‌भव
कम्बोडिया	:	कम्पूचिया
केल्ट	:	सेल्ट
कन्द्रा	:	कन्दरा
क्रम	:	क्रम
खेमर	:	खेमिर
गई	:	गयी
ग्यान	:	ज्ञान
गेल्ब	:	जेल्ब
चित्र	:	चित्र
चिन्ह	:	चिह्न
चिन्तन	:	चिंतन
जिव्हा	:	जिह्वा
दायें	:	दाएँ
टियूनिस	:	ट्युनिस
डच्छ	:	डच
पियू	:	प्यू
पश्चात्	:	पश्चात्
फ़्रीजिया	:	फ़्रीगिया
फ्रांस	:	फ़्रांस
बायें	:	बाएँ
ब्राह्मो	:	ब्राह्‌मो
बैज़ेन्टाइन	:	बैज़ेन्टीन
भिन्न	:	भिन्न
मिट्टी	:	मिट्‌टी
मिस्र	:	मिस्र
मैथ्यु	:	मैथिउ
युद्ध	:	युद्‌ध
युरोप	:	योरोप, यूरोप
व्यञ्जन	:	व्यंजन
लिये	:	लिए
संभव	:	सम्भव
संबन्ध	:	सम्बन्ध
सेमेटिक	:	सेमिटिक
हण्टर	:	हन्टर
हेरोग्लिफ़्स	:	हैरोग्लिफ़्स
हेरेटिक	:	हैरैटिक
हैद्रामौत	:	हैद्रमउत
ह्रोज़नी	:	ह्‌रोज़्नी
ख	:	ख
झ	:	झ
ण	:	ण
१	:	१
४	:	४
५	:	५
८	:	८
९	:	९

कुछ विशेष संयुक्ताक्षर

ळ	=	ल	+	ड़			तमिळ
सं	=	स	+	म			संभव
क्ष	=	क	+	श			कक्षा
ज्ञ	=	ग	+	य			ज्ञान
श्री	=	श	+	री			श्रीमान्
स्र	=	स	+	र			मिस्र
त्र	=	त	+	र			मित्रता
स्य	=	स	+	य			राजस्य
अं	=	अ	+	न्			अंक
ह्वा	=	व	+	ह			जिह्वा
ह्न	=	न	+	ह			चिह्न
हृ	=	ह	+	र			हृदय
न्ध्र	=	न	+	ध	+	र	आन्ध्र
त्त	=	त	+	त			दत्त
क्य	=	क	+	य			चालुक्य
क्त (क्त)	=	क	+	त			शक्ति (शक्ति)
ण्ड	=	ण	+	ड			पाण्डेय
कृ	=	क	+	रि			कृपा
ष्ण	=	ष	+	ण			कृष्णा
प्र	=	प	+	र			प्रपात
द्व	=	द	+	व			द्वार
श्व	=	श	+	व			ईश्वर
न्द	=	न	+	द			नन्द
र्म	=	र	+	म			कर्म
म्ब	=	म	+	ब			सम्बन्ध
क्र	=	क	+	र			क्रम
ख्य	=	ख	+	य			संख्या
ष्ट	=	ष	+	ट			कष्ट

अनुक्रम

क्या **कहाँ**

प्रारम्भिक :

प्रस्तावना V

प्राक्कथन VII

दो शब्द IX

संकेताक्षर XIII

प्रयुक्त शब्दों के विविध रूप XIV

कुछ विशेष संयुक्ताक्षर XV

पृष्ठबोधिनी XVII

लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका XXV

मानचित्रों की तालिका XXXI

पृष्ठबोधिनी

अध्याय : १

विषय प्रवेश –

परिचय : ३

भाषा : भाषा की परिभाषा; शब्द व वाक्य; भाषा की उत्पत्ति; भाषा का प्रसार; बोली और भाषा; भाषा में स्वर व व्यंजन; संसार की भाषाओं में अन्तर; पठनीय सामग्री ७

लिपि : लिपि की उपयोगिता; लिपि की काल्पनिक उत्पत्ति; लिपि की प्रामाणिक उत्पत्ति; लिपियों का वर्गीकरण; अक्षरात्मक लिपि; वर्णात्मक लिपि; रेखाक्षरात्मक लिपि; लिपि का कौटुम्बिक वर्गीकरण; पठनीय सामग्री १७

पुरातत्त्व : पठनीय सामग्री १९

कार्बन – १४ द्वारा काल निर्धारण २१

प्राचीन इतिहास २२

अध्याय : २

दक्षिण एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास–

सिन्धु घाटी : ऐतिहासिक घटना; इतिहास; लिपि; एल० ए० वड्डेल; प्रो० विलियम मैथ्यु फ्लिण्डर्स प्रेट्री; डा० जी० आर० हण्टर; फ़ादर यच० हेरास; सुधांशु कुमार रे; डा० प्राणनाथ विद्यालंकार; श्री राजमोहन नाथ; स्वामी शंकरानन्द; हर पी० मेरिग्गी; एस्को परपोला, सीमो परपोला आदि; डा० फ़तेह सिंह; श्री एस० आर० राव; श्री एम० वी० कृष्ण राव; श्री० एल० एस० वाकणकर; डब्लोफ़र; श्री बांके बिहारी चक्रवर्ती; श्री जॉन न्यूबेरी; शंकर हाजरा; ह्लोज़्नी द्वारा रहस्योद्घाटन; रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन; पशुपति – मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण; सुमेर की मुद्रा; अभिलेखों तथा मुद्राओं का विवरण; सिन्धु – घाटी के विषय में कुछ अन्य बातें; पठनीय सामग्री ७५

भारत का इतिहास : परिचय; क्रान्ति युग; मौर्य वंश; शुंग वंश; काण्व वंश; आन्ध्र सातवाहन वंश; शक वंश; पह्लव वंश; कुषाण वंश गुप्त; मैत्रक वंश; गुर्जर वंश; गुहिलोत वंश; मौखिरि वंश; वर्धन वंश; उत्तर भारत के राजपूत वंश; दक्षिण भारत के वंश; मुसलमानों का आगमन; मरहठों का उत्थान; सिक्ख; विदेशियों का आगमन; पठनीय सामग्री ९४

भारत की लिपियाँ : ब्राह्मी लिपि के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन; खरोष्ठी लिपि; खरोष्ठी लिपि – दूसरी शताब्दी; विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी; उत्तरी ब्राह्मी – ई० पू० तीसरी श०; उत्तरी ब्राह्मी – दूसरी श० (क्षत्रप); उत्तरी ब्राह्मी – दूसरी श० (कुषाण); उत्तरी ब्राह्मी – चौथी श० (गुप्त लिपि); दक्षिणी ब्राह्मी – ई० पू० दूसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी – दूसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी – तीसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी – चौथी श०; दक्षिणी ब्राह्मी – पांचवीं श०; कुटिल लिपि; तमिल लिपि; तमिल लिपि – सातवीं श०; तमिल लिपि का विकास; वट्टेलुत्तु लिपि; ग्रन्थ लिपि – सातवीं श०; ग्रन्थ लिपि – तेरहवीं श०; ग्रन्थ लिपि का विकास; पश्चिमी लिपि – छठी श०; कन्नड़ लिपि – छठी श०; कन्नड़ लिपि का विकास; तेलुगु लिपि; तेलुगु लिपि का विकास; बंगला लिपि बारहवीं श०; कामरूप की बंगला लिपि; बंगला लिपि का विकास; उड़िया लिपि – ग्यारहवीं श०, गंगवंश; उड़िया लिपि पन्द्रहवीं श०; शारदा लिपि का विकास; मौढ़ी लिपि; उत्तर – पूर्व की मध्यकालीन लिपियाँ (मैथिल, तिरहुतिया, भोजपुरी, मागधी, कैथी, अहोम, खाम्ती, मेई – थेई); उत्तर – पश्चिम की मध्य – कालीन लिपियाँ

(उर्दू, अरबी – सिन्धी, बनियाकर, हिन्दी – सिन्धी, टाकरी, लाण्डा, गुरमुखी) कुछ आधुनिक लिपियाँ (मलयालम, तुलु, उड़िया, गुजराती); देवनागरी लिपि (देवनागरी का जन्म, देवनागरी नामकरण के विविध कारण, देवनागरी लिपि की कुछ विशेषतायें, देवनागरी लिपि के कुछ दोष; देवनागरी ग्यारहवीं श०; देवनागरी बारहवीं श०; देव – नागरी का विकास; देवनागरी में संशोधन (स्वामी सत्य भक्त द्वारा, श्री श्रवण कुमार द्वारा, रामनिवास द्वारा, हिन्दी – साहित्य – सम्मेलन द्वारा, श्री बी० बी० लाल द्वारा, कुछ अन्य सुधारकों द्वारा, शासकीय सुधार); देवनागरी – ब्रेल – लिपि; देवनागरी – आशु – लिपि; अंक; पठनीय सामग्री २०३

नेपाल : इतिहास; लेखन कला (किरात – लिपि, रंजना – लिपि, भुजिमोल; नेवारी – लिपि); संयुक्त वर्ण (किरात, रंजना, भुजिमोल); पठनीय सामग्री २०६

सिक्किम : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री २१५

श्री लंका : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री २२०

मालदीव द्वीप – समूह : इतिहास; लिपियों का जन्म (देवेही लिपि, जबालीटूरा); पठनीय सामग्री २२२

अध्याय : ३

पश्चिमी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास –

मेसोपोटामिया – १ : इतिहास; पठनीय सामग्री २३४

मेसोपोटामिया – २ : लेखन कला (सुमेर की रेखा – चित्रात्मक लिपि, सुमेर के अन्य रेखा – चित्र, उत्खनन तथा रहस्योद्घाटन, हम्मूराबी का प्रसिद्ध शिलालेख, असीरियन लिपि के व्यंजन व स्वर, असीरियन लिपि के कुछ निर्धारक शब्द, प्राचीन तथा नव – बेबोलोनी लिपि, कीलाकार लिपि का कालानुसार परिवर्तन, सुमेर की संख्या पद्धति, असीरिया की संख्या पद्धति); पठनीय सामग्री २४६

पर्शिया (ईरान) : इतिहास; पठनीय सामग्री २५४

पर्शिया की लेखन कला : आरम्भिक काल; कीलाकार लिपि का रहस्योद्घाटन; अक्कादियन भाषा का रहस्योद्घाटन; बहु – ध्वनीय चिह्न; भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न, बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ; बेहिस्तून शिलालेख का सूसियन पाठ; बेहिस्तून शिलालेख का बेबीलोनी पाठ; पहलवी लिपि (अरसाकिड पहलवी, ससानिड लिपि, ससानिड ग्रन्थ लिपि) अवेस्त; पठनीय सामग्री २८६

फ़िनीशिया : इतिहास; लेखन कला (बिबलास; बिबलास के वर्ण तथा उनके रूप भेद; मोआब की लिपि; मध्य काल की फ़िनीशियन लिपि; प्यूनिक लिपि; कनआन की लिपि) ३०८

युगारिट : इतिहास; लिपि तथा रहस्योद्‌घाटन; पठनीय सामग्री

हत्तुशा : इतिहास; हित्ती लिपि का रहस्योद्‌घाटन; चार देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना; पठनीय सामग्री ३२४

इस्रायल : इतिहास; इस्रायल की लिपियाँ (हेब्रू – प्राचीन, आधुनिक); समारिया की लिपियाँ (शिलालेख, बाइबिल, शीघ्र – लेखन); पठनीय सामग्री ३३४

सीरिया : इतिहास; सीरिया की लिपियाँ (अरमायक लिपि, पालमीरा लिपि, अरमायक लिपि की विशिष्ट शाखा, ज़बेद लिपि, ऐस्ट्रेंजलो लिपि, नेस्टोरियन लिपि, जैकोबाइट लिपि – १ व २, सीरिया की कर्शुनी या मालाबारी लिपि) ३४३

फ्रीजिया : इतिहास; लिपि ३४३

लीकिया : इतिहास; लेखन कला; लीकिया का एक द्विभाषिक अभिलेख ३४६

लीडिया : इतिहास; लिपि ३५१

कैरिया : इतिहास; लिपि; सिडेटिक भाषा (परिचय, लिपि, रहस्योद्‌घाटन); यज़ीदी लिपि (इतिहास, लिपि); पठनीय सामग्री ३५८

अरेबिया : इतिहास (मीनियन राज्य, सैबियन राज्य, हिमारी राज्य, हीरा राज्य, इस्लाम राज्य); अरेबिया की लिपियाँ (नब्ती, थामुडिक – हेजाज़, नज्द, मण्डायक लिपि, सफ़ातैनी लिपि, सफ़ातैनी का प्रतिदर्श, लिहियानिक); सिनाइ की लिपियाँ – परिचय; सिनाइ की प्राचीन लिपि; सिनाइ की अरबी लिपि; सबा की लिपि; अरबी लिपि की अन्य शाखायें (ज़बेद लिपि, कूफ़ा की लिपि, मग़रिबी, नस्ख़) नस्ख लिपि का विकास; अरबी लिपि के विषय में कुछ अन्य बातें ३८५

अरमेनिया : इतिहास; अरमेनिया की लिपियाँ (बोलर – अजिर, मुद्रणार्थ – हस्तलेखनार्थ) ३८७

जॉर्जिया : इतिहास; जार्जिया की लिपियाँ (खुतसुरी, मेह्द्रूली); पठनीय सामग्री ३६३

अध्याय : ४

मध्य व पूर्व एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास –

तिब्बत : इतिहास; तिब्बत की लिपियाँ (अु – चेन एवं अु – मेद लिपियाँ, पस्सेपा, बाल्टी लिपि, अु – चेन लिपि का प्रतिदर्श, अु – मेद लिपि का प्रतिदर्श); पठनीय सामग्री ४०८

चीन : इतिहास (शिया वंश, इन या शांग वंश, चाउ वंश, चीन वंश, हान वंश, सुई वंश, तांग वंश, पाँच वंश, सूंग वंश, युआन वंश, मिंग वंश, मंचू वंश); चीन की लेखन कला परिचय, चीनी व्याकरण की एक झलक, चीन में साक्षरता, चीनी लिपि की विदेश यात्रा, चीनी लिपि का सुधार; चीन की लिपियाँ (बा गुआ, चीन की प्राचीन लिपि, चीनी लिपि का कालानुसार विकास, चीनी लिपि की ध्वनि – बल, चीनी लिपि के चार टोन, चीनी लिपि का वर्गीकरण – वस्तु चित्र, सांकेतिक चित्र, संयुक्त – सांकेतिक चित्र, क्रम द्वारा निर्मित चित्र, ध्वनि सूचक चित्र, ग्रहण किये हुये चित्र); सुलेख; चीनी लिपि को लेखन – पद्धति; लिपि का सरलीकरण, चीनी भाषा की ध्वनियाँ; इनीशियल्स की तालिका; फ़ाइनल्स की तालिका; चीनी लिपि की ध्वन्यामक पद्धति – १, २, ३; शाब्दिक चित्रों की लिखने की पद्धति; आठ मौलिक रेखायें; चीनी लिपि के अंक; चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि; म्याओ – त्से लिपि; मोसो लिपि; ची तान लिपि; पठनीय सामग्री ४५६

मध्य एशिया : मंगोलिया का इतिहास, मंगोलिया की लिपियाँ (उइगुरी लिपि, गालिक लिपि, मंगोल लिपि – १, २, कालमुक लिपि, बुरियात लिपि); मंचूरिया – इतिहास, लिपि; सोग्दिया – इतिहास, लिपि; साइबेरिया – इतिहास, साइबेरिया की लिपियाँ (यानिसी लिपि, ओरहन लिपि; मनीकी लिपि – इतिहास, लिपि); पठनीय सामग्री ४७९

कोरिया : इतिहास (सिल्ला राज्य, कोजुरियो राज्य, पैक्ची राज्य); कोरिया की लेखन कला (पुमसो लिपि, ओनमुन लिपि) पठनीय सामग्री ४८६

पान : इतिहास; लेखन कला (दैवी लिपि कताकाना लिपि, हीरागाना लिपि, जापान की लेखन पद्धति, चीनी, कायशू लिपि से जापानी वर्णों का विकास, जापानी अक्षर विन्यास, जापानी लिपि के कुछ उदाहरण); पठनीय सामग्री ५०४

अध्याय : ५

दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास –

ब्रह्मा : इतिहास (पागन वंश, शान वंश, तुंगू वंश, अलंग पाया वंश); लेखन कला (चतुष्कोण पाली, सुलेख पाली, आधुनिक गोलाकार लिपि, पेगुअन लिपि, चकमा लिपि ५१४

थाईलैण्ड : इतिहास; लेखन कला (बोरोमात लिपि, पतीमोखा लिपि, प्राचीन थाई लिपि, आधुनिक लिपि) ५२३

लाओस : इतिहास; लेखन कला ५२५

कम्पूचिया : इतिहास; लेखन कला (मूल अक्षर, संशोधित लिपि, आधुनिक लिपि) ५२७

फ़िलिपाइन्स : इतिहास; लिपि (तगाला) ५२७

हिन्देशिया : इतिहास; लेखन कला ५३२

जावा : इतिहास; लिपि (कवि, जावा की दूसरी लिपि) ५३५

सुमात्रा : इतिहास; लिपि (रेदज़ांग, लम्पोंग) ५३७

सिलेबीस : इतिहास; लेखन कला (बुगनो मकासर); पठनीय सामग्री ५४२

अध्याय : ६

अफ़्रीका महाद्वीप के देशों की लेखन कला का इतिहास –

मिस्र : इतिहास (प्रथम वंश, द्वितीय वंश, तृतीय वंश, चतुर्थ वंश, पाँचवाँ वंश, छठवाँ वंश, सातवाँ वंश, आठवाँ वंश, नवाँ वंश, दसवाँ वंश, ग्यारहवाँ वंश, बारहवाँ वंश, तेरहवाँ वंश, चौदहवां वंश, पन्द्रहवाँ वंश, सोलहवाँ वंश, सत्रहवाँ वंश, अठारहवाँ वंश, उन्नीसवाँ वंश, बीसवाँ वंश, इक्कीसवाँ वंश, बाईसवाँ वंश, तेइसवाँ वंश, चौबीसवाँ वंश, पच्चीसवाँ वंश, छब्बीसवाँ वंश, सत्ताइसवाँ वंश, अट्ठाइसवाँ वंश, उन्तीसवाँ वंश, तीसवाँ वंश, एकतीसवाँ वंश, ग्रीक वंश, मिस्र रोम के अन्तर्गत, मिस्र देश की लेखन कला) हेरोग्लिफ्स, उसका रहस्योद्घाटन, चित्रात्मक, संकेतात्मक, ध्वन्यात्मक, निर्धारित शब्द, एक – वर्णिक, द्वि – वर्णिक, त्रै – वर्णिक, हेरेटिक, लिपि का विकास, एक चित्र दो ध्वनियाँ, दो चित्र एक ध्वनि, एक चित्र दो ध्वनियाँ, हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के प्रतिदर्श, हेरेटिक का विकास, हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक के अभिलेख, डिमाटिक के वर्ण, प्रतिदर्श, काप्टिक लिपि, प्रतिदर्श मिरोइटिक, डिमाटिक एवं अभिलेख, अंक, हेरेटिक अंक ५९४

नुमीदिया : इतिहास, लिपि (नुमीदियन, बर्बर उनके आंशिक पाठ, तुर्देतेनियन ६०२

कैमेरून : इतिहास, लिपि (बामुन) ६०२

सोमाली लैण्ड : इतिहास, सोमाली लिपि ६०४

लिबेरिया : इतिहास, वई लिपि ६०७

सियरेंलियोन : इतिहास, मेण्डे लिपि ६१३

नाइजेरिया : इतिहास, यनसिब्दी लिपि ६१७

अबीसीनिया : इतिहास, लिपि (प्राचीन) ६१७

इथियोपिया : इतिहास, लिपि ६२५

अध्याय : ७

यूरोपीय देशों की लेखन कला का इतिहास

सायप्रस : इतिहास, लेखन कला (सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन लिपि से सम्बन्ध, सिप्रियाटिक लिपि का अभिलेख ६३२

ग्रीस : इतिहास, ग्रीक वर्णों का विकास ६४१

क्रीट व माइसोनिया : इतिहास (क्रीट, माइसीनिया); लेखन कला (पूर्वकालीन युग, मध्यकालीन युग, उत्तरकालीन युग, क्रीट की चित्रात्मक लिपि, माइसीनिया की वर्णावली, पाइलस की त्रिपद पाटिया, क्रीट की लाइनियर – 'ए', फैस्टास चक्रिका) ६५६

ग्रीस के नगर राज्य : कोरिंथ – इतिहास; लिपि। ऐथेन्स – इतिहास; लिपि। बोयेशिया – इतिहास, लिपि। आर्केडिया – इ तिहास, लिपि। पठनीय सामग्री ६६६

इटली : नगर – राज्यों में विभाजित था उन्हीं का वर्णन निम्नलिखित है :—

इटरूरिया : इतिहास (हेरोडोटस के अनुसार, डायोनीसियस, एफ़० दि संसुरे, वी० थामसेन) एट्रस्कन लिपि ६७२

कम्पेनिया : इतिहास (कपुआ नगर, नोला, पोम्पेआई), लिपि (ओस्कन) ६७४

अम्ब्रिया : इतिहास, लिपि ६७५

फलेरीआई : इतिहास, लिपि (फैलिस्कन) ६७८

रेशिया : इतिहास, लिपि (बोल्ज़ानो, माग्रे, सोन्द्रियो) ६७८

उत्तरी इटली : लिपि (लुगानो, वेनेती, कांसे की पाटिया) ६८५

लैटियम : इतिहास, लिपि (लैटिन, मैनियस की कटार, वर्णों का विकास); पटनीय सामग्री ६८८

गोथिया : इतिहास (पूर्वी गोथ, पश्चिमी गोथ); लिपि (गोथिक) ६९४

बुल्गारिया : इतिहास (मोराविया का इतिहास); लिपियाँ (ग्लेगोलिथिक, प्राचीन सीरिलिक बुल्गारी सीरिलिक) ६९८

रूस : इतिहास; लिपि (सीरिलिक, सीरिलिक के कुछ शब्द); पठनीय सामग्री ७०६

आयरलैण्ड : इतिहास (आइबेरियन्स, ब्रिटन्स, ड्रूड्स, नगर एवं जागीरों का निर्माण आदि); लिपियाँ (ओगम, रोमन लिपि) ७१४

हंगेरी : इतिहास, लिपि (प्राचीन लिपि, निकोल्स नर्ग लिपि) ७२०

जर्मनी : इतिहास; लिपि (रून) ७२३

नार्वे-स्वीडन-डेनमार्क : इतिहास (नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क), लिपियाँ (तीन देशों की रूनी लिपि; बिन्दी वाले रून, दलसका रून) ७२६
प्राचीन इंगलैण्ड : इतिहास (ऐंगिल, सैक्सन); लिपि (ऐंग्लो-सैक्सन रून, अभिलेख, बार्डी लिपि ७३३
रुमानिया : इतिहास; लिपि ७३६
अल्बेनिया : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री ७३७

अध्याय : ८

अमरीकी देशों की लेखन कला का इतिहास –

मैक्सिको : इतिहास ; लेखन कला (अज़टेक-पंचाग, अज़टेक-अंक, अज़टेक चित्र-लिपि, अज़टेक के अन्य चित्र, विश्वोत्पत्ति की कहानी, एक रेडइण्डियन की कहानी) ७४८
युकेटान : इतिहास; लिपि (मय चित्र लिपि के वर्ण – लान्दा द्वारा, अंक, मय का पंचांग) ७५३
अलघेनी : इतिहास; चेरोकी लिपि ७५५
मैनीटोबा : इतिहास; क्री लिपि ७५५
एलास्का : इतिहास; लिपि (एलास्का की लिपि, मोटजेबू क्षेत्रकी चित्र लिपि) ७६१
ईस्टर द्वीप : इतिहास; लिपि ७६२
कुछ अन्य लिपियाँ : आशु लिपि; ब्रेल लिपि; पिक्टो लिपि; विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग ७६८
उद्‌बोधन : ७६९

परिशिष्ट

परिमार्जिका
परिभाषिक शब्दावली
अनुक्रमणिका (हिन्दी)
अनुक्रमणिका (अंग्रेजी)

□

लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका

(प्रथम खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१	१	भ्रूण लिपि	११
२	२	चित्रात्मक लिपि	१२
३	३	सूत्रात्मक लिपि	१३
४	४	ध्वन्यात्मक लिपि	१५
५	५	लिपि का कौटुम्बिक वर्गीकरण	१७
६	७	एल० ए० वड्डेल	३०
७	८	प्रो० पेट्री	३१
८	९	डा० जी० आर० हण्टर	३२
९	९क	,, ,,	३३
१०	९ख	,, ,,	३४
११	१०	फ़ादर यच० हेरास	३५
१२	१०क	,, ,,	३६
१३	१०ख	,, ,,	३७
१४	१०ग	,, ,,	३८
१५	११	श्री रे द्वारा ब्राह्मी लिपि के १३ चिह्नों की तुलना	४०
१६	११क	सुधांशु कुमार रे	४१
१७	११ख	,, ,,	४२
१८	११ग	,, ,,	४३
१९	१२	डा० प्राण नाथ	४५
२०	१३	श्री राज मोहन नाथ	४६
२१	१४	स्वामी शंकरानन्द	४७
२२	१४क	,, ,,	४८
२३	१५ख	,, ,,	४९
२४	१५	हर पी० मेरिग्गी	५१
२५	१६	परपोला	५२
२६	१७	डा० फ़तेह सिंह	५४
२७	१७क	,, ,,	५५
२८	१७ख	,, ,,	५६
२९	१८	श्री एस० आर० राव	५७
३०	१९	श्री कृष्णा राव	५९
३१	१९क	,, ,,	६०
३२	२०	श्री एल० एस० वाकणकर	६१

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
३३	२१	सिन्धु-घाटी व ईस्टर द्वीप चिह्नों की तुलना	६२
३४	२२	बांके बिहारी चक्रवर्ती	६३
३५	२३	जॉन न्यूबेरी	६५
३६	२४	शंकर हाजरा द्वारा रहस्योद्घाटन	६६
३७	२५	ह्रोज़्नी द्वारा रहस्योद्घाटन	६७
३८	२५क	रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन	६७
३९	२६	पशुपति–मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण	७०
४०	२७	सुमेर की मुद्रा	७१
४१	२८	सिन्धु – घाटी – लिपि के चिह्न	७२
४२	२८क	,, ,,	७३
४३	३६	सेमिटिक व सिन्धु – घाटी के चिह्नो की ब्राह्मी के अक्षरो की तुलना	९८
४४	३८	खरोष्ठी लिपि के वर्ण	१०३
४५	३८क	खरोष्ठी के कुछ अन्य संश्लिष्ट वर्ण	१०४
४६	३८ख	खरोष्ठी लिपि – दूसरी श०	१०५
४७	३८ग	,, ,,	१०६
४८	३९	विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी	१०८
४९	४०	उत्तरी ब्राह्मी लिपि – ई० पू० तीसरी श०	११०
५०	४०क	,, ,,	१११
५१	४०ख	गिरनार शिलालेख के कुछ शब्द	११२
५२	४१	उत्तरी ब्राह्मी (क्षत्रप) दूसरी श०	११४
५३	४१क	,, ,,	११५
५४	४२	,, ,, (कुषाण)	११५
५५	४३	,, ,, (गुप्त लिपि) चौथी श०	११७
५६	४४	दक्षिणी ब्राह्मी – ई० पू० दूसरी श०	११९
५७	४४क	,, ,, के अभिलेख	१२०
५८	४५	दक्षिणी ब्राह्मी – दूसरी श०	१२२
५९	४६	,, ,, तीसरी श०	१२३
६०	४७	,, ,, चौथी श०	१२४
६१	४८	,, ,, पाँचवी श०	१२६
६२	४९	कुटिल लिपि	१२८
६३	५०	तमिल लिपि – सातवीं श०	१३०
६४	५१	तमिल लिपि का विकास	१३१
६५	५२	वट्टेलुत्तु लिपि ग्यारहवी श०	१३३
६६	५३	ग्रन्थ लिपि – सातवीं श०	१३५
६७	५४	,, ,, तेरहवीं श०	१३६

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
६८	५५	ग्रन्थ लिपि का विकास	१३७
६९	५६	पश्चिमी लिपि – छठी श०	१३९
७०	५७	कन्नड़ लिपि – छठी श०	१४१
७१	५८	,, ,, का विकास	१४३
७२	५८ क	,, ,, ,, ,,	१४४
७३	५९	तेलुगु लिपि – दसवीं श०	१४६
७४	६०	,, ,, – ग्यारहवीं श०	१४७
७५	६१	,, ,, – तेरहवीं श०	१४८
७६	६२	,, ,, – का विकास	१४९
७७	६३	बंगला लिपि – बारहवीं श०	१५१
७८	६४	कामरूप की बंगला लिपि	१५२
७९	६५	बंगला लिपि का विकास	१५३
८०	६६	उड़िया लिपि – ग्यारहवीं श०	१५५
८१	६६ क	,, ,, – ,, ,,	१५६
८२	६७	,, ,, – पन्द्रहवीं श०	१५८
८३	६८	शारदा लिपि का विकास	१५९
८४	६९	मौड़ी लिपि – सत्तरहवीं श०	१६१
८५	७०	मैथिल लिपि	१६२
८६	७१	तिरहुतिया लिपि	१६३
८७	७२	भोजपुरी लिपि	१६४
८८	७३	मागधी (मगही) लिपि	१६५
८९	७४	कैथी लिपि	१६६
९०	७५	अहोम लिपि	१६७
९१	७६	खाम्ती लिपि	१६९
९२	७७	मेई – मेई लिपि	१७०
९३	७८	उर्दू लिपि	१७१
९४	७९	अरबी – सिन्धी लिपि	१७३
९५	८०	बनियाकर लिपि	१७४
९६	८१	हिन्दी – सिन्धी लिपि	१७५
९७	८२	टाकरी लिपि	१७६
९८	८३	लाण्डा लिपि	१७८
९९	८४	गुरमुखी लिपि	१७९
१००	८५	मलयालम लिपि	१८०
१०१	८६	तुलु लिपि	१८१
१०२	८७	उड़िया लिपि	१८२

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१०३	८८	गुजराती लिपि	१८३
१०४	८९	मुख्य भारतीय लिपियों के कुछ शब्द	१८४
१०५	९१	देवनागरी का जन्म	१८६
१०६	९२	देवनागरी – ग्यारहवीं श०	१९०
१०७	९३	,, – बारहवीं श०	१९१
१०८	९४	,, का विकास	१९२
१०९	९४ क	,, ,, ,,	१९३
११०	९५	स्वामी सत्यभक्त द्वारा सुधार	१९५
१११	९६	श्रवण कुमार गोस्वामी द्वारा सुधार	१९७
११२	९७	देवनागरी के कुछ अन्य संशोधित रूप	१९८
११३	९८	नेत्रहीनों के लिये ब्रेल लिपि	१९९
११४	९९	देवनागरी आशु – लिपि	२०१
११५	१००	अंक	२०२
११६	१०२	नेपाल की लिपियाँ	२०८
११७	१०३	सुलेख के लिये कुछ सुन्दर लिपियाँ	२०८
११८	१०४	किरात लिपि के संयुक्त वर्ण	२०९
११९	१०५	रंजना ,, ,, ,, ,,	२१०
१२०	१०६	भुजिमोल ,, ,, ,, ,,	२११
१२१	१०८	सिक्किम की लेप्चा या रोंग लिपि	२१४
१२२	११०	सिंहली लिपि	२१९
१२३	११० क	,, ,, शब्द व संयुक्त अक्षर	२२०
१२४	१११	माल्डीव की लिपियाँ	२२२
१२५	११४	सुमेर की रेखा – चित्रात्मक लिपि	२३६
१२६	११५	सुमेर के रेखाचित्र	२३७
१२७	११६	असीरियाई कीलाक्षरों का विकास	२४०
१२८	११७	बेबीलोन की कीलाकार लिपि	२४१
१२९	११८	हम्मूराबी की विधि – संहिता	२४२
१३०	११९	असीरियन लिपि के व्यंजन तथा स्वर	२४४
१३१	१२०	,, अंक	२४६
१३२	१२४	एलाम की प्राचीन लिपि	२५६
१३३	१२५	बेहिस्तून का शिलालेख	२५९
१३४	१२६	बेहिस्तून की शिला पर मूर्तियों का विवरण	२६०
१३५	१२७	कीलाकार अक्षर	२६२
१३६	१२८	,, चिह्न	२६४
१३७	१२९	,, अक्षर	२६४
१३८	१३०	,, शब्द	२६५

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१३९	१३१	कीलाकार अक्षर	२६६
१४०	१३२	,, ,,	२६९
१४१	१३३	,, वर्णावली	२७०
१४२	१३४	,, बहु – ध्वनीय चिह्न	२७२
१४३	१३५	भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न	२७३
१४४	१३६	असीरियाई – बेबीलोनी लिपि के निर्धारक – अक्षरात्मक चिह्न	२७४
१४५	१३७	प्राचीन सुमेर तथा नव – असीरियाई लिपियाँ	२७५
१४६	१३८	बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ	२७६
१४७	१३८ क	,, ,, , ,, ,,	२७७
१४८	१३८ ख	,, ,, ,, ,, ,,	२७८
१४९	१३९	,, ,, ,: सूसियन पाठ	२८०
१५०	१४०	,, ,, ,, बेबीलोनी पाठ	२८१
१५१	१४१	पहलवी लिपि के रूप	२८३
१५२	१४२	ज़ेन्द – अवेस्ता लिपि	२८४
१५३	१४३	ससानिड पहलवी तथा ज़ेण्ड	२८५
१५४	१४५	प्राचीन फ़िनीशियन चिह्नों की तुलना, क्रीट के चिह्नों से	२९१
१५५	१४६	फ़िनीशिया लिपि के वर्ण	२९२
१५६	१४७	बिबलास के वर्ण	२९४
१५७	१४८	बिबलास का एक लघु अभिलेख	२९५
१५८	१४९	फ़िनीशियन लिपि के कालानुसार रूप	२९६
१५९	१५०	अहिराम का अभिलेख	२९८
१६०	१५० क	मेशा का अभिलेख	२९८
१६१	१५० ख	मध्यकालीन फ़िनीशियन का प्रतिदर्श	२९९
१६२	१५१	प्यूनिक लिपि	३००
१६३	१५२	कनआन की लिपि	३०१
१६४	१५३	युगारिट की लिपि	३०३
१६५	१५४	,, ,, ,,	३०४
१६६	१५५	,, ,, ,,	३०४
१६७	१५६	,, ,, ,,	३०५
१६८	१५७	,, ,, ,,	३०६
१६९	१५९	तारकोण्डेमस मुद्रा	३१४
१७०	१५९ क	तारकोण्डेमस मुद्रा (भीतरी भाग)	३१३
१७१	१६०	हित्ती चित्रात्मक लिपि	३१५
१७२	१६१	एक द्विभाषिक अभिलेख	३१६
१७३	१६२	भावात्मक चित्र-लिपि के कुछ पठन	३१७

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१७४	१६३	सर्वनाम चिह्न	३१८
१७५	१६४	अन्य चिह्न	३१८
१७६	१६५	अन्य चिह्न	३१९
१७७	१६६	एक अभिलेख	३२१
१७८	१६७	चार देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना	३२३
१७९	१६९	हेब्रू लिपि की वर्णमाला	३२९
१८०	१७०	हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श	३३०
१८१	१७१	समारिया की लिपियाँ	३३३
१८२	१७३	अरमायक व पालमीरी लिपियाँ	३३९
१८३	१७४	अरमायक लिपि की एक विशिष्ट शाखा	३४१
१८४	१७५	ज़ेबेद, एस्ट्रेंजलो आदि	३४२
१८५	१७६	सीरिया की कर्शुनी	३४४
१८६	१७८	फ़्रीजिया की लिपि	३४६
१८७	१७९	लीकियन लिपि	३४७
१८८	१८०	लीकियन लिपि (द्विभाषिक अभिलेख)	३४८
१८९	१८२	लीडिया की लिपि-एक प्रतिदर्श	३५२
१९०	१८३	कैरियन लिपि के अक्षर	३५४
१९१	१८४	सिडेटिक लिपि	३५५
१९२	१८५	यज़ीदी लिपि	३५६
१९३	१८८	नवात की नब्ती लिपि	३६५
१९४	१८८ क	प्रतिदर्श	३६४
१९५	१८९	हेजाज़ और नज्द की लिपियाँ	३६७
१९६	१८९ क	थामुडिक (हेजाज़) का प्रतिदर्श	३६६
१९७	१९०	मण्डायक, सफ़ातैनी, उम्म-अल-जमल	३७०
१९८	१९० क	सफ़ातैनी का प्रतिदर्श	३६९
१९९	१९१	लिहियानिक लिपि	३७१
२००	१९३	सिनाइ की लिपियाँ	३७४
२०१	१९४	सिनाइ की अरबी लिपि	३७६
२०२	१९५	सबा की लिपि	३७८
२०३	१९६	अरबी लिपि की अन्य शाखाएँ	३८०
२०४	१९७	नब्ती द्वारा नस्ख़ी का विकास	३८१
२०५	१९७ क	नब्ती द्वारा नस्ख़ी का विकास	३८२
२०६	१९८	कूफ़ी लिपि में कलमा	३८४
२०७	२००	अरमेनिया की लिपि – बोलर-आजिर	३८८
२०८	२०२	जॉर्जिया की लिपियाँ	३९१
२०९	२०३	जॉर्जिया की मेह्द्रूली	३९२

लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका

(द्वितीय खण्ड)

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२१०	२०५	अु–मेद् लिपि	४०३
२११	२०६	अु–चेन् लिपि	४०४
२१२	२०७	पस्सेपा लिपि	४०५
२१३	२०८	बाल्टी लिपि	४०६
२१४	२०९	अु–मेद एवं अु–चेन के प्रतिदर्श	४०७
२१५	२१५	आठ त्रिपुण्ड; प्राचीन रेखा-चित्र	४२६
२१६	२१६	चीन की प्राचीनतम लिपि	४२८
२१७	२१७	चीनी लिपि का कालानुसार विकास	४३०
२१८	२१८	चीनी लिपि में ध्वनि-बल (टोन)	४३३
२१९	२१९	चीनी लिपि के वस्तु-चित्र	४३४
२२०	२२०	चीनी लिपि के सांकेतिक चित्र	४३५
२२१	२२१	संयुक्त सांकेतिक चित्र	४३६
२२२	२२२	क्रम द्वारा निर्मित चित्र; ध्वनि-सूचक चित्र	४३७
२२३	२२३	ग्रहण किये हुये चित्र 'हृदय' (सुलेख)	४३९
२२४	२२४	कुछ शब्द व वाक्य	४४२
२२५	२२५	इनीशियल्स व फ़ाइनल्स की तालिका	४४३
२२६	२२६	ध्वन्यात्मक चिह्नों का आविष्कार	४४५
२२७	२२७	चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति – १	४४७
२२८	२२८	,, ,, ,, ,, – २	४४८
२२९	२२९	,, ,, ,, ,, – ३	४४९
२३०	२३०	लिपि का सरलीकरण; आठ मौलिक स्ट्रोक	४५१
२३१	२३१	रेखाओं के द्वारा शब्द निर्माण	४५२
२३२	२३२	चीनी लिपि के अंक	४५३
२३३	२३३	चीन में दक्षिणी भाग की लोलो लिपि	४५५

क्रम० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२३४	२३४	दक्षिण-पश्चिम चीन की म्याओ – ले लिपि	४५६
२३५	२३५	मोसो लिपि	४५७
२३६	२३७	उइगुरी लिपि	४६३
२३७	२३८	गालिक लिपि	४६४
२३८	२३९	मंगोलिया की दो प्रकार की लिपियाँ	४६६
२३९	२४०	मंगोल लिपि का एक प्रतिदर्श	४६७
२४०	२४१	कालमुक लिपि	४६८
२४१	२४२	बुरियाती लिपि	४७०
२४२	२४३	तोखारी लिपि	४७१
२४३	२४४	मंचूरिया की लिपि	४७२
२४४	२४५	सोग्दी लिपि	४७४
२४५	२४६	साइबेरिया की यानिसी लिपि	४७५
२४६	२४७	,, ,, ओरहन लिपि	४७७
२४७	२४८	मनीकी लिपि	४७८
२४८	२५०	पुमसो लिपि	४८३
२४९	२५१	ओनमुन लिपि	४८४
२५०	२५२	ओनमुन लिपि का पाठ	४८५
२५१	२५३	जापान की प्राचीनतम दैवी लिपि	४९३
२५२	२५४	कताकाना लिपि के अक्षर	४९४
२५३	२५४ क	,, ,, ,,	४९५
२५४	२५५	हिरागाना लिपि के अक्षर	४९७
२५५	२५६	,, ,, ,	४९८
२५६	२५७	हीरागाना व कताकाना के आधुनिक वर्ण	४९९
२५७	२५८	जापानी भाषा के कुछ शब्द व स्ट्रोक	५०१
२५८	२५९	चीनी काइशू लिपि से जापानी अक्षरों का विकास	५०२
२५९	२६०	जापानी लिपि के मिश्रित प्रतिदर्श	५०३
२६०	२६२	चतुष्कोण पाली लिपि	५१०
२६१	२६३	सुलेख पाली लिपि	५११
२६२	२६४	आधुनिक गोल लिपि एवं अंक	५१२

क्रम० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२६३	२६५	प्राचीन पेगुअन लिपि	५१३
२६४	२६६	चमका लिपि	५१४
२६५	२६९	बोरोमात	५१६
२६६	२७०	पतीमोखा लिपि	५२०
२६७	२७१	प्राचीन थाई लिपि	५२१
२६८	२७२	आधुनिक थाई लिपि	५२२
२६९	२७३	,, ,, ,, (संयुक्त अक्षर)	५२३
२७०	२७४	कुछ लिपियों के पाठ	५२४
२७१	२७५	लाओस की लिपि	५२५
२७२	२७६	मूल अक्षर लिपि	५२८
२७३	२७७	संशोधित शीघ्र लिपि	५२९
२७४	२७८	आधुनिक लिपि	५३०
२७५	२८०	तगाला लिपि	५३३
२७६	२८२	कवि लिपि की वर्णमाला	५५३
२७७	२८३	जावा की दूसरी लिपि	५३७
२७८	२८४	बटक लिपि	५३८
२७९	२८५	रेदज़ांग एवं लेम्पोंग लिपियाँ	५३९
२८०	२८६	बुगिनी – मकासार लिपि	५४०
२८१	२८८	मिस्र राज्य के मुकुट व चिह्न	५४८
२८२	२८९	कार्टूश	५६७
२८३	२९०	मिस्र लिपि का क्रमशः विकास	५७७
२८४	२९१	हेरोग्लिफ़्स के वर्ण (डिटिंजर द्वारा)	५७८
२८५	२९२	हेरोग्लिफ़्स के वर्ण (वैलिस बज द्वारा)	५७९
२८६	२९३	ध्वनियाँ व चित्र	५८०
२८७	२९४	हेरोग्लिफ़्स के कुछ शब्द	५८१
२८८	२९५	कुछ अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द	५८२
२८९	२९६	हेरोग्लिफ़्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श	५८३
२९०	२९७	हेरोग्लिफ़्स का घसीट रूप – हेरेटिक	५८४
२९१	२९८	हेरोग्लिफ़्स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख	५८५

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२९२	२९९	डिमाटिक की वर्णमाला; डिमाटिक एवं कॉप्टिक के प्रतिदर्श	५८६
२९३	३००	कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला	५८७
२९४	३०१	मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला	५८८
२९५	३०२	मिरोइटिक – डिमाटिक की वर्णमाला	५८९
२९६	३०३	मिस्री लिपि के अंक	५९०
२९७	३०३ क	हेरेटिक के अंक	५९२
२९८	३०५	नुमीदियन लिपि	५९८
२९९	३०५ क	नुमीदियन लिपि का आंशिक पाठ	५९९
३००	३०६	बर्बर लिपि	६००
३०१	३०७	बर्बर लिपि का आंशिक पाठ	६०१
३०२	३०७ क	तुर्देतेनियन लिपि के कुछ वर्ण	६०१
३०३	३०८	बामुन लिपि	६०३
३०४	३०९	सोमाली लिपि	६०५
३०५	३१०	सोमाली लिपि के कुछ संयुक्त अक्षर	६०६
३०६	३११	एक्रोफ़ोनी पद्धति से वर्णों का विकास	६०८
३०७	३१२	वई लिपि	६०९
३०८	३१२ क	वई लिपि	६१०
३०९	३१२ ख	वई लिपि	६११
३१०	३१२ ग	वई लिपि	६१२
३११	३१३	मेण्डे लिपि	६१४
३१२	३१४	यनसिब्दी लिपि	६१६
३१३	३१५	प्राचीन अबीसोनिया की लिपि	६१८
३१४	३१७	इथियोपिया की वर्णमाला	६२१
३१५	३१७ क	,, ,, ,,	६२२
३१६	३१७ ख	,, ,, ,,	६२३
३१७	३१७ ग	,, ,, ,,	६२४
३१८	३१९	सिप्रियाटिक लिपि की वर्णमाला	६३३
३१९	३२०	सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन से सम्बन्ध	६३४
३२०	३२१	सिप्रियाटिक लिपि के कुछ शब्द	६३५

क्रम० सं०	फ० स०	विवरण	पृष्ठ
३२१	३२४	ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव	६४२
३२२	३२४ क	,, ,, ,, ,, ,, ,,	६४३
३२३	३२५	क्रीट की चित्रात्मक लिपि	६५१
३२४	३२६	माइसीनिया की वर्णावली	६५२
३२५	३२७	पाइलस की त्रिपद पाटिया	६५३
३२६	३२७ क	,, ,. ,, ,,	६५४
३२७	३२८	क्रीट की लाइनियर – 'ए' के चिह्न	६५५
३२८	३२९	फ़ैस्टास चक्रिका	६५६
३२९	३३०	एथेन्स की लिपि (अभिलेख)	६५९
३३०	३३१	कोरिंथ की लिपि	६६१
३३१	३३२	बोयेशिया की लिपि	६६३
३३२	३३३	आर्केडिया एवं साहित्यिक काला के वर्ण	६६५
३३३	३३४	ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण	६७३
३३४	३३६	प्रोटो – टाइरेनियन द्वारा एट्रस्कन वर्णो का उद्भव	६७५
३३५	३३७	ओस्कन लिपि के वर्ण	६७६
३३६	३३८	अंब्रियन लिपि के वर्ण	६७७
३३७	३३९	फैलिस्कन लिपि के वर्ण	६७९
३३८	३४०	बोल्ज़ानो लिपि के वर्ण	६८०
३३९	३४१	माग्रे लिपि के वर्ण	६८१
३४०	३४२	सोन्द्रियो लिपि के वर्ण	६८२
३४१	३४३	लुगानो लिपि के वर्ण	६८३
३४२	३४४	वेनेती लिपि के वर्ण	६८४
३४३	३४५	कांसे की पाटिया	६८६
३४४	३४६	लैटिन वर्ण	६८९
३४५	३४७	मैनियस की कटार – ६०० ई० पू०	६९०
३४६	३४८	कुछ वर्णों का विकास	६९१
३४७	३४९	गोथिक लिपि	६९५
३४८	३५१	ग्लेगोलिथिक लिपि	७०१
३४९	३५२	प्राचीन सीरिलिक लिपि	७०२
३५०	३५३	बुल्गारी सीरिलिक लिपि	७०३
३५१	३५५	रूस की सीरिलिक लिपि	७०५
३५२	३५६	रूस की लिपि के कुछ शब्द	७०६
३५३	३५८	ओगम लिपि	७१३
३५४	३५९	आयरलैण्ड की रोमन लिपि	७१४
३५५	३६१	हंगेरी की प्राचीन लिपि	७१७

क्रम० सं	फ० स०	विवरण	पृष्ठ
३५६	३६२	निकोल्सबर्ग लिपि के वर्ण; नवीं श० का एक लघु अभिलेख	७२०
३५७	३६४	प्राचीन जर्मनी के रून	७२३
३५८	३६६	डेनमार्क नार्वे-स्वीडन के रून	७२७
३५९	३६६क	एक प्रतिदर्श	७२८
३६०	३६७	विन्दी वाले रून; दल्सकारून	७२९
३६१	३६९	ऐंग्लो – सैक्सनरून	७३१
३६२	३६०	ऐंग्लो-सैक्सन रून का प्राचीनतम् अभिलेख	७३२
३६३	३७१	बार्डी लिपि	७३४
३६४	३७२	रुमानिया की लिपि	७३५
३६५	३७३	अल्बे नियन लिपि	७३६
३६६	३७४	अज़टेक गणित	७४२
३६७	३७५	अज़टेक जाति की चित्र-लिपि	७४३
३६८	३७६	अज़टेक जाति के कुछ अन्य चित्र	७४४
३६९	३७७	विश्वोत्पत्ति की कहानी	७४६
३७०	३७८	एक रेड – इण्डियन की कहानी	७४७
३७१	३८०	मय चित्र लिपि के वर्ण	७५१
३७२	३८१	मय जाति का पंचांग	७५२
३७३	३८२	चिरोकी लिपि के वर्ण	७५४
३७४	३८३	क्री लिपि	७५७
३७५	३८५	एलास्का की वर्ण माला	७५९
३७६	६८६	मोटजेबू क्षेत्र की चित्र लिपि	७६०
३७७	३८७	ईस्टर द्वीप की चित्र लिपि	७६२
३७८	३८८	अंग्रेज़ी की आशु लिपि	७६५
३७९	३८९	रोमन वर्णों की ब्रेल लिपि	७६६
३८०	३९०	खगोल शास्त्र, राशि चक्र	७६७
३८१	३९१	पिक्टो लिपि का प्रति दर्श	७६८

मानचित्रों की तालिका

(प्रथम खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१	६	सिन्धु – घाटी सभ्यता के नगर	२७
२	२९	कुषाण साम्राज्य	७९
३	३०	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का साम्राज्य	८१
४	३१	हर्ष वर्धन का साम्राज्य	८३
५	३२	गुर्जर – प्रतिहार वंश का साम्राज्य	८५
६	३३	अकबर का साम्राज्य	८९
७	३४	भारत १७६३ ई० सन् में	९२
८	३५	भारत १८५३ में	९३
९	३७	अशोक के शिला – लेख एवं स्तम्भ – लेख	१००
१०	९०	भारत की भाषायें	१८५
११	१०१	नेपाल	२०५
१२	१०७	सिक्किम	२१३
१३	१०९	माल्डीव द्वीप समूह तथा श्री लंका	२१७
१४	११२	प्राचीन मेसोपोटामिया	२२६
१५	११३	शलमनासर तृतीय एवं असुरबनीपाल का राज्य	२३१
१६	१२१	पश्चिम – एशिया के राज्य	२४९
१७	१२३	डैरियस का विशाल साम्राज्य	२५१
१८	१२३	सिकन्दर का साम्राज्य	२५३
१९	१४४	फ़िनीशिया	२८८
२०	१५८	हत्तुशा (हित्ती) राज्य	२१०
२१	१६८	इस्रायल जाति का इतिहास	३२८
२२	१७२	सीरिया	३३६
२३	१७७	एशिया माइनर के देश	१४५
२४	१८१	लीडिया तथा फ़्रीजिया	३५०
२६	१८६	प्राचीन अरेबिया	३६०
२६	१८७	पश्चिम एशिया (इस्लाम के पूर्व)	३६२
२७	१९२	सिनाइ	३७२
२८	१९९	पश्चिम एशिया (अरमेनिया)	३८६
२९	२०१	अरमेनिया जॉर्जिया	३८९
३०	२०४	तिब्बत	३९८
३१	२१०	चीन	४१०
३२	२११	चीन – तांग वंश का साम्राज्य	४१३

मानचित्रों की तालिका

(द्वितीय खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
३३	२१२	चीन – १३वीं श० के अन्त में	४१५
३४	२१३	चीन – १७३६ से १७९६ ई० तक	४१८
३५	२१४	चीन – १९०० ई० में	४२०
३६	२३६	मंगोल जातियाँ	४६१
३७	२४९	कोरिया	४८२
३८	२५२	जापान	४९०
३९	२६१	ब्रह्मा	५०८
४०	२६७	श्याम व हिन्द – चीन के देश	५१६
४१	२६८	श्याम, कम्बोडिया, लाओस (वर्तमान)	५१७
४२	२७०	फ़िलिपाइन द्वीप समूह	५३२
४३	२८१	हिन्देशिया द्वीप समूह	५३४
४४	२८७	मिस्र	५४७
४५	३०४	अफ़्रीका (अठारहवीं श० के अंत में)	५९६
४६	३१६	इथियोपिया (उन्नीसवीं श०)	६१९
४७	३१८	सायप्रस	६३०
४८	३२२	प्राचीन ग्रीस – ई० पू० की दूसरी शती	६३७
४९	३२३	आधुनिक ग्रीस	६३९
५०	३३५	प्राचीन इटली	६६९
५१	३४८ क	यूरोप की प्राचीन जातियों का विस्तार – पाचवीं से ग्यारहवीं श० तक	६९२
५२	३५०	मोराविया – ९२० से ११२५ ई० के मध्य – आधुनिक बुल्गारिया	६९६
५३	३५४	रूस – १००० ई० के लगभग	७०४
५४	३५९	आयर लैण्ड	७०९
५५	३६०	हंगेरी	७१६
५६	३६३	जर्मनी	७१९
५७	३६५	नार्वे स्वीडन	७२६
५८	३६८	इंगलैण्ड	७२८
५९	३७९	मध्य – अमरीका (मैक्सिको व युकेटान)	७४९
६०	३८४	एलास्का – ईस्टर आइलैण्ड	७५८

□

नोट :– इस पुस्तक में जो भी मानचित्र दिये गये हैं वे प्रामाणिक मानचित्रों के छाया – मात्र हैं। ये मानचित्र देशों की धारणा – मात्र प्रदर्शित करने के लिए अंकित किये गये हैं। सभी मानचित्र शुद्ध अनुपात में नहीं (not to scale) हैं।

लेखन कला का इतिहास

(द्वितीय खण्ड)

अध्याय : ४

मध्य व पूर्व एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास

तिब्बत

तिब्बत निवासी इस देश को बोद् के नाम से सम्बोधित करते हैं। इसी प्रकार भारतीय 'भोट', मंगोल 'तुबेत' (जिससे हो गया तिब्बत) तत्पश्चात् चीनियों ने इसका नाम शी द्सांग (Hsi – Tsang) रखा।

इतिहास

इस देश का इतिहास पौराणिक काल से आरम्भ होता है। इसका सर्वप्रथम नरेश कौशल निवासी एक भारतीय राजा प्रसेनजीत का पाँचवाँ पुत्र था, जो अपना घर छोड़कर उत्तर दिशा की ओर भाग गया था। चलते – चलते यह तिब्बत पहुँच गया और वहाँ के निवासियों ने इसको तिब्बत का नरेश चुन लिया तथा उसका नाम न्या – त्रि च़ेन – पो (Nya – tri Tsen – po) रख दिया। उसने अपना निवास स्थान यार – लोंग को बनाया। यह उप – नगर ल्हासा के दक्षिण में स्थित था। सर्वप्रथम शासक तथा उसके उत्तराधिकारी दिव्य – लोकीय – राजा कहलाते थे। तदनन्तर छः शासकों को भू – लोकीय राजा कहा जाता था।

तत्पश्चात् एक राजा हुआ जिसका नाम ल्हाथो थोरी न्यान च़ेन था। इसी राजा के शासन काल में सर्वप्रथम बौद्ध – धर्म – सम्बन्धी वस्तुएँ नेपाल से तिब्बत पहुँचने लगीं। इस राजा का चौथा उत्तराधिकारी नाम – री सोंग – च़ेन था जिसका स्वर्गवास ६३० ई० सन् में हुआ था। इसके शासन काल में तिब्बत – निवासियों ने गणित तथा आयुर्विज्ञान की शिक्षा चीन देश से प्राप्त की। इसके राज्य – काल में इतनी समृद्धि थी तथा इतना पशुधन था कि राजा ने अपना राजगृह निर्माण कराने के लिये पदार्थों में पानी के स्थान पर दूध व मक्खन का प्रयोग किया।

इस शासक के मरणोपरांत इसका पुत्र तेरह वर्ष की अवस्था में राजसिंहासनारूढ़ हुआ। तिब्बत का वास्तविक इतिहास इसी राजा के शासन काल से आरम्भ होता है। इसका नाम स्रोंग च़ेन गम्पो था। इसी ने भारत की लिपि के वर्णों का प्रयोग तिब्बत में आरम्भ कराया। उसने अपने राज्य का विस्तार लद्दाक़ तथा नेपाल तक किया। ७०३ में नेपाल ने विद्रोह कर दिया और स्रोंग च़ेन गम्पो का तीसरा उत्तराधिकारी वीरगति को प्राप्त हुआ।

स्रोंग च़ेन गम्पो का दूसरा पुत्र व उत्तराधिकारी मंग – स्रोंग मंग – च़ेन था जिसने ६६३ ई० में मध्य – एशिया का बहुत सा भू – भाग अपने अधीन कर लिया। उसने चीन पर भी आक्रमण किया जिसके

ऊपर आठवीं श० में 'तिब्बत' नीचे बारहवीं श० में
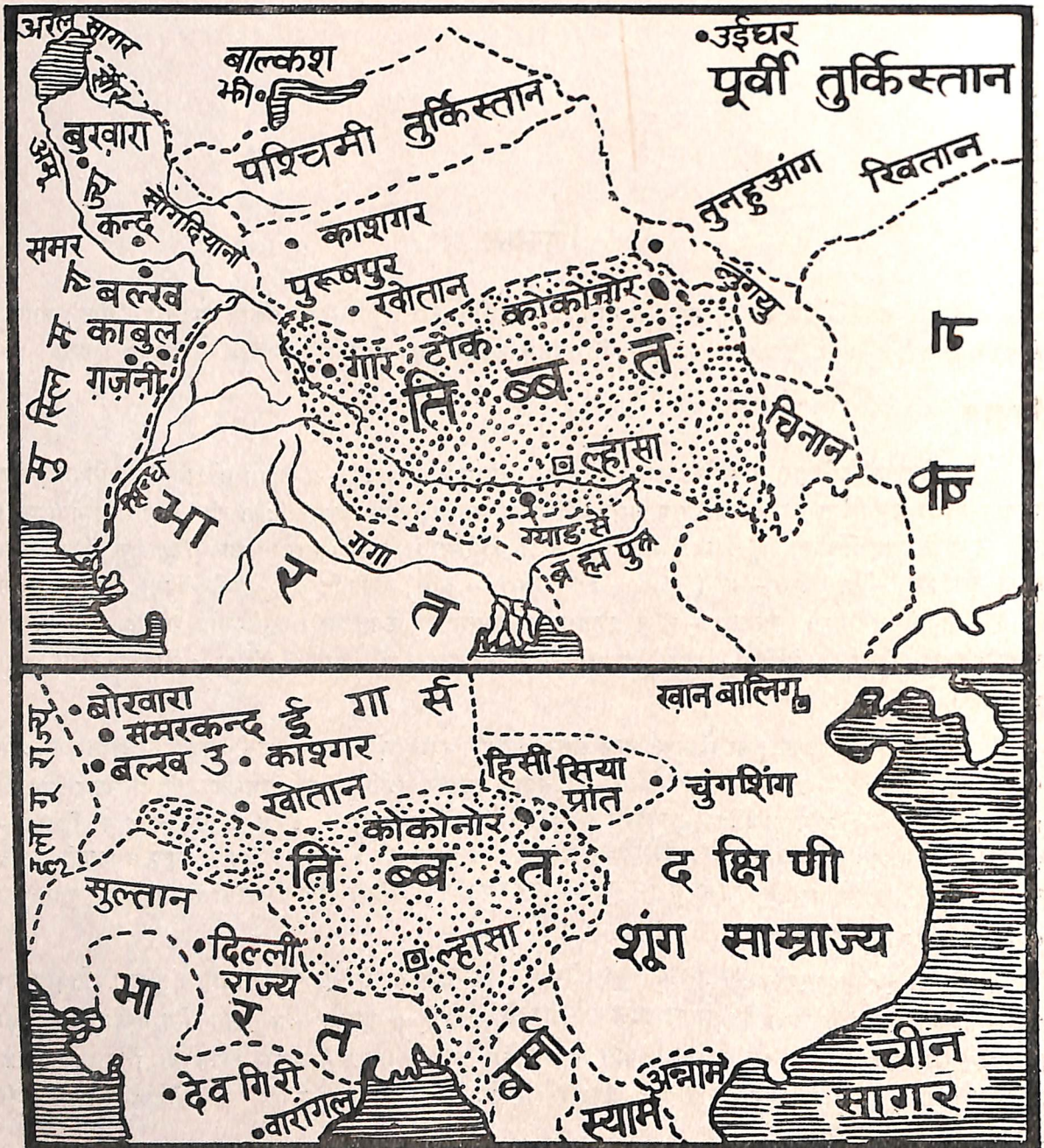
प्रतिकार में चीन ने विध्वंसक आक्रमण कर दिया और राजधानी को नष्ट – भ्रष्ट कर दिया। मंग च़े न के पौत्र त्सुक – च़े न ने एक चीन की राजकुमारी से विवाह किया। ७३० में उसके एक पुत्र त्रि – सोंग दे – च़े न उत्पन्न हुआ जो तिब्बत के इतिहास में एक प्रसिद्ध नरेश हुआ है। उसने ७४३ से ७८९ तक राज्य किया। तत्पश्चात् उसका पुत्र मुनि – च़े न – पो राजसिंहासन पर बैठा। उसने अपनी प्रजा में समानता लाने का प्रयत्न किया और धनवानों का धन निर्धनों में अपनी आज्ञानुसार विभाजित करना तथा उनको उच्च – पदाधिकार दिलाना आरम्भ कर दिया। इन बातों से अप्रसन्न होकर उसकी माता ने उसको विष दिलवा दिया।

उसके मरणोपरांत रल – पा – च़े न शासक बना। इसने बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बत की भाषा में अनुवाद करवाया तथा चीन से ८२१ में सन्धि कर ली। रल – पा – च़े न के पश्चात् राजा धर्माध्यक्ष भी होने लगे जिनका नाम छोग्याल हो गया। इन भावी राजाओं ने बौद्ध धर्म का खूब प्रचार किया। यह राजा तिब्बत के मुख्य देवता च़े न – रे – सी के अवतार माने जाने लगे। पिछले तीन राजा भी उसी के अवतार माने जाने लगे थे। ८३८ में रल – पा – चेन का उसी के भ्राता लंगदर्मा ने वध कर दिया। तीन वर्ष लंगदर्मा ने राज्य किया परन्तु एक पुरोहित ने उसका भी वध कर दिया। वह भी एक नृत्य के अभिनय में और तभी से उस पुरोहित की स्मृति में नृत्य होता चला आ रहा है।

तत्पश्चात् तिब्बत का राज्य लंगदर्मा के दो पुत्रों में विभाजित हो गया। एक राज्य का नाम पूर्वी – तिब्बत तथा दूसरे का पश्चिमी – तिब्बत पड़ गया।

१०१३ ई० में एक भारतीय विद्वान् धर्मपाल यहाँ पहुँचा। शनैः शनैः बारहवीं एवं तेरहवीं शताब्दी तक पुरोहित ने अपनी सत्ता बढ़ा ली। उन्हीं में से एक बड़े विहार का पुरोहित साक्य[1] था। यह विहार मध्य – तिब्बत के दक्षिण – पश्चिम में स्थित था। १२४७ में मंगोल सम्राट् के पौत्र ने सा – क्य पण्डित को अपने राज दरबार में निमन्त्रित किया। पाँच वर्ष पश्चात् कुबलई खाँ, जिसने पूर्वी तिब्बत विजय किया था, चीन का सम्राट् बना। उसने सा – क्य पण्डित के भतीजे फक – पा ग्याल – च़े न को अपने दरबार में आमन्त्रित किया। उसने फक – पा को तिब्बत तथा दक्षिण – पूर्वी – तिब्बत के १३ जनपदों का तथा उत्तर – पूर्वी – तिब्बत के अम्दो प्रांत का भी शासक बना कर पूरी सत्ता सौंप दी। इसी समय से सा – क्य – पा के लामा (पुरोहित) शासक बन गये जो १३४० तक राज्य करते रहे।

सा – क्य विहार की शक्ति शनैः शनैः कम होने लगी और दूसरे विहार अपनी शक्ति को बढ़ाने लगे। उनमें से एक लामा ने मुख्य तिब्बत तथा पूर्वी – तिब्बत को परास्त किया और वहाँ का शासक भी बन गया। उसका नाम चांग – चुप ग्याल – छेन था जो फक – मो – द्रू के नाम से प्रसिद्ध था। उस विहार के १२ शासक हुए और १६३५ तक शासन किया। फक – मो – द्रू वंश को सोंग प्रांत के शासक ने समाप्त कर दिया।

१३५८ में एक महान् विद्वान् चोंग ख – पा का जन्म हुआ। उसके चेले पीला हैट (टोपा) पहनते थे जब कि दूसरे सम्प्रदाय वाले लाल हैट पहनते थे। पीले हैट वालों को विवाह करना तथा मदिरा पान करना निषेध था। सांग का – पा का उत्तराधिकारी गे – दुन त्रुप – पा हुआ जिसने एक विशाल विहार (मठ) का

---

1. इसका नाम सा – क्य विहार के नाम पर सा – क्य पड़ गया। इसका वास्तविक नाम कुनड्गग्यॅल मत्सन्द पाल – ब्ज़ान – पो (Kun – dga – rgyal – mt's and pal – bzan – po) था। यह विवरण इस पुस्तक से लिया गया है :—
Jansen, H. : Syn, Symbol and Script (1970), p. – 414.

निर्माण करवाया। यह विहार महान् लामा अर्थात् ताशी लामा का निवास स्थान बना। यह पीले हैट वालों का दूसरा महान् लामा था। १४७४ में गे – दुन त्रुप – पा का स्वर्गवास हो गया। उसकी आत्मा एक बच्चे की आत्मा में प्रवेश कर गई और वह अवतार माना जाने लगा। तीसरे उत्तराधिकारी का नाम सोनम ग्यत्सो था जिसने यह धर्म मंगोलिया तक प्रसारित किया। मंगोलिया में लामा को दलाई लामा वज्रधर की पदवी दी गई और तभी से दलाई लामा[1] नाम पड़ गया।

पाँचवाँ उत्तराधिकारी लोब – सोंग ग्या – त्सो था जो मंगोलों के सहयोग से १६४१ में शासक भी बना दिया गया।

ल्हासा का पोताल राजग्रह पहले सोंग – चें न – गम्पो ने बनवाया था जो युद्धों में नष्ट हो गया। तत्पश्चात् इस पाँचवें दलाई – लामा के प्रधान मंत्री ने पत्थर का महल निर्माण करवाया जो आज भी वर्तमान है। इसने चीन की भी यात्रा की और इसको वहाँ के दरबार में एक स्वतंत्र देश के शासक तथा एक धर्म के अधिष्ठाता के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इसी के शासनकाल में प्रथम यूरोप निवासी एक पुर्तगाली एन्तोनियो दि अन्द्रादा तिब्बत आया परन्तु वह ल्हासा नहीं पहुँच सका। तत्पश्चात् दो पादरी आये जो पीकिंग के रास्ते ल्हासा पहुँचे। एक माह निवास करके नेपाल के रास्ते वापस आ गये।

अठारहवीं श० में चीन ने तिब्बत से कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये। राजदूतों की पदवी 'अम्बान' के नाम से ज्ञात हुई। १७५० में चीन में तिब्बत के राजदूतों का वध कर दिया जिसकी प्रतिक्रिया में तिब्बत निवासियों ने चीनी राजदूतावास के चीनियों का वध कर दिया। इस पर चीन के सम्राट् चेन – लुंग ने एक सेना भेज कर पुनः तिब्बत पर आधिपत्य जमा लिया परन्तु वह स्थिर न रह सका।

१७८८ में नेपाल – राज्य की सत्ता गोरखों के हाथ में आ गई और उन्होंने शी – गा – चे को अपने अधीन कर लिया परन्तु चीन ने एक सेना भेज दी और अब चीन एवं तिब्बत ने मिल कर १७९२ में नेपाल की सेना को परास्त कर दिया। तत्पश्चात् काठमण्डू के निकट एक सन्धि – पत्र पर हस्ताक्षर हो गये। १८४१ में कश्मीर के डोंगरा लोगों ने पश्चिम से तिब्बत पर आक्रमण किया परन्तु ठण्ड व बर्फ़ के कारण परास्त हो गये। १८५५ में फिर नेपाली गोरखाओं ने एक शक्तिशाली आक्रमण किया। तिब्बत से सन्धि हो गई। नेपाली एजेन्सी तिब्बत में स्थापित हो गई और नेपाल ने वचन दिया कि यदि कोई आक्रमण हुआ तो नेपाल सहायता देगा।

उन्नीसवीं श० के अन्त तक कश्मीर के शासक ने लद्दाख़ पर तथा अंग्रेज़ों ने सिक्किम पर अपना आधिपत्य जमा लिया। १९०७ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत पर चीन के अधिकार को मान्यता प्रदान कर दी और यटुंग, ग्याङ् – से एवं गारटोक में चौकियाँ (व्यापारिक केन्द्र) स्थापित कर दीं। १९१२ में चीन के मांचू शासन के अन्त होने के साथ ही तिब्बत ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी। १९१४ में चीन, तिब्बत व भारत के प्रतिनिधियों की एक बैठक शिमला में हुई जिसमें इस विशाल पठारी राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया गया। (१) पूर्वी भाग, जिसमें वर्तमान चीन के शंघाई एवं सी क्यांग प्रांत के कुछ भाग सम्मिलित थे। इसको अन्तावर्ती तिब्बत (Inner Tibet) के नाम से सम्बोधित किया गया तथा (२) पश्चिमी भाग जो बौद्ध – मतानुयायी लामा के हाथ में रहा। इसको बाह्य तिब्बत (Outer Tibet) के नाम से सम्बोधित किया गया।

---

1. दलाई (मंगोल भाषा) = सागर; लामा = ज्ञान अर्थात् ज्ञान का सागर।
   पन चेन (पाली); पन = ज्ञान; चें न। (तिब्बती) = महान् अर्थात् महान् ज्ञानी।

१९३३ में तेरहवें दलाई लामा के स्वर्गवास होने के पश्चात् बाह्य तिब्बत भी धीरे धीरे चीन के घेरे में आने लगा। चीनी भूमि पर लालित – पालित चौदहवें दलाई लामा ने १९४० में शासन भार सँभाला। १९५० में तो पँछेण लामा के चुनाव में दोनों देशों में शक्ति प्रदर्शन की नौबत आ गई। इस पर चीन को आक्रमण करने का अवसर प्राप्त हो गया। १९५१ में एक सन्धि के अनुसार यह देश साम्यवादी चीन के प्रशासन में एक स्वतंत्र राज्य मान लिया गया। इसी समय भूमि सुधार विधान एवं दलाई लामा के अधिकारों में हस्त – क्षेप तथा कटौती होने के कारण एक असन्तोष की आग सुलगने लगी जो क्रमशः १९५६ एवं १९५९ में जोरों से भड़क उठी जिसको बल प्रयोग द्वारा चीन ने दबा दिया। अत्याचारों व हत्याओं आदि से किसी प्रकार बच कर दलाई लामा भारत पहुँच सके। अब तिब्बत पर चीन का पूर्ण अधिकार है और पँछेण लामा वहाँ के नाम मात्र शासक हैं।

तिब्बत की लिपियाँ

अु – चेन व अु – मेद लिपियाँ[1] : लगभग ६३० ईसवी में स्रोंग चेन गम्पो ने, जो उस समय का शासक था, अपने एक मंत्री थोन – मी – सम – भोटा को भारत भेजा। उसको आदेश दिया गया कि वह भारत जाकर बौद्ध धर्म का साहित्य तथा संस्कृत सीखे और वापस आकर तिब्बत निवासियों को पढ़ना लिखना सिखाये। इस मंत्री ने बौद्ध – गया में रह कर तथा अन्य स्थानों में रह कर शिक्षा प्राप्त की। वह तात्कालिक गुप्त लिपि के वर्णों को तिब्बत लाया और यहाँ की ध्वनियों के अनुसार कुछ वर्णों को कम कर दिया।

यह लिपि बाद में दो भागों में विभाजित हो गई। एक दैनिक जीवन में प्रयोग के लिए हस्त – लिखित – शीघ्र – लिपि जिसका नाम अु – मेद् 'फ० सं० – २०५' पड़ा तथा दूसरी मुद्रण के लिए जिसका नाम अु – चेन 'फ० सं० – २०६' पड़ा। पहली में शिरो – रेखा का प्रयोग नहीं होता तथा दूसरी में होता है। अु – चेन में प्रत्येक शब्द के पश्चात् शिरो – रेखा के अन्त में एक बिन्दी का प्रयोग किया जाता है ठीक इसी प्रकार जैसे देवनागरी लिपि में दो शब्दों के मध्य कुछ स्थान खाली रह जाता है। 'अु' तिब्बत के मध्य प्रांत का नाम था।

इस लिपि की समानता के लिए कुछ ध्वनियाँ तिब्बत की भाषा में ऐसी थीं जिनके लिये वर्ण थे ही नहीं। इस कारण बारहवीं श० में छः वर्ण और जोड़े गये। इन छः वर्णों पर अु – चेन की वर्णमाला में अंक डाल दिये गये हैं। साधारणतया यहाँ की लिपि को समझने में बड़ी कठिनाई इस कारण प्रतीत होती है कि अक्षरों की ध्वनियों में परिवर्तन आ जाता है। एक वर्ण की दो ध्वानयाँ होती हैं। उदाहरणार्थ 'ज' 'च' का, 'ग' 'क' का तथा 'द' 'त' का स्थान ग्रहण कर लेता है। तिब्बत के व्याकरण के नियमों के अनुसार कभी कभी 'ज, ग, द' को क्रम से 'च, क, त' पढ़ा जायेगा। 'अ' का प्रयोग स्वर की तरह नहीं किया जाता और वर्णमाला में उसका स्थान आरम्भ में होने के बजाय अन्त में कर दिया गया। एक दूसरा 'अ' भी है जिसका प्रयोग संगीत – मात्रा के अनुसार 'ऽ' होता है। इसमें स्वर केवल चार होते हैं, 'इ, उ, ए, ओ' तथा छोटी बड़ी मात्राएँ नहीं होतीं जैसी कि देवनागरी में होती हैं।

इन लिपियों में ध्वनि – बल पद्धति का प्रयोग होता है। टोन की संख्या[2] के विषय में विद्वान् एक मत नहीं हैं।

---

1. लेखक ने १९७४ में लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के तिब्बती भाषा के प्राध्यापक श्री लामा जी से साक्षात्कार करके तिब्बत की लिपियों की ध्वनियों को लिखा है।
2. जयेश्के (Jaeschke) के अनुसार दो टोन हैं। ग्रेहाम सैण्डबर्ग (Rev. Graham Sandberg) के अनुसार तीन टोन हैं। अमुन्द सेन के अनुसार छः टोन हैं।

पस्सेपा : इसका आविष्कार तिब्बत के महान् लामा द्वारा हुआ था। उनका नाम फाग – पा (अफगस – पा) था। चीनी भाषा में 'पा – को – सि – पा' लिखा जाता था जिसका संक्षिप्त रूप था 'पा – सि – पा' और उससे बन गया पस्सिपा तथा पस्सेपा। चीन के सम्राट कुबलई ख़ान ने १२६० में तिब्बत के महान् लामा को अपने दरबार में आमंत्रित किया तथा बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया। १२६९ में इसी तिब्बत लिपि पस्सेपा को राजकीय लिपि बना दिया तथा उइगुरी लिपि, जो अब तक राजकीय लिपि थी, को हटा दिया गया। पस्सेपा अधिक दिनों तक चल न सकी। इसका प्रयोग ऊपर से नीचे की ओर किया जाता था परन्तु शिरोवृत्त पंक्तियाँ बाएँ से दाएँ की ओर लिखी जाती थीं। इसका प्रयोग चौदहवीं श० के मध्य तक रहा। इसके वर्ण 'फ० सं० – २०७' पर दिये गये हैं।

बाल्टी लिपि : इसका उपनाम भोटिया है। तिब्बत के सुदूर उत्तर – पश्चिम भागों के निवासी बाल्टी कहलाते थे। यह लोग तिब्बत के ही मूल निवासी भोटिया थे। इनकी भाषा भी तिब्बती थी परन्तु उसमें टोन पद्धति नहीं थी। बाल्टी लोग अपने इस भू – भाग को बाल्टिस्तान कहने लगे और शनैः शनैः एक राज्य में परिवर्तित कर लिया। कशमीर के राजा गुलाब सिंह ने इस पर आक्रमण कर १८१४ में अपने जम्मू राज्य में मिला लिया। १९०१ में इनकी जनसंख्या १,३४, ३७२ थी।

जब बाल्टी लोगों ने चौदहवीं श० में इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया तब इन्होंने पस्सेपा लिपि की सहायता से अपनी एक बाल्टी लिपि का आविष्कार कर लिया। सर्वप्रथम गोडविन ऑस्टिन (Godwin Austen) ने इस लिपि की एक बारहखड़ी (Syllabary) तैयार की जिसकी सहायता से गुस्टाफ़सन (Gustafson) ने इस लिपि की एक वर्णमाला बनाई तथा इसका अनुवाद किया। इस लिपि का प्रयोग दाएँ से बाएँ किया जाता था। इसकी वर्णमाला[1] व प्रतिदर्श 'फ० सं० – २०८' पर दिया गया है।

अु – चेन लिपि का प्रतिदर्श : निम्नलिखित वाक्य अर्थ व भावार्थ सहित 'फ० सं० – २०६' पर दिया गया है :—

"ज़्येन = दूसरों (इस शब्द का प्रथम अक्षर 'ग' शांत है); की = का; च्या = काम; मी शे क्यां = न जानने पर भी (इसमें 'ब' शांत है); ते तङ् = वह और; ते यी = उसका; च्योत पा = व्यवहार; क्यों = पालो"। इसका भावार्थ : "दूसरों के काम न जानने पर भी उनके साथ (अच्छा) व्यवहार पालो (का पालन करो)।'

अु मेद का लिपि का प्रतिदर्श : 'फ० सं० – २०९' पर ऊपर की ओर दो वाक्य—"मेरे (एक) घर है"; "लड़की के पास बिल्ली है"—दिये गये हैं। नीचे की ओर सिक्किम[2] में प्रयोग होने वाली 'अु – चेन लिपि' का प्रतिदर्श तथा टेहढ़ी – गढ़वाल[3] में प्रयोग होने वाली 'अु – मेद लिपि' का प्रतिदर्श दिया गया है। दोनों प्रतिदर्शों के अर्थ एक ही हैं—'एक मनुष्य के दो पुत्र थे'।

---

1. Grierson, G : Linguistic Survey of India, Vol. III, Part 1. page – 32. (through Rev. A. H. Francke)
2. Ibid : p. – 79. (through David Macdonald and Col. Waddell – 1899.)
3. Ibid : p. – 93.

अु -- मेद् लिपि

क	ख	गक	ङ	च	छ	जच	ञ	त	थ
दत	न	प	फ	बप	म	च़[1]	छ़[2]	ज़[3]	व
ज्य[4]	स़[5]	अ-ऽ[6]	य	र	ल	श	स	ह	अ

=कि =खु =गे =ङो

अंक

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
चिक्	अे	सुम्	शि	ङा	टू	टून्	ग्ये	गू	चु

फलक संख्या – २०५

अु -- चेन् लिपि

क	ख	ग-क	ङ	च	छ	ज-च	ञ	त	थ
ཀ་	ཁ་	ག་	ང་	ཅ་	ཆ་	ཇ་	ཉ་	ཏ་	ཐ་
द-त	न	प	फ	ब-प	म	च़[1]	छ़[2]	ज़[3]	व
ད་	ན་	པ་	ཕ་	བ་	མ་	ཙ་	ཚ་	ཛ་	ཝ་
ज्य[4]	स़[5]	अंऽ[6]	य	र	ल	श	स	ह	अ
ཞ་	ཟ་	འ་	ཡ་	ར་	ལ་	ཤ་	ས་	ཧ་	ཨ་

कि	खु	गे	ङो
ཀི་	ཁུ་	གེ་	ངོ་

ज़्येन की च्या बा मी शे क्यां ते तङ्

ते यी च्योत पा क्यों

पस्सेपा लिपि

क	ख	ग	ङ	च	छ
ज	ञ	त	थ	द	न
प	फ	ब	म	च़	छ़
ज़	व	ज़्य	ज़	अ̱ ऽ	य
र	ल	श	स	ह	अ

फलक संख्या - २०७

बाल्टी लिपि

अ	ब़	प	ट	ग
ख़	च	छ	द	र
ज़	स	श	क	ल
म	न	न	ज	ख
त्स	अं	'ब्' की बारहखड़ी	ब	बा
बे	बी	बो	बू	बं

वाक्य दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा

क ची बू री खो सी दा ख़ू

ख़ुदा सी खोरी बू चीक = ख़ुदा के केवल एक बेटा है

फलक संख्या – २०८

अु -- मेद एवं अु -- चेन के प्रतिदर्श

फलक संख्या – २०९

पठनीय सामग्री

Avery, John : The Beginnings of Writing in and Around Tibet (The American Antiquarian – Vol. VIII – 1886).

Bell, Sir Charles : The People of Tibet (1928).

Bushell, S. W. : The Early History of Tibet (Journal of Royal Asiatic Society – New Series – Vol. XIII – 1885).

Gould, B. and : Tibetan Word Book (Oxford University Press – 1943).

Grierson, : Linguistic Survey of India – Vol. III – part 1.

Konow, S. : Saka Studies (1932).

Laufer, B. : Origin of Tibetan Writing (Journal of the American Oriental Society – 1918).

Leumann, M. : Introduction to the Grammar of Tibetan.

Richardson, H. R,

,, ,, : Tibetan Sentences

,, ,, : Tibetan Syllables

Rockhill, W. W. : The land of Lamas (1891).

Senanayak, R. D. : Inside Story of Tibet (1967).

□

चीन

इतिहास : चीन देश की संस्कृति व सभ्यता बहुत प्राचीन है। इतिहास के लिए 'शू जिंग' (Shu Ching) नाम पौराणिक पुस्तक से पता लगता है कि २८०० ई० पू० में एक राजा या नेता हुआ जिसका नाम फ़ू शी (Fu Hsi)[1] था। इसने आरम्भ काल की प्रजा में कई सुधार किये। बा गुआ (Pa Kua) नाम से आठ शब्दों का निर्माण करके लिपि को जन्म दिया। यह तीन पंक्तियाँ थीं। त्रिपुण्ड के नाम से अथवा मिस्तिक ट्रिग्राम्स (Mystic Trigrams) के नाम से संसार में ज्ञात हुए। फ़ू शी ने विवाह संस्था को जन्म दिया। तत्पश्चात शेन नुङ्ग (Shen Nung) और हुआंग ती (Huang Ti)[2] दो शासक हुए। हुआंग ती ने चीन साम्राज्य का विस्तार किया, सुन्दर मकानों व नगरों का निर्माण किया, इतिहासकारों की एक समिति बनाई तथा रेशम का आविष्कार किया। इसके पश्चात् राजवंशों की स्थापना होने लगी।

शिया (Hsia) **वंश** : (२२०५ से १७६५ ई० पू० तक) का संस्थापक 'यू' (Yu) था। इस वंश का अन्तिम राजा चीय कुयेइ (Chieh Kuei) था। यह शासक बड़ा अत्याचारी था।

इन (Yin) **या शांग** (Shang) **वंश :** (१७६५ से ११२२ ई० पू० तक) के संस्थापक त अंग (T'ang) ने शिया वंश को समाप्त कर शांग वंश की नींव डाली। इसका अन्तिम शासक चाउ शीन (Chou Hsin) था। इस राजा के कुकर्मों के कारण एक क्रान्ति हुई और इस राजवंश का अन्त हो गया।

चाउ (Chao) **वंश** : (११२२ से २४९ ई० पू० तक) का संस्थापक वू वांग (Wu Wang) था। इन्हीं दिनों शासन का एक उच्च पदाधिकारी की – त्से (Ki – Tse) ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। वह चाउ वंश के शासन में नौकरी करना अच्छा नहीं समझता था। पद त्याग के साथ उसने अपनी जन्मभूमि भी त्याग दी और लगभग अपने पाँच सहस्र साथियों सहित पूर्व की ओर चल पड़ा और एक भूमि भाग को चुनकर निवास करने लगा। इस जगह प्रातःकाल बड़ा शान्तिमय प्रतीत होता था। इन्हीं कारणों से यह भूमि 'चुनी भूमि' (Chosen) अथवा कोरिया कहलाने लगी। इस देश पर की – त्से के वंशजों ने लगभग ९०० वर्ष राज्य किया।

चाउ वंश के काल में तीन महान् दार्शनिकों ने जन्म लिया जिन्होंने चीन के व्यक्तिगत जीवन पर बड़ा प्रभाव डाला। यह महान् व्यक्ति तीन धर्मों के प्रवर्तक भी थे जो निम्नलिखित हैं :—

---

1. इस राजा का काल तेरियन दि लाकपरी (Terrien de Lacouperie) के अनुसार २८५२ – २७८३ ई० पू० है तथा गाइल्स (Giles) के अनुसार २९५३ – २८३८ ई० पू० है।
2. इस राजा का काल २६९८ – २५९८ ई० पू० है।

चीन
ई०पू० की ५वीं शती के पूर्व
१- लाओ-कनफ़्यूशस का जन्म स्थान
२- शांगवंश के राज्य की राजधानी
३- चाओ वंश की राजधानी
वे
जुंग जाति
ईती जाति
येन
चीन
हान
चू
वू
चीन (ई०पू०-१००)
सम्राट वूती ने राज्य का
विस्तार किया (हानवंश)
सीमा ---------------
दीवार
बड़ी
चीन की
हूण
जाति
कोरिया
वेई
हनाय
हान
यांग्त्सी
हसी
मीकांग
साल्वीन

फलक संख्या – २१०

१. ली अर (Li Erh) का जन्म ६०४ ई० पू० में हुआ। इसका नाम बाद में लाउत्से (Lao – tze) पड़ा। इसने तावबाद चलाया। इस धर्म का मूल ग्रन्थ ताउ – ते – किंग (Tao[1] – Teh – King) है। लाउत्से की ५२४ ई० पू० में मृत्यु हो गयी।

२. चियु कुंग (Ch'iu K'ung) का जन्म ५५१ ई० पू० में हुआ। बाद में यह कुंग फ़ूत्से (K'ung Fu-Tze) अर्थात् दार्शनिक कुंग सम्बोधित किया जाने लगा और विश्व में कनफ़्यूशस (Confucius) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसने कनफ़्यूशसवाद धर्म चलाया। इस धर्म का मूल ग्रन्थ 'ऐनालेक्ट्स और पाँच किंग' (Analects and Five Kings) है। इसने पूर्वजों की मान्यता तथा चारित्रिक उत्थान पर अधिक बल दिया। इस महान् व्यक्ति की मृत्यु ४७९ ई० पू० में हो गयी।

३. मेन्शियस (Mencius) का जन्म ३८५ ई० पू० में हुआ। इसने भी मानव स्वभाव को कल्याणकारी बनाने की ओर एक धर्म चलाया। इसकी मृत्यु २८९ ई० पू० में हो गयी।

चाउ वंश के अंतिम दिनों में छोटे छोटे अधीन राज्य स्वतंत्र होने लगे। स्वतंत्र होने के पश्चात् अपनी शक्ति बढ़ाने लगे तथा राजसिंहासनारूढ़ होने के लिए आपस में युद्ध भी करने लगे। इन्हीं में से एक राजा ची – न (Ch'in), चाउ वंश के अंतिम शासक को राजगद्दी से उतार कर स्वयं शासक बन गया।

चीन वंश : (२४९ से २०७ ई० पू० तक) का संस्थापक चीन हो गया। सम्भवत: इस देश का नाम 'चीन' इसी के नाम पर पड़ा। तीन शासकों ने तीन वर्ष राज्य किया। तत्पश्चात् २४६ ई० पू० में चौथा शासक आया जिसका नाम वांग चेंग (Wang Cheng) था। इसने गद्दी पर बैठने के पश्चात् अपना नाम शी हुआंग ती (Shih Huang Ti) रख लिया जिसके अर्थ हैं प्रथम सम्राट्। यह शासक अपने आप को बहुत बड़ा समझता था। चाहता था लोग अपने पूर्वजों को, पिछले राजाओं को तथा उनके कल्याणकारी कृत्यों को भूल जायें और केवल उसे ही जीवन में तथा मरणोपरांत याद रखें।

अभी तक चीन के सामाजिक व धार्मिक जीवन में पूर्वजों का मान – आदर एक अभिन्न अंग बन गया था। इसी बात पर कनफ़्यूशस के मतानुयायी अधिक प्रचार करते थे, परन्तु चीन का वर्तमान सम्राट् तो इसके विरुद्ध प्रचार करता था। पूर्वजों की पूजा रोकने के लिए उसने घोषणा की कि "जो मनुष्य पिछले राजाओं को व पूर्वजों को मान्यता देगा अथवा प्राचीन पुस्तकों को सुरक्षित रखेगा वह सम्राट् का अपमान करेगा तथा मृत्यु – दण्ड का भागी बनेगा।" इसी कारण उसने प्राचीन ग्रन्थों को जला डालने की आज्ञा निकलवा दी। केवल वैज्ञानिक विषयों की पुस्तकों को रखने का आदेश था। उसने सहस्रों ग्रन्थों को अग्नि के अर्पण कर दिया। कनफ्यूशसवादियों को मौत के घाट उतार दिया तथा उनसे चीन की बड़ी दीवार का निर्माण करवाया तथा बड़े अत्याचार किये।

उसने केवल बुरे ही नहीं कुछ अच्छे कार्य भी किये। इसने सामंतवाद का अन्त किया। सम्पूर्ण साम्राज्य को ३६ प्रांतों में विभाजित किया तथा प्रत्येक प्रान्त में एक प्रांतपति नियुक्त किया। साम्राज्य के विस्तार के लिए इसने अन्नाम तक आक्रमण किये। पूरे देश को एक सूत्र में बांध दिया। देश की सुरक्षा के लिए एक बड़ी दीवार का (२१५ ई० पू० में) निर्माण करवाया। इसकी लम्बाई लगभग १५०० मील, इसकी नीचान पर चौड़ाई २५ फ़ुट तथा ऊँचान पर १५ फुट तथा औसत ऊँचाई २० फुट थी। इस सम्राट की मृत्यु २१० ई० पू० में हो गई। तदुपरान्त सैनिक पदाधिकारी आपस में शासन की बागडोर सम्भालने के लिए झगड़ने लगे। इसी

1. ताउ=सत्य।

झगड़े में उस सम्राट का २०७ ई० पू० में वध कर दिया गया जो शू हुआंग ती के मरणोपरांत राजसिंहासनारूढ़ हुआ था। यही इस वंश का अन्तिम सम्राट था।

हान (Han) वंश : (२०६ ई० पू० से २२० ई० सन् तक) उपर्युक्त पदाधिकारियों के झगड़ों में एक वीर विजयी हुआ और हान वंश का संस्थापक हो गया। इसका नाम था लियू पांग (Liu Pang)। इस वंश का छठा सम्राट वू ती (Wu – Ti) था जिसने ५० वर्ष राज्य किया। इसने एशिया की अनेकों पर्यटन – शील तथा बर्बर जातियों को परास्त कर अपने अधीन कर लिया। इस सम्राट के काल में रोमन साम्राज्य से सम्बन्ध स्थापित हुए। थल के मार्ग से दोनों देशों में व्यापार होने लगा। इस व्यापार का मध्यस्थ देश पार्थिया था परन्तु जब पार्थिया के साथ रोम का युद्ध आरम्भ हो गया तब यह व्यापार स्थगित कर दिया गया।

इसी वंश के शासन काल में भारत से यहाँ बौद्ध धर्म आया और धर्म के साथ भारत की कला व दर्शन भी आये। इसी के शासन काल में यहाँ मुद्रण – कला का आरम्भ हुआ और १०५ ई० सन् में कागज़ का आविष्कार हुआ।

इस वंश के आरम्भिक शासकों ने छिन्न – भिन्न साम्राज्य को एक सूत्र में बाँधा परन्तु अन्तिम काल के शासक साम्राज्य की एकता को स्थिर न रख सके और वह २२१ ई० सन् में निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित हो गया।

१. उत्तर में वेई (Wei) राज्य के नाम से स्थापित हुआ।
२. मध्य चीन में वू (Wu) का राज्य स्थापित हुआ।
३. दक्षिण में हान वंश का बचा राज्य शू (Shu) के राज्य के नाम से स्थापित हुआ। इस राज्य का प्रथम शासक लिन पेई (Lin Pei) था।

यह तीनों राज्य आपस में द्वेष रखते थे परन्तु फिर भी स्वास्थ्य रक्षा, गणित, खगोल शास्त्र, वनस्पति – शास्त्र तथा रसायनशास्त्र जैसे वैज्ञानिक विषयों पर विद्वानों ने अपने – अपने शोध व खोज कार्य सम्पन्न करके इन विषयों को व्यापकता प्रदान की। इन तीन वंशों का शासन २२१ से ५८८ ई० सन् तक स्थापित रहा।

५२६ ई० में भारत से एक बोद्धिधर्म नाम का एक बौद्ध भिक्षु आया जिसके साथ अन्य भिक्षु भी चीन आये। इस काल से पूर्व लगभग दस सहस्र भारत – वासी चीन पहुँच चुके थे।

सुई (Sui) वंश : (५८९ से ६१८ ई० सन् तक) इस वंश के शासकों ने एकता लाने का पर्याप्त प्रयत्न किया। इसके शासक उल्लेखनीय नहीं हैं।

तांग (T'ang) वंश : (६१८ से ९०६ ई० तक) का संस्थापक काओत्सु (Kao Tsu) था। इस सम्राट ने विभाजित चीन को फिर एक सूत्र में बांधा। अपने साम्राज्य का विस्तार किया। दक्षिण में अन्नाम व कम्पूचिया को अपने अधीन कर लिया। पश्चिम में कैस्पियन सागर तक आक्रमण करके अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया। अपनी राजधानी सी – एन – फ़ू (Si – an – Fu) को बनाया।

चीन में जनगणना कराने की पद्धति बहुत प्राचीन है। जिसके अनुसार ६७५ ई० में जनगणना की गई। तब चीन की जनसंख्या लगभग १० करोड़ थी (जो अब बढ़कर १०० करोड़ के लगभग हो गई है)। यहाँ इसाई धर्म के पूर्व इस्लाम आया। मुसलमानों ने सातवीं शताब्दी में कैण्टन में एक मस्जिद का निर्माण किया। अरबों ने चीनियों से कागज़ बनाना सीखा और योरोप के लोगों ने अरबों से सोखा। इसी वंश के शासनकाल में बारूद का भी आविष्कार चीन में हुआ।

चीन -- (७५० ई० सन्)

७वीं श० -- तांग वंश का साम्राज्य
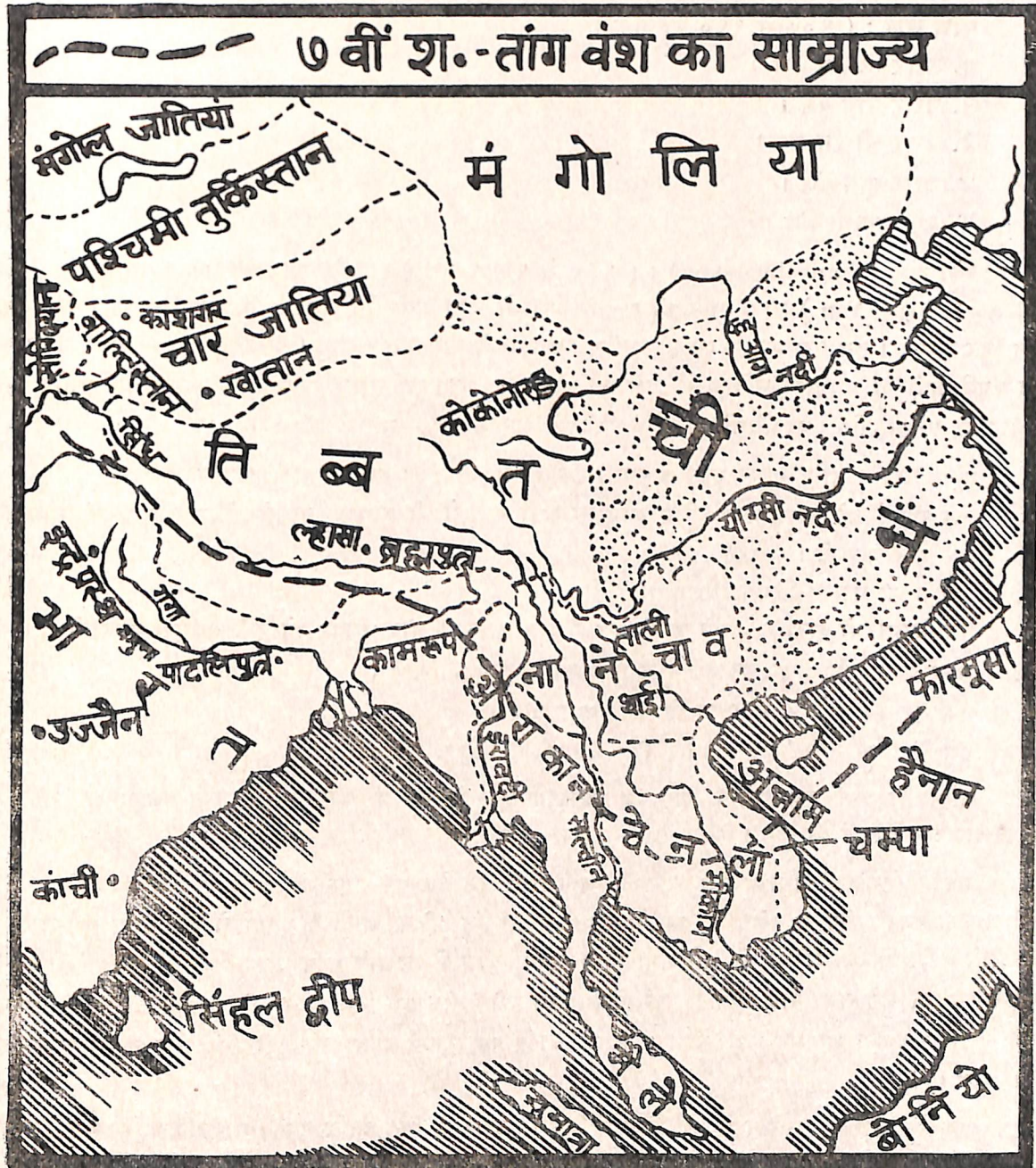
जैसे जैसे यहाँ के शासक विलासी होते गये वैसे वसे राज्वंश में तथा प्रजा में चरित्रहीनता बढ़ने लगी। इसी के साथ कर अधिक वसूल किये जाने लगे। तत्कालीन शासक के विरुद्ध विद्रोह हुआ। तदनन्तर एक के बाद एक वंश आया परन्तु स्थिरता के साथ कोई शासन न कर सका। इस प्रकार निम्नलिखित पाँच वंश आये तथा समाप्त हुए :—

पाँच वंश : (९०७ से ९६० ई० तक)

१. उत्तर लियांग वंश।

२. उत्तर तांग वंश।

३. उत्तर ची इन वंश।

४. उत्तर हान वंश।

५. उत्तर चाओ वंश।

सूंग वंश (Sung Dynasty) : (९६० से १२७९ तक) इस वंश का संस्थापक चाउ कुआंग – इन (Chao K'uang Yin) था। ग्यारहवीं श० में प्रजा में बड़ा असन्तोष फैला। फिर क्रान्ति हुई तथा उसका दमन किया गया। तब एक शासन का तत्कालीन प्रधानमन्त्री वांग अन – शर (Wang An – Shih) था जो बड़ा प्रगतिवादी था। उसने भविष्य में क्रांतियाँ रोकने के लिए कई सुधार किये ताकि जनता में संतोष बना रहे। उसने परिस्थितियों का विश्लेषण करके निम्नलिखित शासन – सुधार किये :—

१. कृषक अपना भूमि – कर मुद्रा के स्थान पर अपनी उत्पादक वस्तुओं द्वारा दे सकते हैं।
२. जब कृषकों को उत्पादन के लिए कृषि सम्बन्धी वस्तुओं की आवश्यकता हो तो सरकार उनकी सहायता करे और ऋण दे।
३. अनाज का क्रय – विक्रय शासन द्वारा हो।
४. पदाधिकारियों द्वारा ली जाने वाली बेगार बन्द की जाये और मजदूर को पूरी मजदूरी दी जाये।
५. आवश्यकता पड़ने पर कर की वृद्धि धनवानों के लिए की जाये।
६. एक देश – रक्षक – सेना का निर्माण किया जाये।
इस सेना का नाम 'बाउ जिया (Pao Chia)' रखा जाये।

तात्कालिक परिस्थितियों के लिए यह सुधार औषधि के रूप में काम आये परन्तु प्रजा तथा राजा में यह विचार प्रचलित न हो सके। केवल देश – रक्षक – सेना स्थिर रह गई।

मध्य एशिया की तथा मंगोलों की कई जातियों ने इस देश पर अपने आक्रमण आरम्भ कर दिये। सूंग वंशी शासक इनको रोक न सके और उन्होंने देश की रक्षा हेतु 'किन' जाति के तातारों को उत्तर से बुलाया। इन लोगों ने आक्रमणकारियों को तो भगा दिया परन्तु चीन के उत्तरी भाग में बस गये। शनैः शनैः अपनी सत्ता को बढ़ाने लगे तथा राजनीति में हस्तक्षेप करने लगे और एक दिन आया कि उन्होंने उत्तर में अपना राज्य स्थापित करना आरम्भ कर दिया। 'किन' जाति का राज्य बढ़ता गया और सूंग वंश का राज्य संकीर्ण होता गया।

अब सूंग वंश के शासन में दो चीन हो गये। उत्तर में किन जाति का तथा दक्षिण में सूंग वंश का राज्य स्थापित रहा। यह व्यवस्था ११२७ से १२७९ ई० तक चलती रही।

१२१० ई० में मंगोल जाति के लोगों ने अपने एक बीर तथा विश्व विख्यात नेता तिमूचिन के साथ

चीन १३वीं श० के अन्त में
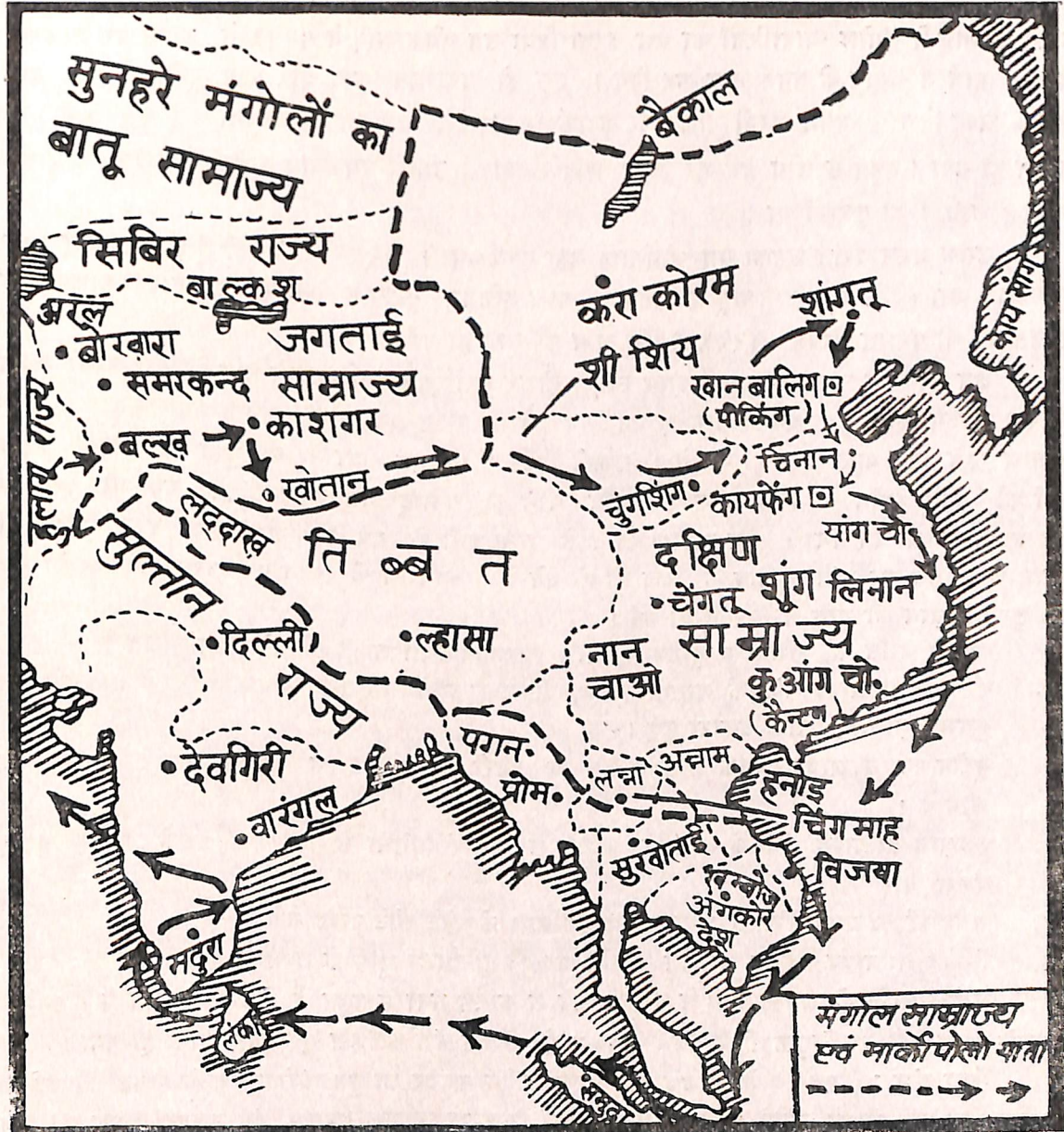
चीन पर आक्रमण कर दिया। पहले उसने उत्तरी चीन के किन वंशी शासक को समाप्त किया। तत्पश्चात् दक्षिणी चीन के सूंग वंशी शासक को परास्त किया। इस नेता का नाम बाद में चंगेज़ ख़ान पड़ा।

यूआन (Yuan) वंश : (१२७९ से १३६८ ई० तक) का दूसरा नाम था मंगोल वंश। चंगेज़ ख़ान का जन्म ११५५ ई० में हुआ। उसके पिता का नाम यसूगी बागातुर (अर्थात् बहादुर) था और ख़ान के या कागन के अर्थ होते हैं महाराजा। ५१ वर्ष की आयु हो जाने पर अर्थात् १२०६ में यह ख़ान बना। जब फ़ारस के शाह ने मंगोल व्यापारियों का वध करवा दिया तब चंगेज़ ख़ान ने १२१९ में फ़ारस पर आक्रमण कर दिया। मार्ग में नगर के नगर नष्ट कर दिये। रूस को पराजित किया और मध्य यूरोप के कई देशों को नष्ट – भ्रष्ट किया। उसने अपनी राजधानी कराकोरम बनाई। ७२ वर्ष की अवस्था में (१२२७ में) उसका देहान्त हो गया। बहुत से लोग अब भी 'ख़ान' शब्द के कारण उसको मुसलमान समझते हैं परन्तु वह आकाश – देवता (शमा) का पुजारी था।

उसके मरणोपरांत उसका पुत्र ओग़ोताइ महा ख़ान बना। १२५२ में इसकी मृत्यु के पश्चात् मंगू ख़ान महा ख़ान बना। इसके भाई हुलागू ने बग़दाद, मध्य एशिया, यूरोप व रूस पर नरसंहारक आक्रमण किये। तिब्बत को भी परास्त किया। १२३९ में मंगू ख़ान की मृत्यु हो गई।

अब चीन का प्रांतपति कुबलई ख़ान स्वतंत्र होकर महा ख़ान बना। उसने कराकोरम से अपनी राजधानी हटाकर पीकिंग बनाई तथा इसका नाम ख़ानबालिग रखा। परन्तु अब ख़ान (अर्थात् मंगोलसम्राट्) चीनियों के साथ रहते रहते बहुत सभ्य हो गये थे। उनकी निर्दयता पर्याप्त मात्रा में मर चुकी थी। इसने अन्नाम व बर्मा को अपने अधीन कर लिया और १२७९ में चीन का सम्राट् घोषित कर दिया गया और इस मंगोल वंश का संस्थापक बन गया। अब मंगोल जाति के लोग धनी हो गये थे। उनके पास काम करने के लिए ग़ुलाम थे। अब वह शांत स्वभाव के विलासी हो गये थे। आक्रमण के स्थान पर आराम को अच्छा समझते थे। कुबलई ख़ान की मृत्यु १२९२ में हो गई।

मंगोल जाति के, एशिया व यूरोप में, पाँच साम्राज्य स्थापित हो गये जो निम्नलिखित हैं :—

१. चीन का साम्राज्य, जिसके अन्तर्गत चीन, तिब्बत, मंगोलिया तथा मंचूरिया देश थे। इसके शासक कुबलई ख़ान के उत्तराधिकारी हुए।
२. यूरोप का साम्राज्य जिसके अन्तर्गत रूस व हंगेरी देश थे। इसक शासक सुनहरे मंगोल जाति के लोग थे।
३. इलख़ान साम्राज्य जिसके अन्तर्गत पर्शिया व मेसोपोटामिया के देश थे। इसके शासक हुलागू क वंशज थे।
४. ज़गाताई साम्राज्य जिसके अन्तर्गत मध्य एशिया के छोटे छोटे राज्य थे।
५. सिबिर साम्राज्य जिसक अन्तर्गत सायबेरिया की हरियाली भूमि के उपनगर थे।

मंगोल जाति के अनेकों देशों से सम्पर्क होने के कारण सेना में बहुत से विदेशी आ गये थे। उनमें बहुत से अच्छे अच्छे पदों पर नियुक्त किये गये। १३६८ ई० में इस वंश का अंत एक क्रांति द्वारा हो गया।

मिंग वंश : (१३६८ से १६४४ तक) एक ग़रीब मज़दूर का पुत्र मंगोल वंश के विरुद्ध की गई क्रान्ति का नेता बन गया जिसने उनको चीन की बड़ी दीवार के बाहर निकाल दिया। इस मज़दूर के पुत्र का नाम था जू युयान जांग (Chu Yuan Chang) जो अपनी पदवी के कारण हुंग वू (Hung Wu) के नाम से विख्यात हुआ। यही मिंग वंश का संस्थापक तथा प्रथम सम्राट् बना जिसने तीस वर्ष तक शासन किया। मिंग के अर्थ हैं 'प्रकाशमान्'।

एशिया के पूर्व तथा दक्षिण – पूर्व के देश, चीन का ज्येष्ठ भ्राता के रूप में आदर करते थे। जापान से जावा तक चीन की संस्कृति तथा भाषा व कला ने प्रभावित किया। इस काल में युद्ध नहीं हुए। देश का समय व धन देश के कल्याण के लिए प्रयोग होने लगा। कला व शिल्प की प्रगति होने लगी। ऊँचे ऊँचे कलापूर्ण भवनों का निर्माण होने लगा। इस पन्द्रहवीं श० में चीन योरोप से धन में, कला – कौशल में, उद्योग में तथा संस्कृति में बहुत ऊँचे शिखर पर था। इस वंश के एक शासक युंग लो (Yung Lo) ने अपनी राजधानी नानकिंग से पीकिंग बनाई। कागज़ की मुद्रा का (Paper Currency) का प्रचलन आरम्भ किया।

इसी काल की १५१६ में पुर्तगालियों का प्रथम जलपोत योरोप से चीन पहुँचा। आरम्भ मे पुर्तगालियों ने चीन के निवासियों की ओर बड़ी सद्भावना दिखाई तथा आदरपूर्ण व्यवहार किया। चीन की सरकार से अपने व्यापार के लिए कोठियाँ बनवाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। शनैः शनैः इनके व्यवहार में अन्तर आने लगा। जब इस बात की सूचना चीन सरकार को मिली तो उसने सख्ती से काम लिया और उनको अधिक पैर न पसारने की आज्ञा दी। १५५७ में उनको केवल एक छोटे से द्वीप मकाओ (Macau) पर निवास तथा व्यापार करने की आज्ञा प्रदान कर दी जहाँ वह आज तक जमे हैं।

अब पुर्तगाली व चीनी सरकार में अच्छी मित्रता हो गई। योरोप के कई व्यापारी देश यहाँ आये, अपने पैर जमाना चाहे परन्तु पुर्तगाली अधिकारियो ने चीन की सरकार के ऐसे कान भरे कि उनको व्यापार करने की अनुमति न मिल सकी।

जैसा कि बहुधा होता चला आया कि वंश के शासन के कुछ समय बाद शासक विलासी तथा राज्य की ओर से उदासीन होते जाते हैं जिसके कारण राज्य – पदाधिकारी लोभी तथा घूसखोर होते जाते हैं और उसी के विरुद्ध क्रान्तियाँ होती जाती हैं। उसी प्रकार १६४४ में इस वंश का अन्त भी एक क्रान्ति द्वारा हुआ।

मंचू (Manchu) वंश : (१६४४ से १९११ तक) का आगमन चीन के उत्तर – पूर्वी भाग मंचूरिया से हुआ। मंचू लोगों ने १६४४ में एक विद्रोह खड़ा कर दिया तथा कुछ भाग पर अपना अधिकार भी कर लिया। इसी विद्रोह के एक नेता ली द्जू चेंग (Li Tzu – Ch'eng) ने चीन के सम्राट् होने की घोषणा कर दी। मिंग वंश के अन्तिम शासक ने आत्महत्या कर ली।

यह सब कैसे हो गया। मंचुओं ने जब विद्रोह किया तब मिंग वंश के शासक ने अपने एक सैनिक उच्च पदाधिकारी को, जिसका नाम वू सान कुई (Wu San – Kwei) था, विद्रोह दमन करने के लिए भेजा परन्तु वह उनसे मिल गया और देश व तत्कालीन शासन के साथ विश्वासघात किया। इसी सैनिक के कारण लीत्सू चेंग पीकिंग का सम्राट् बन गया जिसने इस सैनिक को दक्षिणी चीन का वायसराय बना दिया। इस सब परिवर्तन में नरसंहार नाममात्र को हुआ। युद्ध भी नहीं हुआ केवल शासन के अधिकारी विद्रोहियों द्वारा मिला लिये गये।

१६५० से मंचुओं ने अपने पैर अच्छी तरह जमा लिये। विद्रोही नेता ली प्रथम सम्राट् तथा इस वंश का संस्थापक बना। इस वंश को चींग (Ch'ing) वंश के नाम से भी सम्बोधित करते हैं।

इस वंश के एक शासक कांग शी (K'ang Hsi) ने, जिसने १६६१ से १७२२ तक राज्य किया, चीनी शब्दों का कोष तैयार करवाया जिसमें लगभग ४४ हजार शब्द थे। दूसरे इसने एक विश्वकोष चित्रों सहित लिखवाया तथा तीसरा महान् कार्य चीनी साहित्य का एकत्रित करना था। इन तीन कार्यों के कारण इस शासक का चीन के इतिहास में नाम अमर हो गया। इतना ही नहीं इसने अंग्रेजों पर तथा उसके व्यापार

चीन
चेन लुंग के
शासन-काल में
१७३६ से १७९६ ई. तक

फलक संख्या – २१३

पर कड़ी दृष्टि रखी और ईसाई धर्म फैलने के साथ राजनीति को दूषित करने से रोका। चाय का व्यापार इसी के काल से आरम्भ हुआ।

१७३६ से १७९६ तक कांग – ही के पौत्र जियेन लुंग (Chien Lung) ने चीन पर शासन किया। इसने दक्षिण – पूर्व के देशों को अपने अधीन कर लिया। देशों के अधीन करने का तथा उनके स्वतन्त्र होने का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है। इसी शासक के शासन काल में इंगलैण्ड के राजा जॉर्ज तृतीय (George III) ने १७९२ में अपने एक प्रतिनिधि मण्डल को चीन के साथ व्यापार करने की अन्य सुविधायें प्राप्त करने के लिए बहुत से उपहारों के साथ भेजा परन्तु चेन लुंग ने और अधिक सुविधायें देने से साफ़ मना कर दिया। अब अंग्रेज़ व्यापारियों ने चुपके चुपके छिप कर अफ़ीम का व्यापार बढ़ाया।

यह व्यापार दिन पर दिन बढ़ता ही गया। डच्छ व्यापारी अफ़ीम को तम्बाकू में मिला कर बेचा करते थे। १८०० ई० में चीन सरकार ने इस व्यापार को समाप्त करने के लिए एक आदेश निकाला कि चीन की भूमि पर अफ़ीम न आने पाये परन्तु व्यापारियों ने चीनी पदाधिकारियों की जेबें गर्म कीं और अफ़ीम का व्यापार पर्दे के पीछे से होने लगा।

१८३४ तक तो यह व्यापार कुछ कम रहा क्योंकि एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ही को व्यापार करने का अधिकार था परन्तु इसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने अपने देश के अन्य व्यापारियों को भी व्यापार करने की अनुमति प्रदान कर दी जिसके कारण इस व्यापार में बहुत अधिक वृद्धि हुई। जब चीन की सरकार ने देख लिया कि उसके आदेश का पालन ऊपर से होता है तथा उल्लंघन नीचे से होता है तब उसने अपना एक विश्वासपात्र उच्च पदाधिकारी इसकी रोकथाम के लिए भेजा। कैण्टन में इसने अंग्रेज़ व्यापारियों के साथ बड़ा कड़ा व्यवहार किया। उनकी व्यापारिक कोठियों से छिपी हुई अफ़ीम के २० हज़ार बक्से नष्ट करवा दिये जिससे करोड़ों रुपयों की हानि हुई। ब्रिटिश सरकार इस हानि को सहन न कर सकी और उसने चीन की सरकार पर मानहानि का दोष लगा कर १८४० में आक्रमण कर दिया। चीनी अंग्रेज़ी तोपों एवं नौसेना के गोलों के सामने ठहर न सके। चीन को सन्धि करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

यह सन्धि नानकिंग में १८४२ में सम्पन्न हुई। ऐसी सन्धियों में विजेता सदैव अपने पक्ष की शर्तें अधिक रखता है और वैसा ही इस सन्धि में भी हुआ। २० हज़ार अफ़ीम के बक्सों को नष्ट करने के तथा युद्ध की क्षति के बदले में चीन सरकार से बहुत सा धन तथा हांगकांग के द्वीप पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया। अब तो चीन में ईसाई धर्म के प्रचारक भी आने लगे। उनको किसी प्रकार का दण्ड देने का अधिकार चीन के न्यायालयों को नहीं था चाहे वह किसी प्रकार का दण्डनीय कार्य करें। इस प्रकार दिन पर दिन चीन की सरकार शक्तिहीन होती गई तथा विदेश के व्यापारी शक्तिमान् होते गये।

१८५० में एक महान् क्रान्ति हुई जिसको हुंग शीन जुआन (Hung Hsin Chuan) ने चलाया। इसमें लगभग दो करोड़ मनुष्य मारे गये। इधर तीन अन्य विदेशी शक्तियाँ इस सन्धि में सम्मिलित हो गईं जिनका नाम था अमरीका, फ्रांस तथा रूस। अब इन शक्तियों ने एक नई सन्धि करने के लिए चीन सरकार को बाध्य किया। विदेशी मण्डल बुलाये गये और उनको अमुक मार्ग से आने को कहा गया परन्तु विजेता होने के घमण्ड में दूसरे मार्ग से आये। चीनी सैनिकों ने गोली चला दी जिसके फलस्वरूप विदेशी सैनिकों ने पीकिंग नगर को खूब लूटा। १८६० में सन्धिपत्र पर सबके हस्ताक्षर हो गये।

१८६४ में एक चीनी प्रांत – पति ने क्रान्ति कर दी जिसका नाम ली हुआंग चांग (Li Huang ch'ang) था। इस विद्रोह को सरकार समाप्त नहीं कर पायी कि दूसरा विद्रोह चीनी अफ़सरों के विरुद्ध

चीन १६०० ई० में

फलक संख्या – २१४

मध्य एशिया के मुसलमानों ने कर दिया। १८८५ में चीन का युद्ध फ्रांस से हो गया। चीन पराजित नहीं हुआ। १८८६ में चीन ने बर्मा ले लिया। इन दिनों चीन में एक महारानी द्ज़ू शी (Tzu Hsi) शासन करती थी। १८९४ में डा० सनयात सेन (Dr. Sunyat Sen) ने चाइना रिवाइवल सोसायटी (China Revival Society) को जन्म दिया। १९०८ में महारानी के मरणोपरांत एक शिशु सम्राट् बना।

१९११ में डा० सेन की सोसायटी का नाम परिवर्तित करके पीपिल्स नेशनल पार्टी (Peoples National Party) रख दिया गया। अक्टूबर १९११ में मध्य तथा दक्षिण चीन में क्रान्ति हो गई। पहली जनवरी १९१२ को स्वतंत्र प्रांतों में लोकतंत्र की घोषणा हो गई। नानकिंग राजधानी बनी तथा डा० सेन उसके राष्ट्रपति बने।

१२ फरवरी १९१२ को मंचु वंश के अंतिम शासक ने राजगद्दी को त्याग दिया। उत्तर में युयान (Yuan) ने अधिकार किया। इधर चीन – जापान युद्ध हुआ जो वर्षों चलता रहा। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् चीनी साम्यवादियों का अधिकार बढ़ता गया और एक दिन १९४९ को राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति चियांग काइ शेक (Chiang K'ai – Shek) को फ़ारमूसा (तैवान) के द्वीप में जाकर अपना डेरा डालना पड़ा। अब दो चीन सरकारें बन गई। एक राष्ट्रीय चीन सरकार तैवान में तथा दूसरी साम्यवादी सरकार चीन की मुख्य भूमि पर। साम्यवादी सरकार को विश्व के बहुत से देशों ने मान्यता प्रदान नहीं की। जब अमरीका ने मान्यता प्रदान की तब सारे देश इसको मानने लगे। १९७१ में यह संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बन गया और तैवान को संघ से निष्कासित करा दिया गया।

चीन की लेखन कला

परिचय : संसार के किसी देश की भाषा (बोली व लिपि) इतनी जटिल नहीं है जितनी चीन की। यह भी बड़े आश्चर्य की बात है कि चीन ने अपनी सांकेतिक लिपि के लगभग ४०,००० एकाक्षरी (Monosyllabic) और संयुक्त (Compound) शब्दों द्वारा इतनी वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति कर ली कि आज वह रूस व अमरीका जैसे प्रगतिशील देशों से प्रतियोगिता करने को तत्पर है।

इस भाषा में स्वर (Vowels), उपसर्ग (Prefixes) तथा शब्दों के अन्त में प्रत्यय (Suffixes) जोड़ने का प्रयोग नहीं होता था। एक शब्द क्रिया, संज्ञा अथवा विशेषण कुछ भी हो सकता था परन्तु उसका मूलरूप परिवर्तित नहीं होता था। अब व्याकरण का प्रयोग होने लगा है।

प्रचलित चीनी भाषा में जो आज विदेशों में सिखाई जाती है, दो प्रकार का मिश्रण है :—

१. श्रवणीय चिह्नों की पद्धति (System of Auditory Symbols)।

२. दृष्टिक चिह्नों की पद्धति (System of Visual Symbols) जिसमें रेखाओं के सम्मिलन से लिपि प्रयोगात्मक बनाई जाती है (Stroke Combinations – Called Characters)।

प्रोफ़ेसर ली[1] मण्डारिन (Mandarin) को पीकिंग (आधुनिक बीजिंग) भाषा सम्बोधित करते हैं। ५०० वर्षों से इसका समाज में उच्च – स्तर रहा है। इसी कारण इसका नाम गुआन ह्वाह (Kuan Hua) अर्थात् 'अफ़सरों की भाषा' पड़ गया परन्तु पश्चिमी देश – वासी इसको मण्डारिन पुकारते हैं। प्रो० ली के अनुसार चीन में आठ मुख्य भाषायें प्रचलित हैं जिनका नाम निम्नलिखित है :—

---

1. फ़ांगुई ली (Fang – Kuei Li) हवाई (Hawaii – U. S. A.) विश्व विद्यालय के १९३७ में प्रोफ़ेसर थे।

१. उत्तरी मण्डारिन
२. पूर्वी मण्डारिन
३. दक्षिणी मण्डारिन
४. वू
५. कान – हक्का
६. मीन
७. कैन्टोनीज़
८. हुई यांग

१९२३ में पीकिंग भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने का एक आन्दोलन चला जिसमें ध्वन्यात्मक वर्णों का आविष्कार किया गया। १९१८ में चीन की सरकार ने इसको मान्यता प्रदान कर दी। छः दशक के पश्चात् अधिकांश चीनी तथा तैवान एवं सिंगापुर निवासी पीकिंग – भाषा का प्रयोग करने लगे और इस भाषा का नाम 'पू – टंग – ह्वा (p'u – T'ung – hua)' अर्थात् 'साधारण भाषा (Common Language)' पड़ गया।

माओ के शासन – काल में अनेक शब्दों को जो पूँजीवादी समाज में प्रचलित थे, परिवर्तित कर दिया गया।

चीनी व्याकरण की एक झलक : यहाँ की व्याकरण[1] अन्य भाषाओं के प्रकार से प्रयोग नहीं की जाती। उसके कुछ ही उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियों में दिये गये हैं :—

संज्ञा (Noun) **:** इसमें शब्दों को स्त्री – लिंग या पुल्लिग नहीं माना जाता जिस प्रकार हिन्दी भाषा में प्रयोगात्मक है। इसमें स्त्री और पुरुष के नामों के पूर्व शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाया जाता है। 'नान (Nan)' शब्द का प्रयोग पुरुष के नाम के पूर्व तथा 'न्यु (Nü)' का प्रयोग स्त्री के नाम के पूर्व किया जाता है।

पशुओं में स्त्रीलिंग – पुल्लिग के लिए पृथक् शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नर के नाम के पूर्व 'मू (Mu)' तथा मादा – पशु के नाम के पूर्व 'पीन (P'in)' प्रयोग किया जाता है।

एक – वचन बहु – वचन संज्ञा के लिए अधिकांश इस प्रकार प्रयोग किया जाता है, जैसे, 'नान रन मन (Nan jên mên)' अर्थात् अनेक पुरुष। 'नीउ रन मन (Nü jên mên)' अर्थात् अनेक स्त्रियाँ।

अभिपद (Article) : 'ए या ऐन (a or an)' को 'ई (i) = एक' के द्वारा व्यक्त करते हैं, जैसे 'ई गो रन (I Ko jên)' अर्थात् 'एक मनुष्य'।

विशेषण (Adjective) : 'यह या वह' को 'ज गो (Chê Ko) = यह (This)' तथा 'न गो (Na Ko) = वह (That)' बहुवचन बनाने के लिए एक शब्द 'शीय (hsieh)' जोड़ देते हैं, जैसे, 'ज शीय रन (Chê hsieh jên) = यह मनुष्य (These men)। 'ना शीय रन (Na hsieh jên) = वह मनुष्य (Those men)

व्यक्ति – वाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) **:** 'ह्वो (Wo)' = मैं, मुझे; 'नी (Ni)' = तुम; 'टा (T'a)' = वह (he, she, it)। बहुवचन बनाने के लिए 'मन (mên)' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे, 'ह्वो मन (Wo – mên) = हम (we), हमको (Us); 'नी मन (Ni – mên)' = तुम; 'टा मन (Ta – Mên)' = वे, उनको (They, them)।

प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative Pronouns) **:** 'श्वे (Shui)' = कौन है ?; 'श्वे डी (Shui ti)' = किसका है ? इस प्रकार 'श्वे (Shui)' शब्द जोड़ने से प्रश्नवाचक बन जाता है; जैसे, 'ना गो रन श्व

1. Williamson, H. R. : Teach Yourself Books – Chinese (1972), p. – 425.

श्वे (Na ko jên shih shui)' = कौन है ? (Who is that ?)। 'ना शीय डुंग शी शर श्वे डी (Na hsieh tung hsi shih shui ti)' = वह किसकी वस्तुएँ हैं ? (Whose are those things ?)।

क्रिया (Verb) : क्रिया के तीन काल :—भूत काल (Past Tense) 'व्हो लाई गुओ (Wo lai kuo)' = मैं आया (I came), मैं आ गया (I have come).

वर्तमान (Present Tense : ' व्हो लाई (Wo lai)' = मैं आ गया; मैं आ रहा हूँ।

भविष्य (Future Tense) : क्रिया के पूर्व 'जियंग (Chiang)'; 'याओ (yao)'; 'ज्यू (Chiu) आदि शब्द जोड़ देने से बन जाता है।

'श्व ह्वा ज्यू लाई (Shuo hua chiu lai) = जैसे ही आप बोले, वह आता है; 'टा ली को ज्यू लाई (T'a li k'o chiu lai) वह तुरन्त आयेगा।

चीन में साक्षरता : इस देश में साक्षरता का अभाव आरम्भ से ही रहा। उसके दो मुख्य कारण थे – 'भाषा' एवं 'लिपि'। 'भाषा' में फ़ोनेटिक्स (Phonetics – प्रत्येक ध्वनि के लिए प्रत्येक अक्षर) नहीं थे और इसके स्थान पर थी टोन – पद्धति (Tone – System) जो एक स्थान से दूसरे स्थान में अन्तर रखती थी। दूसरा कारण था 'लिपि', जो संकेतात्मक न रह कर रेखात्मक (Written by Strokes) बन गयी थी।

इन दो कारणों से केवल कुछ धनवान् – जिनके पास अभ्यास के लिए अधिक समय तथा धन होता था, इसको सीख सकते थे। यह धनवान् इसी बात के इच्छुक भी थे कि अधिक जनता साक्षर न हो जाये नहीं तो उस पर सर्वाधिकार जमाना कठिन होगा।

चीन निवासी जिन्होंने १८०० वर्ष पूर्व काग़ज़ का आविष्कार[1] लकड़ी के गूदे से किया था। वैसे इसके पूर्व मिस्र में काग़ज़ था परन्तु वह रीड (Reed – सरकण्डा) से निकले गूदे से बनता था। यही काग़ज़ योरोप निवासियों ने केवल ५०० वर्ष पूर्व बनाया। मुद्रण[2] भी चीन में १२०० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ और संसार की सर्वप्रथम पुस्तक ८४८ ई० सन् में ह्वांग जिये (Wang Chieh) ने वर्तिलेख (Scroll) के रूप में, जिसमें भारतीय हीरक – सूत्र चीनी लिपि में मुद्रित था और जो १९०० में प्राप्त हुआ था, प्रकाशित की थी और योरोप में मुद्रण केवल ५०० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ। चीन में साक्षरता न्यून रही और योरोप में ९८ प्रतिशत हो गयी, उसका कारण था ध्वन्यात्मक लिपि।

चीनी लिपि की विदेश यात्रा : इतनी कठिन होने पर भी इस लिपि का बहिर्गमन हुआ और कोरिया, जापान, तैवान, वियतनाम तथा सिंगापुर पहुँची। कोरिया ने अपनी एक लिपि का आविष्कार कर लिया और १९४५ में इसका बहिष्कार कर दिया। जापान ने अपनी लिपि का आविष्कार किया परन्तु चीनी वर्णों का प्रयोग भी होता रहा जो कम होते होते दस सहस्र से लगभग दो सहस्र वर्ण रह गये। आज भी जापानी लिपि के साथ चीनी लिपि का प्रयोग सम्मानजनक समझा जाता है। तैवान तथा सिंगापुर में भी चीनी लिपि प्रचलित है परन्तु वियतनाम ने इसका स्थान फ्रेंच लिपि को प्रदान कर दिया।

1. Parker B. M. : The Golden Book Encyclopedia, Vol. XI, p. – 1052.
2. Ibid : Vol. XII, p. – 1134.

चीनी लिपि का सुधार : माओ ने १९४० में कहा "चीनी लिपि का सुधार होना चाहिए तथा चीनी भाषा जनता के समीप आनी चाहिए।" १९५५ में चीनी सरकार ने 'चीनी लिपि सुधार कमीशन' नियुक्त किया तथा एक 'सर्व चीनी अधिवेशन' का, चीनी लिपि में संशोधन करने के लिए, आयोजन किया।[1]

इस अधिवेशन में चीनी लिपि में सुधार करने के तीन निम्नलिखित मुख्य कारणों पर विचार–विमर्श हुआ :—

१. चीनी लिपि बाल – शिक्षा तथा प्रौढ़ – शिक्षा पर एक भारी बोझ सिद्ध हुई है तथा श्रमिक व कृषक के तीन – वर्षीय साक्षरता के परीक्षण को निष्फल कर दिया। साथ साथ साक्षरता की योजना पर भी बुरा परिणाम डाला।

२. चीनी लिपि ने चीनी विद्यार्थियों के समय तथा शक्ति को नष्ट किया। प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थी बड़ी कठिनाई से केवल ३००० शब्द लिखना तथा पढ़ना सीख पाते थे जिसके द्वारा वे कोई वैज्ञानिक विद्यालय में शिक्षार्थी बनने के अयोग्य रह जाते थे। उनको दो वर्ष केवल लिपि सीखने के लिए लगाने पड़ते थे। विज्ञान की विदेशी पुस्तकों के अनुवाद में भी चीनी लिपि ने अनेक समस्यायें खड़ी कर दीं। इस कारण चीन की वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति में अवरोध उत्पन्न होने लगे।

३. चीनी लिपि ने आधुनिक सांस्कृतिक जीवन पर भी बुरे परिणाम डाले। यह लिपि टंकणयंत्र (type – writer) मुद्रणयंत्र (printing – press) तार – प्रेषण तथा कम्पियूटर आदि के लिए भी एक बोझ बन गयी। तार घर में अनेक अनुवाद करने वाले रखे जाते थे। विदेशी तार भेजने में बहुत बिलम्ब होता था।

अन्त में इस अधिवेशन द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि चीनी लिपि को वर्णात्मक बनाया जाये। इसके लिये रोमन लिपि का प्रयोग किया जाये। सम्भव है इस शताब्दी के अन्त तक चीनी लिपि का रूप परिवर्तित होकर पूर्णतया रोमनीकरण हो जाये।

जब से चीनी लिपि का जन्म हुआ तब से उसमें सदैव सुधार व संशोधन होते रहे। आज एक निपुण चीनी विद्यार्थी एक घण्टे में ३०० शब्दों से अधिक नहीं लिख सकता। संसार में कुछ वर्ष पूर्व तक चीनी भाषा पर कोई ऐसी पुस्तक नहीं थी जिसकी आलोचना न की गई हो अथवा जिसको पूर्णतया शुद्ध व त्रुटि – रहित माना गया हो। पुस्तक का यह पाठ भी त्रुटि – रहित नहीं हो सकता। लू शुइन (Lu Hsün)[2] के अनुसार "चीनी लिपि न यहाँ है न वहाँ – केवल एक गड़बड़ – झाला है।"

चीनी सरकार ने अब निश्चय कर लिया है कि चीनी लिपि का रोमीकरण अनिवार्य रूप से कर दिया जाये। उसमें अब यह परिवर्तन लाये जायेंगे, जैसे 'c' की ध्वनि 'ट्स् (Ts'u)', 'q' की 'जी (Chi) और 'X' की 'शी (hsi)' हो जायेगी। इसके अर्थ यह हैं कि रेखाओं का प्रयोग चीनी लिपि के चित्रों के निर्माण के लिए नहीं होगा। इससे कितनी अव्यवस्था होगी इसका अनुमान लगाना कठिन है।

---

1. Chung, Tan (J. N. U. – New Delhi) : 'Intricacies of Chines Language (s) and Script' – Article published in Organiser – October 29, 1978. P – 40. Mao, "Written. Chines must be reformed and the spoken language should be brought closer to that of the people."
2. Hsün,Lu : ".........the Chinese Script is neither here nor there a mere hotch – potch." (Taken from 'Organiser' New Delhi weekly – 29th. October, 1978., p. – 40. Column. 2.)

इस परिवर्तन से सबसे बड़ी समस्या यह होगी कि चीन की संकेतात्मक लिपि की अनुपस्थिति में, जो अभी तक चीन की भिन्न भिन्न भाषाओं को एक सूत्र में बाँधे थी, वह एकता समाप्त हो जायेगी। इसके अतिरिक्त जो पीकिंग भाषा – भाषी नहीं हैं, तब उनके सामने ध्वन्यात्मक लिपि के वर्ण आयेंगे, वे अपने आपको निरक्षर समझने लगेंगे।

जब २००० ई० सन् तक पूर्ण चीन आधुनिक उद्योग व व्यवसाय अपना लेगा। संसार के अन्य देशों से उसके पर्याप्त सम्पर्क स्थापित हो जायेंगे तब लिपि का रोमनीकरण अधिक सम्भव हो पायेगा, और तब चीन का २००० वर्ष का प्राचीन लिपि का यशस्वी इतिहास संग्रहालयों को सुसज्जित करेगा। चीन का भूतपूर्व सांस्कृतिक गौरव लिपि के साथ समाप्त हो जायेगा और चीन भी एक आधुनिक देश में परिवर्तित हो जायेगा।

चीन की लिपियाँ

बा गुआ : आरम्भ में विचारों को व्यक्त करने के लिए तथा संवाद भेजने के लिए चीन में भी गाठों का प्रयोग होता था। पौराणिक काल के एक महाराजा फ़ू शी (Fu – Hsi) ने २८०० ई० पू० में आठ रहस्य - वादी त्रिपुण्डों (Eight mystic Trigrams)[1] का निर्माण किया जिनको चीनी भाषा में बा[2] गुआ (Pa – Kua) कहते हैं। इन तीन पंक्तियों को जगह जगह पर काट काट कर निम्नलिखित शब्दों का निर्माण किया जिनको चीनी भाषा के शब्दों के साथ दिया गया है :—(फ० सं० – २१५)।

क्रमांक	शब्द	चीनी भाषा	विवरण
१.	स्वर्ग	गान	तीन पक्तियाँ हैं।
२.	तोलना	डिन	ऊपर की पंक्ति कटी है।
३.	पानी	शुई	मध्य पंक्ति कटी है।
४.	गड़गड़ाहट	चेन्	ऊपर की दो पंक्तियाँ कटी हैं।
५.	लकड़ी	शू	नीचे की पंक्ति कटी है।
६.	त्याग	कन्	ऊपर व नीचे की पंक्तियाँ कटी हैं।
७.	सीमा	गेन्	नीचे की दो पक्तियाँ कटी हैं।
८.	पृथ्वी	गुन	तोनों पंक्तियाँ कटी हैं।

इस प्रकार आठ शब्दों का निर्माण हुआ। तदनन्तर एक पक्ति और जोड़कर आठ नये शब्द बने। इसी प्रकार छः पंक्तियों तक जोड़कर ४८ शब्दों का निर्माण किया गया।

चीन की प्राचीन लिपि : ली नाम के एक किसान को खेत में कुछ अद्भुत प्रकार की हड्डियाँ मिलीं। यह घटना १८६० की है जो होनान[3] प्रदेश के सिआव टुन नामक स्थान में घटी। उस किसान ने सोचा यह हड्डियाँ[4] ड्रैगन की हैं। उस समय चीन की देशी औषधियों के लिए हड्डियाँ अति शक्तिशाली मानी जाती थीं। ली ने यह हड्डियाँ रासायनिकों के हाथ में रखीं। इन लोगों ने इनका चूर्ण बना डाला तथा स्नायविक रोगों के

1. Taken from C. Gardner's – Journal of Ethnological Society (1870), Vol. II, p. – 5.
2. वा=आठ।
3. भूपेन्द्र नाथ सान्याल : आदिम मानव समाज (१९६१) पृष्ठ – 2.
4. यह हड्डियाँ वैल की अथवा मृतक कछुओं की पीठ की होती थीं।

आठ त्रिपुण्ड

प्राचीन रेखा चित्र

फलक संख्या – २१५
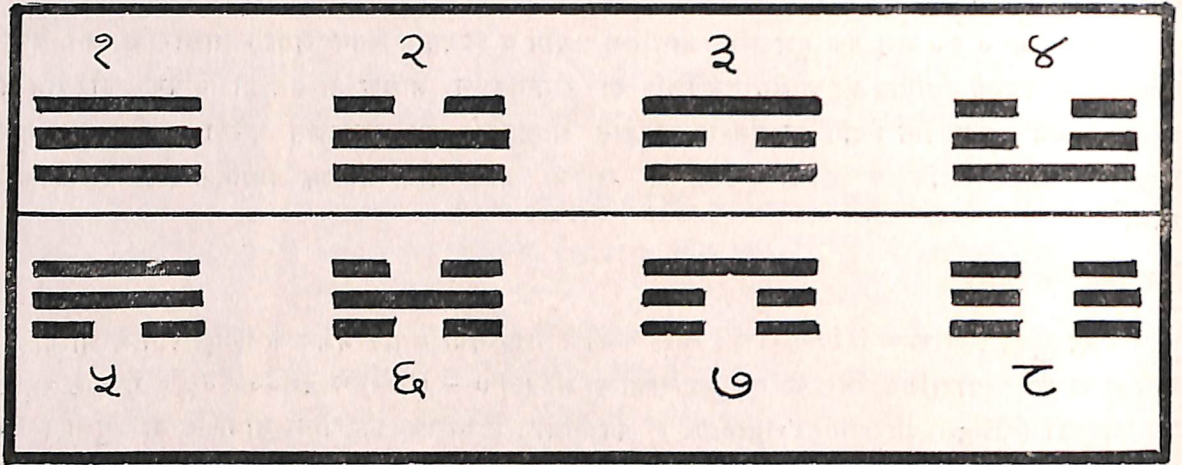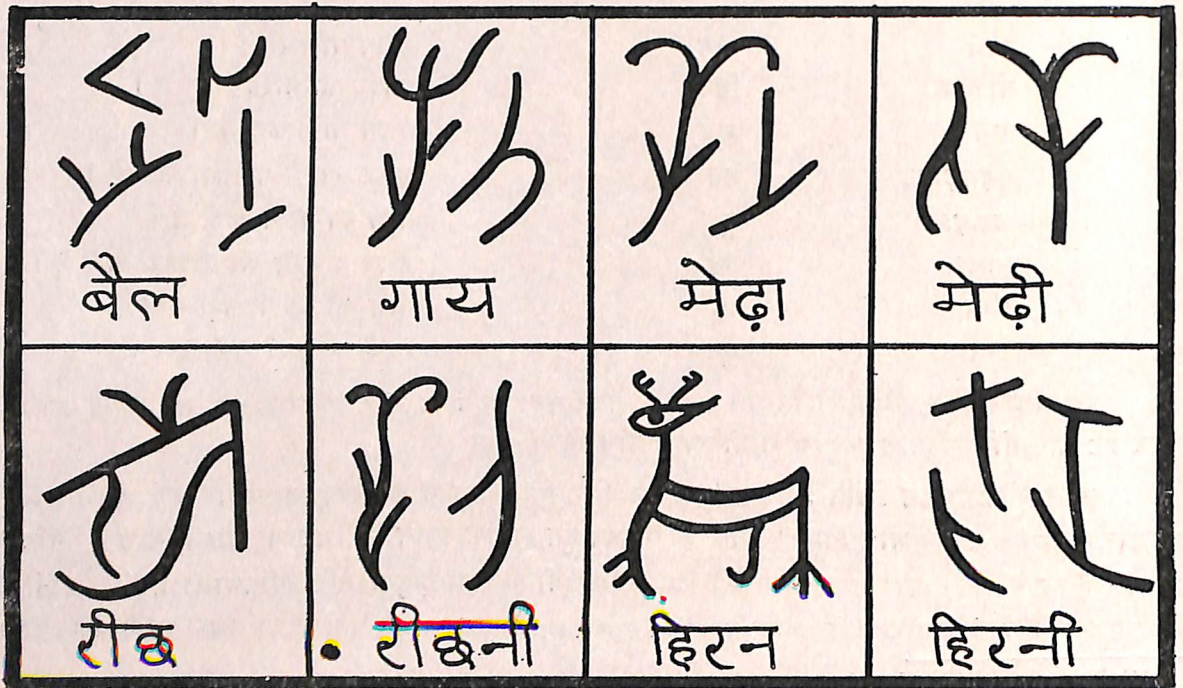
अनमोल उपचार के रूप में बेचा। एक रासायनिक की दूकान पर एक पुरातत्त्ववेत्ता पहुँच गया। जब उसने हड्डियों पर अंकित कुछ चिह्नों को देखा तो उसने उन चिह्नों को एक लिपि के अनुरूप मान लिया। अब पुरातत्त्ववेत्ताओं ने वे हड्डियाँ खरीदना आरम्भ कर दीं। लगभग ३० वर्ष बाद १८९९ में हड्डियों पर अंकित चिह्नों की व्याख्या की जा सकी।

प्राचीन काल में इन हड्डियों के द्वारा भविष्यवाणी की जाती थी। जिस प्रश्न का उत्तर मांगा जाता था पुरोहित लोग हड्डी पर अंकित कर देते थे तदनन्तर उसको गर्म करते थे। गर्मी से हड्डी में जिस दिशा में दरार पड़ जाती थी उसी प्रश्न का उत्तर 'हाँ' या 'न' में माना जाता था। यह हड्डियाँ राजा के महलों में रखी जाती थीं। यह राजा शांग वंश (१७६५ – ११२३ ई० पू०) के काल के थे। यह राजा खेती की फ़सल, युद्ध या राजनीति के विषय में प्रश्न पूछा करते थे। सूंग[1] ने अपनी पुस्तक में यह काल १७६६ – ११५० ई० पू० माना है। 'फ० सं० – २१६' पर दिये गये चित्र इसी पुस्तक[2] से लिये गये हैं।

चीनी लिपि का कालानुसार विकास : जब से चीनी लिपि का जन्म हुआ तब से अब तक उसका विकास[3] होता रहा और सम्भवतः होता रहेगा, जब तक पूर्णतया यह ध्वन्यात्मक नहीं बन जाती अथवा जब तक पूर्णतया इसका रोमनीकरण नहीं हो जाता। आदि काल से अब तक उसके नामों में भी परिवर्तन होते रहे, जो निम्नलिखित हैं और 'फ० सं० – २१७' पर दिये गये हैं :—

१. **जिया गू वन** (Chia – Ku – Wên[4]) : इसके अर्थ हैं खोल (Shell) एवं हाड़ लिपि। खोल अधिकतर मृत कछुओं की पीठ के और हाड़ मृत बैलों के होते थे। इनको ओरैकिल बोन्स (Oracle Bones) अर्थात् आकाशवाणी द्वारा अंकित खोल या हाड़। बाज़ार में इनको ड्रैगन[5] – बोन्स (Dragon Bones) के नाम से बेचा जाता था। इसमें ८०० मौलिक चित्र थे जिनका रूपान्तर करके अन्य शब्दों का निर्माण किया गया। इनकी संख्या ३४६९ तक पहुँच गई। इस लिपि का काल १०८० से ८०० ई० पू० तक माना जाता है।

२. **डा जुआन** (Ta Chuan) : इस लिपि का विकास गू-वेन लिपि के द्वारा एक चीनी विद्वान् डाइ शी (Tai Hsi) ने ई० पू० की आठवीं श० में किया। इसका प्रयोग ६०० ई० पू० तक चलता रहा।

३. **चाउ वन** (Ch'ou Wên) : इसका विकास सामन्त शाही चाउ वंश के शासन काल में हुआ इसको बड़ी – मुद्रा – लिपि भी कहते थे। इसका काल ६०० से ४०० ई० पू० माना जाता है। ली शी (Li Hsi) ने एक ३००० शब्दों का शब्द – कोष संकलित किया।

४. **शियाओ जुआन** (Hsiao Chuan) : इसका विकास ४०० से २५० ई० पू० माना जाता है।

५. **ली शू** (Li – Shu) : इसको कारापाल लिपि (Jailor Script)[6] भी कहते हैं। इसका आविष्कार चीन वंशीय शासक शेर हुआंग ती (Ch'in – Shih – buang – ti)[7] के शासन काल में हुआ।

1. Sung, Y. F. : Chinese in 30 Lessons. (Hollywood 1945). p, – 26.
2. Chalfant, F. H. : Memories of the Carnegie Museum IV. (1906), p. – 32.
3. Blackney : A Course in the Analysis of Chinese Characters (Shanghai 1926), p. – 11.
4. W'en – 'वन' = साहित्य।
5. 'ड्रैगन' चीन का पौराणिक जीवधारी माना जाता है। इसको स्वर्ग – नरक का चौकीदार मानते हैं। यह लम्बा सर्पाकार लम्बे नख वाला शेर के जैसा मुँह वाला भयानक पशु चित्रों में प्रदर्शित किया जाता है।
6. Dr. Tan Chung : 'The Intricacies of Chinese Languages and Script' – Published in 'Organiser' – (Periodical) October, 29. 1978, p. – 11.
7. इसको 'शू हुआंग तो' भी कहते हैं।

चीन की प्राचीनतम् लिपि

फलक संख्या – २१६
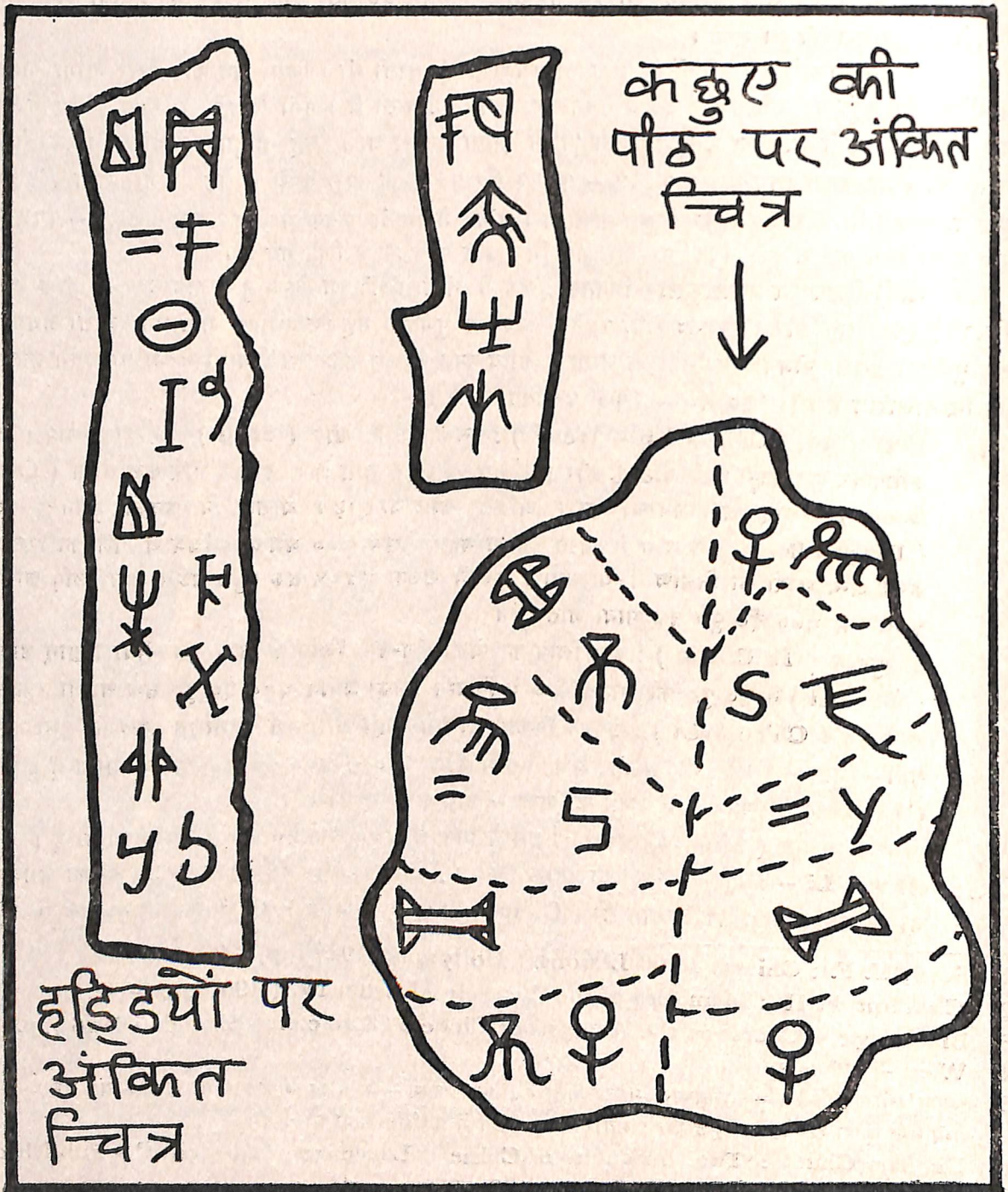
इसने बहुत से सुधार किये परन्तु अत्याचार भी बहुत किये। जब बन्दियों से कारागार भरने लगे, तो एक कारागार के पदाधिकारी जंग मियाओ (Cheng Miao) ने सारे बन्दियों को पंजीकृत करने के लिए कुछ रेखाओं (Strokes) का प्रयोग कर इस नई लिपि का आविष्कार किया। इसका काल २५० से १०० ई० सन् माना जाता है। रेखाओं (Strokes) का प्रयोग इस काल से ही आरम्भ हुआ। ईसा की प्रथम श० में शू शन (Shu – Shen) द्वारा १०,५१६ शब्दों का एक शब्द – कोष संकलित किया गया।

अन्त में अठारहवीं श० में सम्राट् कांग शी[1] (K'ang – Hsi) ने ४४४४ शब्दों के एक शब्द – कोष का निर्माण करवाया। गाइल्स[2] के शब्द – कोष में १०,८५९ शब्द हैं।

६. **त्साओ – शू (Ts'ao – Shu) :** त्साओ के अर्थ हैं 'घास' तथा 'शू' के अर्थ 'किताब'। इसका काल १०० ई० से २०० तक रहा।

७. **बा फ़न शू (Pa Fen Shn) :** इसका विकास एक विद्वान् ह्वांग ड्सी जंग (**Huang Tsi Cheng**) ने किया। इसका काल २०० ई० से ३०० ई० तक माना जाता है।

८. **काए – शू (K'ai – Shu) :** इसका विकास ३०० से ४०० ई० तक रहा। इसका प्रयोग सुलेख के लिए किया जाता था।

९. **शिंग – शू (Hsing – Shn) :** इसका विकास ४०० ई० से ८०० ई० तक होता रहा। इसका प्रयोग शीघ्र तथा घसीट लिखने के लिए किया जाता था।

इसी फलक पर ऊपर की पंक्ति में लिपि का रूपान्तरण ६ शब्दों (आकाश, अग्नि, पवन, जल, पर्वत, पृथ्वी) के प्रतिदर्श द्वारा दिया गया है। इन ६ शब्दों को कैसे लिखा जाता है, 'फ० स० – २२४' पर दिया गया है।

चीनी लिपि की ध्वनि – बल (टोन – Tone) पद्धति : चीनी लिपि में ध्वनि – बल अर्थात् टोन का प्रचलित होना विदेशियों के लिये, जो चीनी भाषा बोल तो लेते हैं परन्तु बोलने में किस प्रकार का कहाँ पर बल दिया जाये पूर्णतया नहीं जान पाते, इस कारण अनेक बार अर्थों में परिवर्तन हो जाता है। उदाहरणार्थ 'गान – बेई (Kan – pei)' के अर्थ हैं 'सद्भावना के लिए अतिथि के स्वास्थ्य के लिए मदिरा पान किया जाये (Toast for health) परन्तु इसके संक्षिप्त अर्थ हैं 'औंधे हो जाना (bottoms up)', जब एक अमेरीका के उच्च अधिकारी दम्पती अतिथि को टोस्ट द्वारा सद्भावना प्रदान की गयी तो उनके सचिव ने अंग्रेजी में चीनी भाषा का अनुवाद किया "हम इच्छुक हैं कि आप औंधे हो जायें।" इस प्रकार की अनेक घटनायें होती रहती हैं जो ध्वनि – बल के अन्तर के कारण घटित हो जाती हैं।

चीनी भाषा में अधिकांश चार टोन का प्रयोग होता है। वैसे पीकिंग की पूर्वकालिक मण्डारिन में पाँच टोन का भी प्रयोग किया जाता है। इन ध्वनियों (tones) को लिपि – बद्ध करना असम्भव है। इनका प्रयोग पाँचवीं श० में आरम्भ हुआ। उसका कारण था चीनी भाषा में एक ही ध्वनि वाले अनेक शब्दों (homophones) का उपस्थित होना। ध्वनि – बल के प्रयोग द्वारा उनमें अन्तर पड़ने लगा तथा उनके अर्थ भी शुद्ध होने लगे।

ध्वनि – बल (टोन) के प्रयोग के पूर्व, प्रोफ़ेसर टान चुंग के अनुसार 'ई (yi)' शब्द के निम्न – लिखित अर्थ थे :— डाक्टर, यन्त्र, कपड़े, कुर्सी, साँप, चींटी, दस करोड़, वर्तमान, हानि, तरल पदार्थ, बह

1. Williamson, H. R. : Teach yourself Chinese (1972), p. – 6.
2. Ibid.

निकलना, नियत, अन्तर, निर्भर, स्थानान्तरण, सरल, प्रसन्न, वंशज, विदेशी, कल, स्वप्न, संक्रामक, वार्तालाप, अनुवाद, लटकाना, चमकना, द्रुम, पर, शेष, आशा, मित्रता, दमन इत्यादि।

एक अन्य चीनी विद्वान् के अनुसार 'शर (Shih)' शब्द के लिए २३९ संकेतात्मक चित्र (५४ प्रथम टोन में, ४० द्वितीय टोन में, ७९ तृतीय टोन में तथा ६६ चतुर्थ टोन में) प्रयोग किये जाते हैं। राज्य भाषा मण्डारिन में ६९ शब्द ऐसे हैं जिनका उच्चारण 'इ (i)' है, २९ ऐसे हैं जिनका उच्चारण 'गू (KU)' है तथा ५९ ऐसे हैं जिनका 'शर (Shih)' है। इसी से पाठक चीनी भाषा व लिपि सीखने की कठिनाई को समझ सकते हैं।

अमेरिका के बर्कले स्थित कैलीफ़ोर्निया विश्वविद्यालय के एक चीनी शिक्षक प्रो० युयेनरेन चाओ (Yuen Jen Ch'ao) ने एक चालीस शब्दों की कहानी लिखी जिसमें लड़का गेण्डे से खेलता है। यह कहानी केवल एक शब्द 'शी (Hsi)', जो पूर्वकालिक चीनी – इंगलिश शब्दकोष में मिलता है, को प्रयोग करके लिखी गई थी। इसमें 'शी' शब्द को भिन्न भिन्न टोन में ४० बार प्रयोग किया गया था। कितनी रोचक तथा आश्चर्यजनक कहानी होगी जो एक ही शब्द से लिखी गई।

चीनी लिपि के चार टोन : इन चार टोन का किस प्रकार उच्चारण किया जाये 'फ० सं० – २१८' पर रेखाकृति द्वारा दर्शाया गया है। इससे पाठकों को कुछ ज्ञान हो जायेगा कि टोन – पद्धति क्या वस्तु है। रेखाकृति में एक शब्द 'डू' लिया गया है और उसको एकसा, मोटे से छोटा, छोटे से मोटा तथा ऊपर को एकसा बनाया गया है। छोटे 'डू' की बारीक व ऊँची ध्वनि तथा मोटे 'डू' की मोटी व नीची ध्वनि निकालनी पड़ती है। प्रत्येक कालम में रेखाकृति एक बाण सहित दी है। उसके नीचे उस टोन का क्रम। फिर उसका चीनी भाषा में तथा रोमन लिपि में नाम दिया गया है। प्रत्येक नाम के ऊपर सीधी ओर अंग्रेज़ी के अंकों में टोन का क्रम तथा प्रत्येक रोमन लिपि के चीनी शब्द में स्वर के ऊपर टोन का चिह्न दिया है। उसके नीचे हिन्दी में नीचे लिखे चीनी शब्दों का उच्चारण दिया गया है। उसके नीचे रोमन लिपि के स्वरों पर लगाने के लिए प्रत्येक टोन का चिह्न और अन्त में चीनी लिपि में प्रत्येक टोन का नाम। यही पद्धति प्रत्येक कालम में दी गयी है। उसी 'फ० सं० – २१८' पर नीचे की ओर दो शब्दों (शर; ची) के प्रतिदर्श दिये हैं। इन्हीं दो शब्दों के प्रत्येक टोन में क्या अर्थ होते हैं चीनी – लिपि – चित्रों के नीचे दिये गये हैं। नीचे सीधी ओर एक शब्द (माई) दिया गया है जिसके टोन परिवर्तन से अर्थ भी उलटे हो जाते हैं।

प्रत्येक टोन के विषय में कुछ समझ लेने के पश्चात् यह जान लेना अति आवश्यक है कि टोन का शुद्ध प्रयोग बिना किसी चीनी शिक्षक के सीखा नहीं जा सकता और यदि किसी और से सीखा है तो कोई बड़ी भूल होने की सम्भावना अनिवार्य रूप से रहेगी।

प्रथम टोन : इसको 'ईन पिंग[1] (Yin P'ing) अथवा 'शांग पिंग शंग[2] (Shang P'ing Shêng) कहते हैं। इसके अर्थ हैं "एक समान भारी टोन" अथवा "ऊँची समान टोन"।

द्वितीय टोन : इसको सूंग की पुस्तक में 'यांग पिंग (Yang P'ing)' तथा विलियमसन की पुस्तक में 'शिया पिंग शंग (Hsia P'ing Shêng) कहते हैं। इसके अर्थ हैं "साफ़ तथा चमकीली।" इसमें प्रथम टोन के प्रकार से ध्वनि का प्रयोग करते हैं तत्पश्चात् उसको पतला करते चला जाना चाहिये। इसको नीची – समान ध्वनि में प्रयोग किया जाता है जैसा कि फलक पर दिया है।

1, Sung, Yu Feng : Chinese in 30 Lessons (1945), p. – 8.
2. Williamson, H. R. : Teach Yourself Chinese (1972), p. – 27.

तृतीय टोन : इसको सूंग व विलियमसन की दोनों पुस्तकों में केवल 'शांग शंग (Shang Shêng) ही सम्बोधित किया गया है। इसको "उठती टोन" या "शीघ्रता से उठायी जाने वाली ऊँची टोन" कहते हैं।

चतुर्थ टोन : इसको भी सूंग व विलियमसन की दोनों पुस्तकों में 'चू शंग (Ch'u Shêng)' ही सम्बोधित किया गया है। इसको "प्रक्षिप्त (departing or Projected) टोन" कहते हैं। इसमें 'ड्रू' शब्द को तेजी से एकसा उठा कर समान ध्वनि में उच्चारण किया जाता है।

चीनी लिपि का वर्गीकरण : मूलतः २१४ चीनी शब्दों (Radicals) को छः बड़े वर्गों में विभाजित किया गया है। इनको पुनः अठारह उप – वर्गों में तथा ५०० अन्य छोटे छोटे वर्गों में विभाजित किया गया है। चेन च्याओ ने बारहवीं श० में अपने बृहत विश्लेषण को एक ग्रन्थ "तुंग चीह" में क्रम – बद्ध किया है, जिसमें प्रत्येक वर्ग में चीनी शब्दों की संख्या भी दी गई है। छः बड़े वर्ग[1] निम्नलिखित हैं :—

१. **वस्तु – चित्र** (Pictures of objects) : इन चित्रों को गू वन (Ku Wĕn) कहते हैं जिसके अर्थ हैं 'प्राचीन साहित्य'। इस वर्ग में ६०८[2] शाब्दिक, चित्र हैं जिनमें कुछ 'फ० सं० – २१९' पर दिये गये हैं। यह चित्र चीनी लिपि के मूलाधार हैं। इस फलक में शब्दों का चित्रण चार कालम में किया गया है। प्रथम कालम में प्राचीन काल के शब्द, द्वितीय में अर्वाचीन काल के वही शब्द, तृतीय कालम में रोमन व हिन्दी में शब्दों का उच्चारण तथा चौथे में शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। उच्चारण के शब्दों पर टोन का क्रम भी दे दिया गया है।

२. **सांकेतिक चित्र** (Symbolic Pictures) ; इन चित्रों को चीनी भाषा में जर शर (Chih – Shih) कहते हैं। यह लिपिवर्ग पहले से अधिक रोचक है। इसमें अमुक वस्तु का चित्र कुछ संकेत प्रदान करता है। उदाहरणार्थ 'चन्द्र' सायंकाल का तथा 'क्षितिज पर सूर्य' प्रातःकाल का द्योतक हो गया। 'रक्त भरा थाला' शपथ ग्रहण करने का द्योतक बना। इनकी संख्या २०७ है (फ० सं० – २२०)।

३. **संयुक्त – सांकेतिक चित्रों** (Symbolic Compounds) : को चीनी भाषा में ह्वे – ई (Hui – i) कहते हैं। इस वर्ग में दैनिक प्रयोगात्मक चित्रों को द्विक (double) कर दिया गया है। उदाहरणार्थ 'दो बच्चों' का चित्र बनाने से 'जुड़वाँ बच्चों' का बोध होता है। 'देखने' के शब्द को दो बार बनाने से 'साथ साथ देखना' आदि। इनकी संख्या ७४० है। (फ० सं० – २२१)।

४. **क्रम द्वारा निर्मित चित्र** (Pictures by Rotation) : शब्दों को क्रम से लेकर कुछ नये शब्दों का निर्माण किया गया है। इस वर्ग में ७३२ शब्द हैं। चीनी भाषा में इस वर्ग को जुआन – जू (Chuan – Chu) कहते हैं। इन शब्दों की दिशा परिवर्तित करने से दूसरे शब्दों का उद्भव हो जाता है। (फ० सं० २२२)।

५. **ध्वनि – सूचक चित्र** (Sound Indicating Signs) इनको चीनी भाषा में शिये शंग (Hsieh – Sheng) कहते हैं। यह लिपि – वर्ग प्रधान वर्ग है और इसी वर्ग में सबसे अधिक शब्द हैं जिनकी संख्या २१८२०[3] हैं (फ० सं० – २२२)।

---

1. इन वर्गों के फलकों के शब्दों के अर्थों के नीचे जो अंग्रेजी में क्रम संख्या दी गई है वह Mathews की English – Chinese Dictionary से ली गई है। यह शब्द कोष वेड (Wade) पद्धति पर निर्मित हैं।
2. कुछ विद्वान् इनकी संख्या ८०० मानते हैं।
3. According to Mrs. Chao, Ex – Lecturer of Allahabad University (Now in Canada)

चीनी लिपि में ध्वनि बल (टोन)

फलक संख्या – २१८
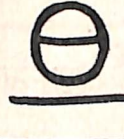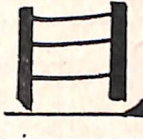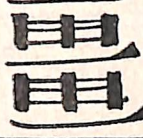
१. चीन के वस्तु -- चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	अर्थ	प्रा०	अर्वा०	ध्व०	अर्थ
	子	Tzu^{3} इज़ू	शिशु		雨	Yü^{3} यू	वर्षा
	木	Mu^{4} मू	लकड़ी; वृक्ष; शाखा		犬	Ch'üan^{3} च्युएन	कुत्ता
	門	Mên^{2} मन	द्वार फाटक		巴	Pa बा	अजगर
	矢	Shih^{4} शर	तीर		手	Shou^{3} शव	हस्त
	心	Hsin^{2} शीन	दिल		貝	Pei^{4} बेइ	कीमती कौड़ी
	言	Yen^{2} एन	शब्द; भाषण		田	T'ien^{2} टिएन	खेत

फलक संख्या – २१९

२. चीन के सांकेतिक चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	संकेत	विवरण
	又	Tu4 डू	इंगित भाव	सीधा हाथ
	夕	Hsi4 शी	संध्या काल 2485	आरम्भिक चन्द्र
		Wêng वंग	शपथ	रक्त भरा प्याला
	旦	Tan4 डैन	प्रातः काल 6037	सूर्योदय
	方	Fang1 फ़हंग	क्षेत्र 1802	आकाश की चार दिशायें दर्शाता है
	勿	Wu4 वू	निषेध करना 7208	सतर्ककरण की पताका
	畺	Chiang1 ज्यांग	सीमा 643	दो खेतों के मध्य की रेखा

फलक संख्या – २२०

३. संयुक्त सांकेतिक चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	शब्द	विवरण
	孖	Tzu[1] ड्ज़ू	जुड़वाँ शिशु 6941	दो बच्चों का चित्र
	見見	Chien[4] ज्येन	साथ साथ देखना	देखने के दो चित्र
	立立	Ping[4] पिंग	साथ साथ 5292	दो मनुष्यों के साथ साथ चित्र
	巛	Ch'uan[1] च्वान	स्रोत 1439	तीन गढ्ढों के चित्र
	東東	Tung[1] पूर्व	सर्वत्र 6605	दो बार 'पूर्व' का चित्र
	炎	Yen[2] येन	बहुत गर्म 7335	दो बार अग्नि-चित्र
	明	Ming[2] मिंग	प्रकाशमान् 4534	सूर्य व चन्द्र के चित्र
	鳴	Ming[2] मिंग	गाना 4535	मुंह व चिड़िया के चित्र
	聞	Wen[2] वेन	सुनना 7142	दो द्वार व कान के चित्र

फलक संख्या – २२१

४. क्रम द्वारा निर्मित चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	विवरण
[illegible]	司	Ssū 1 स्सू	एक पदाधिकारी 5585
[illegible]	后	Hou 4 हो	राजकुमार 2144
[illegible]	乏	Fa 2 फः	पराजित होना 1761
[illegible]	正	Chêng जंग	ठीक या सीधा 351

५. ध्वनि - सूचक चित्र

चित्र	अर्थ		चित्र	अर्थ		चित्र	अर्थ
皇	उच्चासीन (exalted)	+	火 3	अग्नि Huo होओ	=	煌	चमकदार
分	भाग लेना (to share)	+	言 2	बोलना Yen इयेन	=	訜	गपशप
巫	जादूगर Wu - वू	+	言 2	7334 बोलना	=	誣	झूठ बोलना

इस वर्ग के शब्दों का निर्माण सबसे अधिक संख्या में हान वंश के शासन काल (२०६ ई० पू० से २२१ ई० तक) में हुआ है। इस वर्ग के जन्म के पूर्व चित्र भाव – सूचक होते थे। ध्वनि की प्रधानता पर कोई अधिक ध्यान नहीं देता था परन्तु शनैः शनैः विद्वानों का ध्यान ध्वनि की ओर आकर्षित हुआ। इस ज्ञान, खोज व शोध के कारण अब चित्रों में दो मुख्य तत्त्व हो गये। पहला निर्धारक तत्त्व (Determinative Element) जिससे भाव का तथा विचार का बोध होता था। दूसरा तत्त्व ध्वनि का था जो चित्र को ध्वनि प्रदान करता था। यह ध्वनि या तो अंश रूप में या पूर्ण रूप में दूसरे चित्र की ध्वनि से समानता रखती थी।

उदाहरणार्थ ध्वनि – सूचक चित्र में 'फ० सं० – २२२' एक चित्र उच्चासीन (exalted) का बना है। इस को चीनी भाषा में 'ह्वांग (Huang)' कहेंगे। इसमें भी दो चित्रों (सूर्य तथा पृथ्वी) का समावेश है जिससे किसी मनुष्य की महानता का बोध होता है। इस चित्र में अग्नि का शब्द (जिसकी ध्वनि है 'ख़ो') जोड़ दिया, इससे एक नया शब्द बन गया 'चमकदार' और इसकी ध्वनि हो गई ह्वांग। इसी प्रकार दूसरा शब्द है 'भाग लेना' ध्वनि है 'फ़िन', इसमें जोड़ दिया 'येन' अर्थात् बोलना, इससे बना 'गपशप करना' और इसकी ध्वनि हो गई 'फ़िन'। तीसरा शब्द हैं 'वू' अर्थ हैं जादूगर इसमें जोड़ा गया येन' अर्थात् 'बोलना'। इन दोनों शब्दों को जोड़ देने से बन गया 'झूठ बोलना'। इसका भी एक बड़ा रोचक कारण है। चीन में जादूगरों को झूठा समझा जाता है। इस कारण 'वू' शब्द का प्रयोग जादूगर के लिए किया गया। इस 'झूठ बोलना' के शब्द की ध्वनि हो गई 'वू'। (फ० सं० – २२२)।

६. **ग्रहण किये हुए चित्र** (Borrowings) : इस वर्ग को चीन की भाषा मे जिया – जीह' (Chia – Chieh) कहते हैं। इस वर्ग में दूसरे चित्रों को ग्रहण करके नये चित्रों का निर्माण किया गया है इसमें ५९८ शब्द हैं। (फ० सं० – २२३)।
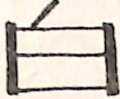
सुलेख (Calligraphy) **:** भिन्न भिन्न प्रकार की लिपियों का निर्माण चीन के सुलेखकों ने किया है जिनमें से कुछ 'फ० सं० – २२३' पर दी गई हैं। केवल एक शब्द शीन (Hsin) अर्थात् 'हृदय'[1] को दस प्रकार के सुलेखों में दिया गया है।

इन्हीं सुलेखकों (Calligraphists) ने प्रत्येक चित्र लिखने के लिए एक चतुष्कोण निर्धारित किया है। प्रत्येक चित्र का चतुष्कोण लगभग उतना ही स्थान घेरता है जितने में चित्र पूरा हो जाये, परन्तु सब चतुष्कोण लम्बाई चौड़ाई में समानता रखते हैं।

प्राचीन काल में लेखनी किसी धातु की बनाई जाती थी तदनन्तर बांस की लेखनी का प्रयोग होने लगा। लगभग २०० ई० पू० में तूलिका का प्रयोग आरम्भ हुआ। इस तूलिका को रेशम के रुओं से बनाया जाता था।

कागज़ का प्रयोग सर्वप्रथम त्साई – लून (Tsai – Lun) ने १०५ ईसवी में किया। इसका इतना प्रचलन बढ़ा कि आठवीं श० में एक कागज़ बनाने का कारख़ाना समरक़न्द में स्थापित हो गया। मुसलमानों ने चीन – निवासियों से ही कागज़ बनाना सीख कर ग्यारहवीं श० में उन्होंने स्पेन के निवासियों को सिखाया।

---

1. Faulmann : Das Buch der Schrift (Vienna, 1880), p. – 48

६. ग्रहण किये हुए चित्र

श्वेत (प्राचीन)		श्वेत (अर्वाचीन)		चित्र का नाम पार्यी		ध्वनि पो = अर्थात चाचा

'हृदय' - विभिन्न प्रकार के सुलेखों में

	कैशू-आकार		सितारों की लिपि
	हीरों का आकार		बादल की लिपि
	चमत्कारी आकार		मेंढक के बच्चों की लिपि
	कर्ण आकार		क्रूर लिपि
	मध्य स्थानों का आकार		बर्तनों की लिपि

फलक संख्या – २२३

चीनी लिपि की लेखन – पद्धति : इसको दो प्रकार से लिखा जाता है। एक क्षैतिज (horizontal) दूसरा शिरोवृत्त (vertical)। क्षैतिज का प्रयोग हस्त – लेखन में तथा शिरोवृत्त का प्रयोग मुद्रण में किया जाता है, जैसे, समाचारपत्र, पुस्तकें तथा पाक्षिक आदि। क्षैतिज बायें से दायें तथा शिरोवृत्त ऊपर से नीचे लिखी जाती है परन्तु प्रथम खड़ी पंक्ति दायें से ही आरम्भ होगी और नीचे तक जाकर पुनः दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के साथ बाईं ओर से तथा ऊपर से आरम्भ होगी। इसका एक प्रतिदर्श 'फ० सं० – २२४' पर सीधी ओर दो खड़ी पंक्तियों में दिया गया है। प्रत्येक शब्द के साथ ऊपर सीधी ओर उस शब्द के टोन की क्रमसंख्या दी गई है। उसी के नीचे उसका उच्चारण हिन्दी में दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक शब्द की बाईं ओर नीचे देवनागरी अंकों में क्रमसंख्या दे दी गई है जिसके द्वारा इन शब्दों के निम्नलिखित अर्थ तथा दोनों पंक्तियों के भावार्थ दिये गये हैं :—

हिन्दी	अंग्रेज़ी अर्थ	हिन्दी	क्र० सं०	अर्थ	अंग्रेज़ी अर्थ	हिन्दी	क्र० सं०
उच्चारण	(Fa – yin)	फ़ा ईन		इस	(So; i) =	सो ई	१
	Pronounce		८	कारण	*Therefore*		२
अनिवार्य	(pi) = *certainly*	बी	९	चीनी	(Chung; kuo	जुंग गुओ	३
	(hsü) = *necessary*	श्यू	१०	(भाषा)	*Chinese*		४
शुद्ध	(chun) = *exact;*	जन	११	शब्द	(Tzu) =	जू	५
	(ch'iao) = *correctly*	च्याओ	१२	तुम	*Characters*		
					(ti) = *you*	डी	६

उपर्युक्त १२ शब्दों के शाब्दिक अर्थ हुए :—

१ + २ = 'इस कारण'; ३ + ४ = 'चीनी भाषा'; ५ = 'शब्द', ६ = 'तुथ'; ७ + ८ = 'उच्चारण'; ९ + १० = 'अवश्य', 'अनिवार्य'; ११ + १२ = 'विशुद्ध'।

इस वाक्य के भावार्थ[1] हुए :—

"इस कारण आपको चीनी शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना अनिवार्य है।"

पहली पद्धति (हस्त – लेखन के लिए) बायें से दायें, क्षैतिज (horizontal) चलती है। इसका प्रतिदर्श नीचे बाईं ओर दिया गया है। इस प्रतिदर्श का विवरण इस प्रकार हैं :—

प्रथम पक्ति में ऊपर चीनी शब्द जिसके ऊपर अंग्रेज़ी अंक में टोन की क्रम – संख्या, उसके नीचे अंग्रेज़ी में उसका उच्चारण, उसके नीचे हिन्दी में उसका उच्चारण फलक में ही दिया गया है। अब इन आठ शब्दों के शाब्दिक तथा भावार्थ निम्नलिखित हैं :—

1. Sung, Fu Feng : Chinese in 30 Lessons. p. – 56.

शब्द = व्हो	शिया वू	कैन	व्हो डी
अर्थ = मैं	अपराह्न	मिलने	अपने (मेरे)
शब्द = वंग यू			
अर्थ = मित्र			

भावार्थ—मैं अपने मित्र से अपराह्न मिलने गया।"

आठ पृथक् शब्द 'फ० सं० – २२४' पर ऊपर बाईं ओर दिये गये हैं। शब्दों के ऊपर सीधी ओर के अंग्रेज़ी अंक शब्दों की टोन – क्रम – संख्या तथा नीचे की ओर देवनागरी अंक शब्दों की क्रम – संख्या को बोध कराते हैं। शब्दों के केवल उच्चारण रोमन तथा हिन्दी में दिये गये हैं, उनके अर्थ क्रमानुसार निम्नलिखित हैं :—

१. स्वर्ग या आकाश; २. अग्नि; ३. पवन; ४. जल; ५. पर्वत; ६. पृथ्वी; ७. वर्षा; ८. चन्द्र या मास।

उपर्युक्त क्रमांक १ – ६ तक के शब्द, 'चीनी लिपि का कालानुसार विकास' की 'फ० सं० – २१७' पर दिये गये हैं परन्तु विवरण यहाँ दिया गया है।

लिपि का सरलीकरण : संसार की यही ऐसी लिपि है जो चित्रों से आरम्भ हुई और आज तक चित्रों द्वारा लिखी जाती हैं। यही ऐसी लिपि है जिसका जन्म से ही सरलीकरण आरम्भ हो गया और सरलीकरण द्वारा लिपि में परिवर्तन आते गये। इस परिवर्तनक्रम में पीछे छूटी हुई लिपि तिरस्कृत होती गई इसी कारण चीनी लिपि की कोई पुस्तक आलोचना से बच न सकी। इस सरलीकरण के केवल तीन प्रतिदर्श 'फ० सं० – २५५' के ऊपर बाईं ओर दिये गये हैं। आधुनिक युग में जब प्रत्येक कार्य में मनुष्य की गति बढ़ने लगी तथा प्रत्येक वाहन की गति भी चौगुनी होने लगी, तब लिपि की गति बढ़ना अनिवार्य हो गया। चीनी लिपि की गति को बढ़ाना असम्भव लगने लगा। १९५६ में चीनी सरकार ने सर्वप्रथम २३० चित्रों का सरलीकरण किया तत्पश्चात् ३५३ शब्दों का किया गया। इस परिवर्तन – क्रम में रेखाओं (Strokes) की संख्या को कम करके शाब्दिक – चित्रों का निर्माण किया गया तथा उनका प्रयोग प्राथमिक शालाओं में प्रारम्भ करवा दिया। साथ साथ लिपि में ध्वन्यात्मक पद्धति का प्रयोग तथा लिपि का रोमनीकरण भी आरम्भ हो गया।

चीनी भाषा की ध्वनियाँ : स्वरोत्पादन (Intonation) अर्थात् उच्चारण, चीनी – भाषा के, विद्यार्थी को चाहे वह चीन का हो या विदेश का, समक्ष एक समस्या खड़ा कर देता है। संकेतात्मक चित्रों के उच्चारणों में भिन्नता है। चीन देश के एक भाग में इसी शब्द का उच्चारण कुछ है तो दूसरे भाग में कुछ और। उच्चारण के अन्तर से अर्थ में अन्तर पड़ जाता है। चीनी स्वयं इस समस्या से दुखी हो जाते हैं जब वे एक स्थान से दसरे स्थान को जाते हैं।

लिपि के रोमनीकरण (Romanization) करने में चीनी भाषा क सब उच्चारणों को रोमन क २६ वर्णों में लिपि – बद्ध करने का प्रयास किया गया है। इन उच्चारणों की संख्या ४०९[1] है, जिनका कुछ स्वतन्त्र रूप से तथा कुछ सम्मिलन से ६२ पृथक् वर्णों द्वारा निर्माण किया गया है। इन ६२[2] मौलिक ध्वनियों को आधुनिक प्रचलित भाषा के दो भागों से, जिनको इनीशियल्स (Initials) तथा फ़ाइनल्स (Finals)

1. Williamson, H. R. : Teach yourself Books – Chinese (1972), page, – 22.
2. Ibid, p. – 22.

कुछ शब्द व वाक्य (क्षैतिज – शिरोवृत्त)

天 1	火 2	氣 4	水 3
t'ien	huo	ch'i	shui
१. टीयेन	२. होअ्र	३. ची	४. श्वे
山 1	土 3	雨 3	月 4
shan	t'u	yü	yüeh
५. शैन	६. टू	७. इयू	८. युअ्र
我 3	下 4	午 3	看 4
Woh	hsia	wu	K'an
व्हो	शिया	वू	कैन
我 3	的 1	朋 2	友 3
woh	ti	pêng	yu
व्हो	डी	बंग	यू

發 1 — ७. फ़ा	所 3 — १ सो
音 1 — ८. ईन	以 3 — २ ई
必 4 — ९. बी	中 1 — ३ जुंग
須 1 — १०. शू	国 2 — ४ गुअ्रो
準 3 — ११. जन	字 4 — ५ ज़ू
確 — १२. च्याअ्रो	的 1 — ६. डी

कहते हैं, लिया गया है। क्रम से इनकी संख्या २४ तथा ३८ है। १९०६ में ५० इनीशियल्स और १२ फ़ाइनल्स[1] थे। फ़ाइनल्स में ११[2] स्वतन्त्र ध्वनियाँ हैं परन्तु उनमें भी कभी कभी सम्मिलन दृष्टिगोचर हो जाता है (फ० सं० – २२५)।

वैसे तो चीनी लिपि मोनो सिलेबिक (Mono – syllabic) कही जाती है और है भी, परन्तु गहरा विश्लेषण करने से उन चित्रों में द्वि – ध्वन्यात्मक (di – syllabic) तथा त्रै – ध्वन्यात्मक (tri – syllabic) चित्र मिल जाते हैं। कारण यह है कि जब किसी एक विचार (Concept) को व्यक्त करने के लिए एक से अधिक चित्रों को संयुक्त रूप से लिपिबद्ध किया जाता है, ऐसे चित्रों को इनीशियल तथा फ़ाइनल उच्चारणों के मध्य में रख दिया जाता है उनको मीडियल्स (Medials) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

चीनी लिपि का रोमनीकरण अमरीका व ब्रिटेन के अनेक विद्वानों[3] ने किया है। इनमें से सबसे प्रसिद्ध तथा प्रचलित रोमनीकरण सर टॉमस वेड (Sir Thomas Wade) का माना जाता है। वैसे संसार में लिपि का कोई ऐसा रोमनीकरण नहीं हो सका है जो इस लिपि की ध्वनियों को पूर्णतया व्यक्त कर सके। इसके अति – रिक्त आधुनिक काल में रोमनीकरण की दो अन्य पद्धतियाँ, जिनको चीनी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हुई है, जैसे, एक गोरीयून (Guoryun) की तथा दूसरी एल (Yale) विश्वविद्यालय की। इसी कारण दो प्रकार के शब्दकोष[4] भी प्रयोगात्मक माने जाते हैं।

इनीशियल्स की तालिका (वेड पद्धति)

	उच्चारण			उच्चारण			उच्चारण	
क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी
१ –	Ch.	ज	९ –	L.	ल	१७ –	T.	ड
२ –	Ch'.	च	१० –	M.	म	१८ –	T'.	ट
३ –	F.	फ़	११ –	N.	न	१९ –	Ts.	ड्ज़
४ –	H.	ह	१२ –	P.	ब	२० –	Ts'.	ट्स
५ –	Hs.	श[1]	१३ –	P'.	प	२१ –	Tz.	ड्स
६ –	J.	र; य	१४ –	S.	स	२२ –	Tz'.	ट्ज़
७ –	K.	ग	१५ –	Sh.	श	२३ –	W.	व
८ –	K'.	क	१६ –	Ss.	स्स	२४ –	Y.	य

---

1. Forke, A. : Mitteilungem des Seminars für Orientalische Sprachen, Vol. IX (1906), p. – 404.
2. तालिका में तारे के चिह्न लगा दिये गये हैं।
3. Hillier; Goodrich; Sothill; Giles; Wells – Williams; Mac Gillivray etc.
4. Yutang, Lin : Chinese English Dictionary of Modern Usage (Chinese University – Hongkong – (1972).
4. Mathews., R. H. : Chinese English Dictionary – 214 Radicals – (Harvard University Press. – 1956). अब यह शब्दकोष अप्रचलित होने लगा।
5. चीन के कुछ भागों में 'स' उच्चारण किया जाता है।

फ़ाइनल्स की तालिका

उच्चारण			उच्चारण			उच्चारण		
क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी
२५[2] –	A.	आ	३८[3] –	Iao.	इयाओ	५१[4] –	Uai.	वाई
२६[2] –	Ai.	आइ	३९[3] -	Ieh.	इय	५२[4] –	Uan.	वैन
२७[2] –	An.	ऐन	४०[3] –	Ien.	इयन्			
२८[2] –	Ang.	आंग	४१ –	Ih.	इर्र	५३[4] –	Uang.	वांग
२९[2] –	Ao.	आउ	४२ –	In.	इन	५४[4] –	Ui.	ओइ
३०[2] –	E.	अर[1]	४३ –	Ing.	इंग	५५ –	Un.	अन
३१ –	Ei.	ए	४४[3] –	Io.	इअ	५६ –	Ung.	अंग
३२[2] –	En.	अन	४५[3] –	Iu.	इयु	५७[4] –	Uo.	वू
३३ –	Eng.	अंग	४६[3] –	Iung.	अंग	५८ –	Ü.	यो
३४[2] –	I.	ई	४७[2] –	O.	ऑ	५९[5] –	Üan.	योअन
३५[3] –	Ia.	इया	४८[2] –	Ou.	ओ	६०[5] –	Üeh.	योअ
३६[3] –	Iai.	याइ	४९ –	U.	ऊ	६१[5] –	Ün.	योइ्न
३७[3] –	Iang.	यांग	५०[4] –	Ua.	वा	६२[2] –	Erh.	अर्र

फलक संख्या – २२५

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति – १ : इस लिपि का सर्वप्रथम 'ध्वन्यात्मक पद्धति' द्वारा सरलीकरण फ़ैन चिय (Fan – Ch'ieh) ने पाँचवीं व छठी शताब्दियों के मध्य किया। उस समय इसका प्रयोग नाम मात्र रहा। फ़ैन चिय ने रेखा – संकेतात्मक लिपि के कुछ शब्दों के एक भाग को लेकर एक चिह्न तथा उसी शब्द की ध्वनि को चिह्न के लिए निर्धारित कर इस पद्धति का आविष्कार किया। यह आविष्कार चीन में लिपि के लिए एक अनोखा आविष्कार था। इसके छः प्रतिदर्श 'फ० सं० – २२६' पर दिये गये हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित ६ कालमों में दिया गया है :—

पहले कालम में : हस्त – लिखित शब्द हैं।
दूसरे कालम में : मुद्रित शब्द हैं।
तीसरे कालम में : शब्दों के टोन – क्रम हैं।
चौथे कालम में : शब्दों की ध्वनि ऊपर रोमनीकरण चीनी – भाषा में तथा नीचे हिन्दी में दी है।
पाँचवें कालम में : शब्दों के अर्थ इंगलिश व हिन्दी में दिये हैं।
छठवें कालम में : सरल चिह्न हैं, जिनकी ध्वनि शब्द की ध्वनि होगी।

---

1. 'र' की ध्वनि हल्की होगी, पूरी नहीं।
2. इस संख्या वाले फाइनल्स स्वतंत्र हैं जिनकी संख्या ११ हैं।
3. इस संख्या वाली ध्वनियों में मीडियल 'ई' (I) है।
4. इनमें मीडियल 'व' ऊ (U) है।
5. इनमें यो (ü) है।

ध्वन्यात्मक चिह्नों का आविष्कार

शब्द-१	शब्द-२	टोन	ध्वनि	अर्थ - विवरण	सरलीकरण
皮	皮	२	p'i पी	LEATHER; SKIN चमड़ा खाल	ㄆ
蘇	穌	१	SU सू	TO REVIVE पुनरुद्धार करना	ク
女	女	३	nü न्यू	WOMAN (FEMALE) महिला	女
基	基	१	ch'i ची	A FOUNDATION आधार; नींव	丄
安	安	१	an ऐन	REST ; PEACE विश्राम शान्ति	一
兒	兒	१	erh अर्र	SUFFIX (To Noun) परसर्ग (संज्ञा के साथ)	儿

फलक संख्या - २२६

इसी प्रकार की पद्धति को जापान ने भी अपनाकर एक वर्णात्मक लिपि का आविष्कार कर लिया। चीन में इसका प्रयोग अधिक प्रचलित नहीं हुआ फिर भी कहीं कहीं हुआ। बीसवीं श० में इसका पुनर्जन्म हुआ तथा होपेई प्रांत ने इसको पूर्णरूप से ग्रहण कर लिया। इसमें ५० इनीशियल (initials) चिह्न अर्थात् व्यंजन थे तथा १२ फ़ाइनल (finals) चिह्न अर्थात् स्वर थे। इसकी वर्णावली एक पुस्तक[1] से ली गई है और 'फ० सं० – २२७' पर दी गई है।

ध्वन्यात्मक पद्धति – २ : १९५६ में कुछ सुधार कर चीनी सरकार ने इस पद्धति की तीन तालिकायें प्रकाशित करवाईं जिनमें क्रमानुसार २३०, २९९ तथा ५४ शब्द थे। साथ साथ एक तालिका प्राथमिक शालाओं के लिए भी प्रकाशित कराई गई। यह इस लिपि के सरलीकरण का दूसरा प्रयास था जो मुख्यतया राष्ट्रीय भाषा के लिए था। इसकी वर्णावली 'फ० सं० – २२८' पर दी गई है।

इस वर्णावली में निम्नलिखित तीन प्रकार के चिह्नों का समावेश था तथा इसको राष्ट्रीय वर्णावली[2] के नाम से सम्बोधित किया गया :—

१. २४ प्रथमाक्षरों (Initials) की व्यंजनात्मक ध्वनियाँ दी गई हैं।
२. १६ अन्तिमाक्षरों (Finals) की स्वरात्मक ध्वनियाँ दी गई हैं।
३. २२ अन्तिमाक्षरों (Finals) की संयुक्तात्मक ध्वनियाँ दी गई हैं।

इस पद्धति में टॉमस वेड (Thomas Wade, 1818 – 1895) की रोमनीकरण पद्धति का समावेश था।

ध्वन्यात्मक पद्धति – ३ : इस पद्धति में लिपि का पुनः सरलीकरण किया गया। इसमें केवल २१ व्यंजन तथा १५ स्वर अर्थात् कुल वर्णों की संख्या ३६ दी गई है। इसके साथ साथ अक्षरों का टोन तथा उच्चारण के प्रकार भी अंग्रेज़ी हिन्दी में दिये गये हैं। यह वर्णावली श्रीमती चाउ[3] द्वारा प्रस्तुत की गई है 'फ० सं०– २२९'। यह पद्धति आधुनिक है इसमें अक्षरों से शब्द बनाये जाते हैं। इसके दो उदाहरण 'गुओ' तथा 'रेन' के इसी फलक के मध्य में दिये हैं। लिपियों की रेखाओं (Strokes) में भी कमी की जा रही है। उपर्युक्त तीनों वर्णावलियों में चिह्नों की ध्वनियों को रोमन तथा हिन्दी अक्षरों में दिया गया है।

शाब्दिक – चित्रों को लिखने की पद्धति : चीनी लिपि में जिन रेखाओं द्वारा शब्द का निर्माण किया जाता है, उन रेखाओं को अंकित करने की एक निर्धारित विधि या पद्धति निश्चित है। उसी पद्धति के अनुसार मनुष्य को बचपन से रेखा अंकित करने का अभ्यास कराया जाता है। इसकी पद्धति निम्नलिखित है :—

प्रथम ऊपर की रेखा तत्पश्चात् नीचे की खींची जाये। इसी प्रकार बाईं ओर की रेखा पहले तथा सीधी ओर की बाद में। इस पद्धति का एक प्रतिदर्श 'फ० सं० – २३०' पर 'गुओ (Kuo)' शब्द द्वारा लिखा गया है। अंग्रेज़ी के अंकों द्वारा रेखा खींचने का क्रम दिया गया है।

इस फलक में 'गुओ (Kuo)' शब्द के दो प्रतिदर्श दिये गये हैं। एक पूर्वकालिक तथा एक आधुनिक जिसका सरलीकरण कर दिया गया है। पूर्वकालिक 'गुओ' को अंत में दिखाया गया है।

---

1. Gelb, I. J. : A study of Writing (London – 1963), p. – 88.
2. Jansen, H. : Sign, symbol and Script (London – 1970), p. – 181.
3. श्रीमती चाउ १९७७ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के चीनी – विभाग में प्रवक्ता थीं। उन्हीं दिनों लेखक ने उनसे भेंट करके यह वर्णावली प्राप्त की। आजकल श्रीमती चाउ कनाडा में हैं।

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति – १

p'u पू	pu बु	mu मू	fu फ़ू	wu वू	p'i पी	pi बी
mi मी	t'u टू	ts'u त्सू	ch'u चू	su सू	shu शू	tsu द्ज़ू
tu डू	chu जू	ju रू	lu लू	nu नू	ts'e त्स	tse द्ज़
sse स्स	te डर	t'e टर	ch'ih चर्र	chih जर्र	shih शिर	jih र्र
ti डी	t'i टी	le ल	na ना	ni नी	nü न्यु	lü ल्यु
ch'ü च्यु	chü ज्यु	hsü श्यु	yü इयु	li ली	chi जी	ch'i ची
hsi शी	yi इह	ku गू	k'u कू	hu हू	ko गो	k'o को
ho हो	फाइनल्स	a आ	ao औ	an ऐन	ang आं	ai आइ
eh अः	ei ए	ou ओ	en अन	eng अं	o ओअ	erh अर्र

फलक संख्या – २२७

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति -- २

ㄅ b ब्	ㄆ p प्	ㄇ m म्	ㄈ f फ़्	ㄪ v व्	ㄉ d द्	ㄊ t त्
ㄋ n न्	ㄌ l ल्	ㄍ g क	ㄎ K ख	ㄫ ng अं	ㄏ K.h ख़	ㄐ djj द्ज़
ㄑ tjj त्ज़	ㄬ gn ग्	ㄒ ch ज	ㄓ dz द्ज़	ㄔ tś त्श	ㄕ ś श्	ㄖ z ज़्
ㄗ dz द्ज़	ㄘ ts त्स	ㄙ s स	24 INITIALS / FINALS 16	ㄧ i ई	ㄨ u ऊ	ㄩ ü यी
ㄚ a आ	ㄛ o ओ	ㄜ ö ओय	ㄝ e अर	ㄞ a-i ऐ	ㄟ ā आ	ㄠ au औ
ㄡ ō ऊ	ㄢ ăn आं	ㄣ ön एं	ㄤ ang अं	ㄥ öng ओं	ㄦ ɚ ए	ㄧㄚ ia या
io यो	ie ये	iai याइ	iau याउ	iu इयु	ien येन	iang यं
ing इंग	ua उआ	uo उओ	in इन	uai उआइ	ui उई	uan उआं
un उं	uang उआंग	ung उंग	üe योय	üen यों	ün योन	iung यंग

फलक संख्या – २२८

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - ३

इनीशियल्स (INITIALS) - चार टोन सहित				
टोन-१	२	३	४	ध्वनियां
ㄅ ब्	ㄆ प्	ㄇ म्	ㄈ फ़्	Labials. ओष्ठीय
ㄉ द्	ㄊ त्	ㄋ न्	ㄌ ल्	Dentals. दन्त्य
ㄍ ग्	ㄎ क्	ㄏ ह्	गुओ GUO ㄍㄨㄛ	Gutturals. कंठ्य
ㄐ ज्	ㄑ छ्	ㄒ श्	रेन Jen ㄖㄣ	Palatals. तालव्य
ㄓ द्ज़्	ㄔ त्ज़्	ㄕ श्र्	ㄖ र्	RETROFLEXES प्रत्यग् वक्रण
ㄗ त्ज़्	ㄘ थ्ज़्	ㄙ स्	DENTAL-SIBILANTS २१ दन्त्य-ऊष्मीय व्यंजन	

फ़ाइनल्स (FINALS) - 15 - स्वर (VOWELS)				
ㄚ अ	ㄛ ओ	ㄝ ए	ㄦ ये	ㄞ ऐ
ㄟ अइ	ㄠ औ	ㄡ ओऊ	ㄢ आङ्	ㄣ एं
ㄤ अङ्	ㄥ ओङ्	ㄧ ई	ㄨ ऊ	ㄩ इऊ

फलक संख्या - २२९

इसी फलक पर सबसे नीचे क्षैतिज पद्धति में दो शब्द 'इंगलिशमैन' तथा 'चाइनामैन [1]'। इन शब्दों का विवरण इस प्रकार है :—(फ० सं० – २३० के नीचे)।

बाईं ओर से पहला शब्द है 'इंग (Ying)' दूसरा शब्द है 'गुओ (Kuo)' तथा तीसरा शब्द है 'रन (Jên)'। इंग = इंगलैण्ड, गुओ = देश; रन = मनुष्य। इसके भावार्थ हुए 'इंगलिशमैन (अंग्रेज)' बाईं ओर से पहला शब्द है 'जुंग (Chung)' दूसरा शब्द है 'गुओ (Kuo)' तथा तीसरा शब्द है 'रन (Jên)'। जुंग = केन्द्रीय अथवा चीन; गुओ = देश; रन = मनुष्य। भावार्थ हुए 'चीन (केन्द्र) का निवासी' अर्थात् 'चाइनीज़'।

आठ मौलिक रेखाएँ (Strokes) : चीन की सम्पूर्ण लिपि इन्हीं आठ मौलिक रेखाओं द्वारा लिखी जाती है। उनके नाम तथा चित्र 'फ० सं० – २३०' पर ऊपर सीधी ओर दिये गये हैं। चीनी लिपि में एक स्ट्रोक के शब्द से ३३ स्ट्रोक तक के शब्द लिखे जाते हैं। अधिकतर २० या २२ स्ट्रोक द्वारा ही बहुत से शब्द लिख लिये जाते हैं। इससे अधिक स्ट्रोक वाले शब्दों की संख्या न्यून है। एक से २० स्ट्रोक तक के शब्द 'फ० सं० – २३१' पर दिये गये हैं। इस फलक में चार कालम बाईं ओर तथा चार कालम सीधी ओर दिये गये हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :—

प्रथम कालम : इसमें रेखाओं (स्ट्रोक्स) की संख्या दी गई जिनके द्वारा शब्द का निर्माण किया गया है।

द्वितीय कालम : इसमें चीनी लिपि में शब्द लिखे गये हैं।

तृतीय कालम : इसमें ऊपर की ओर शब्द का उच्चारण रोमन लिपि द्वारा लिखा गया है और उसी के सीधी ओर टोन की क्रम – संख्या दे दी गई है ताकि पाठक को ज्ञात हो जाये कि शब्द का उच्चारण किस टोन में होगा। उसी के नीचे हिन्दी में भी उच्चारण लिख दिया है।

चतुर्थ कालम : इसमें शब्दों के अर्थ हिन्दी में दिये गये हैं।

इस फलक पर दिये गये शब्द दो पुस्तकों[2] से लिये गये हैं।

चीनी लिपि के अंक : कुछ चीनी अंक[3] 'फ० सं० – २३२' पर दिये गये हैं। साथ के कालम में देवनागरी में उन अंकों के उच्चारण तथा अंक दे दिये गये हैं।

चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि

इस लिपि का नाम लोलो जाति[4] के नाम पर पड़ा। इस जाति की भाषा तिब्बत – बर्मी थी। यह जाति दक्षिणी चीन के यूनान (Yunnan) और ज़ेकवान (Szechwan) प्रान्तों में बसी हुई थी।

१८७३ में फ्रांस का एक ईसाई – धर्म – प्रचारक वीयाल (Vial) यहाँ आया और इनकी बोलियों का अध्ययन किया। उसी वर्ष एक दूसरा फ्रांस का धर्म – प्रचारक डी – ओलोन (d' Ollone) जिसने

---

1. 'चाइनामैन' लिखना चीननिवासी अपमानजनक समझते हैं इसको लिखना चाहिये 'चाइनीज़' अथवा 'चीनी' 'चाइनामैन' लिखने की भूल कदापि न कीजियेगा।
2. Sung, Yu Feng : *Chinese in 30 Lessons.*
   Willi mson, H. R. : Teach Yourself Chinese.
3. Sung : Chinese in 30 Lessons, p. – 15.
4. Henry, A. : 'The Lolo's and other Tribes of Western China.' Journal of Anthropo - logic Institute's Vol. 33 (1903), p. – 99.

लिपि का सरलीकरण आठ मौलिक स्ट्रोक

萬	万	मं	एक लाख से अधिक	१-बिन्दी	५-बाएँ स्ट्रोक
開	开	खै	खोलना	२-लेटी रेखा	६-दाएँ "
億	亿	ई	क्यों	३-खड़ी रेखा	७-चढ़ते "
				४-मुड़े स्ट्रोक	८-कांटे

रेखाओं (Strokes) का प्रयोग

दो शब्दों का प्रतिदर्श

फलक संख्या – २३०

रेखाओं का (ट्रोक) द्वारा शब्द -- निर्माण

क्रः सं:	शब्द	ध्वनि	अर्थ	क्रः सं०	शब्द	ध्वनि	अर्थ
१	一	I[1] ई	एक	११	魚	Yü[2] ईयु	मीन
२	二	Erh[4] अर्र	दो	१२	黃	Huang[2] हांग	पीला
३	子	Tzu[3] ड्ज़ू	बेटा; बच्चा	१३	黽	Min[3] मिन	मेंढक
४	文	Wên[2] वन	साहित्य	१४	鼻	Pi[2] बी	नाक
५	甘	Kan[1] गैन	मीठा	१५	齒	Ch'ih[3] चर	सामने के दांत
६	舟	Chou[1] जॉ	नाव	१६	龍	Lung[2] लंग	ड्रैगन
७	見	Chien[4] जियन	देखना	१७	龠	Yo[4] योअ्र	बांसुरी
८	金	Chin[1] जिन	धातु; सोना	१८	嚇	Hsia[4] शिया	चौंकना
९	首	Shou[3] शो	सिर	१९	議	I[4] ई	परामर्श
१०	馬	Ma[3] मा	घोड़ा	२०	織	Chih[1] जर	बुनना

फलक संख्या – २३ १

चीनी लिपि के अंक

一 १	i १ ई	七 २	ch'i ७ ची	二十	erh shih २० अर शार
二 ४	erh २ अर	八 २	pa ८ बा	二十八	अर शार २८ बा
三 १	san ३ सैन	九 ३	chiu ९ ज्यु	三十	san shih ३० सैन शार
四 ४	ssū ४ स्सू	十 २	shih १० शार	三十九	सैन शार ३९ ज्यु
五 ३	wu ५ वू	十一	shih i ११ शार ई	四十	ssū shih ४० सू शार
六 ४	liu ६ ल्यू	十五	shih wu १५ शार वू	千	pai २०० बाई

फलक संख्या - २३२

इस जाति की दो भाषाओं का अध्ययन किया। वीयाल ने लगभग ४२५ चिह्नों को एकत्रित किया और डी०, ओलोन ने लगभग १०३० चिह्नों को एकत्रित किया।

लोलो लिपि का सबसे प्राचीन अभिलेख लू कुआन हीन (Lu – K' uan – hien) में यूनान से १९०६ में प्राप्त हुआ था, जिसका काल चीनी विद्वानों ने 'प्रथम मिंग सम्राट् हुंग वू (१३६८ – १३९८)' निर्धारित किया है। दूसरा अभिलेख यूनान के एक उपनगर त्सान – त्सही – अंगाइ (Tsan – Tsih – Ngai) से प्राप्त हुआ जो एक चट्टान पर उत्कीर्ण किया हुआ था। इसकी दिशा कुछ अंशों में ऊपर से नीचे तथा कुछ अंशों में बायें से दायें थी।

पहले अभिलेख का काल मिंग वंश के प्रथम शासक तथा संस्थापक हुंग – वू के शासनकाल (१३६८ से १३९८ तक) का तथा दूसरा शिलालेख १५३३ ई० का माना जाता है।

इस लिपि के उद्भव के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता परन्तु चीनी परम्परा के अनुसार एक आवी ने इसका आविष्कार किया था।

इस लिपि में वर्ण या अक्षर नहीं होते परन्तु एक चित्र या चिह्न ही एक ध्वनि द्वारा एक वस्तु या भाव का बोध कराता है। 'फ० सं० – २३३' पर वीयल द्वारा पहचाने गये कुछ चिह्न उनके उच्चारण के साथ दिये गये हैं। उसके पश्चात् डी० ओलोन द्वारा पहचाने गये चिह्न[1] दिये गये हैं। तीसरे कालम में कियाओ कियो (Kiao – Kio) भाषा के चिह्न तथा चौथे कालम में वेइ – निंग (Wei – Ning) भाषा के चिह्न दिये गये हैं। इन दोनों भाषाओं के चिह्नों का भी डी. ओलोन ने ही रहस्योद्घाटन किया है।

म्याओ – त्से लिपि

यह दक्षिण – पश्चिमी चीन की एक आदिवासी – जाति की लिपि है। यह जाति चीन के सुदूर दक्षिण – पश्चिमी पहाड़ियों में निवास करती थी। यहाँ भी धर्म – प्रचारक डी ओलोन पहुँचा और वहाँ के एक आदिवासी के सहयोग से उसने एक ३३८ चिह्नों का शब्द – कोष तैयार किया। उनमें से कुछ चिह्न 'फ० सं० – २३४' पर दिये गये हैं।

इसके उद्भव व विकास के विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

मोसो लिपि

मोसो एक जाति का नाम है जो यूनान के उत्तर – पश्चिम की ओर निवास करती है तथा तिब्बत भाषा बोलती है। एक घुमक्कड़ विद्वान् तेरियन डी लकाउपेरी (Terrien de Lacouperie) ने इसकी लिपि के कुछ चिह्न १८८५ में रॉयल एशियाटिक सोसायटी के जर्नल (Journal of the Royal Asiatic Society) में प्रकाशित कराये। उन्हीं चिह्नों में से कुछ चित्रात्मक चिह्न 'फ० सं० – २३५' पर दिये गये हैं।

ची तान लिपि

चीन के उत्तर – पूर्व में एक छोटा सा राज्य ची तान (Ch'i – tan) था। यह राज्य तुंगूसी जाति का था। यह राज्य यू चेन (Yu – Chen) ने ११२५ में नष्ट कर दिया। यू चेन ने ची तान लिपि का आविष्कार १११९ में किया। ११३८ में इसको सरल बनाया गया तथा इसका नाम 'छोटी लिपि' रख दिया

1. Parker, E. H. : 'The Lolo – Written Characters' I. A. XXVII (1895), p. – 172.

चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि

शब्द	वीयल द्वारा चिन्ह	उच्चारण	ओलोन द्वारा चि०	उच्चा०	कियाओ कियो चि०	उच्चा०	वेइ निंग चिन्ह	उच्चा०
वर्ष		कोऊ K'OU		कोऊओ KOUO		कोऊ K'OU		क-आओ K'AO
जल		जे je		जेऊ jeuh		गोऊ gou		इए Yie'
हस्त	Z	ले le'		लोऊ lou		लोऊ lou		ला la
माता		मा ma		मो mo		मू mu		मा ma
चन्द्र		ल्हा hla		ल्हो hlo		ल्हो hlo		ल्हो hlo
अश्व		मोन mon		ह्म hm	H	म् m'		मोन mon
पत्थर		लोउ lou				ल्लो llo		लो lo
आकाश		मोन mon		मेउ meu				मोन mon
पर्वत		पो po		बोह boh		बोउ bou		बो bo
देखना		ने ne'		च्लो Chlo	C	हेउ h'eu		ना na
एक	NI	ती ti		त्से tse		त्से t'se		ता ta
दो	=	ग्नी gni		निक nic		न्जे nje		ग्नी gni
तीन	≡	से se		सो so		सो so	≡	सेउ seu
दस	4	त्से tse		त्सी tsi		त्सी tsi		त्सेउ tseu

फलक संख्या - २३३

दक्षिण -- पश्चिम चीन की म्याओ -- त्से लिपि

चिन्ह	उच्चा	अर्थ	चिन्ह	उ॰	अर्थ	चिन्ह	उ॰	अर्थ
	ही	चन्द्र		पा॰ के	आम्रो		मों के	जाम्रो
	ह्ले	अग्नि		त्सी ने	नर		ली ती	उंगली
	ने	घोड़ा		त्सी ने	मनुष्य		ई	एक
	क्यो	ग्राम		त्सों तो	नारी		आ ओ	दो
	चो	लिखना		तू लो	बाएँ हाथ		पी	तीन
	देज	पुस्तक		त्स ओं तो	स्त्री		क ऊ	दस

फलक संख्या – २३४

मोसो लिपि

फलक संख्या – २३५

गया परन्तु इसके साथ साथ ची तान लिपि भी चलती रही। ११८० में सम्राट् शर – त्सुंग (Shih – tsung) ने भी इस लिपि को मान्यता प्रदान की। १२३४ में मंगोलों ने यू चेन का वध कर दिया परन्तु ची तान लिपि का प्रयोग बना रहा। १६५० में मंचूरिया की लिपि ने इस का स्थान ग्रहण कर लिया।

काय जुंग जू (K'ai – jung – ju in Honan) होनान के एक नगर के निकट येन ताइ (Yen – ta'i) उपनगर से प्राप्त उपर्युक्त दी गई 'छोटी लिपि' के एक अभिलेख को १८८३ में देवेरिया (Deveria) ने प्रकाशित करवाया। तत्पश्चात् एक चीन – विशेषज्ञ (Sinologist) हर्थ (Herth) ने बड़ी कठिनाई से कुछ शासकीय प्रलेख प्राप्त कर लिये। यह प्रलेख चीनी तथा यूचेन लिपियों में लिखे हुए थे। डबल्यू० ग्रूबे (W. Grube) ने बड़े परिश्रम से २२ शासकीय प्रलेख का अध्ययन करने के पश्चात् अनुवाद किया। तदनन्तर इसके ८७० शब्दों का शोध करके ज्ञात हुआ कि यह लिपि अक्षरात्मक है। इसके लिखने की पद्धति ऊपर से नीचे तथा दायें बायें चीनी लिपि की तरह है।

इस लिपि के कुछ शब्द, जिनका ग्रूबे ने अनुवाद किया 'फ० सं० २३५' पर दिये गये हैं। वाक्य के अर्थ इस प्रकार किये जायेंगे :—"महाराजाधिराज ने आपके सूचनार्थ भेजा है (*His Majesty presents for your information*)"।

इसी 'फ० सं० – २३५' पर नीचे चीन की 'ऐन्द्रजालिक लेखन कला' (Magical Script) के कुछ उदाहरण (प्राचीन व अर्वाचीन काल के) दिये गये हैं।

पठनीय सामग्री

Bacot, J. : Les Mo – So (1913).
Blackney, R. B. : A Course In the Analysis of Chinese Characters (1926).
Brandt, J. J. : Introduction to Spoken Chinese (1944).
Creel, H. G. : The birth of China (1938).
Chalfant, F. H. : Early Chinese Writing (Memoires of the Carnegi Museum, 1911)
Chan, Shan Wing : Elementary Chinese (1951)
Chao, Y. R. : Language and Symbolic Systems (Cambridge – 1960)
Chih Pet Sha : A chinese First Reader (1948)
Gelb, J. I. : A study of writing (1965)
Fitzgeral, C. P. ; China – A short Cultural History.
Goodrich, L. C. ; A short History of Chinese People (1951).
Hopkins, L. C. : The Development of Chinese Writing (1910).
Karlgren, B. : Sound and Symbol in Chinese (1971)
" " : Philology and Ancient China (1926)
" " : The Chinese Language (N. Y. – 1949)

Latourette, K. S. : The Chinese – Their History and Culture (1946).

,, ,, : The Development of China (1946).

Laufer, B. : A Theory of the Origin of Chinese Writing (American Anthropologist – 1907).

,, ,, : The Nichols Mo – So Manuscript (The Geographical Review – 1916)

Mathews, R. H. : Chinese English Dictionary (Harvard Uni. Press – 1916)

Nehru, J. L. : Glimpses of World History.

Ollone, d.' H., M., G. : Mission d' Ollone (1909).

Owen, G. : The Evolution of Chinese Writing (1911).

Parker, E. H. : The Lolo Written Characters (The Indian Antiquary Vol. XXVII – 1895.)

Peisha, Chih : A Chinese First Reader (1948)

Sung, Yu Feng and Black, Robert : Chinese in 30 Lessons (1945)

T'oung Pao

Wieger, L. : Chinese Characters (1940).

Williamson, H. R. : Teach Yourself Chinese (1972).

□

मध्य एशिया

इसमें मंगोलिया, साइबेरिया, मंचूरिया, सोग्दिया आदि देशों की लिपियों का वर्णन दिया गया है।

मंगोलिया

मंगोल एक पर्यटनशील जाति थी जो मध्य एशिया के पठारों व साइबेरिया के मैदानों में घूमा करती थी। यह जाति किसी प्रकार से मुख्य नहीं समझी जाती थी। इस जाति के लोग इधर उधर प्रकीर्णित थे और इनमें किसी प्रकार की एकता का भाव नहीं था, परन्तु अकस्मात यह लोग आपस में एक हो गये और इन्होंने अपना एक नेता चुन लिया जिसका नाम 'बड़ा ख़ान' (एक पदवी) रखा गया। यह था तिमूचिन जो बाद में चंगेज़ ख़ान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इतिहास : इस जाति का इतिहास इसी ख़ान के काल से आरम्भ होता है। इसका जन्म ११५५ में हुआ और पदवी मिली जब यह ५१ वर्ष का था। चंगेज़ ख़ान के अन्तर्गत इस जाति के वीरों ने पृथ्वी को हिला दिया। पश्चिम में सीरिया तथा हंगेरी तक और पूर्व में चीन की सीमा तक इसने अपनी विजय पताका फहराई। शक्तिशाली वीर युवावस्था में ही युद्ध में रत रहते हैं और अन्त में विलासी हो जाते हैं परन्तु चंगेज़ ख़ान ने अपनी ५२ वर्ष की अवस्था में अपने पराक्रम का प्रदर्शन किया। संसार का यह पहला मनुष्य है जिसने अपने जीवन काल में इतने देशों को रौंद डाला।

इस जाति ने मंगोल वंश के नाम से चीन देश पर १२७९ से १३६८ तक शासन किया परन्तु इस जाति का अपना कोई देश न था। इनका एक मुख्य भूमि भाग अवश्य हो गया था जहाँ यह लोग स्थापित हो गये थे और उसी को मंगोलिया के नाम से सम्बोधित किया जाता था जो चीन साम्राज्य के अन्तर्गत था। उसका मुख्य नगर उर्गा (आ० उलान बतोर) था। आरम्भ में यह 'शम्मा' (आकाश) के पुजारी थे परन्तु बाद में यह बौद्ध धर्मानुयायी बन गये। इस धर्म के पूज्यनीय थे 'लामा' जिनको यह लोग जीवित बुद्ध भगवान् की तरह मानते थे।

जब चीन में मंचू राज्य का अन्त हुआ, १९११ की क्रान्ति हुई तो यहाँ के उपशासक स्वतन्त्र हो गये। परन्तु यह स्वतंत्रता उत्तरी मंगोलिया में हुई और तभी से दो भाग हो गये, उत्तरी और दणिक्षी मंगोलिया, अथवा बाहरी और भीतरी। यह भीतरी भाग चीन के अन्तर्गत रहा तथा बाहरी रूस के प्रभाव में आ गया। १९२४ में एक घोषणा के अनुसार यह देश पूर्ण स्वतंत्र हो गया परन्तु रूस के प्रभाव के कारण समाजवादी हो गया। इसको रूस से हर प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहा और उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहा।

मंगोलिया की लिपियाँ : मंगोल जाति ने केवल नर – संहार ही नहीं किया अपितु अपनी जाति के उत्थान के लिए कई प्रकार की लिपियों का भी निर्माण किया।

मंगोल जाति की उपजातियाँ, जिन्होंने अपनी लिपि का विकास किया
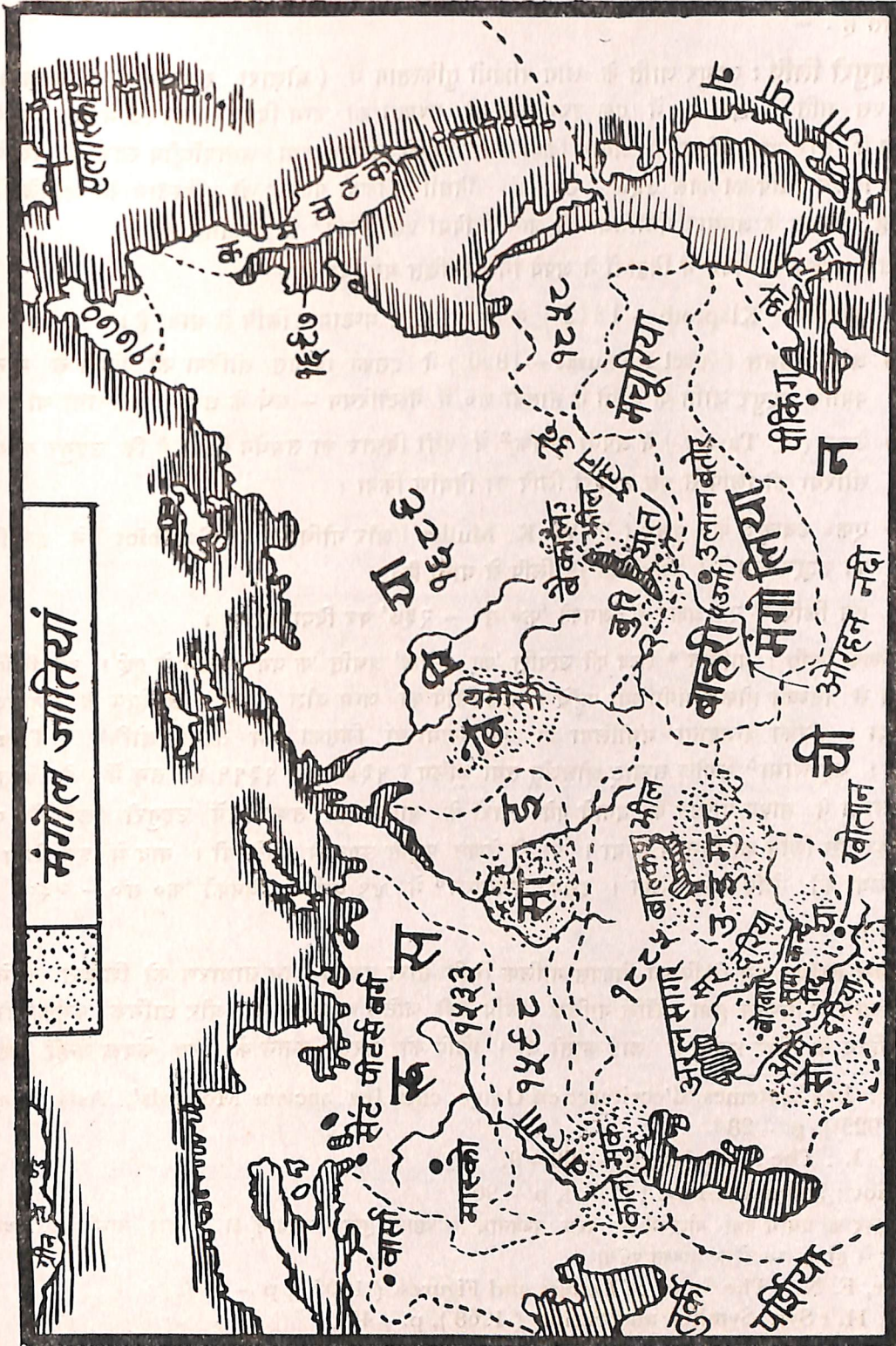
फलक संख्या – २३६

विश्व की प्रसिद्ध हिंसक जाति ने अहिंसक बौद्ध धर्म अपनाया। मंगोलिया की लिपियों का वर्णन निम्नलिखित है :–

उइगुरी लिपि : उइगुर जाति के लोग पश्चिमी तुर्किस्तान में (बोख़ारा, समरक़न्द एवं बल्ख़) रहा करते थे। इस जाति ने छठी ई० में एक उच्चकोटि की सभ्यता को जन्म दिया। १२२७ में इस लिपि का चंगेज़ ख़ान ने सारे मध्य एशिया में प्रयोग किया तथा इसको राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की लिपि का स्थान दिया। इस लिपि का काल ७५० – ७६० ई० निर्धारित किया गया है जो तुर्किस्तान के अभिलेखों पर आधारित है। पेल्यफ़ के अनुसार मंगोलिया की अन्य लिपियाँ इसी लिपि[1] से विकसित हुईं।

इसके उद्भव के विषय में विद्वानों ने अपने निम्नलिखित मत दिये हैं :—

- क्लाप्रोथ (Klaproth – 1812) ने इसका उद्भव मण्डायक लिपि से माना है।
- अबेल रेमूसत (Abel Remusat – 1820) ने इसका विकास सीरिया की लिपि से माना है क्योंकि उइगुर जाति के लोगों ने सातवीं श० में नेस्टोरियन – चर्च के धर्म को अपनाया था।
- टेलर (I. Taylor) ने अपनी पुस्तक[2] में इसी विचार का समर्थन किया है कि उइगुर लोगों ने सीरिया की लिपि से इस उइगुरी लिपि का निर्माण किया।
- एफ० डबल्यू० के० मूलर (F. W. K. Muller) और गौथिआट (Gauthiot) ने इस लिपि का उद्भव सोग्दी (Sogdian)[3] लिपि से माना है।

इस लिपि में २० अक्षर थे जिनको 'फ० सं० – २३७' पर दिया गया है।

गालिक लिपि : 'गालिक'[4] शब्द की उत्पत्ति 'का – लेख' अर्थात् 'क वर्ग' लेखन से हुई। इस लिपि के अक्षर भारत से तिब्बत होकर मंगोलिया पहुँचे। इस लिपि का जन्म बौद्ध – धर्म – साहित्य के अनुवाद के लिए हुआ था। इसका जन्मदाता मंगोलिया का एक लामा था जिसका नाम सोर्ज्जी ओसिर (Tsordji Osir) था। यह लामा[5] मंगोल सम्राट् ओलजैतू तथा कूलिंग (१३०७ एवं १३११ ई० सन् में) के अन्तर्गत था। इस लामा ने साक्य पण्डित के बनाये गये अक्षरों के आधार पर तथा इसमें उइगुरी लिपि के पाँच चिह्न जोड़कर इस लिपि का निर्माण किया। इसकी लेखन पद्धति ऊपर से नीचे थी। बाद में इस लिपि का स्थान मंगोलिया की लिपि ने ले लिया। इसकी वर्णमाला[6] में ४९ वर्ण थे जिनको 'फ० सं० – २३८' पर दिया गया है।

मंगोल लिपि : इस लिपि का विकास गालिक लिपि द्वारा हुआ। जन साधारण को शिक्षित करने के लिए इसका जन्म व विकास हुआ क्योंकि गालिक लिपि बड़ी जटिल व कठिन थी और धार्मिक कर्मकाण्डों के लिए व साहित्य के लिए प्रयोग में लाई जाती थी। लिपि को सरल बनाने के लिए केवल उन्हीं अक्षरों

---

1. Pelliof : 'Les Systemes d'ecritures en Usage chez les anciens Mongols', Asia Major II. (1925), p. – 284.
2. Taylor, I. : The Alphabet, p. – 308 – 9.
3. Gauthiot : Journal Asiatic (1911), p. – 90.
4. 'लामा' शब्द का प्रयोग तथा बौद्धधर्म का परम पूज्यनीय अधिष्ठाता बुद्ध – भगवान् का अवतार मानने का विश्वास मंगोलिया से ही आरम्भ होकर तिब्बत पहुँचा।
5. Skinner, F. N. : The Story of Letters and Figures. (1902), p. – 203.
6. Jansen, H. : Syn, Symbol and Script, (1968), p. – 417.

उइगुरी लिपि

अ आ	इ ई	उ ऊ	ए
ग क	य ज	र	ल
त	द	च	स
श	ज़	न	ब प
व	व	म	ह

फलक संख्या – २३७

गालिक लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
औ	अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ	च
छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
		क्ष	ज़	अई	श़			

फलक संख्या – २३८

को रखा गया जो भाषा के अनुसार प्रयोग में आते थे। इसको ऊपर से नीचे तथा बायें से दायें लिखा जाता था।

मंगोलिया में एक और लिपि भी प्रचलित थी जिसका विकास उइगुरी लिपि से तेरहवीं श० में किया गया तथा उसके पश्चात् सोग्दी लिपि का भी इसमें सम्मिश्रण हुआ।

'फ० सं० – २३९' पर मंगोल लिपि के दो प्रकार के वर्ण दिये गये हैं। ऊपर वाली लिपि की वर्ण – माला[1] मंगोलिया के दूतावास द्वारा नई दिल्ली से प्राप्त की गई है। इस लिपि को ऊपर से नीचे किस प्रकार मिला कर लिखा जाता है पृष्ठ के नीचे (सीधी ओर) 'खुदानन्द' शब्द लिख कर बतलाया गया है। दूसरे प्रकार की लिपि पृष्ठ के नीचे की ओर दी गई है जो उइगुरी लिपि से सम्बन्धित है। इस लिपि का एक पाठ[2] 'फ० सं० – २४०' दिया गया है जिसको ऊपर से नीचे तथा फिर बायें से दायें पढ़ा जायेगा और जिसके अर्थ निम्नलिखित हैं :—

"प्राचीन काल में कबालिक के नगर में सेन – तारोल्तू नाम का एक (ब्राह्मण) बरहामिन था जो ब्रह्म विद्या के प्रत्येक विषय में निपुण हो गया था।"

इसी पृष्ठ पर सीधी ओर मंगोलिया की लिपि में अंक भी दिये गये हैं।

१९४१ से सीरिल लिपि का, जिसका प्रयोग रूस में होता है, प्रयोग आरम्भ हो गया।

कालमुक लिपि : कालमुक लोग पर्यटनशील थे। इनके घर नहीं तम्बू होते थे जिनको अपने साथ लिए फिरते थे और उन्हीं में रहते थे। यह लोग सतरहवीं शताब्दी में वॉल्गा नदी के दक्षिणी भाग में बस गये। वैसे तो यह मध्य – एशिया के मैदानों में फैले हुए थे परन्तु आपस के झगड़ों के कारण १६३६ में अपनी जन्म भूमि छोड़ कर रूस चले गये थे। अठारहवीं श० में रूस एवं पर्शिया के युद्ध में यह लोग रूस के लिए अच्छे योद्धा सिद्ध हुए। जब वहाँ की एक अन्य जाति से झगड़ा हो गया और इनके बहुत से साथी वीर – गति को प्राप्त हुए तो बचे – खुचे फिर पश्चिमी तुर्किस्तान में आकर बस गये। यह लोग बौद्ध – धर्म के पालनकर्त्ता थे।

लामा जया पण्डित ने १६४८ में इस लिपि का निर्माण मंगोलिया लिपि द्वारा किया[3]। इस लिपि का नाम 'तोदार हाई उदुक' रखा। इसमें २४ वर्ण होते थे जो 'फ० सं० – २४१' पर दिये गये हैं।

बुरियात लिपि : मंगोल जाति की अनेकों उपजातियों में से एक उपजाति का नाम बुरियात था जो साइबेरिया के मैदान में बैकाल झील के आसपास पहले घूमा करती थी परन्तु फिर उन्नीसवीं श० में उसी भू भाग में बस गई। इस उपजाति के लोग मुख्यतया पशु – पालन का कार्य करते थे। उनकी भाषा में अनेकों बोलियां प्रचलित थीं। सतरहवीं श० के अंत में इन लोगों ने बौद्ध धर्म के लामावाद को अपना लिया परन्तु बाद में रूस के प्रभाव में आकर यह लोग ग्रीक ऑर्थोडाक्स चर्च (Greek Orthodox Church) के ईसाई – धर्म के अनुयायी हो गये। इसी सतरहवीं श० में यह भू भाग एक आक्रमण द्वारा रूस के अधिकार में आ गया। १९२३ में इस भू भाग की सीमा निश्चित करके बुरियात ए० यस० यस० आर० (Buryat A. S. S. R.)[4] स्थापित कर दिया गया तथा रूस का अंग बन गया।

---

1. लेखक ने स्वयं दिल्ली स्थित मंगोलिया के राजदूत से १९७३ में प्राप्त की।
2. Sehmidt, I.J. : Grammar der Mongolian Spracha (St. Petersberg. – 1831), p. – 16.
3. Laufer, B. : Keleti Szemle, Vol. VIII, (1922). p. – 186.
4. Autonomous Soviet Socialist Republic.

मंगोलिया की दो प्रकार की लिपियाँ

अ	ए	इ	उ	ओ	ऊ	ब	बे	बी	बो	बु
बू	क़	क़ो	कू	गे	गो	गू	न	ने	नी	नो
नु	नू	ह	म	ल	छे	थ	द	च	स	य
फ़	फ	छ	श	व	ज़	दूसरा प्रकार	अ	ए	इ	ओ
उ	औ	ऊ	न	ब	क	ग	क़	ज	म	ल
र	त	द	य	स	श	च	व		रवु क्ष न द	अक्षरों को मिला कर लिखा गया

मंगोल लिपि का एक प्रतिदर्श

अंक

अंक	नाम
१	नेरव
२	हयुर
३	कोरो
४	तुर
५	थाऊ
६	चुरगा
७	टोलो
८	नैम
९	पुस
१०	अरऊ

कालमुक लिपि

अ	ए	इ	ओ	उ
औ	ऊ	न	ब	प
क	ग	ज	म	ल
र	त	द	य	स
श	च	व	ढ़	

फलक संख्या – २४१

इस लिपि का निर्माण लामा नाग्द बां दोर्जे ने (रूसी भाषा में अग्वां दोर्जीव – Agvan Dordjiev) १९२० में किया परन्तु बुरियात लोग इसको अपना नहीं सके, तदनन्तर १९३१ में बुरियातियों ने रोमन लिपि का प्रयोग आरम्भ किया परन्तु यह लिपि भी प्रयोगात्मक न बन सकी। १९३७ में रूस की सीरिलिक लिपि अपना ली गई और यही राजकीय लिपि भी बन गई।

'फ० सं० – २४२' पर केवल वह लिपि दी गई है जो लामा दोर्जे ने तैयार की थी। इसमें २३ वर्ण थे। यहाँ की सीरिलिक लिपि जो मूलतः रूस ने अपनाई थी रूस की लिपि के वर्णन के साथ दी जायेगी।

तोखारी लिपि : तोख़ारी जाति के मंगोलों ने अपनी तोख़ारी भाषा के लिए बौद्ध साहित्य द्वारा भारतीय पद्धति पर, सातवीं व आठवीं श० के आस पास, पूर्वी तुर्किस्तान में इसका आविष्कार किया। ए० वान गबैन (A. Von Gabain) ने इस लिपि के कुछ अभिलेख १९५१ में एक प्राचीन बौद्ध मठ से प्राप्त किये। इसकी वर्णमाला 'फ० सं० – २४३' पर दी गई है। तोख़ारियों ने अपने निवास के भू – भाग को तोख़ारिस्तान नाम दिया जिसकी राजधानी बल्ख़ थी।

मंचूरिया

इतिहास : मंचूरिया का दूसरा नाम मांचाओ कुओ (Manchoukuo) है। यहाँ के निवासी मूलतः मंगोल जाति की एक शाखा तुंगू जाति के थे। यह पर्यटनशील थे। सतरहवीं श० में इस जाति के एक नेता ली ज़ू चेंग (Li Tz■ – Cheng) ने चीनी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा स्वयं चीन – सम्राट् होने की घोषणा कर दी। इस विद्रोह में चोन साम्राज्य के उच्च सेना – पदाधिकारी भी भीतरी – रूस से सहयोगी थे। यही ली १६४४ में चीन के मंचू वंश का संस्थापक बना। इस देश का मुख्य नगर शीकिंग (Hsiking) था।

मंचू वंश के शासन के अन्तिम दिनों में मंचूरिया में रूस का प्रभाव बढ़ गया था। परन्तु यह प्रभाव रूस व जापान के १९०४ – ५ के युद्ध के पश्चात् कम हो गया और इसकी जगह जापान ने ले ली।

१९३० में जापान ने सैनिक आक्रमण करके मंचूरिया को अपने अधीन कर लिया। १९३२ में यह जापान का 'मांचाओ कुओ' के नाम से एक प्रांत बन गया। तत्पश्चात् यहाँ की जनसंख्या में जापानी अधिक संख्या में आ गये। जापान के साथ चीन का बर्षों युद्ध चलता रहा। साम्यवादी चीन का राज्य स्थापित होने के पश्चात् मंचूरिया फिर चीन देश में सम्मिलित कर लिया गया।

लिपि : तेरहवीं श० से मंचूरिया निवासियों ने मंगोलिया की भाषा व लिपि[1] का प्रयोग किया। जब चीन में मं चू वंश का शासन आरम्भ हुआ तब सतरहवीं श० में मंगोलिया की लिपि में सुधार किया गया तथा मंचूरिया की मुख्य भाषा के अनुसार यहाँ के एक विद्वान् दा – हाई ने एक स्वतंत्र लिपि का निर्माण किया। १९३७ के पश्चात् यहाँ की लिपि लोप हो गई और उसका स्थान चीनी लिपि ने ग्रहण कर लिया।

यहाँ की लिपि में २३ वर्ण[2] थे जो 'फ० सं० – २४४' पर दिये गये हैं।

---

1. Wylie, A. : 'A Discussion on the Origin of the Manchus and their written Character' – Chincse Researches, IV. (Shanghai – 1897).
2. Meillet – Cohen : Les langues du monde (1924), p. – 238.

बुरियाती लिपि

अ	ए	इ	ओ	उ
ऊ	औ	न	ब	प
च़	ग	क	म	ल
र	त	द	य ज	स
श	च	व		

फलक संख्या – २४२

तोख़ारी लिपि

अ		आ		इ		ई		उ		ऊ		ए	
ओ		ऐ		औ		ऋ		क		ख		ग	
घ		ङ		च		छ		ज		झ		ञ	
ट		ठ		ड		ढ		ण		त		थ	
द		ध		न		नं		प		फ		ब	
भ		म		य		र		ल		व		श	
ष		स		ह		मं		हं		ख़		व्ह	
क़		व		ड़		ळ		ण्ह		म्ह		ल्ह	
श्ह		ष्ह		थ्ह		था		थि		थी		थु	
थू		थे		थो		थै		थौ		थ्क		थ्क़	

फलक संख्या – २४३

मंचूरिया की लिपि

अ	ए	इ	ओ	उ
अॅ	न	ब	प	च़
ग	क	ज	म	ल
र	त	द	य	स
श	च	व		

फलक संख्या – २४४

सोग्दिया

इतिहास : सोग्दिया (प्राचीन पर्शियन – सुगुदा; ग्रीक – सोग्दियाना) ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में प्राचीन पर्शियन साम्राज्य का एक प्रांत था। ई० पू० की दूसरी श० में ग्रीक शासकों ने इसको बैक्ट्रिया (बख्त्रिया) राज्य में सम्मिलित कर लिया। आधुनिक समरकन्द एवं बोखारा के भूमि – भाग को सोग्दिया कहते हैं। सोग्दिया के निवासी प्राचीन पर्शिया के ही निवासी थे जो पूर्वी तुर्किस्तान में बस गये थे। इनका मंगोल निवासियों के साथ सम्मिश्रण हो गया।

लिपि : सोग्दी भाषा का मध्य एशिया[1] में कई शताब्दियों तक प्रचलन रहा। मुलर को १९०९ में क़ारा बल्गासुन के निकट उत्तरी मंगोलिया में एक नवीं श० का त्रैभाषिक शिलालेख प्राप्त हुआ। इस भाषा का प्राचीनतम् अभिलेख तुन हुआंग नगर क एक घण्टा – घर पर अंकित सर आरेल स्टाइन (Sir Aurel Stein)[2] को १९०८ में प्राप्त हुआ जिसका काल ईसा की दूसरी श० माना जाता है। दो जर्मन विद्वानो यफ० सी० एन्ड्रियास (F. C. Andreas) और एफ० डबल्यू० म्युलर (F. W. Mueller), न तथा एक फ्रांस के आर० गौथियत (R. Gauthiot) ने इस लिपि का रहस्योद्घाटन किया।

मुलर तथा अन्य विद्वानों ने इसका उद्भव अरमायक लिपि से माना है। इसमें २० वर्ण होते हैं। इस लिपि की बर्णमाला[3] ली काक (Le Coq)[4] ने १९१९ में तैयार की जो 'फ० सं० – २४५' पर दी गई है।

साइबेरिया

इतिहास : साइबेरिया को रूसी भाषा में सिबिर तथा संस्कृत में 'शिबिर' कहते हैं। यहाँ क प्राचीन मूल निवासी इनीसियन थे। तदनन्तर उग्रो – सम्योदी ई० पू० की तीसरी श० में आकर बस गये। १५८१ में कज़ाक यरमाक ने इस भू भाग को अपने अधीन कर लिया। कज़ाक के अर्थ हैं 'सवार'। इस जाति के लोग बड़े वीर योद्धा होते थे। अब यह लोग रूस के निवासी माने जाते हैं।

साइबेरिया की लिपियाँ : यहाँ दो प्रकार की लिपियों का विकास हुआ, एक यनिसी तथा दूसरी ओरहन। पहली यनिसी नदी के निकट मिलने से यनिसी नाम पड़ा तथा दूसरी ओरहन नदी के पास मिलने के कारण ओरहन लिपि नाम पड़ा।

यनिसी लिपि : इस लिपि का प्रथम अभिलेख एक जर्मन विद्वान्, जो साइबेरिया में प्राकृतिक अध्ययन करने आया था और जिसका नाम मेसरस्मिथ (Messer Schmidt – B. 1665, d. 1735) को १७२२ में यनिसी नदी एवं प्राचीन मंगोल – राजधानी काराकोरम के विध्वस्त नगर के निकट प्राप्त हुआ था। 'फ० सं० – २४६' पर यनिसी लिपि दी गई है।

---

1. मार्कोपोलो की यात्रा के विवरण प्रकाशित होने के पश्चात् योरोप के इतिहासकारों ने मध्य-एशिया के भूभाग को, जो चीन साम्राज्य का एक भाग था, कैथे के (CATHAY) नाम से सम्बोधित किया जिसमें काशगर, समरकन्द, खोतान आदि नगर सम्मिलित थे।
2. Stein, Aurel : Serindia, II, p. – 672.
3. Madden, F. Universal Palaeoraphy (1909), p. – 209.
4. Le Coq : Kurze Einführung indie uigurische schrift kunde Mitt. d. Sem. f. Orient Spr. XXII. plate – II (1919).

सोग्दी लिपि

अ आ	इ ई	उ ऊ	ए
ग क	य ज	र	ल
त	द	च	स
श	ज़	न	ब प
व	व	म	ह

फलक संख्या – २४५

साइबेरिया की यनिसी लिपि

अ	ए	इ ई	ओ उ	औ ऊ	य ज१	य ज२
ब १	ब २	च ज	क ग	द १	द २	य ए२
ग २	क २	को कू	ल १	ल २	म	न १
न २	न	अंच	अंग	प	क़	क़ो क़ू
र १	र २	स १	स २	श	इस लिपि में	३२ वर्ण हैं

फलक संख्या – २४६

ओरहन लिपि : इस लिपि का एक शिलालेख उसी जर्मन विद्वान् को ओरहन नदी के किनारे पर प्राप्त हुआ जो एक स्मारक पर उत्कीर्ण था। यह स्मारक ७३२ में चीन के सम्राट् ने तुर्किस्तान के राजकुमार कुल तिजिन के शुभागमन पर स्थापित करवाया था। यह अभिलेख ऊपर से नीचे तथा दायें से बायें की ओर अंकित था।

बहुत दिनों तक यह अभिलेख पढ़े नहीं जा सके। १८९३ में डेनमार्क के एक भाषा-विद्वान् वी. टामसेन (V. Thomsen) ने इन अभिलेखों के रहस्योद्घाटन में सफलता प्राप्त कर ली। इस लिपि में एक मुख्य बात यह थी कि अक्षर के नाम के पूर्व एक स्वर होता था। उदाहरणार्थ सेमेटिक लिपि में 'ल' और 'म' को 'लाम' तथा 'मीम' कहते हैं परन्तु इस लिपि में उनके नाम 'अल' तथा 'अम' होते हैं।

इन लिपियों के रहस्योद्घाटन कर्त्ताओं ने इनकी उत्पत्ति अरमायक लिपि द्वारा मानी है। जब स्टाइन द्वारा सोग्दी लिपि के विषय में ज्ञात हो गया तब साइबेरिया की लिपियों की उत्पत्ति का स्रोत भी गैन्थियट तथा टॉमसेन द्वारा इसी सोग्दी लिपि को मान लिया गया। परन्तु सोग्दी लिपि में अनेकों परिवर्तनों के पश्चात् तुर्किस्तान की भाषाओं के अनुकूल बनाया जा सका।
'फ० सं० – २४७' पर ओरहन लिपि की वर्णमाला दी गई है।

मनीकी लिपि

इतिहास : मानी का जन्म २१५ ई० में बेबीलोन में हुआ। लगभग ३० वर्ष की अवस्था से उसने अपने विचारों का प्रचार आरम्भ कर दिया और एक धर्म का प्रवर्त्तक बन गया। उसका कहना था दुनिया केवल दो बातों पर आधारित है—एक उजेला जो अच्छा है दूसरा अंधेरा जो बुरा है। यह धर्म ज़ोरोआस्टर (Zoroaster) अथवा ज़ोरथूस के धर्म से मिलता-जुलता था। इस धर्म के अनुयायी मनीकी पुकारे जाते थे।

मानी की मृत्यु के पश्चात् मनीकी अपना देश छोड़ कर भाग गये। वह पश्चिम की ओर गये तथा पूर्व की ओर गये। पूर्व में यह पूर्वी तुर्किस्तान में बस गये। यहाँ मनीकी बौद्ध धर्म के सम्पर्क में आये। चौथी श० में इन लोगों ने कुचा नगर में एक मठ का निर्माण कर लिया। सातवीं श० में यह मनीकी चीन पहुँच गये और वहाँ कई मठों का निर्माण किया।

लिपि : मनीकियों ने अपनी एक ऐसी लिपि का निर्माण किया जिसमें कुछ ध्वनियाँ पर्शिया की तथा कुछ ध्वनियाँ तुर्की भाषा की सम्मिलित की गईं परन्तु इस लिपि की उत्पत्ति अरमायक से की गई। इस लिपि के कई अभिलेख स्टाइन (A. Stein) को १९०८ में प्राप्त हुए। इस लिपि की वर्णसाला ए. वॉन गबैन (A. Von. Gabain) ने अपनी पुस्तक[1] में प्रस्तुत की है जो 'फ० सं० – २४८' पर दी गई है। इसको दायें से बायें की ओर लिखते थे।

---

1. Gabain : Alttürkische Grammatika (1951), p. – 17.
   Le Coq, A Von : 'Türkische Manichaica aus Chotscho Vol. III. (1922), p. – 34.

साइबेरिया की ओरहन लिपि

अ आ	ए	इ ई	ओ उ	औ ऊ	य ज१	य ज२
ब १	ब २	च.ज	क.ग	द १	द २	ए.१
ग २	क २	को कू	ल १	ल २	ल्दल्ल	म
न १	न २	न	अंज	अंच अंग	न्त न्द	प
क़	क़ी	क़ो.क़ू	र १	र २	स	श

फलक संख्या – २४७

मनीकी लिपि

व	ह	द	ग-ज	ब	अ
म	क	य-ज	त	श़	ज़
क़	फ़	प	अॅ	स	न
	च	त	श	र	

फलक संख्या – २४८

Brinton, C. : A History of Civilization.
Coq, A. Von Le : Buried Treasures of Chinese Turkestan (1928).
Gabain, A. Von : Uigurica. IV. (Berlin - 1931).
,, ,, : Alturkische Grammatik (1951.)
Gauthiot, R. : De l' alphabet Sogdien (Bulletin of the School of Oriental Studies – 1940).
Giles, H. A. : China and the Manchus (1912).
Henning, W. B. : Argi and Tokharians (Bulletin of the School of Oriental and African Studies – 1938).
Hosie, A. : *Manchuria* (1904).
Laufer, B. : A Summary of Mongolian Literature (1927).
Lessing, F. : Mongolen, etc. (1935).
Madden, F. : Universal Palaeography (1909).
Muellar, F. W, K. : Uigurica – I, II, III, (Berlin – 1931).
Poucha, P. : *Tocharica* (Archiv Orientalni – 1930).
Radlove, V. V. : Die altuerkishen Inschriften der. Mongolei (1899).
Ramstedt, G. T. : Kalmueckisch sprach Proben (1909).
Schmidt, I. J. : Grammar der Mongolian Spracha (St. Petersberg – 1831).
Skinner, F. N. : The Story of Letters and Figures (1902).
Stein, Sir Aurel : Sand Buried Ruins of Cathay.
,, ,, : Inner – most Asia (1928),
Swain, J. E. : History of World Civilization.
Taylor, Issac : The Alphabet.
Whymant, A. N. T. : A Mongolian Grammar etc. (1926).

कोरिया

इतिहास

कोरिया के पौराणिक काल में एक राजा तांजुन था जिसके वंश ने ११२२ ई० पू० तक शासन किया। जब चीन में शांग वंश के शासन का अंत हो गया और चाउ वंश ११२२ ई० पू० में शासक बना तब एक चीनी उच्चपदाधिकारी की – त्से अपने पाँच सहस्र साथियों के साथ कोरिया आया और कोरिया के शासन को अपने हाथ में लेकर एक नये राजवंश की स्थापना की तथा अपनी एक नई राजधानी पियोंगयांग (Pyongyang) का निर्माण करवाया। इस वंश ने लगभग ९०० वर्ष तक राज्य किया।

लगभग २१० ई० पू० में उन चीनियों का यहाँ आगमन आरम्भ हो गया जो चीन के सम्राट् शू हुआंग ती के अत्याचारों से दुखी थे। इस आगमन में चीन के सैनिक भी सम्मिलित थे। इन सैनिकों को एकत्र करके एक सैनिक योद्धा वी मान् १९३ ई० पू० में की – त्से के राजवंश को हटा कर कोरिया पर शासन करने लगा।

ई० पू० की अंतिम शताब्दी में कोरिया तीन राज्यों में विभाजित हो गया।

१. **सिल्ला राज्य** : चिनहान (दक्षिण – पूर्वी कोरिया) में ५७ ई० पू० में स्थापित हुआ।

२. **कोजूरियो राज्य** : ३७ ई० पू० में स्थापित हुआ।

३. **पैक्ची राज्य** : माहन् (दक्षिण – पश्चिमी कोरिया) में १८ ई० पू० में स्थापित हुआ।

यह तीनों राज्य एक दूसरे पर आक्रमण करते रहते थे और यह आपस के युद्ध लगभग ७०० वर्ष चलते रहे। इस बीच जापान के भी आक्रमण होते रहे। अन्त में सिल्ला राज्य ने दोनों राज्यों को परास्त कर दिया और पूरे देश को एक सूत्र में बाँध दिया। सिल्ला का राज्य ९३५ ई० सन् तक शासन चलता रहा।

९१८ ई० में सिल्ला राज्य के एक सैनिक अधिकारी वांग कीन (Wang Kien) ने विद्रोह कर दिया जो बहुत दिनों चलता रहा। अन्त में ९३५ में सिल्ला के राजा ने राज्य त्याग दिया और वांग कीन राजा बन गया। इसके वंश ने १३९२ तक राज्य किया। इसी वंश के राज्य काल में इस देश का नाम कोजूरियो से कोरियो तथा कोरिया पड़ गया। इसी काल में बौद्ध धर्म की प्रबलता दृष्टिगोचर होने लगी जिससे भिक्षु राजनीति में भाग लेने लगे। १२३१ में मंगोलों ने कई आक्रमण किये और देश को नष्ट – भ्रष्ट किया। १३६४ में एक सैनिक अधिकारी जनरल ई – ताय – जो (yi – Tae – jo) ने मंगोलों को बुरी तरह परास्त किया। १३९२ में जनरल ई ने वांग वंश के शासक को राज्य त्याग कर देने पर विवश किया और स्वयं राजसिंहासनारूढ़ हो गया और अपने नाम पर नये राजवंश की स्थापना कर दी। इस वंश ने १९१० तक राज्य किया। चीन के मिंग सम्राट् ने इस राजवंश को मान्यता दी तथा कोरिया का नाम चाउशीन (चोजेन – Chosen) रखा। 'ई' राजा ने अपनी एक नई राजधानी का निर्माण करवाया जिसका नाम हानयांग

(आ० सिओल – Seoul) रखा। इस वंश के शासनकाल में कोरिया बहुत समृद्धिशाली हो गया परन्तु बौद्धधर्म पर बन्धन लगाया गया। जो भूमि बौद्ध मठों के नाम थी उसको जनता में विभाजित कर दिया गया।

१४२० में एक राजकीय महाविद्यालय स्थापित किया गया। १५० वर्ष तक शान्ति स्थापित रही और विद्वानों को शोध व खोज कार्य का अवसर मिलता रहा। १५९२ में जापान के शोगुन हिदेयोशी ने कोरिया पर आक्रमण कर दिया। १६२७ में मंचुओं (मंचूरिया निवासी) ने चीन पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिये। इधर उन्होंने कोरिया पर भी आक्रमण किया तथा तात्कालिक शासक को मंचुओं को मान्यता देने पर विवश किया। मंचुओं ने १६४४ में चीन के मिंग वंश के शासक को परास्त कर मंचू वंश की स्थापना की।

१६५३ में कोरिया में विदेशी पहुँचे। हॉलैण्ड देश का एक जल पोत पानी में डूब गया जिसके ३६ बचे हुए नाविक सिओल लाये गये। उनको देश के बाहर जाने की अनुमति नहीं दी गई परन्तु तेरह वर्ष के पश्चात् आठ भाग जाने में समर्थ हो गये। १८३० में फ्रांस के ईसाई – धर्म – प्रचारक कोरिया आये। तदनन्तर अन्य पाश्चात्य विदेशी पहुँचे।

१८७६ में जापान ने कोरिया को एक सन्धि – पत्र पर हस्ताक्षर करने पर विवश किया जिसके अनुसार कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हो गये। क्योंकि जापान व चीन दोनों ही कोरिया पर अपना अपना आधिपत्य जमाना चाहते थे परन्तु इन दो बड़े देशों ने निश्चय कर लिया कि कोरिया पर वे किसी प्रकार का अनुचित दबाव नहीं डालेंगे जिसको दोनों देशों ने नौ वर्षों तक मान्यता दी। १८९४ में कोरिया को जापान ने निवेदन के रूप में आज्ञा दी कि वह किसी विदेशी शक्ति का सहारा न ले। १८९५ में चीन ने कोरिया की पूर्ण स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया। परन्तु इस पूर्ण स्वतंत्रता को जापान ने स्वीकार नहीं किया और कोरिया को कुछ राजनैतिक सुधार करने पर विवश किया जिसके लिये जापान से एक मंत्री को राजदूत बना कर भेजा गया। इस सुधार के लिए जब वहाँ के राजा और रानी सहमत नहीं हुए तब दोनों का बध करवा दिया गया। तदनन्तर ई – ताए – वांग को राजा बनाया गया और जापान की इच्छानुसार सुधार किये गये तथा एक नये मंत्री – मण्डल की नियुक्ति की गई जिसमें सब जापानी पक्षवाले थे। ११ फरवरी १८९६ तक यह कूटनीति चलती रही। जब राजा यह सब सहन न कर सका तो रूस के दूतावास में शरण ली। रूस ने हस्ताक्षेप करके राजा को उसके अधिकार दिलवाये और जापान के पदाधिकारियों को निकाल कर रूस के राजनैतिक व सैनिक पदाधिकारियों को नियुक्त किया गया।

१८९७ में कोरिया का राजा महाराजा हो गया जिसने कोरिया के निरपेक्ष होने की घोषणा की। १९०४ की फरवरी में रूस – जापान युद्ध छिड़ गया और जापान ने कोरिया पर आक्रमण कर दिया। १९०५ में जापान ने कोरिया को अपने संरक्षण में लेकर सारे विदेशी विभागों के कार्यों का संचालन किया। २२ अगस्त १९१० को ई वंश का अंत हो गया और कोरिया जापान साम्राज्य का अंग बन गया। दूसरे महायुद्ध के अंत तक यह इसी प्रकार जापान के अधिकार में रहा।

महायुद्ध के समाप्त होने के पश्चात् कोरिया दो भागों में विभाजित कर दिया गया। उत्तरी भाग रूस के प्रभाव में साम्यवादी हो गया तथा दक्षिणी भाग अमेरिका के प्रभाव में राष्ट्रवादी हो गया। उत्तरी कोरिया की राजधानी पियोंगयांग तथा दक्षिणी कोरिया की सिओल बन गई। जून १९५० में उत्तरी कोरिया को मजबूर होकर दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण करना पड़ा। १९५३ तक युद्ध चलता रहा और अंत में एक सन्धि – पत्र पर दोनों भागों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये। अब दोनों भागों के शासक कोरिया के एकीकरण का प्रयत्न कर रहे हैं।

कोरिया

फलक संख्या – २४९

पुमसो लिपि

क	का	को	ख	खा	खो
ग	गा	अं	आं	न	ना
नो	द	दा	नं	नां	नों
नुं	प	पा	पो	फ	फा
		बो	बू		

फलक संख्या – २५०

ओनमुन लिपि

आ	ई	ब	अ	य	ओ	ये	इये	ए
उ	यू	क	न	त	ल.रन	म	प	ख.द
च	छ	थ	फ	ख	अं	ह		

पूर्व ध्वनियों के योग से नये स्वर

अ + ई = ऐ	उ + ई = उई	ए + ई = ऐ
ओ + ई = ओई	प + ई = पई	पू + ई = पूई
इये + ई = इयेई	पो + ई = पोई	न + ओ + अं = नोगं

ओनुमन लिपि का पाठ

कनसहान	क ई	기	थ अ	타	क अ	가
इयेंहोरन्नोंमी	र	ㄹ	म	ㅁ	न	ㄴ
पपंबल थमहायक	अं ई	이	ह आ	ㅎ	स अ	사
हमचेंगी साचए	न अ	나	त अ	다	ह आ	ㅎ
नग्रोल कीरी	न	ㄴ	क अ	가	न	ㄴ
ननकमहनचीरा	क अ	가	ह अ म	함	इये अं	여
(इसके अर्थ हैं)	म	ㅁ	चए	쳥	ह ओ	호
एक चालाक कुत्ता,	ह अ	ㅎ	अंएई	에	र अ न	란
जो खाने के लिये तड़प	न	ㄴ	स अ	사	न ओ म	놈
रहा था, एक गढ़े में गिर	च ई	지	च ए	처	अं ई	이
गया जिससे निकलने का	र अ	라	न अ	나	प अ	바
रास्ता कठिन था।			ओंल	올	प अं बल	발

फलक संख्या – २५१ क

कोरिया की लेखन कला

पुमसो लिपि : ईसा की प्रथम शताब्दी में यहाँ चीन की लेखन कला सिखाई गई जो सातवीं श० तक प्रयोग में लाई गई। ६९२ ई० में एक कोरिया के विद्वान् सेलचोंगने, जो सिनमुन नरेश के दरबार का एक मंत्री भी था, एक नए प्रकार की पुमसो लिपि का निर्माण किया जो कोरिया की भाषा की ध्वनियों को उपयुक्त रूप से व्यक्त कर सके। इसका प्रयोग पन्द्रहवीं श० तक चलता रहा परन्तु कुछ परिस्थितियों के कारण यह लिपि सर्वप्रिय न हो सकी। इसके वर्ण 'फ० सं० – २५०' पर दिये गये हैं।

ओनमुन लिपि : १४४३ में ई राजवंश के राजा सी – चोंग ने एक अन्य लिपि का आविष्कार किया जिसका नाम ओनमुन रखा। ओनमुन का अर्थ कोरिया की भाषा में 'जनता की लिपि' है जो पूर्णतया वर्णात्मक है तथा लिखने में, पढ़ने में, सीखने में एवं मुद्रण में बड़ी सरल प्रतीत होती है। १४४६ में यह शालाओं में सिखाई जाने लगी।

इसको ऊपर से नीचे तथा दाएँ से बाएँ की ओर लिखा जाता था परन्तु अब इसका प्रयोग बाएँ से दाएँ होने लगा है। इसके अतिरिक्त कुछ नये अर्धस्वरों का भी निर्माण किया गया है वैसे मूलतः इसमें १७ व्यंजन और आठ स्वर थे। इसकी वर्णमाला तथा एक वाक्य 'फ० सं० – २५१, २५२' पर दिये गये हैं। यह वाक्य एक पुस्तक[1] से लिया गया है।

पठनीय सामग्री

Allen, A. B. : Romance of the Alphabet (1937).
Diringer, D. : The Origins of Alphabet (Antiquity – 1943).
Eckardt, P. A. : Ursprung der Koreanischen Schrift (1928).
Hooke, S. H. : The Early History of writing (Antiquity – 1937).
Mecune, G. M. : Notes on the Early History of Korea (1952)
Mason, W. A. : A History of the Art of Writing (1920).
McCune, G. M. : System de transcription de l' alphabet Coreen (Journal Asiatic 1933).
Osgood, C. : The Koreans and their culture (1951).
Ramstedt, G. J. : A Korean Grammar (1939).

1. Ecardt, A. : Korean conversations grammatik (1923), p – 203.

जापान

इतिहास

जापान का इतिहास पौराणिक कथाओं से आरम्भ होता है। यह कथायें दो पुराणों – कोजिकी और निहोंगी में मिलती हैं। यह दोनों पुराण आठवीं शताब्दी में रचे गये। इन्हीं पुराणों के अनुसार जापान की भूमि तथा जापानियों की उत्पत्ति देवताओं द्वारा मानी जाती है। जिसमें पहली मुख्य सूर्यदेवी[1] (जापानी नाम अमातिरासू) थी तथा दूसरा उसका भाई देवता (सुसन्नू) था। जापान का सर्वप्रथम मानव सम्राट् जिम्मू तेन्नू जो ११ फरवरी ६६० ई० पू०[2] को राजसिंहासनारूढ़ हुआ।

जापान के मूल निवासी ऐनु थे। सम्भवत: बाद में कोरिया तथा मैलेशिया से लोग पहुँचे और बस गये और उन्होंने ही मूल निवासियों को उत्तर की ओर खदेड़ दिया। ऐनु के रंग गोरे तथा शरीर पर बहुत बाल होते थे इसी से उनकी जाति की भिन्नता ज्ञात होती थी।

लगभग २०० ई० पू० के एक सम्राज्ञी, जिसका नाम जिंगो था जापान पर शासन करती थी। तब जापान का नाम यमातो (yamato) था। यमातो के निवासियों ने अपने सम्बन्ध कोरिया से अच्छे रखे। जापान को आरम्भ में जो कुछ प्राप्त हुआ वह चीन से कोरिया द्वारा हुआ। लगभग ४०० ई० में चीनी लिपि कोरिया से जापान पहुँची और ५५२ ई० में कोरिया के पैक्ची शासक ने बुद्ध की एक स्वर्ण – मूर्ति जापान को भेंट की तथा साथ में बहुत से बौद्ध – भिक्षु भी भेजे।

जैसा कि अन्य देशों में भी हुआ, जापान का इतिहास भी पारस्परिक युद्धों का इतिहास है। जापान में कौटुम्बिक नेता होते थे। उनके कुछ क्षेत्र होते थे जो एक छोटे राज्य के राजा के समान होते थे। उनके अपने सैनिक होते थे। इन्हीं राज्यों में सत्ता को प्राप्त करने के कारण युद्ध होते थे। इसी कारण जापानी लड़ाकू हुआ करते थे। यह सैनिक अपने नेता के बड़े सेवक तथा आज्ञाकारी होते थे और कौटुम्बिक नेता को देवता का अवतार मानते थे। यह बात शिन्तो धर्म ने इनको सिखाई थी। जब जापान में बौद्ध – धर्म पहुँचा तो बौद्ध – धर्म तथा शिन्तो – धर्म के अनुयायियों में युद्ध होने लगे और अन्त में (५८७ ई० में) बौद्ध – धर्म के अनुयायियों की विजय हुई।

जापान के इतिहास में जापान का महाराजा देवता का अवतार माना जाता है, उसकी ओर कोई दृष्टि उठाकर देख नहीं सकता परन्तु स्वयं महाराजा की कोई सत्ता नहीं थी। वह शक्तिशाली कौटुम्बिक नेताओं के हाथ में कठपुतली की भाँति रहता था। यही कौटुम्बिक नेता महाराजा को राजसिंहासन पर आरूढ़ करने वाले तथा उससे उतारने वाले होते थे। यही जापान के वास्तविक शासक थे।

---

1. जापान में सूर्य को देवी मानते हैं जिसको अपने भाई के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना पड़े।
2. यह तिथि काल्पनिक प्रतीत होती है।

जापान के महाराजा योमी के मरणोपरांत सोगा वंश के नेताओं में जो बौद्ध – धर्म – अनुयायी थे, और मानो नोबे वंश के नेताओं में, जो शिन्तो – धर्म – अनुयायी थे, सत्ता प्राप्त करने के लिए युद्ध हुआ जिसमें सोगा वंश की विजय हुई। परन्तु इसी युद्ध काल में सुजून महाराजा का वध कर दिया गया। तत्पश्चात् राजकुमारी सुयीको को सिंहासनारूढ़ कर दिया गया जिसने ५९३ तक शासन किया।

महाराजा योमी के एक पुत्र शोतुकू तैशी था। इसी ने मोनो नोबे के वंश को पराजित किया था। इसका नाम उमयादो भी था जिसके अर्थ थे 'अस्तबल में जन्म लेने वाला राजकुमार' क्योंकि जब इसकी माँ घोड़ों का निरीक्षण कर रही थी तब इसका जन्म हुआ था। सुयीको के पश्चात् राज सत्ता शोतुकू तैशी के हाथ में आई। यह बड़ा योग्य शासक था। इसी ने बुद्ध भगवान् का होरियूजी का विशाल मन्दिर निर्माण करवाया जिसकी भव्यता आज तक प्रसिद्ध है। इसी ने बौद्ध – धर्म – साहित्य को लिखवाया तथा अपने देश के इतिहास को आरम्भ करवाया। इसी ने देश के विधि – संहिता का निर्माण करवाया।

६२१ में इसकी मृत्यु होने पर इसकी माँ को सिंहासन पर बिठा दिया परन्तु राज सत्ता सागो – नो – ईरुका के हाथ में रही। इसी काल में सोगा वंश के विरुद्ध एक विद्रोह खड़ा हो गया जिसका नेता नाकातोमी वंश का युवक कामातोरी था और जो शिन्तो – धर्म – अनुयायी था। इसका नाम फुजी वारा पड़ गया। इसने तात्कालिक साम्राज्ञी के भ्राता राजकुमार कारू तथा उसके पुत्र राजकुमार नाका को अपनी ओर कर लिया। कामातोरी ने अपनी कूटनीति से सोगा – नो – ईरुका का वध राजकुमार नाका के द्वारा करवा दिया और सम्राज्ञी से राजत्याग करवा दिया तथा ६४५ में राजकुमार कारू को सिंहासनारूढ़ करवा दिया। अब राजकुमार कारू का नाम कोतोकू पड़ गया। महाराजा कारू नाममात्र का शासक था परन्तु कामातोरी की राजनीतिज्ञता के कारण जापान के राज्य में एकता आने लगी और चीन के सम्राट ने जापान राज्य को मान्यता प्रदान कर दी। जापान सरकार को चीनी शासन के ढाँचे पर चलाया गया।

जब महाराज कोतोकू (कारू) का स्वर्गवास हो गया और राजकुमार नाका ने राजसिंहासन पर बैठने से मना कर दिया तब उसी सम्राज्ञी कोज्यूको को जिससे राजत्याग करवाया गया था और जो राजकुमार नाका की माँ थी, पुनः राजसिंहासन पर बिठा दिया गया तथा उसका नाम साइमी रख दिया गया। ६६१ में इस सम्राज्ञी का स्वर्गवास हो गया और तब नाका को तेंची के नाम से राजसिंहान पर बैठना पड़ा। नाका की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र को एक ओर करके उसके भाई को महाराज तेम्मू के नाम से गद्दी पर बिठा दिया गया जिसने ६८६ ई० तक राज्य किया। तेम्मू के मरणोपरांत महाराजा बनाने की समस्या इस कारण खड़ी हो गई कि तेम्मू के पुत्र आहोत्सू का वध कर दिया गया था। इस कारण तेम्मू की पत्नी को सम्राज्ञी बना दिया गया जिसने ६९७ में राजत्याग कर दिया। तत्पश्चात् तेम्मू के पौत्र मोम्मू को चौदह वर्ष की आयु में महाराजा बना दिया गया। इसका बीस वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर उसकी मां जेम्म्यो सम्राज्ञी बनी। अभी तक यह परम्परा चली आती थी कि महाराजा के स्वर्गवास होने पर नई राजधानी का निर्माण होता था। निर्माणकर्ताओं को बड़ा कष्ट होता था। इस कारण सम्राज्ञी जेम्म्यो ने ७१० में नारा की नवीन – निर्मित राजधानी को स्थिर कर दिया। अब प्रत्येक क्षेत्र में चीन का अनुसरण किया जाने लगा।

७२० में सम्राज्ञी के मरणोपरांत शोमू को सम्राट् बना दिया गया। ७४९ में उसने राजत्याग कर दिया और अपनी पुत्री कोकेन को सम्राज्ञी बनवाया। ७५२ में उसने भी राजत्याग दिया और बौद्ध – भिक्षुणी बन गई। तदनन्तर कई राजा गद्दी पर बिठाये गये और उतारे गये। अंत में ७८२ में एक महाराजा सिंहासन

पर बिठाया गया जिसका नाम क्वाम्मू था। नारा से ७८४ में राजधानी हटा कर नागाओका बनाई गई और ७९४ में क्योतो बनाई गई। सम्राट् क्वाम्मू का देहांत ८०५ से हो गया।

इसके उपरांत एक नये कुटुम्ब फुजीवारा ने केन्द्रीय शासन को अपने हाथ में ले लिया। इस फुजीवारा वंश के शासन – कर्त्ताओं ने भी सम्राटों को कठपुतली ही बनाकर रखा। जब चाहा जिसको चाहा गद्दी पर बिठाया और उतारा। राजगद्दी से हटाये गये सम्राट् बौद्ध – भिक्षु बन जाया करते थे और राजनीति की गतिविधियों में छिप कर भाग लिया करते थे। इन सम्राटों का नाम 'वानप्रस्थी सम्राट्' पड़ गया और बौद्ध – मठ राजनीति के अड्डे बनने लगे।

इसी समय एक नया वर्ग दृष्टिगोचर होने लगा। इस वर्ग के लोग एक बड़ भू – भाग के स्वामी थे तथा वीर सैनिक भी थे। फुजीवारा – कुटुम्ब के शासकों ने इन लोगों को कर – वसूल – करने – वाला बना दिया। इस कारण शनैः शनैः इनकी शक्ति बढ़ने लगी। इनका नाम 'दाइमो' पड़ गया। यह लोग अपनी एक सेना भी रखने लगे। इतना ही नहीं, केन्द्रीय सरकार के आदेशों का उल्लंघन भी करने लगे तथा परस्पर युद्ध करने लगे। इनमें से दो मुख्य कुटुम्बों, ताएरा और मीनामोतो, ने तात्कालिक सम्राट् की फ़ुजीवारा शासकों को हटाने में बड़ी मदद की परन्तु फ़ुजीवारा की सत्ता को लेने के लिए परस्पर लड़ने लगे। इस प्रकार फ़ुजीवारों का ११५६ में अंत हो गया और ताएरा कुटुम्ब ने मीनामोतो को परास्त कर दिया। उसके कुटुम्ब के अन्य सम्बन्धियों को भी समाप्त कर दिया ताकि भविष्य में किसी प्रकार का भय न रहे परन्तु चार बच्चे बच गये जिसमें से एक बाहर वर्षीय बालक योरीतोमो भी था। अब ताएरा कुटुम्ब निश्चित होकर शासन करने लगा जिसका मुखिया कियोमोरी था।

जब योरीतोमो बड़ा हुआ तब उसने अपनी शक्ति बढ़ाई। ११८५ में तायरा कुटुम्ब के शासकों को परास्त कर सत्ता अपने हाथ में ले ली। सम्राट को कुछ शान्ति मिली और उसने प्रसन्न होकर योरीतोमो को एक उच्च पदवी 'सेइ – ई – ताइ – शोगुन' से ११९२ में सुशोभित किया। इस पदवी को बंशानुगत बना दिया। उसने कामाकूरा में एक सैनिक मुख्यालय 'बकूफ़ू' का निर्माण करवाया। वह न तो सम्राटों को अपनी उंगलियों पर नचाना चाहता था और न अपनी शक्ति का कोई अनुचित लाभ उठना चाहता था। वह अपने भू – सामन्तों के निकट रहना चाहता था। सम्राट् ने प्रसन्न होकर उसको आरक्षक – विभाग तथा माल विभाग का भी प्रबन्धकर्ता बना दिया। शोगुन का प्रथम शासन काल १३३३ ई० तक, अर्थात् १५० वर्ष, बड़ा शान्तिमय रहा। मंगोलों के दो आक्रमण १२७४ तथा १२८१ में हुये परन्तु दोनों में वे पराजित कर दिये गये।

इसी काल में जापानियों ने चीन से चीनी बर्तन बनाना सीखा। ११९१ में एक बौद्ध – भिक्षु चीन से चाय का पौधा लाया।

१३१८ में एक नये सम्राट दाइगो द्वितीय ने राजसिंहासन सुशोभित किया। इसी ने होजो तोकीमासा के मरणोपरांत अशिकागा तकाउजी को शोगुन की पदवी दी। इसने १३३८ से शासन का भार सँभाला।

१५७३ तक राज्य शान्तिपूर्वक चलता रहा। तत्पश्चात् फिर पारस्परिक झगड़े होने लगे जो लगभग १०० वर्ष तक चलते रहे। इसी बीच कोरिया पर भी आक्रमण किये गये परन्तु कोरिया ने सामुद्रिक युद्ध में जापान को परास्त कर दिया।

उन्हीं दिनों जापान के इतिहास में तीन प्रसिद्ध व्यक्ति आये। नोबुनागा, हिदेयोशी तथा तोकूगावा इयेयासू इन तीनों व्यक्तियों के सहयोग से जापान में एकता का भाव दृष्टिगोचर होने लगा। परन्तु पारस्परिक झगड़ों से सबसे अधिक लाभ तोकुगावा इयेयासू ने उठाया और बहुत से भूभाग का स्वामी हो गया। उसने एदो

जापान
लगभग ४००० द्वीप
५०० द्वीप निवास योग्य
जापान सागर
होकैदो
उत्तरी
प्रशांत
महासागर
हिर्यजो
हीरोशीमा
कोबे
क्योतो
कामाकुरा
योकोहामा
वाकायामा
नारा
(८ वीं शती की राजधानी)
नागासाकी

फलक संख्या – २५२

नाम का एक नगर निर्माण कराया जो आज टोकियू के नाम से प्रसिद्ध है और संसार का सबसे बड़ा नगर है। ईये यासू १६०३ में शोगुन हो गया जिसके वंशजों ने २५० वर्ष शासन किया।

१५४२ में (ग्रहयुद्ध काल) में पुर्तगाली सबसे पहले जापान आये। यही लोग सर्वप्रथम जापान में तोपें और बन्दूकें लाये। १५९२ में स्पेन से तदनन्तर हालैण्ड एवं इंगलैण्ड से व्यापारी आने लगे। १५४९ में ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा। बौद्ध धर्म के मठ राजनीति के अड्डे समझे जाते थे इसी कारण ईसाई – धर्म – को प्रोत्साहन दिया जाने लगा ताकि बौद्ध धर्म की शक्ति कम हो। १५८७ में ईसाई – धर्म – प्रचारकों को बीस दिन के अन्दर जापान छोड़ने का आदेश दे दिया गया। इयेयासू की मृत्यु के पश्चात् उन सब को ईसाई – धर्म छोड़ना पड़ा जिन्होंने इसको पहले ग्रहण कर लिया था। १६३६ तक सारे विदेशियों को जापान के बाहर निकाल दिया गया केवल कुछ हालैण्ड निवासी बच गये जिनको नागासाकी में बन्दी के रूप में रहने दिया गया। अब न कोई जापान से बाहर जा सकता था और न जापान में आ सकता था।

१८५३ में अमरीका से एक जलपोत जापान आया। अमरीका के राष्ट्रपति ने जापान से अपने बन्दरगाह खोलने का निवेदन किया था। जापान ने प्रथम बार स्टीमर देखा था। शोगुन शासक इस बात पर सहमत हो गये और दो बन्दरगाह विदेशी व्यापारियों के लिये खोल दिये गये। यह समाचार सुनते ही अंग्रेज, रूसी एवं डच्छ इत्यादि आना आरम्भ हो गये। विदेशों से सन्धियाँ हुईं और शोगुनो ने अपने को सम्राट मानकर सन्धि पत्रों पर हस्ताक्षर किये। इसके कारण विदेशियों ने आन्दोलन किया। कुछ विदेशी मारे गये तब उन लोगों ने नौ सेना का आक्रमण किया। स्थिति और बिगड़ गई और जापान के शोगुन शासकों को अपने कार्य से त्यागपत्र देना पड़ा। तोकूगावा कुटुम्ब का ईये यासू १६०३ में शोगुन हुआ था और उसके कुटुम्ब का शासन १८६७ में समाप्त हो गया। लगभग एक सहस्र वर्ष के पश्चात् महाराजा ने, जो अभी तक शासनकर्ताओं के हाथ में कठपुतली की भाँति एक नाममात्र के महाराजा थे, अब स्वतन्त्रता की साँस ली। इस समय एक चौदह वर्षीय बालक सम्राट मुत्सी हितो के नाम से राजसिंहासनारूढ़ हुआ जिसने १९१२ तक शासन किया। इस शासन काल को जापानी भाषा में 'मेईजी' (प्रकाशित राज्य या ज्ञानवर्धक) कहते हैं। वास्तव में जापान ने विदेशी नौसेना की विजय तथा अपनी पराजय से अपने को बड़ा हीन समझा और निश्चय किया कि वह ऊपर उठेगा उन्नति करेगा। इसी निश्चय के कारण जापानी योरोप और अमरीका गये और वहाँ जाकर जो कुछ सीखा उससे अपने देश को उद्योग तथा विज्ञान के पथ पर अग्रसर किया।

सामन्तवाद का अंत कर दिया गया। राजधानी को क्योतो से एदो लाया गया और उसका नाम परिवर्तित करके टोकियो रखा गया। एक विधान बनाया गया। दो सभाओं का निर्माण हुआ। अब जो भी परिवर्तन होते सब सम्राट् के नाम पर होते थे। अब सम्राट् की मान्यता इतनी बढ़ा दी गई कि उसकी पूजा की जाने लगी। एक दिन था कि जापान ने सब कुछ चीन से सीखा था परन्तु अब वह प्रत्येक बात में चीन से आगे था। चीन विदेशों द्वारा दबाया जा रहा था इधर जापान अपनी शक्ति बढ़ा रहा था।

जापान के कुछ मछियारों को चीन ने पकड़ लिया तथा वध कर दिया। इस बात पर जापान ने चीन से क्षतिपूर्ति की माँग की। जब चीन ने इसको देने से मना किया तो जापान ने आक्रमण की धमकी दी। चीन दक्षिण में फ्रांस की सेना से उलझा था। १८७४ में उसने जापान को क्षतिपूर्ति का धन दे दिया। अब जापान ने कोरिया से कुछ झगड़ा मोल लिया और उसको व्यापार करने की अनुमति देने पर विवश किया। कोरिया के न मानने पर जापान ने आक्रमण कर दिया। इस समय कोरिया चीन के अन्तर्गत था। इस कारण उसने चीन से सहायता की याचना की परन्तु चीन ने अपनी असमर्थता प्रगट की और हथियार डाल देने की सलाह दी।

१८८२ में कोरिया ने अपनी पराजय मान ली। अब कोरिया दो देशों के अन्तर्गत हो गया। १८९४ में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया। इसके फलस्वरूप कोरिया को स्वतंत्रता प्राप्त हुई परन्तु जापान के प्रभाव में जापान को फारमूसा द्वीप आदि चीन से प्राप्त हो गये। १९०४ – ५ में रूस से युद्ध हुआ और जापान की विजय हुई। संसार की आँखें खुलीं और जापान की इतनी शीघ्र उन्नति पर आश्चर्य प्रगट होने लगा। १९११ में चीन में साम्राज्यवाद का अंत हो गया और लोकतंत्रवाद आ गया। तत्पश्चात् प्रथम महायुद्ध आरम्भ हो गया, जापान ने भी जर्मनी के विरुद्ध अपनी घोषणा की। जर्मनी के पास चीन का शान्तुंग प्रांत था इस कारण जापान ने चीन के उस भू भाग को ले लिया तथा चीन को अपनी २१ 'मांगों' को मानने पर विवश किया। अन्य देशों ने आपत्ति की, कुछ संशोधन हुये फिर १९१५ में जापान ने अपनी मांगें किसी प्रकार पूरी कीं। चीन में जापान के लिए घृणा के भाव जागृत होने लगे।

१९१७ में रूस में क्रान्ति हो गई। १९२२ में एक सभा वाशिंगटन बुलाई गई जिसमें चार बड़ी शक्तियाँ सम्मिलित हुईं—अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस तथा जापान और सन्धि हुई कि कोई देश किसी देश के उपनिवेश को लेने का प्रयास नहीं करेगा। फिर भी जापान ने १९३१ में मंचूरिया को अपने अधीन कर लिया। १९३२ में चीन पर आक्रमण कर दिया। १९४१ में दूसरे महायुद्ध में जर्मनी से मिल गया और अमेरिका पर आक्रमण कर दिया। दक्षिण – पूर्वी – एशिया के देशों को अपने अधीन करता हुआ भारत पर भी एक दो आक्रमण किये। १९४५ के दो अणुबमों ने जापान को परास्त होने पर विवश किया। जापान को अमेरिका ने बहुत दबा कर रखा। १९४७ में एक नया विधान लागू किया गया।

यह वही जापान है जिसने दूसरे देशों से ही सब कुछ सीखा, वही जापान जो दो अणुबमों द्वारा नष्ट किया गया, हर प्रकार के बन्धनों से जकड़ा गया परन्तु आज वही जापान प्रगतिशील देशों को बहुत सी बातें सिखा रहा है। यह सब उसके देश-प्रेम तथा बलिदान की भावना का फल है।

लेखन कला

जापान के सम्बन्ध चीन से ईसा पूर्व काल से लगभग दूसरी शताब्दी से आरम्भ हुये। ईसा की प्रथम शताब्दी में सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए।

दैवी लिपि : एक जापानी विद्वान् हिराता ने अपनी पुस्तक शुइजी हिबूमीदेन (१८१९) में इसको प्राचीनतम् लिपि माना है। कीतासाते ने इसको अहिरू लिपि के नाम से सम्बोधित किया। १४४० में इस लिपि के अनेक अभिलेख मन्दिरों से प्राप्त हुये। १७७० में एक बौद्ध भिक्षु ने इसको प्रकाशित[1] किया और इसको चीनी लिपि के जापान आने के पूर्व का माना है।

४०४ ई० में महाराजा ओजिन (२७० – ३१२ ई०) ने अपने पुत्र उत्तराधिकारी को शिक्षा देने के लिये चीनी भाषा व साहित्य के दो महान् विद्वानों - अचोकी और वानी को, जो कोरिया के निवासी थे, नियुक्त किया। तभी से उच्च वर्ग के जापानियों में शिक्षा का प्रसार होने लगा और चीनी भाषा व लिपि को लोग सीखना आरम्भ कर दिये। छठी शताब्दी में जब चीन से कोरिया के द्वारा जापान में बौद्ध – धर्म तथा उसका साहित्य जापान पहुँचा और चीन में बौद्ध – धर्म – साहित्य का अनुवाद चीनी भाषा में होने लगा तो जापानी भाषा के साथ चीनी भाषा को सीखना अनिवार्य कर दिया गया और इस प्रकार शनैः शनैः चीनी

1. Kochachiro Miyazaki : 'Jindai nomoji' (Script Signs from the time of Gods)
Tokyo – 1942.

जापान की प्राचीनतम दैवी लिपि

क	की	को	कू	स	सी
सो	सू	र	री	रो	रू

फलक संख्या – २५३

भाषा विद्वानों की तथा उच्चवर्ग की भाषा बन गई। तभी से चीनी लेखन – कला की पद्धति भी जापान में आई – तूलिका (फ़ूदे), स्याही (सूमी) तथा स्याही का पत्थर (सुजूरीं) प्रयोगात्मक बने ।

कताकाना लिपि : अब एक कठिनाई होने लगी भाषा की। उदाहरणार्थ जो चीनी चित्र नारी के लिए बनाया जाता है उसको चीनी भाषा में 'नू' कहते हैं परन्तु जापानी भाषा में 'मे' कहते हैं इसी प्रकार मनुष्य के चित्र को चीन में ' रेन या ज़ेन' कहते हैं परन्तु जापान में 'हितो' कहते हैं और 'बाल' के चित्र को चीन में 'माओ', जापान में 'मो'। कठिनतायें सदैव आविष्कारों की जननी कहलाई है। इन कठिनाइयों ने जापानियों को एक अक्षरात्मक (Syllabic) लिपि के विकास करने का अवसर प्रदान किया और इस प्रकार एक वर्ण - माला तैयार कर ली गई जिसको 'काना'[1] के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा जिसके अर्थ हैं 'चीनी चित्रों (चिह्नों) का ध्वन्यात्मक रूप में प्रयोग'।

इसका निर्माण ठीक उसी प्रकार हुआ जिस प्रकार मिस्र की चित्रात्मक लिपि से फ़िनीशिया के निवासियों ने एक ध्वन्यात्मक लिपि का निर्माण किया था। चीन के चित्रों से एक भाग लेकर उसको वही ध्वनि प्रदान की जो उस चित्र की थी। इस प्रकार से चीनी लिपि का सरलीकरण किया गया। इसका आविष्कार एक विद्वान् मंत्री कीबी – नो मकीबी ने आठवीं श० के मध्य में किया। इस वर्णमाला की ध्वनियों एवं वर्णों का निर्माण चीन की काइ – शू लिपि द्वारा किया गया था और इसका नाम 'कताकाना' रखा गया। इसकी वर्णमाला[2] 'फ० सं० – २५३, २५४' पर दी गई है। आधुनिक काल में कुछ ध्वनि – परिवर्तन किये गये परन्तु अक्षरों को उसी प्रकार रखा गया। उदाहरण के लिए देखिये — सवर्ग में 'सी' की ध्वनि को 'शी' का उच्चारण कर दिया, इसी प्रकार तवर्ग में 'ती' व 'तू' का 'ची' व 'त्सू' (चू) और हवर्ग में 'हू' का 'फू' कर दिया। इस लिपि का प्रयोग १९४७ से लगभश समाप्त सा हो गया है। अब उसका स्थान 'हीरागाना'[3] लिपि ने ले लिया है। वर्तमान काल में कताकाना का प्रयोग केवल विदेशी नामों के लिखने के लिए किया जाता है, जैसे, भारत, फ्रांस, अमरीका आदि।

1. 'काना' शब्द 'कन्ना' से तथा 'कारी न' से, जिसके अर्थ हैं छिपे नाम'
2. Lange : Einführung in die Japanishe Schrift (Berlin – 1896), p. – 13.
3. 'गाना' तथा 'काना' समान शब्द हैं। काना शब्द कन्ना (Kanna) से और 'कन्ना' 'कारी न' से जिसके अर्थ हैं पेछि नाम।

कताकाना लिपि के अक्षर

अर्थ	काइ शू	कता०	अक्षर	अर्थ	काइ शू	कता०	अ०
आदर बोधक	阿	ア	अ	आवश्यक	須	ス	सू
सर्वनाम	伊	イ	ई	काल (पीढ़ियों के लिये)	世	セ	से
आश्रय	宇	ウ	उ	पहले से	曾	ソ	सो
नदी	江	エ	ए	अत्यधिक	多	タ	त
में	於	オ	ओ	विरोध करना	千	チ	ची
अधिक	加	カ	क	थूकना	津	ツ	त्सू
उत्तम	幾	キ	की	आकाश	天	テ	ते
बहुत दिन पूर्व	久	ク	कू	पृथ्वी	土	ト	तो
अनुरक्षण करना	介	ケ	के	परन्तु; कैसे	奈	ナ	न
स्वयं	己	コ	को	दास	仁	ニ	नी
घास	草	サ	स	भद्रस्त्री	奴	ヌ	नू
पहुंचना	之	シ	शी	बच्चा	子	ネ	ने

फलक संख्या – २५४

क्रमशः

कताकाना लिपि के अक्षर

अर्थ	काइशू	कता॰	अ॰	अर्थ	काइशू	कता॰	अ॰
जैसे भी	乃	ノ	नो	वीर	勇	ユ	यू
प्रकाश	八	ハ	ह	साथ में	與	ヨ	यो
तुलना करना	比	ヒ	ही		良	ラ	र
नहीं	不	フ	फ़ु	लाभ	利	リ	री
बर्तन	皿	ヘ	हे	बहा ले जाना	流	ル	रु
	保	ホ	हो	सद्व्यवहार	礼	レ	रे
अन्त	末	マ	म	संगीत का स्वर ज्ञान	呂	ロ	रो
नदी	三美	ミ	मी	दिन; सूर्य	日	ワ	व
कृषि-फल	牟	ム	मू	चतुर	慧	ヱ	वी
सबसे ऊंचा	女	メ	मे	नामों में प्रयोगात्मक	伊	ヰ	वे
बाल; पर	毛	モ	मो	साधारण	乎	ヲ	वो
भी	也	ヤ	य			ン	अं

फलक संख्या – २५४ क

हीरागाना लिपि : का विकास[1] नवीं श० के आरम्भ में हुआ। इसका निर्माण – कर्ता एक विद्वान् बौद्ध-भिक्षु कोबो – दैशी (Kobo – daishi) था। इसका विकास चीन की एक शीघ्र लिखने वाली लिपि त्साउ – शू (T'sao – Shu) से किया गया जिसको जापानी भाषा में 'सो – शो' कहते हैं। चीनी भाषा में 'त्साउ' को 'घास' कहते हैं। इस लिपि की वर्णमाला 'फ० सं० – २५५, २५६' पर दी गई है।

कताकाना और हीरागाना लिपियों में ४७ अक्षर थे। आधुनिक काल में एक 'अं' की ध्वनि जोड़ने से दोनों में ४८, ४८ अक्षर हो गये। इन में 'ई' की ध्वनि से 'यी' का 'ए' की ध्वनि से 'ये' तथा 'उ' की ध्वनी से 'वू' का काम निकाल लिया जाता है। इन लिपियों[2] में मूलतः नौ व्यंजन थे जिनमें पांच स्वरों—'अ, ई, उ, ए, ओ' की ध्वनियाँ जोड़ कर वर्णमाला बनाई गई थी। परन्तु बाद में पाँच व्यंजन और जोड़ दिये गये जिससे कुल मिलाकर चौदह व्यंजन हो गये। तत्पश्चात् संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग भी प्रचलित होने लगा। पाँच व्यंजन तथा संयुक्त व्यंजन 'फ० स० – २५७' पर दे दिये गये हैं।

१८७२ तक चीनी लिपि, जो जापान में प्रयोग की जाती थी, अपरिवर्तित रही। १९०० में चीनी चित्रों को घटा कर २००० कर दिया गया और १९५० में केवल १८५० रह गये जो आज भी पाठशालाओं में सिखाये जाते हैं। परन्तु समाचार – पत्रों द्वारा तथा ज़ापानियों द्वारा अब भी तीन सहस्त्र से कम प्रयोग नहीं होते।

चीनी चित्र व जापानी ध्वनियों के मिश्रण से एक बात नई उत्पन्न हुई। एक उच्चारण के अनेकों अर्थ बनने लगे जैसे 'शू' के लगभग ५२ अर्थ हैं इसी प्रकार 'को' के ५५ अर्थ हैं। इस कठिनता को दूर करने के लिए चीनी लिपि बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई। जापानी लिपि में 'यो' उच्चारण के चार चित्र हैं जो चीनी लिपि स लिये गये। यदि चीनी लिपि हटा दी जाए तो जापानी भाषा अधूरी रह जाये। वैसे तो एक शब्द के कई अर्थ अन्य भाषाओं में भी पाये जाते हैं परन्तु इतनी बड़ी संख्या में मिलना कठिन है।

१८८४ में एक 'रोमाजी काइ (रोमन स्क्रिप्ट सोसायटी'[3]) स्थापित हुई। इस सोसायटी ने जापानी भाषा का रोमन – करण करना आरम्भ किया। इस कार्य में एक अमरीका के धर्म – प्रचारक जे० सी० हेपबर्न (B – 1815, D – 1811) ने बड़ा परिश्रम किया। हेपबर्न ने १८८६ में एक जापानी – अंग्रेज़ी शब्द कोष (Japanese English Dictionary) भी प्रकाशित किया। १९३७ में इसको राजकीय मान्यता प्रदान कर दी गई और इस लिपि का नाम 'कोकूतेई – रोमाज़ी – पद्धति' (Official Roma Script) रखा गया।

जापान की लेखन पद्धति

जापानी लिपि बाएँ से दाएँ की ओर लिखी जाती है। यह भी चीनी लिपि की भाँति पहले तूलिका से लिखी जाती थी परन्तु अब लेखनी (पेन) से भी लिखी जाती है। इसमें स्ट्रोकों का प्रयोग होता था परन्तु अब घसीट रूप में परिवर्तित हो चुकी है। यद्यपि चीन की के – ऐ – शू से निर्मित कताकाना वर्णमाला अधिक सरल थी परन्तु फिर भी कताकाना का प्रयोग समाप्त करके त्साउ – शू या सो – शो चीनी लिपि से निर्मित हीरागाना का प्रयोग ही किया जाता है जो लिखने में कताकाना से अधिक कठिन प्रतीत होती है।

---

1. Hoffmann : A Japanese Grammar (Leyden – 1876), P. – 59.
2. कताकाना और हीरागाना लिपियों के अक्षर 'जापानी वार्तालाप' (Text for April – September 1971 – Radio Japan) पुस्तिका से तथा अन्य चीनी चित्र 'जापानी शब्दकोष' से लिये गये हैं।
3. Romaji Kai Roman Script Society.

हीरागाना लिपि के अक्षर

विवरण	साउशू	हीरा०	अ०	विवरण	साउशू	हीरा०	अ०
आदर बोधक		あ	अ	आवश्यक		す	सू
सर्वनाम		い	ई	काल (पीढ़ियों के लिये)		せ	से
आश्रय		う	उ	पहले से		そ	सो
नदी		え	ए	अत्यधिक		た	त
में		お	ओ	विरोध करना		ち	चौ
अधिक		か	क	थूकना		つ	त्सू
उत्तम		き	की	स्वर्ग; आकाश		て	ते
बहुत दिन पूर्व		く	कू	पृथ्वी		と	तो
		け	के	परन्तु; कैसे		な	न
स्वयं		こ	को	दास		に	नी
ध्यास		さ	स	भद्र स्त्री		ぬ	नू
पहुंचना		し	शी	बच्चा		ね	ने

फलक संख्या – २५५

हीरागाना लिपि के अक्षर

विवरण	साउ शू	हीरा०	अ०	विवरण	साउ शू	हीरा०	अ०
जैसे भी	乃	の	नो	वीर	由	ゆ	यू
प्रकाश	波	は	ह	साथ में	与	よ	यो
तुलना करना	比	ひ	ही		良	ら	र
नहीं	不	ふ	फू	लाभ	利	り	री
बर्तन	部	へ	हे	बहा ले जाना	留	る	रू
	保	ほ	हो	सद्व्यवहार	礼	れ	रे
अन्त	末	ま	म	संगीत का स्वर ज्ञान	呂	ろ	रो
नदी	美	み	मी	दिन ; सूर्य	和	わ	व
कृषि-फल	武	む	मू	चतुर	為	ゐ	वी
सबसे ऊंचा	女	め	मे	नामों में प्रयोगात्मक	恵	ゑ	वे
बाल; पर	毛	も	मो	साधारण	遠	を	वो
भी	也	や	य			ん	अं

फलक संख्या – २५६

हीरागाना व कताकाना के आधुनिक वर्ण

ध्व०	हीरा०	कता०	ध्व०	हीरा०	कता०	ध्व०	हीरा०	कता०	ध्व०	हीरा०	कता०
गी	ぎ	ギ	बी	び	ビ	स्यो	しょ	ショ	र्यू	りゅ	リュ
गू	ぐ	グ	बू	ぶ	ブ	च	ちゃ	チャ	र्यो	りょ	リョ
गे	げ	ゲ	बे	べ	ベ	चू	ちゅ	チュ	ग्य	ぎゃ	ギャ
गो	ご	ゴ	बो	ぼ	ボ	चो	ちょ	チョ	ग्यू	ぎゅ	ギュ
ग	が	ガ	प	ぱ	パ	न्य	にゃ	ニャ	ग्यो	ぎょ	ギョ
ज़	ざ	ザ	पी	ぴ	ピ	न्यू	にゅ	ニュ	ज्य	じゃ	ジャ
ज़ी	じ	ジ	पू	ぷ	プ	न्यो	にょ	ニョ	ज्यू	じゅ	ジュ
ज़ू	ず	ズ	पे	ぺ	ペ	ह्य	ひゃ	ヒャ	ज्यो	じょ	ジョ
ज़े	ぜ	ゼ	पो	ぽ	ポ	ह्यू	ひゅ	ヒュ	ब्य	びゃ	ヒャ
ज़ो	ぞ	ゾ	क्य	きゃ	キャ	ह्यो	ひょ	ヒョ	ब्यू	びゅ	ヒュ
द	だ	ダ	क्यू	きゅ	キュ	म्य	みゃ	ミャ	ब्यो	びょ	ヒョ
दे	て	デ	क्यो	きょ	キョ	म्यू	みゅ	ミュ	प्य	ぴゃ	ピャ
दो	ど	ド	स्य	しゃ	シャ	म्यो	みょ	ミョ	प्यू	ぴゅ	ピュ
ब	ば	バ	स्यू	しゅ	シュ	र्य	りゃ	リャ	प्यो	ぴょ	ピョ

फलक संख्या – २५७

इसमें एक स्ट्रोक से २३ स्ट्रोक तक के शब्द प्रयोग किये जाते थे जिसमें से १ से १० स्ट्रोक तक के शब्द तथा एक शब्द २३ स्ट्रोकों का भी 'फ० सं० – २५८ दिये गये हैं।

चीनी काइशू लिपि से जापानी वर्णों का विकास : इस विकास के विषय में पिछले पृष्ठों पर कुछ प्रकाश डाला गया है। जब चीनी लिपि का सरलीकरण किया गया तब चीनी काइशू लिपि के चित्रात्मक व भावात्मक शब्दों के एक भाग को ले लिया गया और जो उस शब्द की ध्वनि थी — अर्थात् उच्चारण – वही ध्वनि उस भाग को दे दी गई और इस प्रकार अक्षरों का आविष्कार किया गया। तत्पश्चात् उन अक्षरों को और भी सरल किया गया। यह वर्णन कताकाना लिपि के विषय में है जिसका प्रयोग १९४७ से कम कर दिया गया है। 'फ० सं० – २५९' पर (ऊपर की ओर) विकास पद्धति के कुछ उदाहरण निम्नलिखित प्रकार से दिये गये हैं: —

- पहले कॉलम में काइशू लिपि के चित्र हैं।
- दूसरे कॉलम में उसके हिन्दी में अर्थ[1] दिये गये हैं।
- तीसरे कॉलम में प्राचीन काल के अक्षर हैं।
- चौथे कॉलम में आधुनिक काल के अक्षर हैं।
- पाँचवें कॉलम में अक्षर, जो निर्माण किये गये, दिये हैं।

पाँचवें कॉलम के अक्षर उन चित्रों के उच्चारण हैं जो पहले कॉलम में दिये गये हैं।

चीनी शब्द व अर्थ : चीन की काइशू लिपि के तीन चित्र 'फ० सं – २५९' की बाइ ओर दिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं :—

- पहले कॉलम में चित्र या शब्द हैं।
- दूसरे कॉलम में ऊपर उनके चीनी भाषा में उच्चारण दिये हैं। उसी के नीचे उन शब्दों के अर्थ भी दिये गये हैं।
- तीसरे कॉलम में जापान की 'कनोन भाषा' में उच्चारण दिये गये हैं जिसके अर्थ वही हैं जो हिन्दी में लिखे हैं – जैसे पहले शब्द का अर्थ 'वृक्ष' है।
- चौथे कॉलम में जापान की 'कुन भाषा' में उच्चारण दिये गये हैं।

जापानी अक्षर – विन्यास (Spelling) : 'फ० सं० – २५९' के दाईं ओर अक्षर – विन्यास दिये हैं। इसमें — कताकाना व हीरागाना — दोनों लिपियों के अप्रचलित तथा प्रचलित शब्द — "ईमासू" (अर्थ 'वहाँ है') तथा "ईहोन" (अर्थ 'चित्रों की पुस्तक') — दिये गये हैं।

जापानी लिपि के कुछ उदाहरण : 'फ० सं० – २६०' पर दिये गये हैं। उनको पढ़ने से पता लगता है कि जापानी भाषा की व्याकरण हिन्दी भाषा की व्याकरण से कुछ मिलती है। परन्तु लिपि के कुछ वर्ण ऐसे भी हैं जिनको वाक्यों में प्रयोग ता किया जाता है परन्तु उनके कुछ अर्थ नहीं निकलते, जैसे 'नो' 'वा' 'का' इत्यादि। जापान ही ऐसा देश है जिसमें एक वाक्य लिखने के लिए कभी कभी तीन प्रकार की (चीनी, कताकाना, हीरागाना) लिपियों का प्रयोग किया जाता है। इस फलक पर उदाहरणार्थ वाक्य दिये गये हैं। जापानी इस प्रकार नहीं लिखते। जापान के एक प्रोफ़ेसर ने लेखक को यह प्रतिदर्श लिख कर दिये।

1. चीनी भाषा में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। इस कारण अर्थ में अन्तर हो सकता है।

जापानी भाषा के कुछ शब्द व स्ट्रोक

शब्द	अर्थ	हिन्दी में	शब्द	अर्थ	हिन्दी में
一	१ ई	एक	車	७ कुरुमा	पहिया
人	२ हितो	व्यक्ति	門	८ मोन	फाटक
下	३ शिता	नीचे	美	९ बी	सुन्दरता
天	४ तेन	स्वर्ग	馬	१० उमा	घोड़ा
玄	५ ज़ेन	काला	變	२३ हेन	आश्चर्य-जनक
舟	६ फ़ून	नाव			

चीनी काइशू लिपि से जापानी अक्षरों का विकास

चित्र	अर्थ	प्रा०	आ०	अ०	चित्र	अर्थ	प्रा०	आ०	अ०
阿	मान सूचक	阝	ア	अ	於	में - अन्दर	方	オ	ओ
伊	यह	イ	イ	ई	己	स्वयं	コ	コ	को
宇	छत	宀	ウ	उ	日	दिन	冂	ワ	व
江	नदी	江	エ	ऐ					

चीनी शब्द व अर्थ

शब्द	चीनी हिन्दी	जापानी कनोन	कुन
木	मू वृक्ष	बोकू	की
米	बेई चावल	बेई	कोमे
金	चिन धातु	किन	काने

जापानी अक्षरविन्यास

अप्रचलित शब्द	कता काना	हीरा गाना
इमासू	ヰマス	[illegible]
इहोन	ヱホン	[illegible]
प्रचलित शब्द		
इमासू	イマス	います
इहोन	イホン	いほん

इमासू = वहां है
इहोन = चित्रों की पुस्तक

जापानी लिपि के मिश्रित प्रतिदर्श

कांजी (चीनी लिपि) व हीरागाना मिश्रित वाक्य

最寄りの郵便局はどこですか。

मो यो री नो यू बिंक यो कू वा दोको देसू का ?

निकटतम (कांजी) डाक घर (कांजी) कहां है ? (विराम)

कांजी, कताकाना व हीरागाना मिश्रित वाक्य

小切手をクリアするにはどの

कोगीते ओ कूरीआ सू रु नी व दोनो

चेक (clear) पास (कता०) होने को कितना

位時間が掛かりますか。

कु रा ई जीकन गा का का री मा सू का

समय लगेगा ?

कांजी व हीरागाना	वाक्य : हम बम्बई से दिल्ली आए।
	私達はボンベイからデリー来ました。
	वाता कुशीताची व बम्बई खारा देहली कीमा शीता
कांजी व कताकाना	私達ハボンベイカラデリーニ来マシタ。

पठनीय सामग्री

Brinkley, F. : A History of Japanese People (1915).

Chamberlain, B. H. : A Practical Introduction to the Study of Japanese Writing (1905)

Daniels, O. : Dictionary of Japanese (Sosho = Ts'ao – shu) Writing Forms (1944)

Innes, A. R. : Japanese Reading for Beainners – 5, Vols. (1934).

Isemonger, N. E. : The Elements of Japanese Writing (1943),

Kennedy, G. A. : Introduction to Kana Orthography (1942)

Sansom, G. B. : Japan. A short Cultural History (1928).

Yamagiva, J. K. : Introduction to Japanese Writing (1943).
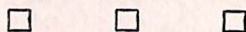
□ □ □

अध्याय : ५

दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास

दक्षिण – पूर्वी एशियाई देश

ब्रह्मा[1]

इतिहास : ईसा की पाँचवीं से सातवीं शताब्दी के प्राचीन अभिलेखों से, जो प्रोम से प्राप्त हुए और जो पियू भाषा तथा कदम्ब लिपि में उत्कीर्ण थे, पता लगता है कि ब्रह्मा में पियू जाति का राज्य था। करेन और मोन जातियों ने उनको आठवीं श० में परास्त कर दिया और वे नानचाउ के शान राज्य की ओर स्थानांतर कर गये। ८३२ में नानचाउ ने करेन की राजधानी को नष्ट कर दिया और नागरिकों को भगा दिया गया। करेन लोग दूसरी जातियों में घुल मिल गये।

उसी काल में मोन और तैलंग आये और उन्होंने श्याम देश का बहुतसा भूभाग अपने अधिकार में कर लिया। उनका मुख्य केन्द्र पागन था।

पागन वंश : ब्रह्मा निवासी तिब्बत के पूर्वी पर्वतों से आये और उन्होंने पागन वंश की नींव डाली। इस वंश का राज्य १०४४ से १२८७ तक रहा। अराकान राज्य की स्थापना की। उनके राजा अनिरुद्ध ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया और थातोन का राज्य अपने अधीन कर लिया। यह मोन संस्कृति का मुख्य केन्द्र था। चीन के मंगोल सम्राट कुबलई खान ने अपने राजदूतों को पागन की राजनिष्ठा प्राप्त करने के लिए पागन दरबार में भेजा परन्तु जूते पहने राजदरबार में आने के अपराध में उनका वध कर दिया गया। इस बात पर मंगोल सैनिकों ने पागन को १२८७ से १३०१ तक घेरे रखा तत्पश्चात् वे वापस चले गये।

शान वंश : इसका राज्य १२८७ से १५३१ तक रहा। इस काल में राज्य विभाजित हो गया। यह लोग श्याम देश के निवासी थे परन्तु भाषा ब्रह्मा की थी। ये बौद्ध – धर्म के अनुयायी थे।

तुंगू वंश : इसका शासन १५३१ से १७५२ तक रहा। इस वंश ने ब्रह्मा निवासियों को पुनः शक्तिशाली बना दिया। इसके एक नरेश बेइनंग ने १५५० से ८१ तक शासन किया और शान एवं तैलंग[2] का दमन किया। राजा थालून (१६२९ – ४८) ने अपनी राजधानी पीगू को छोड़ कर आवा बनाई।

अलंग पाया वंश : इसने १७५२ से १८८५ तक राज्य किया। अलंग पाया एक ग्राम का मुखिया था जिसने इस वंश की स्थापना की। इसने पीगू पर अपना अधिकार कर लिया। तैलंगों का ऐसा दमन किया कि पुनः शक्तिशाली न बन सके। इसने मणिपुर पर भी आक्रमण किया परन्तु १७६० में उसका स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् इस वंश के शासकों ने अनेकों युद्ध किये और अपनी सत्ता स्थिर रखी।

---

1. इस देश का भारतीय नाम 'स्वर्ण भूमि' था। दूसरी शताब्दी से यहाँ हिन्दू राज्य था जो यहाँ की उत्तरी जातियों द्वारा नष्ट कर दिया गया।
2. तैलंग भारत के दक्षिणी भाग तिलंगाना के निवासी थे।

ब्रह्मा

फलक संख्या – २६१
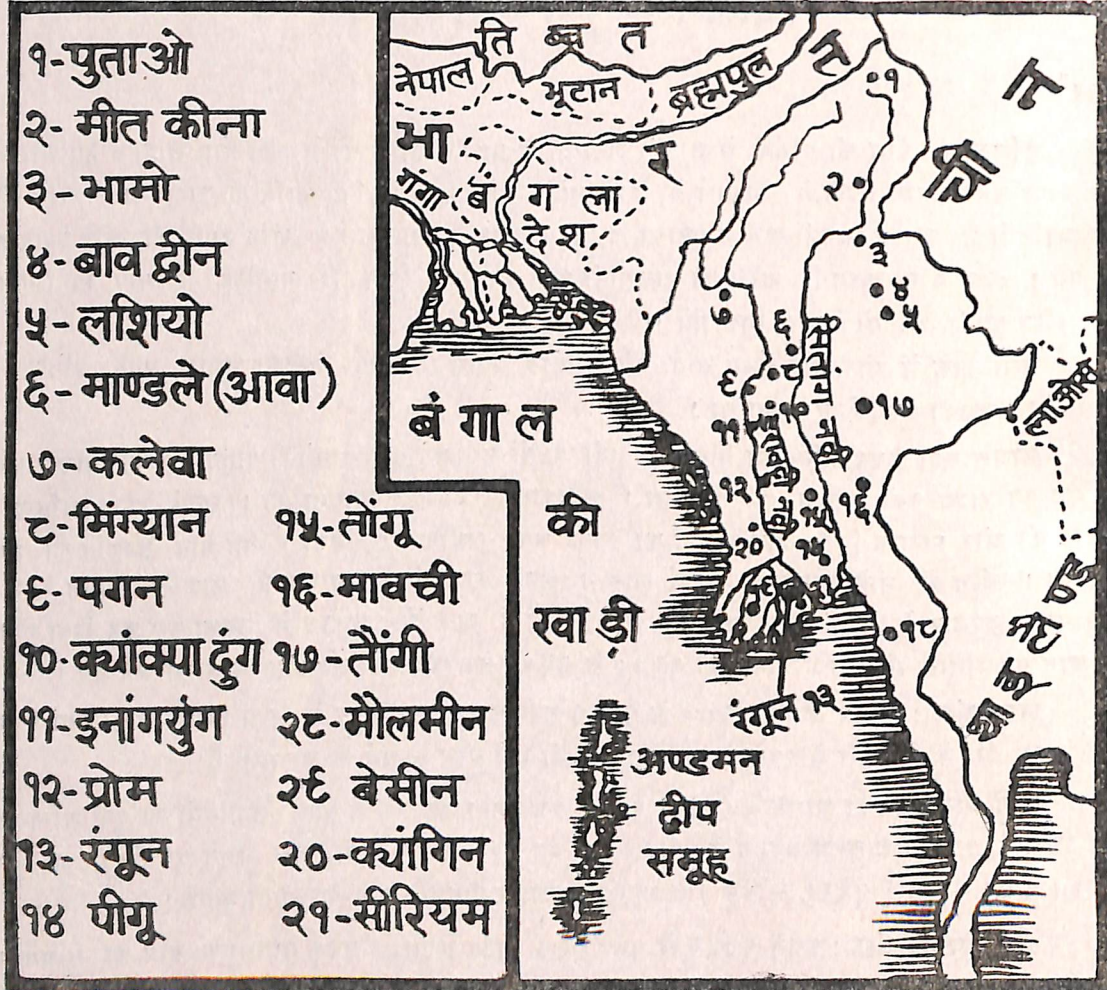
इसी काल में पश्चिम से विदेशियों ने सीरियम और बेसीन में अपनी कोठियाँ बनाईं। परन्तु जब तैलग से १७५६ में युद्ध हुए तो फ्रांस वालों ने तैलंग की सहायता की इसी कारण अलग पाया ने उनके जलपोत तथा तोपें छीन लीं।

ब्रह्मा निवासियों ने १७८५ में अराकान परास्त किया और आसाम व मणिपुर में १८१९ में अहोम राज्य स्थापित किया। १८२४ – २६ के ब्रह्मा युद्ध के समाप्त होने पर अंग्रेजों के साथ एक सन्धि हुई परन्तु ब्रह्मा ने उसको मान्यता नहीं दी। १८५२ में एक और युद्ध हुआ और अंग्रेज़ों ने पीगू को अपने अधीन कर लिया। राजा मिण्डान (१८५२ – ७८) ने इन अंग्रेज़ों का स्वागत किया तथा देश को आधुनिकता प्रदान की। १८७८ में थीबा अपने दर्जनों सौतेले भाई बहनों का वध करने के पश्चात् राजसिंहासन पर बैठा। इसने अंग्रेजों से कुछ धन की मांग की। धन न मिलने पर फ्रांस से मांग की। इस बात को ब्रिटिश सरकार सहन न कर सकी। थीबा ने इस पर अंग्रजों के लकड़ी काटने वाले मज़दूरों तथा ठेकेदारों को बन्दी बना लिया। जब नहीं छोड़ा तो अंग्रेजों ने तीसरा युद्ध १८८५ में आरम्भ कर दिया। ब्रह्मा की पराजय हुई और ब्रिटिश शासन आरम्भ हो गया जो १९४५ तक रहा।

१९३७ तक ब्रह्मा भारत सरकार का एक प्रांत रहा। १९४२ में जापान ने आक्रमण कर दिया और १९४५ में स्वतंत्र हो गया और १९४८ में गणतंत्र राज्य स्थापित हो गया।

लेखन कला

ब्रह्मा में लेखन कला का विकास भारत की लिपियों द्वारा हुआ। बौद्ध धर्म के साथ बौद्ध धर्म की भाषा 'पाली' भी बारहवीं श० के अंत में यहाँ पहुँची। प्राचीनतम पाली अभिलेख एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण किया हुआ प्राप्त हुआ, जिसका नाम 'मियाज़ेदी स्तम्भ' है। इस पर तीन प्रकार की लिपियाँ दी हुई हैं। इसका काल १०८४ निर्धारित किया गया है।

निम्नलिखित पाँच लिपियाँ अगले फलकों पर दी गईं हैं जो इस प्रकार हैं :—

१. **चतुष्कोण पाली :** जो शिलाओं पर उत्कीर्ण की जाती थी। इसको ब्रह्मा की भाषा में क्योकत्स कहते हैं (फ० सं० – २६२)।

२. **सुलेख पाली :** जो पुस्तकों पर सुलेख में लिखी जाती थी (फ० स० – २६३)।

३. **आधुनिक गोलाकार लिपि :** जिसको ब्रह्मी भाषा में त्स – लोह (tsa – louh) कहते हैं। इसको आज भी प्रयोग करते हैं (फ० सं० – २६४)।
इसके संयुक्त वर्ण 'फ० सं० – २७३' पर दिये गये हैं तथा एक पाठ 'फ० सं० – २७४' पर दिया गया है।

४. **पेगुअन लिपि :** इसका विकास ब्रह्मा की प्राचीन लिपि से ही किया गया है परन्तु 'मोन' जाति की भाषा की ध्वनियों के अनुसार इसको संशोधित करके पीगू लिपि बनी। पीगू को तैलंगों की, छठी श० में राजधानी बनाया गया (फ० सं० – २६५)।

५. **चकमा लिपि :** खामी – चकमा जाति (Tribe) ने, जो दक्षिण – पूर्वी बंगाल (आ० बंगला देश) में निवास करती थी, इसका आविष्कार लगभग सोलहवीं – सत्रहवीं शताब्दी में किया। इसके वर्ण दीवान कृष्टो चन्द्र द्वारा, जो स्वयं चकमा जाति के थे, प्राप्त किये गये तथा प्रकाशित[1] हुए। उन्होंने इस लिपि के वर्ण तथा पाठ सुरक्षित रखे। इसके वर्ण तथा एक लघु – पाठ 'फ० सं० – २६६' पर दिये गये हैं।

1. Grierson's L. S. I. Vol. V. Part. 1. p. – 339.

चतुष्कोण पाली लिपि

अ	इ	उ	ए	आ	क	ख	ग
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
ल	व	श	ष	स	ह	इस लिपि में	३८ वर्ण हैं

फलक संख्या – २६२

सुलेख पाली लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
इस लिपि में		ल	व	स	ह	३६ वर्ण	हैं

फलक संख्या – २६३

आधुनिक गोल लिपि एवं अंक

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
औ	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज
झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ
द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	स	ह	ळ	अंक १ से १० तक		

१-टै	२-हिने	३-तद्दु	४-लेह	५-ण	६-छऊ	७-खों	८-शो	९-को	१०-टस

फलक संख्या – २६४

प्राचीन पेगुअन लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह	इस लिपि में ३८ वर्ण हैं		थ

फलक संख्या - २६५

चकमा लिपि

अ		औ		झ		द		र		की	
आ		क		ञ		ध		ल		कु	
इ		ख		ट		न		व		कू	
ई		ग		ठ		प		श		को	
उ		घ		ड		फ		ह		कौ	
ऊ		ङ		ढ		ब		का		के	
ए		च		ण		भ		कि		कै	
ऐ		छ		त		म					
ओ		ज		थ		य					

चकमा का प्रतिदर्श

एक | जना | तुन | दिब | पू | एल

अर्थ: एक मनुष्य के दो पुत्र थे।

थाईलैण्ड

इतिहास : ५७५ ई० में श्याम[1] (वर्तमान – थाईलैण्ड) में लाओस की सर्वप्रथम राजधानी मुआंग – लंफ़न (लेबांग या हरी बुन चाई) के नाम से स्थापित की गई। इसी काल में यहाँ कई जातियों का सम्मिश्रण आरम्भ हो गया। जब कुबलई ख़ान ने लाओ – ताई को दक्षिण – पश्चिमी चीन से निष्कासित कर दिया तब श्याम में कई छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गये।

१२८४ के एक सुखोताई अभिलेख से ज्ञात हुआ कि एक नरेश राम कम्हेंग ने अपने राज्य का विस्तार किया और लिगमोर को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। सानो के छोटे राज्य पर भी आक्रमण करके श्याम देश का राज्य पूर्णरूप से स्थापित हो गया। १३५० में सानो के ध्वंसावशेषों पर अयोथ्या (अयोध्या का अपभ्रंश) राजधानी का निर्माण हुआ।

श्याम ने कम्पूचिया पर आक्रमण कर दिया और अंकोर को अपने अधिकार में कर लिया और लगभग ९०००० नागरिकों को बन्दी बना कर स्थानान्तर करवा दिया। श्याम और कम्पूचिया के युद्ध लगभग ४०० वर्षों तक चलते रहे और अंत में कम्पूचिया श्याम का एक अंग बन गया। १८२८ तक लुआंग प्रबंग और वीन चांग के मुख्य नगरों पर भी श्याम का पूर्ण अधिकार हो गया।

पन्द्रहवीं एवं सोलहवीं श० में ब्रह्मा और पीगू निवासियों ने श्याम पर कई आक्रमण किये। १५५५ में श्याम ब्रह्मा देश का एक अंग बन गया। कुछ वर्षों पश्चात् श्याम देश के एक वीर नेता फ़्रा – नरेत ने कम्पूचिया तथा लाओस[2] को अपने अधीन करने के पश्चात् पीगू पर भी आक्रमण कर दिया। १७६७ में ब्रह्मा ने अयोथ्या को भी नष्ट कर दिया। अयोथ्या के नष्ट होने के पश्चात् सेना के एक जनरल फाया – तख – सिन नेबैंकॉक को अपनी राजधानी बनाया परन्तु पागल होने के कारण उसका वध कर दिया गया। तदनन्तर फ़ाया – चक्करी ने एक नये राजवंश को स्थापित किया। उसने तेन्नासरिन पर आक्रमण भी किया।

१५११ में यह पुर्तगाली आये। सतरहवीं श० में डच्छों ने उनको निकाल कर स्वयं व्यापारिक अधिकार प्राप्त कर लिये। श्याम ने अपने अधीन एक छोटे राज्य केदा के एक द्वीप पुलो पिनांग को १७८६ में एक कोठी बनाने के लिये ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया। १८२४ में डच्छ और ब्रिटिश को सन्धियों के अनुसार व्यापारिक अधिकार दे दिये गये। फ्रांस और ब्रिटेन में भूमि प्राप्त करने के कारण अनेकों झगड़े हुए। १९१७ में श्याम ने प्रथम महायुद्ध में जर्मनी के विरुद्ध भाग लिया।

श्याम नरेश राम चतुर्थ के मरणोपरांत उसका भाई प्रजाधिपाक १९२५ में राजसिंहासनारूढ़ हुआ। २४ जून १९३२ को एक क्रान्ति हुई तथा एक संवैधानिक राजतंत्र स्थापित किया गया। प्रजाधिपाक ने राजत्याग कर दिया। तत्पश्चात् उसका दस वर्षीय भतीजा आनन्द महीडोल नरेश बना दिया गया। दिसम्बर १९४१ में जापानी सेना ने श्याम पर अधिकार कर लिया और २५ जनवरी १९४२ को ब्रिटेन से युद्ध करने की घोषणा कर दी गई। युद्ध के पश्चात् अनेकों देशों के साथ सन्धियां हुईं।

१९४९ में इसका नाम थाईलैण्ड रख दिया गया।

---

1. यह देश पहले कम्बोज हिन्दू राज्य के अधीन था परन्तु दक्षिणी चीन से थाई जाति के आने पर (ग्यारह श० में आई) हिन्दू राज्य समाप्त हो गया।
2. लाओस को फ्रेंच भाषा में 'लाओ' कहते हैं। अन्तिम 'स' फ्रेंच में मूक होता है।

श्याम व हिन्द-चीन के देश (कम्पूचिआ, लाओस, वियेतनाम)

फलक संख्या – २६७

श्याम - कम्बोडिया -- लाओस -- उ० एवं द० वियेतनाम
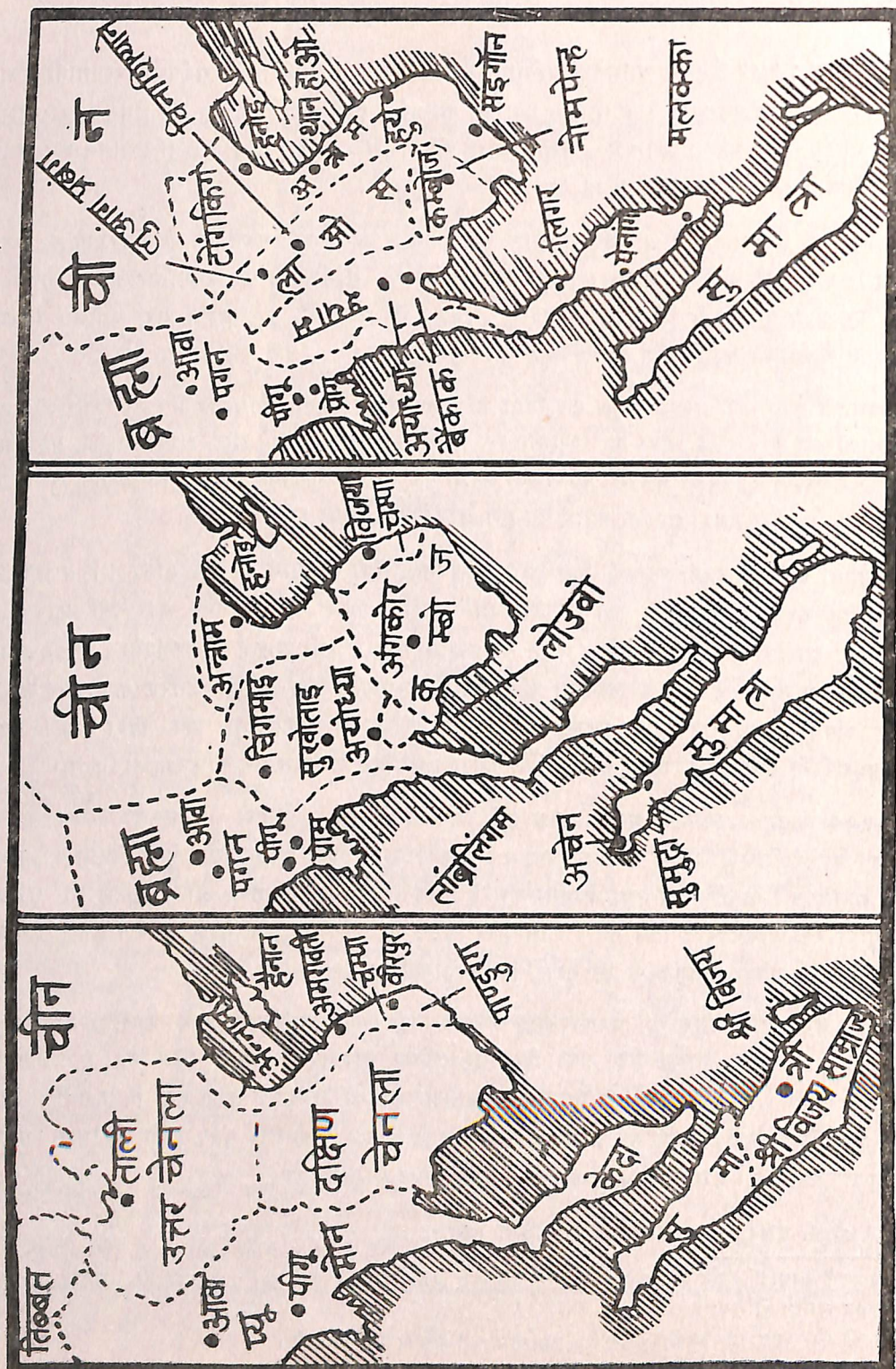
फलक संख्या - २६८

लेखन कला : श्याम की प्राचीन लिपि भी भारत से ब्रह्मा के द्वारा विकसित हुई। पाली चतुष्कोण लिपि में कुछ परिवर्तन करके प्रयोगात्मक बनाई गई। वे भी कई प्रकार की थीं, जो निम्नलिखित हैं :—

१. **बोरोमात लिपि :** यह प्राचीन लिपि पाली से विकसित हुई (फ० स० – २६९)।

२. **पातीमोखा लिपि :** यह हस्तलिखित पुस्तकों के लिये पाली से ही विकसित हुई (फ० सं० – २७०)।

३. **प्राचीन थाई लिपि :** राजा रूआंग द्वारा दसवीं श० में आविष्कार हुआ (फ० सं० – २७१)।

४. **आधुनिक लिपि :** यह शीघ्र – लिखित लिपि बोरोमात से सुखोताई नरेश राम खोमहेंग द्वारा तेरहवीं श० में विकसित हुई। इसी नरेश के शासनकाल के एक अभिलेख से ज्ञात हुआ। इसमें स्वर पृथक नहीं हैं उनकी मात्रायें व्यंजनों में लगा दी जाती हैं (फ० सं० – २७२, २७३)।

'फ० सं० – २७२' पर अंक भी दिये गये हैं। आधुनिक लिपि में एक ध्वनि के कई अक्षर हैं। इसी फलक के नीचे ब्रह्मा देश की आधुनिक गोल लिपि के कुछ संयुक्त वर्ण भी दिये गये हैं।

श्याम की भाषा में भी चीन की भाषा जैसी ध्वनिबल (Tone) की पद्धति वर्तमान है। इन ध्वनि – बल के चिह्नों का प्रयोग न करने के कारण किसी विदेशी विद्यार्थी को, जो श्याम की भाषा एवं लिपि सीख रहा हो शुद्ध लिखना या पढ़ना असम्भव प्रतीत होता है।

लाओस

इतिहास : लगभग ७१३ में लाओशियनों (Laotians) ने नानचाउ के राज्य को स्थापित किया। ८७७ में नानचाउ के एक नरेश ने चीन के सम्राट् की एक पुत्री से विवाह किया। खेमर एवं थाई लोगों ने लाओस पर ग्यारहवीं से तेरहवीं श० तक राज्य किया। अब इसकी राजधानी लुआंग – प्रबंग बन गई। १३५६ से १००६ तक साम – से न – ताई ने राज्य किया और लाओशियनों को उनका राज्य वापस कर दिया तथा निष्कंटक राज्य किया। लाओशियनों ने कई शताब्दियों तक थाई और ब्रह्मा से युद्ध किया। अठारहवीं श० के अंत से लाओस के एक बड़े भाग पर श्याम का शासन रहा। अन्नाम ने इस देश के दक्षिण – पूर्वी भाग पर अपना शासन स्थिर रखा। १८३० के पश्चात् लाओस सरकार ने भी अन्नाम को कर देना आरम्भ कर दिया।

१८९३ में फ्रांस ने देश के कई नगरों पर अपना अधिकार कर लिया। ए० जे० एम पैवी (A. J. M. Pavie) ने, जो श्याम के दरबार में एक मंत्री था श्याम को ४८ घण्टे की अंतिम चेतावनी दी कि वह लाओशियन के शासन क्षेत्र को खाली कर दे और उसकी धन देकर सहायता करे। तभी से लाओस फ्रांस के संरक्षण में आ गया। जुलाई १९४९ में यह देश पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

लेखन कला : लाओस की लिपि का विकास प्राचीन थाई लिपि से हुआ। इसकी ध्वनि पद्धति पर श्याम की ध्वनि पद्धति का प्रभाव पड़ा है। इस प्रभाव से भाषा में सरलता के स्थान पर अधिक जटिलता आ गई है।

'फ० सं० – २७५' पर लाओस की लिपि दी गई है।

बोरोमात

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख
ग	घ	ङ	च	छ	ज	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ
द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	स	ह

फलक संख्या – २६९

पतीमोखा लिपि

अ	इ	उ	ए	आ	क	ख
ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
ञ	ट	ठ	ढ	ण	त	थ
द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	स	ह

फलक संख्या – २७०

प्राचीन थाई लिपि

क	ख	ग	घ	ङ	च	
छ	झ	ट	ठ	ड	ढ	
ण	त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	म	म	य	
र	ल	व	श	ष	स	ह

फलक संख्या – २७१

आधुनिक थाई लिपि

कॉ	ก	झ	ช	थ़ा	ฑ	न	น	म्म	ม	स	ส
ख	ข	स़	ซ	ठ	ฒ	व	บ	ज़	ย	ह	ห
ख़ा	ค	श	ฌ	ना	ณ	प	ป	ई	ร	र	ฬ
ख़ो	ฆ	ज	ญ	ड	ด	फ	ผ	ल	ล	ऑ	อ
गों	ง	द	ฎ	त	ต	फ़	ฝ	व	ว	हा	ฮ
च	จ	त	ฏ	ढ	ท	फ़ा	พ	स	ศ	थ	ถ
छ	ฉ	थ	ฐ	ध	ธ	फा	ฟ	स	ษ	फ	ภ

अंक	नंगो १	संगो २	साम ३	सी ४	हां ५	हो ६	चेद ७	पैद ८	काउ ९	सिप १०
	๑	๒	๓	๔	๕	๖	๗	๘	๙	๑๐

फलक संख्या – २७२

आधुनिक थाई लिपि के संयुक्त अक्षर

ना	नि	नी	नइ	नई
नु	नू	ने	नय	नै
नॉ	नो	नौ	नों	पुनः चिन्ह

ब्रह्मा की गोल लिपि के संयुक्त अक्षर

ग	गा	गि	गी	गु	गू
गे	गै	गो	गौ	गं	गः

कुछ लिपियों के पाठ

जावा की दूसरी लिपि का पाठ

ही कू दी ह र नः प्रू म सा

ही-कूदीहरनःनू प्र म सास्त्र जावा

स्त्र जा वा। {यह जावा की व्याकरण है} अर्थ

आधुनिक थाई लिपि

त आ अ न पे न ख न ग न

पिता अन एक ग़रीब (मनुष्य) था

आधुनिक ब्रह्मा की गोल लिपि का एक पाठ

लिप्यंतर = स इन या तञ दो गो पी इन्नया कउंग गउंग तइन पे ब अ त एत मवए हमउ कउंग गउंग य बा ज़े अ क आ क अत त ईन अ लोक पे त आ बा

अर्थ = लोगों का अच्छा पालन पोषण हो, उनका अच्छा रहन सहन हो, उनको सदैव व्यस्त रखो।

लाओस की लिपि

अ	इ	उ	ए	क	ख
ङ	च	ट	ड	न	प
फ	ब	म	य	र	ल
व	श	ष इस वर्ण का प्रयोग नहीं है	स	ह	इस में २२ वर्ण हैं

फलक संख्या – २७५

कम्पूचिया

इतिहास : लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी में फ़ौनान[1] राज्य स्थापित था। उसी काल में भारत की संस्कृति का भी पदार्पण हुआ। चानकिंग तथा चम्पा के राज्य इस देश के विरोधी थे। ईसा की तीसरी शताब्दी से भारत के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो गये। चौथी तथा पाँचवी श० में भारतीयों की एक बड़ी संख्या यहाँ आकर बस गई। फ़ौनान राज्य का अंतिम नरेश कौन्दिया था जिसकी मृत्यु ५१४ में हो गई। रुद्रवर्मन के राजसिंहासनारूढ़ होने में कुछ नियमों को तोड़ा गया जिसके कारण फ़ौनान राज्य विभाजित हो गया।

चेन-ला राज्य मीकांग नदी पर स्थित हौनान राज्य का एक उपराज्य था जो इस विभाजन के कारण स्वतन्त्र हो गया। इस राज्य के नरेश अपने को एक पौराणिक देवी – देवता, मीरा और कम्बू क वंशज मानते थे जिससे कम्बोज एवं कम्बोडिया तथा अब कम्पूचिया के नाम उत्पन्न हुए। यहाँ के निवासी खेमिर जाति के थे। चेन – ला राज्य की एक राजकुमारी ने रुद्रवर्मन के पौत्र भाववर्मन प्रथम से विवाह किया। नवीं श० में खेमिर राज्य शक्तिशाली हो गया।

जयवर्मन द्वितीय ने ८०२ में अंकोर – वंश की नींव डाली और ८५० तक राज्य किया। यकोवर्मन प्रथम ने ८८९ से ९०० तक राज्य किया। इसकी माँ फ़ौनान राज्य की थी। इसने यशोधर पुर की स्थापना की। इसके बाद सूर्यवर्मन ने १०१० से १०५० तक शासन किया।

१०८० में महीधरपुर के एक वंश ने राज्य किया जिसका तीसरा शासक सूर्यवर्मन द्वितीय था जिसने १११३ से ११४६ तक राज्य किया। इसने अन्नाम देश से ११२८ से ११३८ तक युद्ध किया। ११३२ में चीन के साथ भी युद्ध किया तथा ११४५ में चम्पा राज्य को दो वर्ष के लिये अपने अधीन कर लिया। इसी ने अंकोर का निर्माण करवाया। इसके मरणोपरांत इसका चचेरा भाई सिंहासन पर बैठा। अभी तक राजा शैव तथा वैष्णव धर्मानुयायी थे परन्तु जब धरनीन्द्र वर्मन राजा बना तब वह बौद्ध – धर्म का अनुयायी हो गया।

११७७ में चम्पा ने अंकोर पर आक्रमण किया परन्तु जयवर्मन सप्तम ने अपनी नौसेना द्वारा उसको परास्त किया। तेरहवीं श० में चीन में मंगोल वंश का शासन आरम्भ हो गया। चीन के दक्षिणी भाग युनान के वहुत से लोग भाग कर कम्पूचिया आ गये। १२८३ में मंगोल सेना ने आक्रमण किया जिसको परास्त होना पड़ा। दो वर्ष बाद जयवर्मन अष्टम् (१२४३ – ९५) ने कुबलई खान को कर देना आरम्भ कर दिया। १२९६ में थाई जाति के लोग इस देश में आकर बसन लगे। १३५१ में लम्पोंग राजा हुआ जिसको अंकोर से १३५७ में निकाल दिया गया। कुछ दिनों के लिए अंकोर थाई लोगों के अधिकार में रहा। सूर्यवर्मन तृतीय (१४०५ – १४५० तक) ने अपनी एक राजधानी का तौलेसप में निर्माण करवाया।

---

1. चीनी लोग कम्बोज के हिन्दू राज्य को फ़ौनान के नाम से सम्बोधित करते थे। दक्षिण भारत के कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण ने यहां हिन्दू राज्य की स्थापना लगभग दूसरी शताब्दी में की थी। शनैः शनैः यह राज्य अति शक्तिशाली हो गया। यशोवर्मन प्रथम तथा सूर्यवर्मन द्वितीय यहां के अत्यन्त प्रभावशाली तथा वीर राजा थे। पन्द्रहवीं श० में अन्नामियों तथा थाई लोगों के आक्रमणों ने इस राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया, परन्तु इसका पूर्णतया विनाश नहीं हुआ।

इसी प्रकार भारतीय राजाओं ने चम्पा में भी एक उपनिवेश लगभग दूसरी शताब्दी में स्थापित किया। यहाँ के तीन मुख्य नगर ३८० ई० में यहां के प्रभावशाली राजा भद्रवर्मा के अधीन थे जिनके नाम अमरावती, विजय तथा पांडुरंग थे। बारहवीं श० में कम्बोज से तथा तेरहवीं में चीन के मंगोल वंश से घोर युद्ध हुए और यह राज्य चीन के तत्पश्चात् अन्नाम के अन्तर्गत हो गया।

पन्द्रहवीं श० में अन्नामियों ने चम्पा पर आक्रमण कर दिया। सतरहवीं श० में अन्नामियों ने खेमिर को अपने अधीन कर लिया। अठारहवीं श० में कम्बूचिया अन्नाम का एक अंग बन गया। सोलहवीं श० में पुर्तगाली जलपोत यहाँ आये। तत्पश्चात् फ्रांस ने नोरदम प्रथम (१८५९ – १९०४) को अपने संरक्षण में आने के लिए विवश किया और कम्बूचिया फ्रांस के अन्तर्गत हो गया। ८० वर्ष तक यह हिन्द – चीन का एक अंग बन कर फ्रांस के संरक्षण में रहा। इन्हीं दिनों इसकी राजधानी नोम पेन (Pnom Penh) में बनाई गई। १९०४ से १९४१ तक फ्रांस और श्याम का युद्ध चलता रहा। दूसरे महायुद्ध में जापान का अधिकार हो गया। जो १९४५ में जापान के आत्मसमर्पण पर समाप्त हो गया। ८ नवम्बर १९४९ को देश पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो गया।

लेखन कला : कम्बूचिया की लिपि भारत की लिपि से श्याम देश की लिपि के द्वारा विकसित हुई। यहाँ दो प्रकार की लिपियों ने जन्म लिया, जो निम्नलिखित हैं :—

१. **मूल अक्षर**[1] : उसको खेमिर (Khmer) लिपि के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसका विकास आठवीं श० में हुआ (फ० सं० – २७६)।

२. **संशोधित लिपि :** उपर्युक्त लिपि में संशोधन करके इस लिपि का अठारहवीं श० में विकास हुआ। शीघ्रता से लिखने के कारण इसका आविष्कार किया गया (फ० सं० – २७७)।

३. आधुनिक लिपि : यह लिपि आजकल प्रचलित है।[2] नीचे अंक भी दिये गये हैं (फ० सं० – २७८)। आधुनिक लिपि की ध्वनियाँ कुछ अनोखी लगती हैं। चीनी एवं भारतीय ध्वनियों का सम्मिश्रण प्रतीत होता है। उसमें स्वर अलग नहीं दिये हैं केवल एक अक्षर 'अ' है उसी में स्वरों की मात्रायें अन्य व्यंजनों की तरह लगा कर उच्चारण कर लिया जाता है।

फ़िलिपाइन्स

इतिहास : तीसरी से पन्द्रहवीं श० तक मलाया से आये हिन्दू राजाओं का यहाँ राज्य था। तत्पश्चात् चीन के अधीन रहा।

इस द्वीपसमूह का नाम स्पेन के शासक फ़िलिप द्वितीय के नाम पर रखा गया। इसमें लगभग ७०९० द्वीप हैं।

१९ मार्च १९२१ को यहाँ सबसे पहला योरोप निवासी फरदीनन्द मैगेलन (Ferdinand Magellan) पहुँचा। ईसा की दूसरी शताब्दी में सबसे पहले यहाँ हिन्दू संस्कृत मलाया प्रायद्वीप एवं जावा स आई। एक स्पेन निवासी लेगाज़पी (Legazpi) यहाँ अप्रैल १५६४ में पहुँचा परन्तु उसको पुर्तगालियों से झगड़ा करना पड़ा। १५७१ में लेगाज़पी ने मनीला को प्रशासकीय केन्द्र बनाया। १६०० तक और कई द्वीप स्पेन के अधिकार में आ गये। इन द्वीपों का प्रशासक लेगाज़पी का पौत्र जुआन डो सलकैडो (Juan de Salcedo) हो गया।

१५७४ में चीन ने आक्रमण कर दिया। परन्तु उसको विफल कर दिया गया। १५७१ में मुसलमान मुख्य विरोधी के रूप में यहाँ आये परन्तु कुछ झगड़ों के पश्चात् उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

---

1. इसकी वर्णमाला फ़ौलमान (Faulmann) ने अपनी पुस्तक 'Das Buch der. Schrift (1880), p. – 152 – 3' में दी है।

2. इसकी वर्णमाला स्वयं लेखक ने दिल्ली में कम्पचिया के दूतावास जाकर तैयार की।

मूल अक्षर लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	म	म	य	र
ल	व	श	ष	स	ह	इस लिपि मे ३८ वर्ण हैं	

फलक-संख्या – ६७६

संशोधित शीघ्र लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
इस लिपि में	ल	व	श	ष	स	ह	३८ वर्ण हैं

फलक संख्या - २७७

फ्रिलिपाइन द्वीप-समूह

फलक संख्या - २७९

स्पेन में मुसलमानों को मूर कहते थे परन्तु यहाँ उनको मोरो सम्बोधित किया गया। १५७९ में फ्रांसिस्को डी साण्डे (Fransisco de Sande) को जो यहाँ का गवर्नर (१५७५ से १५८० तक) था फिर एक युद्ध इन मोरों से करना पड़ा और उनकी पुनः पराजय हुई। तत्पश्चात् मोरो लोग जलपोतों को लूटने का कार्य करने लगे। १८५० में मोरों के मुख्य गढ़ को, जो उन्होंने टोन्किल द्वीप पर बनाया था, नष्ट कर दिया गया और जोलो के नगर पर अधिकार कर लिया गया।

१५९६ में डच्छ आये। १७६२ में अंग्रेज आये और उन्होंने मनीला पर अधिकार कर लिया परन्तु १७६३ में पेरिस की सन्धि द्वारा पुनः स्पेन को वापस कर दिया। १८९८ में क्यूबा में कुछ झगड़े होने के कारण तथा क्यूबा की राजधानी तथा बन्दरगाह में खड़े अमरीका की नौ सेना के युद्धपोत को आग लगा देने के कारण स्पेन – अमरीका का युद्ध आरम्भ हो गया। स्पेन परास्त हुआ तथा पेरिस में एक सन्धि – पत्र पर हस्ताक्षर होने के पश्चात् १८९९ में स्पेन ने क्यूबा तथा फिलिपाइन द्वीप समूह अमरीका के अधिकार में दे दिया।

१९४१ में यह जापान के अधिकार में आ गया। १९४५ में जापान की पराजय तथा समर्पण के कारण यह द्वीपसमूह पुनः अमरीका के अधीन हो गया।

४ जुलाई १९४६ को इसको पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई।

लिपि : यहाँ की जातियों में से एक जाति का नाम तगोला था। ये जातियाँ हिन्दू राजाओं के साथ मलाया से आईं थीं और यहाँ आकर बस गईं। यहाँ की प्राचीन लिपि तगाला थी। इसके विषय में अधिक ज्ञात नहीं हो सका। इसका स्थान रोमन लिपि ने ले लिया। (फ० सं० – २८०)।

हिन्देशिया

इतिहास : ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में यहाँ हिन्दू संस्कृति विद्यमान् थी। भारत से पुरोहित तथा व्यापारी वर्गों ने अपनी विचारधारा का यहाँ प्रचार किया।

पन्द्रहवीं श० में यहाँ मुसलमान आये और सोलहवीं श० में योरोप निवासी आये परन्तु नीदरलैण्ड के डच्छ लोगों ने सबको बाहर निकाल कर अपना प्रभुत्व जमा लिया।

१९२२ में यहाँ के लगभग ३००० छोटे बड़े द्वीप नीदरलैण्ड की छत्रछाया में आगये और ईस्ट इण्डीज़ के नाम से ज्ञात हो गये। १९४२ तक यह नीदरलैण्ड सरकार के उपनिवेश के रूप में रहा। १९४२ – ४५ के बीच सरकार के विरुद्ध एक क्रान्ति हुई जिसमें देश के नेताओं ने बड़े त्याग किये और देश को १७ अगस्त १९४५ में गणतन्त्र राज्य घोषित कर दिया। डच्छ ने इसको नहीं माना और चार वर्ष तक युद्ध चलता रहा तत्पश्चात् यह देश २७ दिसम्बर १९४९ को पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

लेखन कला : इसका इतिहास इस देश के कुछ मुख्य द्वीपों में आरम्भ हुआ जिसके विषय में आगे विस्तार से दिया गया है।

जावा

इतिहास : योरोप निवासियों के आने के पूर्व यहाँ सर्वप्रथम भारत के हिन्दू ईसा की प्रथम शताब्दी में पहुँचे। पहले वे व्यापारी होकर आये तत्पश्चात् धर्म – प्रचारक बन कर आये। भारतीयों ने यहाँ के मूल –

तगाला लिपि

अ	इ	उ	क	ग
ङ	त	द	न	प
ब	म	य	ल	व
इस लिपि में	स	केवल	ह	१७ वर्ण हैं

फलक संख्या – २८०

हिन्देशिया द्वीप समूह

(लगभग ३००० द्वीप)

हिन्देशिया का जावा द्वीप

फलक संख्या – २८१
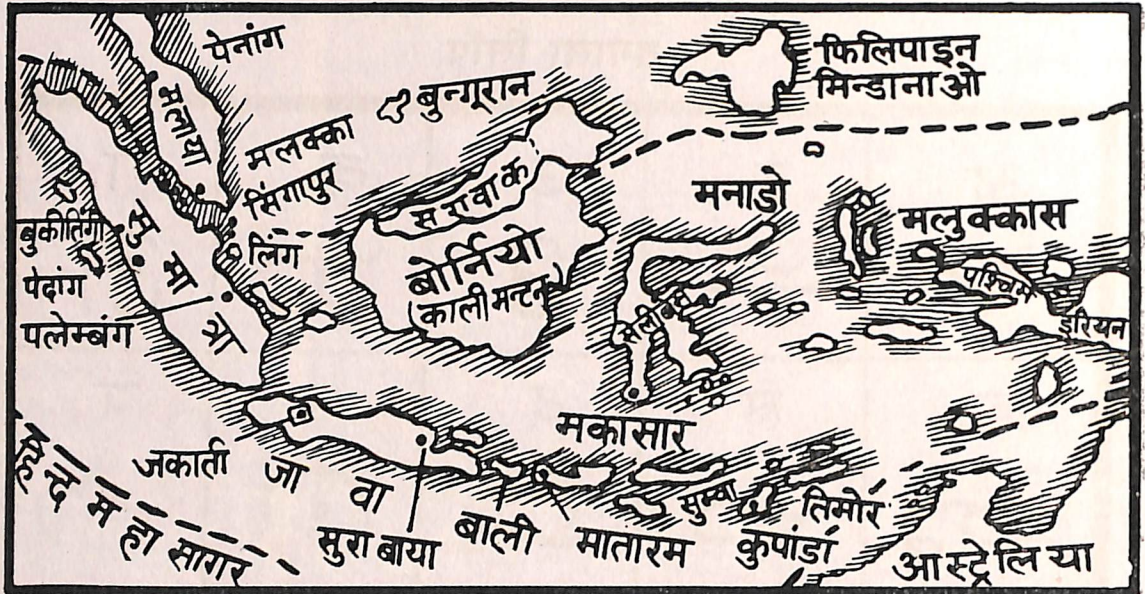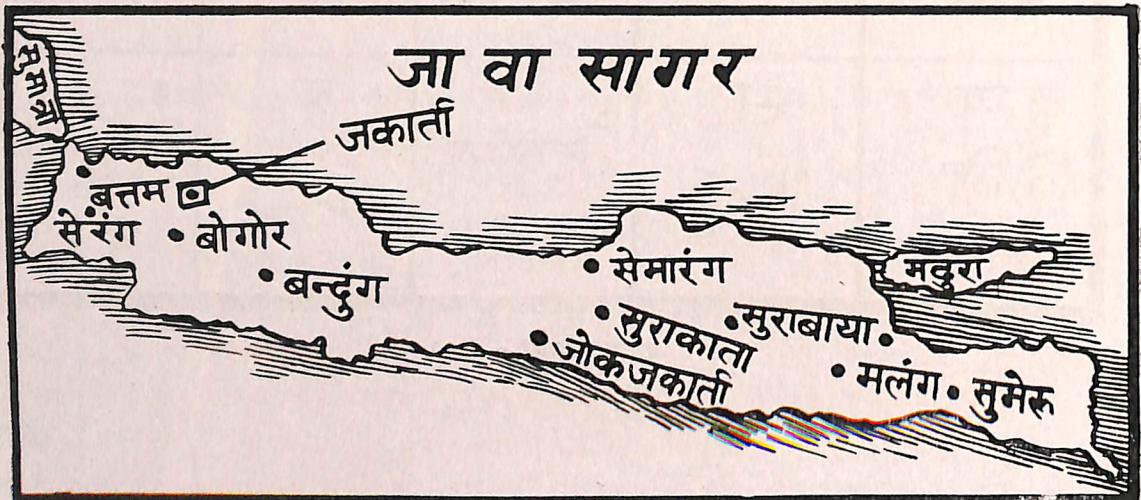
निवासियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और अपनी संस्कृति का प्रसार किया परन्तु उन्होंने राज्य नहीं किया। उन्होंने अपना एक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक केन्द्र ९२८ में मध्य जावा के मातारम नगर में स्थापित किया।

अनेकों राज्य स्थापित हुए और समाप्त हुए परन्तु उनमें सबसे अच्छा तथा प्रसिद्ध राज्य मजापाहित राज्य था जो १२९३ से १५२० तक चलता रहा। अन्य जातियाँ सामुद्रिक लूटमार करती थीं। वैसे जावा अन्य द्वीपों की तुलना में सबसे अधिक सभ्य था। मजापाहित राज्य समाप्त होने के पश्चात् जावा पुनः कई राज्यों में विभाजित हो गया। तदनन्तर इस्लाम आया और यहाँ के निवासी मुसलमान हो गये।

१५११ में पुर्तगाली आये। १५९६ में डच्छ व्यापारी आये १६०२ में डच्छ ईस्ट इण्डिया कम्पनी का निर्माण हुआ। १६१० में डच्छ का पहला गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ जिसको जजाकार्ता के निकट शासकीय मुख्यालय निर्माण करने की अनुमति मिल गई। १६१९ में जजाकार्ता नगर को भी ले लिया गया जो आज जकार्ता के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

१७४५ में पूर्ण जावा पर डच्छ का अधिकार मान लिया गया। मातारम का राज्य १७५५ में तथा बन्ताम का राज्य १८०८ में डच्छ के अधीन हो गया। १८७० में जनता को व्यापार करने का अधिकार दे दिया गया और १८७२ में दण्ड – संहिता (Penal Code) का प्रयोग आरम्भ हो गया। १९२२ में सब द्वीपों को मिला कर एक देश का रूप दे दिया गया जो १९४२ तक नीदरलैण्ड (हालैण्ड) राज्य का एक अंग या उपनिवेश बना रहा। १९४२ से १९४५ तक दूसरे महायुद्ध में जापानियों के अधिकार में रहा।

१७ अगस्त १९४५ को यहाँ गणतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया गया परन्तु नीदरलैंड की सरकार से चार वर्ष युद्ध चलता रहा। अन्त में २७ दिसम्बर १९४९ को यह पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

लिपि : यहाँ की प्राचीन लिपि का जन्म ईसा की दूसरी शताब्दी में हिन्दुओं के द्वारा हुआ। इसका नाम 'कवि' लिपि था। इसका सबसे प्राचीन अभिलेख मध्य जावा केदू प्रांत के चंगल नगर से प्राप्त हुआ है जिसमें ७३२ ई० का वर्ष दिया गया है। इस लिपि में संस्कृत शब्दों का प्रयोग अधिक था। सम्भवतः महाकाव्यों के कारण इसका नाम 'कवि' पड़ गया।

इसी से दूसरी लिपि का, जो यहाँ लगभग ३० वर्ष पहले तक प्रयोग होती रही, उद्भव हुआ जिसको आधुनिक लिपि कह सकते हैं परन्तु अब यहाँ रोमन अक्षरों का प्रयोग होता है।

यह दोनों लिपियाँ 'फ० सं० – २८२ व २८३' पर दी गई हैं।

दूसरी लिपि का एक वाक्य का प्रतिदर्श "यह जावा की व्याकरण है" 'फ० सं० – २७४' पर दिया गया है।

सुमात्रा

इतिहास : इसका प्राचीन नाम अदलस था। पेडांग के प्राचीन शिलालेखों से ज्ञात हुआ कि इसका नाम 'प्रथम जावा' था। मार्कोपोलो ने इसको जावा माइनर के नाम से सम्बोधित किया था।[1] इस द्वीप के विषय में योरोप निवासियों को एक इटली के यात्री लुदोविको दी वरथेमा (Ludovico di Varthema) के द्वारा

1. यहाँ श्री विजय का साम्राज्य लगभग दूसरी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक रहा जो मुसलमानों के आगमन द्वारा समाप्त हो गया।

कवि लिपि की वर्णमाला

अ	इ	उ	क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड
ढ ड एक है	ण	त	थ	द	ध	न	प
फ	ब	भ	म	य	र	ल	व
इस लिपि	में	श	ष	स	ह	३६	वर्ण हैं

फलक संख्या – २८२

जावा की दूसरी लिपि

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ग	ङ	च	ज
ञ	ट	ड	त	द
न	प	ब	म	य
र	ल	व	स	ह

फलक संख्या – २८३

बटक लिपि

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ग	ङ	च	ज
ञ	त	द	न	प
ब	म	य	र	ल
इस लिपि में	व	स	ह	२३ वर्ण हैं

फलक संख्या – २८४

रेदज़ांग एवं लेम्पोंग लिपियां

ध्वनि	रेदज़ांग	लेम्पोंग	ध्वनि	रेदज़ांग	लेम्पोंग
अ			प		
क			ब		
ग			म		
ङ			य		
च			र		
ज			ल		
ञ			व		
त			स		
द			ह		
न				१६ वर्ण हैं	१६ वर्ण हैं

फलक संख्या – २८५

बुगिनी-मकासार लिपि

अ	क	ग	ङ	च
ज	ञ	त	द	न
प	ब	म	य	र
ल	व	स	ह	इस में १६ वर्ण हैं

फलक संख्या – २८६

१५०५ में ज्ञात हुआ जिसने इसका नाम सुमात्रा रखा। १५०९ में पुर्तगालियों ने एक कोठी निर्माण करवायी परन्तु उसी शताब्दी के अन्त में डच्छ द्वारा निष्कासित कर दिये गये। तीन शताब्दियों तक डच्छ अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए लड़ते रहे परन्तु आचिन (अजतेह Ajteh) पर अधिकार न कर सके।

१६०२ में अंग्रेज आचिन आये और उनके नेता सर जॉन लैन्कास्टर (Sir John Lancaster) का भव्य स्वागत किया गया। १६६४ में इन्द्रपुर पर तथा १६६६ में पेडांग पर डच्छ ने अपना अधिकार जमा लिया। ब्रिटिश ने बेंकुलेन पर १६८५ में अधिकार जमा लिया। डच्छ और ब्रिटिश में निरन्तर झगड़े होते रहे और अपनी श्रेष्ठता जमाते रहे। कुछ दिनों पश्चात् दोनों देशों में सन्धि हो गई। ब्रिटिश ने सुमात्रा की भूमि छोड़ दी और मलेक्का को डच्छ ने छोड़ दिया। इस प्रकार लूट के माल के विभाजन की तरह दूसरे देशों की भूमि विभाजित हो जाती थी।

लेखन कला : यहाँ तीन प्रकार की लिपियाँ प्रचलित थीं। दक्षिण पूर्व सुमात्रा में दो – एक रेदजांग तथा दूसरी लम्पोंग-लिपियाँ थीं तथा मध्य सुमात्रा में बटक लिपि का प्रयोग किया जाता था। बटक सुमात्रा के मूल निवासी थे। बाद में इन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया। इन्हीं के नाम पर लिपिका नाम पड़ा। यह तीनों लिपियाँ 'फ० सं० २८४, २८५' पर क्रमानुसार दी गई हैं।

सिलेबीस

इतिहास : इसका स्थानीय नाम सुलाबेसी था। इस द्वीप में छः विभिन्न जातियाँ निवास करती थीं जिनके नाम थे तोआला, तोराजा, बुगीनेसी, मकासार, मिन्हायसी और गोरन्तलीस।

१५१२ में पुर्तगालियों ने इसको ढूंढ निकाला। मकासार जाति का सुल्तान, जो दक्षिण सिलेबीस में गोवा राज्य का शासक था, पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों से प्रसन्न था। इससे डच्छ क्रोधित हुए और सुल्तान को सतरहवीं श० में (पुर्तगालियों की सहायता मिलने पर भी) परास्त कर दिया और १६६७ में गोवा राज्य को समाप्त करके १९११ में डच्छ के उपनिवेशों में सम्मिलित कर लिया गया। अब यहाँ के निवासी मुसलमान हैं और यह हिन्देशिया का एक प्रांत बन गया।

लेखन कला : यहाँ की लिपि का नाम बुगिनी मकासार है। इसका विकास, एच० कर्न (H. Kern-१८८२) के अनुसार, जावा द्वीप की कवि लिपि से हुआ जो 'फ० सं० २८६' पर दी गई हैं।

पठनीय सामग्री

Boudet, P. and Bourgeois, R. : Bibiliographic de l' Indo – Chine Franeaise (1933).

Bowring, Sir John : The Kingdom and People of Siam – 2 Vols. (1857.)

Bradley, C. B. The Proximate Source of the Siamese Alphabet (Journal of Siam Society – 1913).

Chhabra, B. C. : Expansion of Indo – Aryan Culture During Pallava Rule As Evidenced by Inscriptions (Journal of the Rule Asiatic Society, Bengal – 1935).

Christia, j, L. Modern Burma (1942).
Coedes, G. : Inscriptions du cambodge (1937).
Crosby, J. : Siam (1945).
Diringer, David : The Alphabet – A Key to the History of Mankind.
Duroiselle,Ch. : Mon Inscriptions (Epigraphica Birmanica 3. Vols – 1928).
Faulmann : Das Buch der Schrift (1880).
Forbes, W. C. : The Phillipine Islands (1929).
Frankfurter, O. : Elements of Siamese Grammar (1900).
Gardner, F. : Phillipine Indic Studies (1943).
Grierson, G. A. : Linguistic Survey of India – Vol. II (1904).
Harvey, G. E. : History of Burma upto 1824 (1925).
Humphrey, H. N, : Origin and Progress of the Art of Writing.
Laubach, F. C. : The People of the Phillipines (1925).
Lendoyro, C. : Tagalog Language (1909).
Leob, E. M. : Sumatra – Its History and People (1935).
Marsden, W, : History of Sumatra (1911).
Martin, W. J. : Origin of Writing.
Mc Farland, G. B. : Thai – English Dictionary (1941).
Nyein, Tun : Inscriptions Pagan, Pinya and Ava. (1899)
Raffles, Sir S. : History of Java (1930).
Sahni, Swarn, : Book of Nations.
Strange, E. F. : Alphabets (1928).
Thompson, V. L. : Thailand – The New Siam (1941).
Tin, Pe Maung and Luce, J. : Inscriptions of Burma (1939).
Wallace, A. R. : The Malay Archipelago (1890).
William, A. M. : A History of Writing (1924)

□ □ □

अध्याय : ६

अफ्रीका महाद्वीप के देशों की लेखन कला का इतिहास

मिस्त्र

इतिहास

मिस्त्र का प्राचीन इतिहास जानने के लिए तीन साधन उपलब्ध हुए हैं। पहले साधन में स्मारक चिह्न (Monuments), मन्दिर, समाधियाँ जिनमें विशाल पिरेमिड भी सम्मिलित हैं तथा संस्मरणात्मक अभिलेख प्राप्त हुए। दूसरे साधन में उत्खनित पुरातात्त्विक सामग्री जो पुरातत्ववेत्ताओं के प्रयत्नों द्वारा प्राप्त हुई है। तीसरे साधन में प्राचीन इतिहासकारों के विवरण मिले। उन तीन इतिहासकारों के नाम उल्लेखनीय हैं, जो निम्नलिखित हैं :—

१. हेरोडोटस (Herodotus), जिसका जन्म हेलीकारनेसस नगर (एशिया माइनर के पश्चिमी किनारे पर स्थित था) में हुआ था, ४५० ई० पू० में मिस्त्र आया था। उसने विचरण करके मिस्त्र का वर्णन लिखा है।

२. डायडोरस सोकुलस (Diodorus Soculus) जिसने मिस्त्र का वर्णन किया है।

३. मनेथो (Manetho) की वंशावली, जिसमें उसने मिस्त्र के शासकों को ३१ वंशों में विभाजित किया है। मनेथो की वंश परम्परा को आज सभी प्राचीन इतिहासकारों ने मान्यता प्रदान की है तथा मिस्त्र के इतिहास में सदैव उसीको आधार मानकर वृत्तांत लिपिबद्ध किये गये। ई० पू० की तोसरी शताब्दी में मनेथो मिस्त्र धर्म का एक पुजारी था और उसने, टॉलेमी द्वितीय फ़िलेडीफ़स (Ptolemy II Philadephus), जो २८३ से २४६ ई० पू० तक मिस्त्र का शासक था, की आज्ञानुसार ग्रीक भाषा में मिस्त्र का इतिहास लिखा।

ई० पू० की लगभग नवीं सहस्त्राब्दी में जब कि नील नदी के किनारों पर कीचड़ व दलदल रहा करती थी, पश्चिमी एशिया तथा अफ्रीका के निवासी इसके दोनों किनारों पर आकर बसने लगे। वह लोग किस जाति से सम्बन्धित थे तथा उनके रहन – सहन के क्या ढंग थे, निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। अफ्रीका तथा पश्चिमी एशिया के रक्त मिलन से मिस्त्र देश की एक नई जाति का जन्म हुआ। शनैः शनैः यह लोग उन्नति की ओर अग्रसर होने लगे। खेती तथा व्यापार करने लगे। छोटे छोटे नगरों का जन्म होने लगा जो नगर राज्यों में परिवर्तित होने लगे। इस ७५० मील लम्बे देश को यातायात के साधनों की अनुपस्थिति में एक सूत्र में बाँधना असंभव था। इस कारण उत्तरी मिस्त्र के निवासियों ने अपना राजनैतिक केन्द्र बेहदेत (Behdet), आधुनिक दमनहुर (Damanhur) को बनाया तथा दक्षिणी मिस्त्र निवासियों ने अपना मुख्य नगर आधुनिक लुक्सर (Luxor) के समीप नगादा (Nagada) को बनाया। इन दो राज्यों को एक उत्तरी मिस्त्र के शासक ने ई० पू० ४१४० में एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ दिनों पश्चात् यह देश फिर विभाजित हो गया।

इस बार उत्तरी मिस्र की राजधानी बूटो (Buto), नील नदी के डेल्टा में स्थापित हुई तथा पे (Pe) में राजमहल का निर्माण हुआ। दक्षिणी मिस्र की राजधानी नेखेब (Nekheb) आधुनिक एल काब (El Kab) में स्थापित हुई तथा नील के पश्चिमी किनारे पर नेखेन (Nekhen) में राजमहल का निर्माण हुआ। उत्तरी भाग के शासक लाल मुकुट धारण करते थे तथा उनका राज – चिह्न 'मधुमक्खी' था और दक्षिणी शासक श्वेत मुकुट धारण करते थे तथा उनका राज – चिह्न 'लिली पौधे की शाख' था।

प्रथम वंश (३११० से २८८४ ई० पू० तक) : मनेथो के अनुसार दोनों राज्यों का एकीकरण करने वाला मेने (Mene), मेनेज़ (Menes) या नारमर (Narmer) था। इसके तीन नाम थे। यह एक शक्तिशाली छोटा राजा था और दक्षिणी मिस्र में नील के पश्चिमी किनारे पर स्थित अबाइडोस (Abydos) के निकट थीबिज़ नगर का निवासी था। मेने प्रथम वंश का संस्थापक था। ३११०[1] ई० पू० में यह प्रथम वंश का प्रथम शासक बना। इसने दोनों राज्यों के एकीकरण के साथ साथ एक समन्वयात्मक 'श्वेत भवन' (White House) निर्माण करवाया जिसके चारों ओर एक नगर बस गया। मिस्री भाषा में इस नगर का नाम मेन – नेफ़र था जो बाद में ग्रीक भाषा में मेम्फ़िस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही नगर दोनों राज्यों की राजधानी बनी। श्वेत भवन के दो फाटक बनाये गये जो दो राज्यों के एकीकरण के प्रतीक थे। मेने ने दोनों मुकुटों को एक बनाकर धारण किया और दोनों राजचिह्नों को भी मिलाकर प्रयोग किया। इस वंश में आठ शासक हुए। अन्तिक शासक का नाम 'केबेह' (Kebeh) अथवा 'का' (Ka) था।

द्वितीय वंश (२८८३ से २६६५ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक नेटरबाउ (Neter bau) था जिसने २८८३ से २८११ ई० पू० तक शासन किया। इस वंश में १० शासक हुए। इस वंश का अन्तिम शासक नेबका (Nebka) था जिसने २६८३ से २६६५ ई० पू० तक राज्य किया।

तृतीय वंश (२६६४ से २६१५ ई० पू० तक) : इस वंश के शासन काल से 'प्राचीन राज्य' माना जाता है। इस वंश का संस्थापक ज़ोसेर (Zoser अथवा Djoser) था, जिसने २६६४ से २६४६ ई० पू० तक राज्य किया। इसका प्रधानमन्त्री एक महान् वास्तुशिल्पी था। इसीकी सम्मति से ज़ोसेर ने सक्कारा (Sakkara) में एक सीढ़ीदार पिरेमिड[2] (Terraced Pyramid) बनवाया जिसकी ऊँचाई २०० फुट

---

1. प्रथम वश के स्थापन काल में विद्वान् एकमत नहीं हैं। अनेक मत हैं :—

   ३११० — रुडोल्फ़ एन्थोस (Rudolf Anthes) का जो पेनसेल्वियन विश्वविद्यालय में प्राच्य – मिस्र – शास्त्र का प्राध्यापक था। (अमेरिकाना विश्वकोष से लिया है)।

   ३१८८ — यह काल ग्लेनविल्ले ने अपनी पुस्तक (Legacy of Egypt) में दिया है।

   ३००० — यह काल कार्ल रिचर्ड लेप्सियस द्वारा निर्धारित किया गया है।

   ३४०० — कुछ विद्वानों ने माना है तथा २८५० ई० पू० कुछ अन्य ने।

   इसके अतिरिक्त शासकों के नामों के वर्णविन्यास में भी स्वरवर्णों की अनुपस्थिति के कारण बहुत अन्तर आया ग्रीक निवासियों ने आकर मिस्र के नगर व शासकों के नामों में और अन्तर उत्पन्न कर दिया। उदाहरणार्थ :—

   मिस्री भाषा — ख़ूफ़ू या कूफ़ू, ओनू, पर रेमेसीस, मेनकौरे आदि।

   ग्रीक भाषा — क्योप्स, हेलियोपोलिस, टैनिस, माइसेरीनस आदि।

2. पिरेमिड बनने से पूर्व मिस्र के छोटे बड़े राज्यों के शासक अपने मक़बरे बनवाते थे जो मस्तबा (Mastaba) के नाम से प्रसिद्ध थे। जब राजा अधिक सम्पन्न तथा शक्तिशाली हो गये तो यह मक़बरे भी भव्य होने लगे। धार्मिक विश्वास के अनुसार मरणोपरान्त भी मनुष्य एक दूसरे प्रकार के जीवन में रहता है इसी कारण उसके दैनिक जीवन की सारी आवश्यक वस्तुओं तथा सोना-चाँदी के भूषणों आदि के साथ दफ़न किया करते थे। यह ऊपर से नोकदार ढलवाँ होकर चारों ओर चार त्रिकोण बनाकर भूमि पर लगकर बहुत चौड़ा हो जाता था।

मिस्र

फलक संख्या - २८७
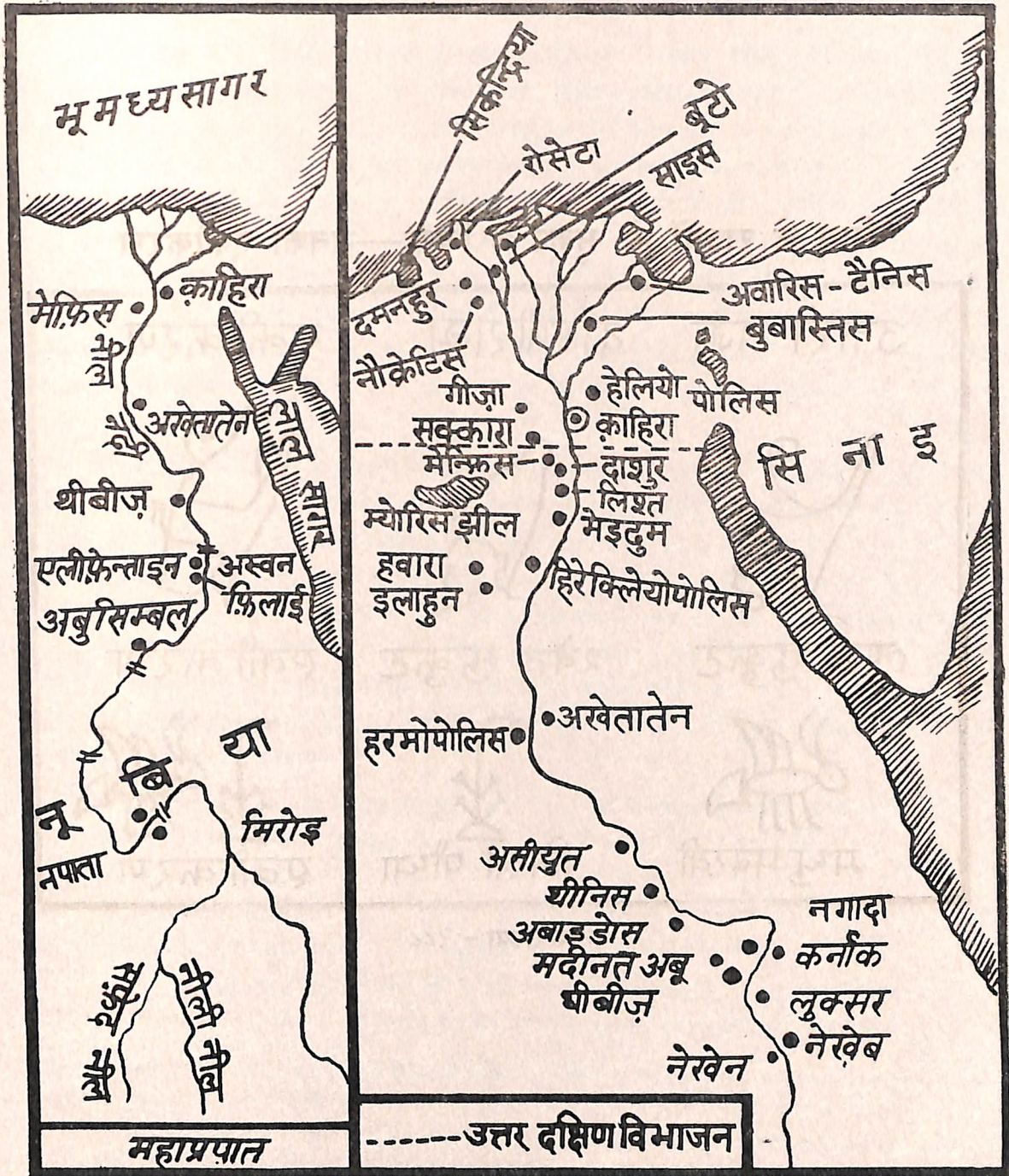
मिस्र के राज्यों के मुकुट व चिन्ह—उनका एकीकरण

फलक संख्या – २८८

थी। यह मिस्र के इतिहास में सर्वप्रथम एक महान् निर्माण – कार्य था। इसी युग से मिस्र के निवासियों में एक राष्ट्रीय धारणा जाग्रत होने लगी। इस वंश में चार शासक हुए। इस वंश के अन्तिम शासक हूनी (Huny ने २६३८ से २६१५ ई० पू० तक शासन किया।

चतुर्थ वंश (२६१४ से २५०२ ई० पू० तक) : हूनी का जामाता स्नेफ़ू (Snefru) इस वंश का संस्थापक था जिसने २५९१ ई० पू० तक राज्य किया। इसने दो पिरेमिड बनवाये। एक दाशुर के निकट तथा एक मेइदुम (Meidum) में। इसका उत्तराधिकारी ख़ूफ़ू (Khufu) था। इसने अपने शासनकाल (२५९० – २५६८ ई० पू० तक) में एक विशालतम पिरेमिड गीज़ा में निर्माण करवाया। यह ४८१ फ़ुट ऊँचा तथा तलों पर ७५५ फ़ुट चौड़ा था। इसने ३१ एकड़ भूमि घेर रखी थी। इसमें २० लाख चौकोर पत्थर लगाये गये थे। प्रत्येक पत्थर का वज़न लगभग ढाई टन (१०० मन) होता था। इन पत्थरों को इस सुन्दरता से जोड़ा गया है कि कहीं कहीं पर तो जोड़ भी नहीं दिखायी देता है।[1] इस वंश का शासनयुग 'पिरेमिड युग' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस ख़ूफ़ू का उत्तराधिकारी ख़ेफ़्रे (Khefre) था जिसने एक सबसे छोटा पिरेमिड तथा एक विशाल स्फिक्स (Sphinx) बनवाया। स्फिक्स एक विशाल बैठा शेर था पर उसका मुँह मनुष्य का था। इसका अन्तिम शासक शेपसेस काफ़ (Shepses Kaf) था। इस वंश में कुल ८ शासक हुए।

पाँचवाँ वंश (२५०१ से २३४२ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक सूर्य देवता रा (Ra) या रे (Re) के मन्दिर का, जो हेलियोपोलिस (Heliopolis) में स्थित था, मुख्य पुरोहित था। इसका नाम युसेरकाफ़ (Userkaf) था। हेलियोपोलिस को मिस्री भाषा में ओनू (Onu) कहते थे। युसेरकाफ़ ने २५०१ से २४९१ ई० पू० तक राज्य किया। इस शासक ने तथा इसके पुत्र सहुरे (Sahure) ने मिस्र की नौ सेना में वृद्धि की। मिस्र की जनता पर करों का बहुत बोझ पड़ने लगा। इस वंश में कुल ९ शासक हुए। अन्तिम शासक का नाम युनिस (Unis) था जिसने २३७१ से २३४२ तक राज्य किया। इस वंश के शासन काल में पुरोहितों, सामंतों तथा सेनापतियों की महत्त्वाकांक्षायें बढ़ने लगीं और केन्द्रीय शासक की शक्तियाँ शनैः शनैः कम होने लगीं। इस वंश का तीसरा शासक 'रा' (सूर्यदेवता) का पुत्र माना गया। दो छोड़कर ७ शासकों ने पिरेमिड की बजाय 'रा' के मन्दिर बनवाये।

छठवा वंश (२३४१ से २१८१ ई० पू० तक) : इस वश के शासक निम्नलिखित थे :—

१. तेती प्रथम (Teti I) संस्थापक – २३४१ से २३२८ तक।
२. पेपी प्रथम (Pepi I) – २३२७ से २२७८ तक।
३. मेरेन्रे प्रथम (Merenre I) – २२७८ से २२७३ तक।
४. पेपी द्वितीय नेफ़रकारे (Pepi II Neferkare) – २२७२ से २१८२ तक।

इस शासक ने मिस्र के इतिहास में (सम्भवतः विश्व के इतिहास में) सबसे अधिक वर्षों तक अर्थात् ९० वर्ष तक राज्य किया। (कुछ विद्वान् ९४ वर्ष मानते हैं)। यह बाल्यकाल में ही सिंहासनारूढ़ हुआ।

1. यह पिरेमिड संसार के सात चमत्कारों में से एक हैं। कितना आश्चर्य लगता है कि इतने भारी पत्थरों को ५०० फ़ुट ऊँचे उठाकर किस प्रकार जमाया होगा जब कि उठाने के लिए वर्तमान – युग के साधन – क्रेन या ट्राली – नहीं थे। फिर यह पत्थर सैकड़ों मील की दूरी से लाये जाते थे। वर्तमान – युग के वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि यह पत्थर गोल लकड़ियों पर सरकाये जाते होंगे। लाखों मजदूर काम करते थे। मिस्र के निवासी दास नहीं थे इस कारण युद्ध से बन्दी या कारागार से कैदी इस मज़दूरी को किया करते थे।

५. मेरेन्रे द्वितीय (Merenre II) २१८२ से २१८१ तक।

यह इस वंश का अन्तिम शासक था जिसने केवल एक वर्ष ही राज्य किया।

सातवाँ वंश (२१८० से २१७५ ई० पू० तक) : इस वंश के शासकों ने किसी प्रकार का कोई ऐसा स्मारक निर्माण नहीं करवाया अथवा कोई अभिलेख उत्कीर्ण नहीं करवाया जो उनके शासन काल को या उनके नामों को प्रमाणित करता। इस वंश के शासनकाल में केन्द्रीय शासन का अन्त दृष्टिगोचर होने लगा। इसी कारण यह भी ज्ञात नहीं कि कितने शासक हुए।

आठवाँ वंश (२१७४ से २१५५ ई० पू० तक) : इस वंश में आठ शासक हुए जो नाममात्र के शासक थे। इस वंश के पश्चात् ही मिस्र छोटे छोटे राज्यों में विभाजित हो गया और केन्द्र शिथिल हो गया।

नवाँ वंश (२१५४ से २१०० ई० पू० तक) : इस वंश के संस्थापक के विषय में कुछ ज्ञात नहीं। इसकी राजधानी हिरेक्लियोपोलिस (Herecleopolis) थी। इस वंश में १३ शासक हुए जो सत्ताहीन थे।

दसवाँ वंश (२१०० से २०५२ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक खेत्ती द्वितीय (Khetty II) था।

इसके पश्चात् चार अन्य शासकों ने नाममात्र के लिए शासन किया। उत्तर में गृह – युद्ध आरम्भ हो गया तथा अराजकता फैलने लगी। हिरेक्लियोपोलिस की राजधानी नष्ट भ्रष्ट हो गयी।

ग्यारहवाँ वंश (२१३४ से १९९२ ई० पू० तक मध्य राज्य) : इधर दक्षिण में सेहरतवी इन्तेफ़ प्रथम (Sehertawi Intef I) ने, जो हिरेक्लियोपोलिस के अन्तर्गत एक नोमार्क (नोम = प्रांत; नोमार्क = प्रांत – पति) था स्वतन्त्र हो गया और २१३४ में इस वंश की स्थापना की और पूरे दक्षिणी मिस्र का शासक बन बैठा तथा थीबीज़ (Thebes) को अपनी राजधानी बनाया। इन्तेफ़ ने २१३२ तक ही शासन किया। तदनन्तर इस वंश में तीन अन्य शासक हुए जिन्होंने २०६२ ई० पू० तक राज्य किया। पाँचवें शासक मेन्तुहोतेप प्रथम (Mentuhotep I) ने २०६२ से २०६१ तक शासन किया। मेन्तुहोतेप द्वितीय ने गृहयुद्ध का अन्त करके मिस्र का फिर एकीकरण किया। इसने २०११ ई० पू० तक राज्य किया। उसके पुत्र मेन्तुहोतेप तृतीय ने २०१० से १९९९ तक शासन किया। तदुपरांत मेन्तुहोतेप चतुर्थ व पंचम ने १९९२ तक राज्य किया जो उल्लेखनीय नहीं है।

बारहवाँ वंश (१९९१ से १७८६ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक मेन्तुहोतेप पंचम का प्रधानमन्त्री था। इसका नाम अमेनेमहत प्रथम (Amenemhat I) था। इस वंश के निम्नलिखित शासकों ने राज्य किया :—

१.	अमेनेमहत प्रथम	—	१९९१ से १९६२ ई० पू० तक।
२.	सेसात्रीज़ प्रथम (Sesostris I)[1]	—	१९६१ से १८२८ तक।
३.	अमेनेमहत द्वितीय	—	१९२८ से १९९५ तक।
४.	सेसात्रीज़ द्वितीय	—	१८९४ से १८७९ तक।
५.	सेसात्रीज़ तृतीय	—	१८७८ से १८४३ तक।
६.	अमेनेमहत तृतीय	—	१८४२ से १७९७ तक।
७.	अमेनेमहत चतुर्थ	—	१७९६ से १७९० तक।
८.	सेबेकनेफ़्रूरे (Sebeknefrure)	—	१७८९ से १७८६ तक।

1. Sesostris is also mentioned as Senwosre by Jacoba in his bock – THE STORY OF EGYPT (1964) and Senusret as Well.

अमेनेमहत प्रथम ने एक नवीन राजधानी का निर्माण उत्तर में नील के पश्चिमी किनारे पर इथ Ith at Tawi) आधुनिक लिश्त में करवाया। १९६२ ई० पू० में राजमहल में ही इसका वध कर दिया गया।

सेसात्रीज़ प्रथम ने नूबिया (Nubia) की सोने की खानों को अपने अधीन कर लिया। सेसात्रीज़ द्वितीय ने अपना पिरेमिड इलाहून (Illahun) में बनवाया।

सेसात्रीज़ तृतीय ने मिस्र के खज़ानों को सोने चाँदी से भर दिया। उसने नील को लाल सागर से एक नहर द्वारा मिलाया जिससे दक्षिण एशिया से व्यापार में बहुत प्रगति हुई। इसने ३००० कमरों का विशाल भवन बनवाया।

उसके पुत्र अमेनेमहत तृतीय ने महान् निर्माण कार्य सम्पन्न किये। इसने म्योरिस झील के चारों ओर एक दीवाल खड़ी करवाई तथा एक नहर से उसको नील नदी से मिला दिया जिसके द्वारा २७००० एकड़ ज़मीन सींची जाने लगी। सिनाइ की ताँबे की खानों[1] से भी राज्य को अच्छा धन प्राप्त होता था।

अमेनेमहत की मृत्यु के पश्चात् फिर गृहयुद्ध आरम्भ होने लगा। सेबेकनेफ़्रे इस वंश की अन्तिम नाममात्र शासिका थी (इतिहासकारों में मतभेद है कि शासिका ने शासन किया भी या नहीं)। इसने दो पिरेमिड भी बनवाये, एक दाशुर में और दूसरा हवारा (Hawara) में। मिस्र फिर छोटे छोटे राज्यों में विभाजित होने लगा। केन्द्रीय शासन नाममात्र का रह गया। इस वंश ने २१५ वर्ष राज्य किया।

तेरहवाँ वंश (१७८५ से १६७७ ई० पू० तक) : इस वंश के शासकों के नाम ज्ञात नहीं। इन्होंने थीबीज़ को राजधानी बनाया। इनका राज्य दक्षिण में रहा। इनका शासन नाममात्र रहा। थीबीज़ इनकी राजधानी थी।

चौदहवाँ वंश (१७८५ से १६०३ ई० पू० तक) : इस वंश के शासकों ने अपनी राजधानी साइस (Sais) में बनाई। शासकों के नाम ज्ञात नहीं।

पन्द्रहवाँ वंश (१६७८ से १५७० ई० पू० तक) : इस वंश के संस्थापक हिक्साँस (Hyksos) थे। हिक्साँस को मिस्र की भाषा में हिकाउ खासुत (Hikau Khasut) अर्थात् 'विदेशी शासक' कहते थे। संस्थापक का नाम ज्ञात नहीं। दो अन्य शासक इसी जाति के हुए जिनके नाम ज्ञात नहीं। इन तीन शासकों ने १६७८ से १६४७ ई० पू० तक राज्य किया। मनेथो के कथनानुसार इन आक्रमणकारियों को कहीं भी लड़ना नहीं पड़ा। इन लोगों को 'गड़रियों का राजा' के नाम से भी इतिहासकारों ने सम्बोधित किया है। इन लोगों ने अपनी राजधानी अवारिस (Avaris) को बनाया।

इस वंश का चौथा राजा खियान (Khian) था जिसने १६४७ से १६०७ ई० पू० तक राज्य किया। पाँचवें शासक ने, जिसका नाम ज्ञात नहीं १६०७ से १६०३ ई० पू० तक राज्य किया। इस वंश का छठा तथा अन्तिम शासक औसेरें अपोपी (Ausere Apopi) था जिसने १६०३ से १५७० ई० पू० तक राज्य किया।

सोलहवाँ वंश (१६७७ से १६४७ ई० पू० तक) : इस वंश में नाममात्र के लिए अनेक शासक हुए जिनके नाम ज्ञात नहीं। इनकी राजधानी भी थीबीज़ थी।

सत्रहवाँ वंश (१६४६ से १५७० ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक सेनेखेन्त्रे (Senekhentre)

---

1. इन खानों में कनआन के निवासी काम करते थे जिन्होंने मिस्र की चित्र लिपि के चिह्नों को हेब्रू नामों से सम्बोधित किया।

था । इसके पुत्र सेकेन्सुरे (Sekensure) ने हिक्सॉस के राज्य पर आक्रमण किया परन्तु परास्त हुआ । तत्पश्चात् इसके पुत्र कामोस (Kamos) ने हिक्सॉस के जनरल तेती से हर्मोपोलिस के उत्तर में स्थित नेफ़ेरूसी (Neferusi) में युद्ध किया और हिक्सॉस परास्त हो गये । इसी समय से हिक्सॉस की शक्ति का अन्त होने लगा ।

हिक्सॉस के शासन काल में, जो लगभग सौ वर्ष रहा, मिस्र निवासियों ने रथों को बनाना सीखा तथा घोड़ों का पालन – पोषण सीखा । यह कार्य मिस्र के लिए अनोखा था क्योंकि इसके पूर्व मिस्र में रथ तथा घोड़े नहीं थे । उनके राज्य से एक प्रकार की जागृति उत्पन्न हुई । हिक्सॉस ही अपने साथ मिस्र में घोड़े लाये थे क्योंकि यह लोग पर्वत निवासी थे ।

अठारहवाँ वंश (१५७० से १३०४ ई० पू० तक) : इस वंश में निम्नलिखित चौदह शासक हुए :—

१.	एहमोस (Ahmose)	—	१५७० से १५४५ तक ।
२.	अमेनहोतेप प्रथम (Amenhotep I)	—	१५४५ से १५२५ तक ।
३.	टुटमोस प्रथम (Thutmose I)	—	१५२५ से १५०८ तक ।
४.	टुटमोस द्वितीय	—	१५०८ से १४९० तक ।
५.	हतशेपसुत (Hatshepsut)	—	१४८४ से १४६९ तक ।
६.	टुटमोस तृतीय	—	१४९० से १४३६ तक ।
७.	अमेनहोतेप द्वितीय	—	१४३६ से १४११ तक ।
८.	टुटमोस चतुर्थ	—	१४११ से १३९७ तक ।
९.	अमेनहोतेप तृतीय	—	१३९७ से १३७० तक ।
१०.	अमेनहोतेप चतुर्थ	—	१३७० से १३५५ तक ।
११.	सेमेनखरे (Semenkhare)	—	१३५५ से १३५२ तक ।
१२.	टुट-अंख-आमेन (Tutankhamen)	—	१३५२ से १३४३ तक ।
१३.	अयी (Ay)	—	१३४३ से १३३९ तक ।
१४.	होरेमहेब (Horemhab)	—	१३३९ से १३०४ तक ।

इस वंश का संस्थापक अहमोस था । यह कामोस का पुत्र था । इस शासक ने मिस्र को फिर एक सूत्र में बाँध दिया । इसने हिक्सॉस की राजधानी अवारिस को तीन वर्ष तक घेरे रखा । तदनन्तर उसको नष्ट – भ्रष्ट कर दिया । लगभग दो लाख चालीस हजार हिक्सॉस मिस्र छोड़कर चले गये । अहमोस ने एक सैनिक – राज्य स्थापित किया । दो सेनायें, उनके दो जनरल तथा दो प्रधानमन्त्री – उत्तर व दक्षिण के लिए पृथक् पृथक् नियुक्त किये । इसने छोटे छोटे राज्यों को समाप्त कर उनकी भूमि को राजकीय खाते में लिखवा दिया । छोटे छोटे राजाओं को अपने अधीन कर उनको भिन्न भिन्न विभागों का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया । इसी वंश के शासन काल से शासकों का नाम फ़राओ[1] (Pharaoh) पड़ने लगा । इसके शासन से मिस्र का

1. फ़राओ, पर – ओ (per – o) या पर – आ (Per – aa) के शब्द से बाइबिल में फ़राओ (Pharaoh) लिखा जाने लगा । मिस्र की भाषा में पर – ओ के अर्थ हैं 'विशालघर' (Great House) अर्थात् विशालघर का निवासी । प्रत्येक फ़राओ किसी न किसी मुख्य देवता का पुत्र माना जाता था । उत्तर में सूर्य देवता को 'रा' कहते थे और दक्षिण में 'अमोन' । जब दोनों राज्यों का एकीकरण हुआ तो देवताओं का भी एकीकरण हो गया और सूर्यदेवता 'अमोन रा' के नाम से पूजा जाने लगा ।

साम्राज्य स्थापित हो गया। उत्तर में सीरिया तक तथा दक्षिण में नूबिया तक अहमोस का राज्य रहा। इसकी महारानी का नाम अहमीज़ नेफरतारी (Ahmes Nefertari) था। मिस्र के इतिहास में यह पहली महारानी थी जो राजकाज में अहमोस का हाथ बँटाती थी और अहमोस की अनुपस्थिति में पूर्णतया राज्य करती थी। उसने एक पुत्र को जन्म दिया जो अमेनहोतेप के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अहमोस ने लगभग २५ वर्ष तक राज्य किया।

इसके मरणोपरांत अमेनहोतेप प्रथम सिंहासनारूढ़ हुआ। इसने २० वर्ष राज्य किया। इसके कोई पुत्र न था। फ़राओ की एक मुख्य पत्नी तथा अनेक उप पत्नियाँ होती थीं। मुख्य पत्नी अहोतेप द्वारा एक पुत्री राजकुमारी अहमोस उत्पन्न हुई तथा उप पत्नी से टुटमोस जिसको टुटमोसिस (Tutmosis) अथवा टुटमिस (Tutmis) भी लिखते हैं – उत्पन्न हुआ। टुटमोस का विवाह सौतेली बहन अहमोस से हो जाने पर उसे राजवंश में सम्मिलित कर लिया गया।

टुटमोस अमेनहोतेप के मरणोपरांत फ़राओ बना और टुटमोस प्रथम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने कारकेमिश तक अपने राज्य का विस्तार किया और अधीन राजाओं से कर भी वसूल किया। इसके भी कोई पुत्र न था परन्तु एक पुत्री हतशेपसुत थी जो पुत्र के समान रहती थी। इसके भी एक उप पत्नी से पुत्र था जिसका नाम टुटमोस द्वितीय था। हतशेपसुत का विवाह टुटमोस द्वितीय से कर दिया गया। इनके दो पुत्रियाँ हुईं परन्तु उप पत्नी से एक पुत्र हुआ। टुटमोस द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् टुटमोस तृतीय शिशु था। शिशु राजसिंहासनारूढ़ तो हुआ परन्तु राजकाज हतशेपसुत ही देखा करती थी। इसने १५ वर्ष शासन किया। उसने अनेक भवन तथा मन्दिरों का निर्माण करवाया और अपना नाम अमर करने के लिए प्रत्येक भवन पर अपना नाम उत्कीर्ण करवाया। हतशेपसुत की मृत्यु के पश्चात् टुटमोस तृतीय शासक बना। वह अपनी सौतेली माँ से घृणा करता था इस कारण उसने हतशेपसुत का नाम प्रत्येक भवन से साफ करवा दिया। सारा मिस्र छेनी व हथौड़े की ध्वनि से गूंज उठा। इस प्रकार उसका नाम मिस्र के इतिहास से मिटाने की चेष्टा की गयी।

टुटमोस तृतीय को इतिहासकारों ने 'मिस्र के नेपोलियन' की उपाधि दी है। इसने पश्चिमी एशिया पर कई आक्रमण किये। इसके आक्रमण में २५००० सैनिक थे। इसने पराजित देशों की जनता के साथ मानवता का व्यवहार किया। पराजित राजाओं के पुत्रों को अपने देश में लाकर उनको अपने अधीन राज्य करने की प्रणाली से अवगत कराया। वह अपने साथ बहुत सा सोना, चाँदी, बैल व घोड़े लाया। सहस्त्रों लोगों को बन्दी बनाकर लाया। लौटने पर इसका भव्य स्वागत किया गया। मिस्र के कोषागार धन से भर गये। इसने फ़िनीशिया पर अपनी नौसेना द्वारा आक्रमण किया। नगर राज्यों को परास्त कर फिर धन एकत्रित किया। उसका मृतक शरीर क़ाहिरा (Cairo) के संग्रहालय में सुरक्षित है। इसने ५४ वर्ष राज्य किया।

इसके पुत्र अमेनहोतेप द्वितीय ने भी कई आक्रमण करके मिस्र की समृद्धि बढ़ायी। अनेक आन्दोलन-कर्ताओं को मौत के घाट उतारा। इसने २५ वर्ष राज्य किया।

अमेनहोतेप का पुत्र टुटमोस चतुर्थ फ़राओ हुआ। उसने मितन्नी राज्य की राजकुमारी से विवाह किया और केवल चौदह वर्ष राज्य किया। इसके मरणोपरांत इसका पुत्र अमेनहोतेप तृतीय शासक बना। इसने लगभग २७ वर्ष राज्य किया। इसीके शासन काल में विदेशों से अच्छे सम्बन्ध रहे। अनेक राजदूतों का आना जाना होता रहता था। मिस्र का यह सुनहरा युग था। लोग समृद्धशाली हो रहे थे। हर ओर

शान्ति थी। व्यापारियों के काफ़िले बिना किसी भय के इधर उधर आ जाकर व्यापार किया करते थे। मन्दिरों और भवनों के निर्माण हो रहे थे। पदाधिकारी ईमानदारी से कार्य कर रहे थे। इसी काल को अमरना (Amarna Age) काल भी कहा गया है क्योंकि इसी आधुनिक उपनगर तेल – एल – अमरना (Tell – El – Amarna) में कीलाक्षरों की पाटियाँ उत्खनन द्वारा प्राप्त हुईं। पश्चिम एशिया के देश अपने पत्रों को कागज़ पर नहीं चाक मिट्टी (Clay) की पाटियों पर उत्कीर्ण करवाते थे जब कि मिस्र में कागज़ का प्रयोग होता था। इस शासक के अन्तिम काल में पतन के बादल दृष्टिगोचर होने लगे। मिस्र के उपनिवेशों पर हित्तियों के आक्रमण होने लगे और जब वहाँ के शासकों (मिस्र के अधीन) ने सहायता की याचना की तो मिस्र शान्त रहा।

अमेनहोतेप तृतीय के स्वर्गवास होने पर अमेनहोतेप चतुर्थ सिंहासनारूढ़ हुआ। इसने १५ वर्ष राज्य किया। यह बड़ा विचारक तथा क्रान्तिकारी था। यही संसार का सर्वप्रथम शासक एकेश्वरवादी[1] था। इसने अन्य देवताओं की पूजा को बन्द करा दिया। इसने हेलियोपोलिस के मन्दिर के 'रा' (सूर्य देवता) के पुजारी तथा थीबीज़ के मन्दिरों के 'अमोन' के पुजारियों को निकालकर मन्दिर बन्द करा दिये। इसने एक ईश्वर निर्धारित किया जिसका नाम 'अतेन' रखा। वह अतेन भगवान् की व्याख्या इस प्रकार करता था "वह सूर्य के प्रकाश की भाँति एक प्रकाश है और उसकी किरणें भगवान् के हाथ हैं जो सारे संसार में प्रति प्राणी पर कृपा रखते हैं।" उसने अपना नाम अमेनहोतेप (अमेन[2] = करुणा का सागर) से अखेनातेन अर्थात् अखेन + अतेन ('अतेन' भगवान् को प्रसन्न करनेवाला) रख लिया और अपने इस नये नाम के भगवान् का एक विशाल मन्दिर करनाक (Karnak) व लुक्सर (Luxor) के मध्य बनवाया। साथ ही साथ अपने लिए एक विशाल भवन व उसके तीन ओर एक राजधानी का निर्माण करवाया। इसका नाम अखेत अतेन अर्थात् 'अतेन की क्षितिज' रखा। यह राजधानी मध्य मिस्र में नील के पूर्वी किनारे पर थीबीज़ से ३०० मील उत्तर में स्थित थी। इसीका आधुनिक नाम तेल – एल – अमरना पड़ा जहाँ से लगभग ३०० पत्र चाक मिट्टी की पाटियों पर अंकित प्राप्त हुए। जिस प्रकार हतशेपसुत ने अन्य शासकों के नाम मिटवा कर अपना नाम उत्कीर्ण करवाया, टुटमोस तृतीय ने हतशेपसुत का नाम मिटवाकर अपना नाम अंकित करवाया उसी प्रकार अखेनातेन ने मन्दिरों व भवनों से अन्य देवताओं के नामों को मिटवाना आरम्भ कर दिया। एक बार फिर सारा मिस्र छेनी व हथौड़े की ध्वनियों से गूँज उठा। पुजारियों को पदच्युत कर दिया गया और वह स्वयं 'अतेन' का मुख्य पुजारी बना।

इस युग में उसके इस कृत्य को महान् कहा जा सकता है परन्तु ऐसे युग में, जब सारा मिस्र देश बहुदेववादी था, इस कार्य को सराहा नहीं जा सकता था। उसका यह कृत्य बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा। लोग भय के कारण दिखाने के लिए एकेश्वरवादी बने परन्तु मन से बहुदेववादी रहे। अपने देवताओं की छिप छिपकर पूजा करते रहे। निष्कासित पुजारी वर्ग अपने अनुयायियों को भड़काते रहे। इसने कोई युद्ध नहीं किया। वह धर्म परिवर्तन में रत रहा। साम्राज्य का अन्त होने लगा। पराजित नरेश स्वतन्त्र होने लगे।

---

1. इसके पूर्व भी एक उर नगर (मेसोपोटामिया) का निवासी इब्राहीम (Abraham) एकेश्वरवादी हुआ था और उसको अपना घर व देश त्याग देना पड़ा। परन्तु वह शासक नहीं था।

2. सम्भवतः 'अमेन' से 'आमेन' 'आमीन' बन गया।

अखेनातेन को कोई पुत्र न था। उन्हें दो पुत्रियाँ थीं। एक का नाम मेरी अतेन था। अखेनातेन ने अपनी इसी पुत्री का विवाह एक समृद्धशाली व्यक्ति सेमेनख़रे से कर दिया और अपना सह – शासक बना कर उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। अखेनातेन के स्वर्गवास होने पर सेमेनख़रे शासक बना जो केवल तीन वर्ष शासन करने के पश्चात् मृत्यु का ग्रास हो गया।

इसके मरणोपरांत अखेनातेन का दूसरा जामाता टुट – अंखातेन सिंहासनारूढ़ हुआ। कुछ दिनों तक इसने नयी राधधानी अखेतातेन से राज्य किया परन्तु बाद में इसने राजधानी छोड़ दी और पहले की राजधानी थीबीज़ से शासन आरम्भ कर दिया। शनैः शनैः अखेनातेन का एकेश्वरवाद समाप्त हो गया। प्राचीन मन्दिरों में फिर बहु देवताओं की पूजा आरम्भ हो गयी। टुट – अंखातेन ने अपना नाम परिवर्तित करके टुट अंखामुन कर लिया। सारे प्राचीन मन्दिरों से अतेन का नाम मिटाया जाने लगा। अखेनातेन की नई राजधानी अखेतातेन वीरान हो गई। अमुन देवता तथा 'रा' देवता की पूजा फिर से होने लगी।

टुट – अंखामेन ने ९ वर्ष राज्य किया। यह अपने काल का कोई प्रसिद्ध फ़ेराओ नहीं था परन्तु इस युग में इसने प्रसिद्धि प्राप्त की क्योंकि इसकी क़ब्र किसी लुटेरे के हाथ नहीं लगी। इसके मकबरे का पता २६ नवम्बर १९२२ में हावर्ड कार्टर[1] (Howard Carter) को लगा। इसके मकबरे के उत्खनन से लगभग साठ सहस्र वस्तुएँ प्राप्त हुईं जो आज भी क़ाहिरा के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

टुट की मृत्यु के पश्चात् अयी, जो एक पुजारी तथा टुट का परामर्शदाता था, फ़ेराओ बनाया गया जिसने केवल चार वर्ष शासन किया तत्पश्चात् होरेमहेब, जो अखेनातेन के शासनकाल में मुख्य – सैनिक – अधिकारी था शासक बना। इसने अखेनातेन की बनवाई हुई अनेक 'अतेन' की मूर्तियों को नष्ट करवाया तथा थीबीज़ में 'अतेन' का मन्दिर तुड़वाया और 'अतेन' व अखेनातेन के नाम को नष्ट करने का कार्य पूरा कर दिया। होरेमहेब एक अच्छा शासक सिद्ध हुआ। इसने घूसखोरी को नष्ट करने के लिए बड़े कड़े कानून बनाये। अधिक कर वसूल करने वालों की नाक काटने की आज्ञा जारी की और न्यायाधीशों का वेतन बढ़ाया ताकि घूस न लें।

उन्नीसवाँ वंश (१३०४ से ११८१ ई० पू० तक) : इस वंश में सात निम्नलिखित शासक हुए :—

१.	**रेमेसीज़ प्रथम** (Ramesses or Rameses I)	—	१३०४ से १३०३ तक
२.	**सेती प्रथम** (Seti I)	—	१३०३ से १२९० तक
३.	**रेमेसीज़ द्वितीय**	—	१२९० से १२२३ तक
४.	**मेरेनटा** (Merenptah)	—	१२२३ से १२११ तक
५.	**अमेवेसीज** (Amenesses)	—	१२११ से १२०६ तक
६.	(नाम ज्ञात नहीं)	—	१२०६ से ११९४ तक
७.	**रेमेसीज़ सीटा** (Rameses Siptah)	—	११९४ से ११८१ तक

इस वंश का संस्थापक हिक्सॉस की राजधानी अवारिस का एक प्रसिद्ध सैनिक था जिसने हिक्सॉस को निकालने में अहमोस की बड़ी सहायता की थी। इसका नाम रेमेसीज़ प्रथम था। होरेमहेब के स्वर्गवास होने पर यह फ़ेराओ बनाया गया। इसने अपना सह – शासक आपने पुत्र सेती को बनाया। इसने केवल एक

---

1. कार्टर एक पुरातत्त्व वेत्ता था जो उत्खनन कार्य में वर्षों से संलग्न था। एक सम्पन्न व्यक्ति लार्ड कर्नावन (Lord Cornavon), जो इंगलैण्ड का निवासी था, इसको आर्थिक सहायता देता रहता था।

वर्ष शासन किया और परलोक सिधार गया। तदनन्तर सेती प्रथम सिंहासन पर बैठा। इसने पश्चिम एशिया पर आक्रमण करने की योजना बनाई। सड़कों को फिर से ठीक कराया गया, कूओं को खुदवाया गया तथा सेना के जाने के रास्तों पर छोटे-छोटे किलों को ठीक कराया गया। तदनन्तर इसने सेना को आगे बढ़ाया। इसकी विजय हुई और बहुत-सा धन लेकर लौटा। इसने नील नदी को लाल सागर से मिलाने वाली नहर को फिर ठीक करवाया। इस कार्य को एशियाई युद्ध – बन्दियों ने पूरा किया। सेती ने १३ वर्ष राज्य किया।

सेती के पश्चात् इसका पुत्र रेमेसीज़ द्वितीय फ़ेराओ बना। इसने १२८८ ई० पू० में पैलेस्टाइन पर आक्रमण किया। रेमेसीज़ ने हिताइत नरेश खत्तुसिली (हत्तुसिली), जो मुवात्तलीस का भ्राता था, से सन्धि कर ली क्योंकि इन दोनों शासकों को असीरिया की बढ़ती हुई शक्ति का भय था। इस सन्धि को स्थिर करने के लिए रेमेसीज ने खत्तुसिली की पुत्री से विवाह कर लिया। यह भवनों व मूर्तियों का महान् निर्माणकर्ता था। इसने नूबिया में (अबू सिम्बल – Abu Simbel, आधुनिक नाम है) चार विशाल मूर्तियाँ बनवाईं जिनकी ऊँचाई ६५ फुट थी। जब अरब वहाँ पहुँचे तो मूर्तियों की गर्दनों तक रेत व मिट्टी चढ़ चुकी थी जिसको महीनों में साफ किया गया।

सम्भवतः इसी काल में हज़रत मूसा (Moses) ने अपनी जाति हेब्रू को मिस्र से स्वतन्त्रता दिलवाई और वे लोग कनआन में जाकर बस गये तथा अपना राज्य स्थापित कर लिया।

रेमेसीज़ की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मेरेनटा शासक बना। इसने सीरिया व लेबेनान को फिर परास्त किया। इस युद्ध में योरोपीय देशों के निवासी भी सैनिक के रूप में उपस्थित थे। इधर लीबिया ने मिस्र पर आक्रमण कर दिया। मेरेनटा ने इसको समाप्त किया। इसमें लगभग ९००० आदमी मारे गये। इसने लगभग १२ वर्ष राज्य किया परन्तु इसके मरणोपरान्त अराजकता फैलने लगी। उधर अकाल पड़ा इधर छोटे छोटे शासकों ने अपने अपने इलाकों से केन्द्रीय शासन का अन्त कर दिया। प्रत्येक शक्तिशाली अपने पड़ोसी के रक्त का प्यासा होने लगे।

तदोपरान्त तीन फ़ेराओ शासक बने परन्तु नाममात्र को। आठवाँ तथा अन्तिम शासक रेमेसीज़ सीटा था। इन चारों फ़ेराओं ने केवल अपनी राजधानी में ही राज्य किया। सारे मिस्र में अराजकता फैली हुई थी।

बीसवाँ वंश (११८१ से १०७५ ई० पू० तक) : इस वंश में दस निम्नलिखित शासक हुए :—

१.	सेतनख्त (Setnakht)	—	११८१ से ११७९ ई० पू० तक
२.	रेमेसीज़ तृतीय	—	११७९ से ११४७ ,, ,, तक
३.	,, चतुर्थ	—	११४७ से ११४१ ,, ,, तक
४.	,, पंचम	—	११४१ से ११३७ ,, ,, तक
५.	,, षष्ठम	—	११३७ से ११३२ ,, ,, तक
६.	,, सप्तम	—	११३२ से ११२५ ,, ,, तक
७.	,, अष्टम	—	११२५ से ११२४ ,, ,, तक
८.	,, नवम	—	११२४ से ११०५ ,, ,, तक
९.	,, दशम	—	११०५ से ११०२ ,, ,, तक
१०.	,, एकादश	—	११०२ से १०७५ ,, ,, तक

उन्नीसवाँ वंश समाप्त होते ही एक शक्तिशाली शासक ने राज्य की बागडोर सँभाली और बीसवें वंश का संस्थापक हुआ। इसके पुत्र रेमेसेज़ तृतीय ने अराजकता का अन्त कर दिया। इसने एक विशाल तथा सुन्दर मन्दिर का मदीनत – अब् में निर्माण करवाया। रेमेसीज़ चतुर्थ ने लगभग २९ गज़ लम्बे पत्रा पर अपने पिता के कृत्यों को लिखवाया। इसके अन्तिम शासक के काल में डाकू और लुटेरे शासकों के प्राचीन मकबरों को नष्ट करके गड़े हुए धन को लूटना आरम्भ कर दिये।

इक्कीसवाँ वंश (१०७५ से ९४० ई० पू० तक) : इस वंश में पाँच शासक हुए और राज्य फिर दो भागों में विभाजित हो गया। थीबीज़ में तो मुख्य पुजारी हेरीहोर (Herihor) शासक हुआ और इक्कीसवें वंश की नींव डाली। इसने १०७५ से १०४४ ई० पू० तक शासन किया। तदनन्तर इसका पुत्र पियांखी (Piankhy) शासक बना और उसके पश्चात् उसका पुत्र पिनोजदेम (Pinojdem) शासक बना। उत्तर में रेमेसीज़ एकादश का प्रांतपति स्मेन्दीज़ (Smendes), जिसको मिस्री भाषा में नेसूबेनेबदेद (Nesubenebded) कहते हैं, टैनिस[1] की उपराजधानी से राजकीय कार्य किया करता था स्वतन्त्र हो गया और स्वयं फ़ेराओ बन गया। इसका पुत्र सुसेमीज़ (Pusemes) स्मेन्दीज़ का उत्तराधिकारी बना। थीबीज़ के शासक पिनोजदेम ने सुसेमीज़ की पुत्री से विवाह करके मिस्र का फिर एकीकरण कर दिया। इस प्रकार इस वंश में पाँच शासक हुए और अन्त में एक हो गये।

बाइसवाँ वंश (९४० से ७३० ई० पू० तक) : इस वंश में नौ शासक हुए। कई शासकों के नाम ज्ञात नहीं और न उनका शासन काल ज्ञात है। २१वें वंश के शासन काल में लीबिया (Libya) के निवासी उत्तरी भाग में बस गये। यह लोग अच्छे सैनिक थे इसी कारण डेल्टा के गढ़ों के कमाण्डर नियुक्त किये गये थे। इन्हीं में से एक कमाण्डर हिरेक्लियोपोलिस में आकर बस गया था। इसका पुत्र शिशांक (Sheshonk) या शिशाक (Shishak) बड़ा शक्तिशाली था। वह बुबास्तिस (Bubastis) या बास्त (Bast) के गढ़ का कमाण्डर था। अवसर को देख कर अपने को स्वतन्त्र घोषित करके डेल्टा का नरेश बन गया। अपने पुत्र ओस्कोर्न (O.korn) को मुख्य पुजारी नियुक्त किया और बुबास्तिस को ही अपनी राजधानी बनाया। इस वंश का अन्तिम शासक शेशांक चतुर्थ था।

तेईसवाँ वंश (८१७ से ७३० ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक पेदूपास्त (Pedupast) था जिसने थीबीज़ को परास्त कर इस वंश की नींव डाली। इस वंश में छः शासक हुए ओस्कोर्न चतुर्थ था। इस वंश के शासनकाल में एक और छोटा राज्य मेम्फ़िस से असीयुत (Assiut) तक स्थापित हो गया था।

चौबीसवाँ वंश (७३० से ७१५ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक तेफ़नख्त था। यह साइस (Sais) नगर का एक प्रभावशाली व्यक्ति था। जब गृहयुद्ध चल रहा था तब इसने शेशांक चतुर्थ (२२वें वंश का अन्तिम शासक) को परास्त कर सिंहासनारूढ़ हो गया और बाद में मेम्फ़िस व हिरेक्ल्योपोलिस को अपने अधीन कर उत्तरी मिस्र का शासक बन गया। परन्तु पच्चीसवें वंश के संस्थापक पियांखी ने इसको परास्त कर दिया और डेल्टा को अपने अधीन कर लिया। जब वह दक्षिण की ओर चला गया तो डेल्टा में फिर अराजकता फैलने लगी। इसी अवसर को तेफ़नख्त ने हाथ से न जाने दिया और वह फिर शासक बन गया। उसने उत्तरी मिस्र पर अपना अधिकार कर लिया। इसके मरणोपरान्त इसका पुत्र बोक्कहोरिस (Bocchoris) शासक बना। यही इस वंश का अन्तिम शासक था। इस वंश में केवल दो ही शासक हुए।

---

1. हिक्सॉस की नष्ट – भ्रष्ट राजधानी अवारिस के अवशेषों पर टैनिस (Tanis) का नगर सम्भवतः रेमेसेज़ द्वितीय ने बसाया था जो डेल्टा की उपराजधानी हो गया था।

पच्चीसवाँ वंश (७५१ से ६६३ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक एक नूबिया[1] निवासी प्रभावशाली व्यक्ति पियांखी था । यहाँ के नीग्रो निवासियों ने मिस्र का धर्म अपना लिया था । इसकी राजधानी नपाता (Napata) थी । इसी ने तेफ़नख्त की बढ़ती सेना को परास्त किया । पियांखी के उत्तराधिकारी ने बोक्कहोरिस को परास्त किया जो डेल्टा का शासक था । इसका नाम शबाका (Shabaka) था । इसी समय असीरिया के शासक सेनाख़रिब ने सीरिया पर आक्रमण कर दिया । मिस्र को उसके आक्रमण से बचाने के कारण शबाका ने असीरिया की सेना पर आक्रमण कर दिया परन्तु असीरिया की सेना में एक महामारी फैलने के कारण सेनाख़रिब को असीरिया वापस लौटना पड़ा ।

शबाका की मृत्यु पर उसका पुत्र शबातका (Shabataka) शासक बना, तदनन्तर पियांखी का दूसरा पुत्र तहारका (Taharka) शासक बना । इसने टैनिस को अपनी राजधानी बनाया ।

अबकी बार असीरिया के नरेश अशुरहेदन ने मिस्र के राज्य को, जो सदैव सीरिया का सहायक बना रहता था, पूर्णतया नष्ट करने की ठान ली और ६७१ ई० पू० में आक्रमण कर दिया । वह नगरों को परास्त करता हुआ मेम्फ़िस पहुँच गया । तहारका का कुटुम्ब बन्दी बना लिया गया परन्तु तहारका नूबिया की ओर भाग गया । सारे मिस्र ने अपनी पराजय मान ली । साइस व थीबीज़ के शासकों ने भी अधीनता स्वीकार कर ली ।

अशुरहेदन की मृत्यु पर तहारका ने फिर मिस्र को जीत लिया परन्तु असीरिया के नये शासक अशुर — बनीपाल ने फिर आक्रमण कर दिया और तहारका को फिर दक्षिण की ओर भागना पड़ा । बक्कहोरिस के पुत्र नीको ने अशुरबनीपाल की बड़ी सहायता की जिससे प्रसन्न होकर उसने नीको (Necho) को बहुत से उपहार भेंट किये और उसको साइस का शासक बना दिया । अशुरबनीपाल ने थीबीज़ को ऐसा नष्ट किया कि वह अपनी प्राचीन ख्याति को फिर प्राप्त न कर सका । असीरिया ने फिर कभी मिस्र पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि वह स्वयं बेबीलोनिया के शासक नेबूपलासर द्वारा नष्ट कर दिया गया ।

इस वंश का अंतिम नरेश तानूतामोन (Tanutamone) था जिसने केवल एक वर्ष राज्य किया ।

इस वंश के निम्नलिखित शासक थे :—

१.	पियांखी	—	७३० से ७१६ तक
२.	शबाका	—	७१६ से ७०१ तक
३.	शबातका	—	७०१ से ६८९ तक
४.	तहारका	—	६८९ से ६६३ तक
५.	तानूतामोन	—	६६३ से ६६२ तक

छब्बीसवाँ वंश (६६२ से ५२५ ई० पू० तक) : इस वंश के निम्नलिखित शासक थे :—

१.	नीको[2] या नेकाउ	—	६६२ से ६०९ तक
२.	सामतिक प्रथम (Psamtik)	—	६०९ से ५९४ तक
३.	सामतिक द्वितीय	—	५९४ से ५८८ तक
४.	एप्रीज़ (Apries)	—	५८८ से ५६८ तक
५.	अमासिस द्वितीय (Amasis II)	—	५६८ से ५२६ तक
६.	सामतिक तृतीय	—	५२६ से ५२५ तक

1. इसी नूबिया को आज इथीओपिया (Ethiopia) कहते हैं ।
2. कुछ विद्वानों का मत है कि सामतिक प्रथम इस वंश का संस्थापक था ।

इस वंश का संस्थापक नीको था। उसके मरणोपरांत उसके पुत्र सामतिक प्रथम ने सैनिकों को जमा किया और असीरिया के निवासी सैनिकों को मिस्र से बाहर निकाल दिया। इसी काल में ग्रीस के निवासी बड़ी संख्या में यहाँ आकर बसने लगे। उन्होंने अपना एक नगर भी स्थापित कर लिया जिसका नाम नौक्रेटिस (Naucratis) था। अब कला का तथा व्यापार का केन्द्र नील नदी से हटकर डेल्टा में आ गया था। यही केन्द्र अब मिस्र की सभ्यता का भी प्रतिनिधित्व करने लगा था। इसकी राजधानी साइस थी। अब यहाँ सुन्दर भवनों व मन्दिरों का भी निर्माण होने लगा था। सामतिक तृतीय के शासनकाल में पर्शिया की एक विशाल सेना ने, जिसका नेतृत्व कैम्बेसिज़ कर रहा था, ५२५ ई० पू० में आक्रमण कर दिया और सारे देश को अपने अधीन कर लिया।

सत्ताइसवाँ वंश : (५२५ से ४०४ ई० पू० तक)—इस वंश के शासक पर्शिया के शासक थे जो निम्नलिखित हैं :—

१.	कम्बेसिज़	—	५२५ से ५२२ ई० पू० तक
२.	डैरियस प्रथम	—	५२२ से ४८६ ,, ,, तक
३.	ज़रक्सीज़ प्रथम	—	४८६ से ४६५ ,, ,, तक
४.	आर्तज़रक्सीज़ प्रथम	—	४६५ से ४२४ ,, ,, तक
५.	डैरियस द्वितीय	—	४२४ से ४०४ ,, ,, तक

कैम्बेसिज़ और डैरियस प्रथम ने तो बड़ी उदारता से मिस्र पर शासन किया परन्तु अन्य पर्शिया के शासकों ने बड़े अत्याचारात्मक ढंग से राज्य किया। आन्दोलन व क्रान्तियाँ आरम्भ हो गयीं। इनमें ग्रीस निवासियों ने मिस्र वालों का साथ दिया क्योंकि वह तो पहले से ही पर्शिया से द्वेष रखते थे। एक नौसेना का बेड़ा भी मिस्र की सहायता के लिये पहुँच गया जिसके कारण पर्शिया के शासकों का शासन ४०४ ई० पू० में समाप्त हो गया।

अट्ठाइसवाँ वंश (४०४ से ३९८ तक) **:** इस वंश का संस्थापक अमेनरतायस (Amenertais अथवा Amyrtaios) था तथा अंतिम शासक भी था। इस वंश का केवल यही शासक था। तदनन्तर जो शासक बने वह मिस्र के राजवंश के न थे।

उन्तीसवाँ वंश (३९८ से ३७८ ई० पू० तक) : इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१.	नेफरीतिस प्रथम (Neferitis I)	—	३९८ से ३९३ तक
२.	मौथिस – अखोरिस (Mouthis – Akhoris)	—	३९३ से ३९१ तक
३.	सामोथिस (Psammouthis)	—	३९१ से ३९० तक
४.	हकोरिस (Hakoris)	—	३९० से ३७८ तक
५.	नेफरीतिस द्वितीय	—	३७८ से ३७८ तक

उपर्युक्त शासकों ने ग्रीस निवासियों की सहायता से नाममात्र शासन किया। अन्तिम शासक ने केवल तीन माह ही शासन किया।

तीसवाँ वंश (३७८ से ३४१ ई० पू० तक) : इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१.	नेक्तानेबो प्रथम (Nectanebo)	—	३७८ से ३६० तक
२.	तिपास (Teos)	—	३६० से ३५९ तक
३.	नेक्तानेबो द्वितीय	—	३५९ से ३४१ तक

इस वंश में तिपास ने ही एशिया के कुछ भागों को अपने अधीन किया परन्तु तिपास के भ्राता ने उसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रचा जिसके कारण तिपास को भाग कर पर्शिया के शासक आर्तज़रक्सीज़ तृतीय की शरण में जाना पड़ा और सिंहासन पर उसका भ्राता नेक्तानेबो द्वितीय ने अधिकार कर लिया। यही शासक इस वंश का अन्तिम शासक था।

एकतीसवाँ वंश (३४१ से ३३२ ई० पू० तक) : इस वंश के शासक पर्शिया के भी निम्नलिखित शासक थे :—

१.	आर्तजरक्सीज़ तृतीय	—	३४१ से ३३८ तक
२.	आर्सीज़	—	३३८ से ३३६ तक
३.	डैरियस तृतीय	—	३३६ से ३३२ तक

आर्तज़रक्सीज़ के आक्रमण ने मिस्र की स्वतंत्रा का अंत कर दिया जो लगभग बीसवीं सदी में प्राप्त हुई।

३३२ में सिकन्दर ने पर्शिया को परास्त कर मिस्र में पदार्पण किया और ग्रीस लौटने की योजना लनाई। उसने अपने राज्य को अपने सैनिक अधिकारियों में विभाजित करके उनको प्रांतपति नियुक्त कर दिया परन्तु उसके मरणोपरांत वे स्वतंत्र शासक बन गये। मिस्र में इसको कोई युद्ध नहीं करना पड़ा। उसने सिकन्द्रिया (Alexandria) नगर का निर्माण करवाया। कहा जाता है कि उसको यहीं दफ़नाया गया परन्तु उसके मकबरे का पता नहीं लगा। मिस्र का उसने अपने एक जनरल टालेमी लैगास (Ptolemy Lagos) को प्रांतपति बना दिया।

ग्रीक वंश (३३२ से ३० ई० पूर्व तक) इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१.	सिकन्दर तृतीय	—	३३२ से ३२३ तक
२.	अर्रहीडियस (Arrhidaeus)	—	३२३ से ३१६ तक
३.	सिकन्दर चतुर्थ	—	३१६ से ३०४ तक
४.	टॉलेमी लैगास	—	३०४ से २८३ तक
५.	,, द्वितीय फ़िलेडिलफ़स (Philadelphus)	—	२८३ से २४६ तक
६.	,, तृतीय योरीगेटिस प्रथम (Euergetes I)	—	२४६ से २२२ तक
७.	टॉलेमी चतुर्थ फ़िलोपेतर (Philopatar)	—	२२१ से २०५ तक
८.	,, पंचम एपीफेन्स (Epiphanas)	—	२०५ से १८० तक
९.	,, षष्टम फ़िलोमेतर (Philommetor)	—	१८० से १४५ तक
१०.	,, सप्तम यारोगेहिस द्वितीय	—	१४५ से ११६ तक
११.	,, अष्टम सोतर (Soter)	—	११६ से १०७ तक
१२.	,, नवम सिकन्दर प्रथम	—	१०७ से ८८ तक
१३.	,, दशम सोतर द्वितीय	—	८८ से ८० तक
१४.	,, एकादश सिकन्दर द्वितीय	—	८० से ५१ तक
१५.	,, द्वादश	इन तीनों ने क्लियोपेत्रा[1] (Cleopeatsa) के साथ राज्य किया	—५१ से ३० ई० पू० तक
६.	,, त्रयोदश		
१७.	,, चतुर्दश		

1. इसका उच्चारण 'क्लियोपेट्रा' तथा 'क्लयापेद्रा' भी है।

सिकन्दर की ३२३ ई० पू० में बेबीलोन में मृत्यु के पश्चात् उसके सेनापतियों में युद्ध आरम्भ हो गया। कुछ सैनिक अधिकारियों ने सिकन्दर के भ्राता आदि का वध कर दिया और टॉलेमी लैगास मिस्र का शासक बना। इसने मिस्र के देवताओं की पूजा की। मिस्र की संस्कृति को अपनाया। नये-नये नगरों का निर्माण किया। सिकन्द्रिया में एक विशाल पुस्तकालय तथा एक विशाल संग्रहालय स्थापित किया। टॉलेमी द्वितीय भी अपने पिता की भाँति विज्ञान तथा कला का संरक्षक था। उसने भी कोई युद्ध नहीं किया। उसने एक जलदीप (लाइट हाउस) का सिकन्द्रिया में निर्माण करवाया तथा लगभग बीस सहस्र पुस्तकें लिखवाईं।

टॉलेमी तृतीय पर्शिया पर आक्रमण करके बहुत सा धन लूट कर लाया। चतुर्थ बड़ा अत्याचारी था इसी कारण उसके मरणोपरांत जनता ने उसकी पत्नी तथा उसके अन्य साथियों का वध कर दिया परन्तु संरक्षकों ने उसके पुत्र को बचा लिया जो टॉलेमी पंचम बना। वह भी अपने पिता की तरह बड़ा भोगी था। इन दिनों रोम की शक्ति बढ़ती जा रही थी।

टॉलेमी एकादश की पुत्री का संरक्षक पाम्पेइ (Pompey) बना जो अपने भ्राता टॉलेमी द्वादश के साथ सह – शासक बनी परन्तु उनके सम्बन्ध अच्छे न थे। पाम्पेइ अपने विरोधी जूलियस सीज़र (Julius Caesar) के साथ युद्ध करने गया जब पाम्पेइ हार गया तो भाग कर अपने पालक – पुत्र टॉलेमी द्वादश से सहायता की याचना की परन्तु टॉलेमी ने उसका वध करवा दिया। सीज़र पाम्पेइ का पीछा करते करते मिस्र पहुंचा और वह क्ल्योपेत्रा से प्रेम करने लगा और उसको सहयोग भी दिया। टॉलेमी ने सीज़र पर आक्रमण कर दिया और परास्त होकर नदी में डूब गया। सीज़र ने क्ल्योपेत्रा के ११ वर्षीय छोटे भाई को टॉलेमी त्रयोदश के नाम से शासक बनाया जिसका क्ल्योपेत्रा ने अपने संकेत से वध करवा दिया। क्ल्योपेत्रा ने तब अपने पुत्र को, जो सीज़र द्वारा उत्पन्न हुआ था, टॉलेमी चतुर्दश के नाम से शासक बनाया।

४४ ई० पू० में ब्रूटस ने सीज़र का वध कर दिया जिसके कारण रोम में गृह – युद्ध आरम्भ हो गया। क्लयोपेत्रा ने ब्रूटस का पक्ष लिया परन्तु जब सीज़र के मित्र मार्क एन्टोनी (Mark Antony) द्वारा ब्रूटस की हार हुई तो एन्टोनी ने क्ल्योपेत्रा को बुलवाया, यह कारण पूछने कि उसने क्यों ब्रूटस का पक्ष लिया। क्ल्योपेत्रा अपनी भव्यता के साथ एक सुसज्जित नौका पर एन्टोनी से मिलने गयी जो उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गया और उसी के साथ अपना जीवन भोग – विलास में बिताने के लिए मिस्र चला आया।

आक्टेवियस (Octavius) सीज़र का दत्तक पुत्र था। वह रोम में शक्तिशाली हो गया और ३२ ई० पू० में युद्ध के लिए तत्पर हो गया। इधर एन्टोनी ने भी एक नौसेना तैयार की और उसके साथ क्ल्योपेत्रा ने भी अपनी नौसेना को भी जोड़ दिया। युद्ध में एन्टोनी हार गया। इस कारण एन्टोनी और क्ल्योपेत्रा ने आत्महत्या कर ली।

तत्पश्चात् ३० ई० पू० से मिस्र रोम के साम्राज्य में मिला लिया गया जिसका सम्राट आक्टेवियस बना और अपना नाम सीज़र आगस्टस रख लिया।

मिस्र रोम के अन्तर्गतः[1] अब आगस्टस मिस्र को अपनी व्यक्तिगत भूसम्पदा मानने लगा। अब मिस्र में रोमनों को उच्च पदों पर नियुक्त किया जाने लगा। रोमन सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में प्रशासक (Prefect) नियुक्त किये जाने लगे जो मिस्र के नरेश माने जाने लगे। उनकी तालिका निम्नलिखित है:—

१. कार्नेलियस गैलस (Cornelius Gallus) जिसने फ़िलाई को अपनी राजधानी बनाया।

---

1. यह पाठ लिया गया है : – 'Encyclopaedia Britannica, Vol. VIII P. – 63.

२. गैलेरियस (Gailerius), जिसने केवल छः माह शासन किया ।

३. गाइयस पत्रोनियस (Gaius Petronius) जिसने नहरों को साफ़ करवाया तथा इथियोपियाः के आक्रमणों को रोका ।

४. क्लादियस (Claudius) ने मिस्र के लिये भारत से मसालों का व्यापार आरम्भ कर दिया जिससे अरब देशों को बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी ।

५. अवीदियस कंसियस (Avidius Cassius) ने सीरिया तथा मिस्र की सेना लेकर इथियोपिया पर आक्रमण कर दिया तथा रोम के विरुद्ध क्रान्ति करके स्वयं रोम – सम्राट बन गया । जब १७५ ई० में मार्कस औरेलियस (Marcus Aurelius) तत्कालीन रोमन सम्राट, जब मिस्र आया तो कैसियस का वध उसी के सहयोगियों द्वारा कर दिया गया ।

६. कैरेकला (Caracalla) ने २०२ ई० में ईसाईयों पर बड़े अनर्थ किये । अनेक युद्ध करने योग्य नवयुवकों का वध करवा दिया ।

७. देकियस (Decius) ने २५० में पुनः ईसाईयों को यन्त्रणायें देना आरम्भ कर दिया ।

८. एमीलियेनस (Aemilianus) जिसने अपना नाम एलेक्जेन्डर रखकर एलेक्जेन्ड्रिया में अपने आपको रोमन सम्राट घोषित कर दिया । तत्कालीन रोमन सम्राट गैलियेनस (Gallienus) ने उसको परास्त कर दिया ।

९. औरेलियन (Aurelian) ने २७३ में, पालमीरा की महारानी जेनोबिया (Zenobia) ने मिस्र को परास्त कर अपने अधिकार में कर लिया था, पुनः मिस्र को अपने अधिकार में कर लिया ।

१०. प्रोबस (Probus) ने इथियोपिया की जन जातियों को जो सदैव मिस्र पर आक्रमण करती थी, दूर खदेड़ दिया । अब प्रशासक गवर्नर कहलाये जाने लगे ।

अब मिस्र में आये दिन क्रान्तियाँ यहूदियों व ईसाईयों में मार – काट तथा रोमन व ईसाईयों में बैर, क्योंकि रोमन बहु – मूर्ति – पूजक थे तथा ईसाई एकेश्वरवादी, बढ़ने लगे । उधर दक्षिण की जन जातियों के आक्रमण पुनः आरम्भ हो गये । धर्म और राजनीति में कोई अन्तर न रहा । प्रतिदिन अराजकता बढ़ती गई तथा एक लम्बे काल तक गृह – युद्ध चलता रहा । जनता असुरक्षित हो गई । मिस्र रोमन राज्य का अंग न रहा । पर्शिया के सम्राट खुशरों ने ६१६ में मिस्र पर आक्रमण कर दिया और दस वर्ष राज्य किया । रोमन सम्राट हिरेक्लयस (Heraclius) ने पुनः मिस्र पर अधिकार कर लिया जो शनैः शनैः संकुचित होकर केवल एलेकजेन्ड्रिया पर रह गया ।

६३९ में खलीफ़ा उमर ने ४००० योद्धाओं के साथ मिस्र पर आक्रमण किया । ६ जून ६४० में पुनः खलीफा उमर ने १२,००० सैनिकों को भेजा जो हेल्योपोलिस पहुँच गये । युद्ध हुआ और ८ नवम्बर ६४१ को मिस्र परास्त हो गया । इस युद्ध में ईसाईयों (Copts) ने मुसलमानों को पर्याप्त सहयोग दिया परन्तु विजय के पश्चात् मुसलमानों ने ईसाईयों तथा रोमनों के साथ निष्ठुरता का व्यवहार किया ।

६४२ में मक्का के खलीफ़ा ने अपना एक सूबेदार नियुक्त कर दिया । ६६१ से ७५० तक यह डैमसकस के उम्मियां के वंशज खलीफ़ा का एक प्रांत रहा तदनन्तर यह अब्बास के वंशज खलीफ़ाओं के, जो बगदाद से शासन करते थे, अधीन हो गया । जब खलीफ़ा की सत्ता क्षीण होने लगी तो मिस्र प्रांत के तथा अन्य प्रांतों

के प्रान्तपति अपनी सत्ता बढ़ाने लगे। मिस्र के प्रान्तपति अहमद इब्न तुलुन ने एक शासक वंश की स्थापना की जिसने ८६८ से ९०५ ई० तक मिस्र में शासन किया। लगभग ३० वर्ष के पश्चात् एक तुर्क वंश की नींव पड़ी जिसने ९३५ से ९६९ तक मिस्र पर शासन किया।

इस वंश के पश्चात् ट्यूनीशिया के फ़ातिमी ख़लीफ़ाओं का शासन आरम्भ हुआ। यह ख़लीफ़ा शिया जाति से सम्बन्धित थे। इस वंश ने ९६९ से ११७१ ई० तक राज्य किया। इस वंश के शासकों ने मिस्र में बड़े बड़े काम किये। इसी वंश के एक सेनापति जव्हार ने ९६९ में क़ाहिरा तथा अल-हज़र मसजिद का निर्माण करवाया। इसका राज्य केवल ९७२ तक रहा। क़ाहिरा ही कायरो के नाम से आधुनिक मिस्र की राजधानी स्थापित हुई। एक अन्य शासक अल हकीम ने (९९६ से १०२१ तक), जो एक पागल शासक माना जाता है. गिरजाघर की एक पवित्र समाधि को १००९ में नष्ट – भ्रष्ट कर दिया जिसके कारण धार्मिक युद्ध[1] हुए।

इस वंश के पश्चात् सुन्नियों के वंशों ने (अयूबी तथा ममलूकी) १५१७ तक राज्य किया। अंतिम ममलूकी शासक सुल्तान तुमन बे एक तुर्की सुल्तान सलीम प्रथम द्वारा २२ जनवरी १५१७ ई० को क़ाहिरा के समीप परास्त किया गया। यह पराजय सुल्तान तुमन के एक सैनिक उच्च पदाधिकारी खैर बेग के कारण हुई क्योंकि वह तुर्की सेना से मिल गया।

अब मिस्र पर तुर्की प्रान्तपति शासन करने लगे जिनको 'पाशा' के शब्द से सम्बोधित किया जाता था। इन पाशाओं के शासनकाल में मिस्र अवनति की ओर अग्रसर होने लगा जो अवनति अठारहवीं श० में अराजकता में उसी प्रकार परिवर्तित हो गई जैसी छठे वंश के शासनकाल के पश्चात् हुई थी। विरुद्ध टोलियों के झगड़े सड़कों पर होते रहते थे। इस अराजकता का अन्त नेपोलियन ने अपने एक आक्रमण द्वारा कर दिया। इस आक्रमण ने योरोप निवासियों को मिस्र का एक व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान किया तथा मिस्र को योरोपीय शासन तथा सभ्यता का सर्वप्रथम अवसर प्रदान किया। १८०१ में अंग्रेजों के आक्रमण ने फ्रांस की सेना को परास्त किया तथा उनको मिस्र छोड़ना पड़ा।

१८०५ में अल्बेनिया का मेहमत अली (मोहम्मद अली) पाशा बना जिसने इस शासक वंश की स्थापना की और १८४८ तक शासन किया। १८१८ में इसने वहाबियों की एक क्रांति का दमन किया। नूबिया तथा सूडान के राजाओं को शान्त किया। १८३२ में उसके पुत्र इब्राहीम पाशा ने सीरिया को परास्त किया तथा १८४० तक उसको अधीन रखा परन्तु फ्रांस व ब्रिटेन की सेनाओं ने जो तुर्की के पक्ष में युद्ध कर रहीं थीं सीरिया को स्वतन्त्र करा लिया। अब मिस्र के पाशा वंशानुगत शासन करने लगे। १८८२ में ब्रिटेन ने सिकन्द्रिया पर बम फेंके और मिस्र को अपने अधीन कर लिया। ब्रिटेन ने स्वयं शासन नहीं किया परन्तु पाशा ही, जो अब खेदिव के नाम से ज्ञात होने लगे, उसके संरक्षण में आ गये। तदनन्तर १९२२ में फ़ुआद प्रथम मिस्र का स्वतन्त्र शासक हुआ। तत्पश्चात् उसका पुत्र फारुख़ प्रथम गद्दी पर विराजमान हुआ। द्वितीय महायुद्ध में मिस्र की सरकार ने जापान व जर्मनी के विरुद्ध युद्ध करने की घोषणा कर दी।

२६ जुलाई १९५२ को जनरल मोहम्मद नजीब के नेतृत्व में एक सैनिक क्रान्ति हुई और फारुख़ गद्दी व मिस्र छोड़कर भाग गया और अपने पुत्र, जो एक शिशु था, फ़ुआद द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त

---

1. Crusades.

कर गया। १८ जून १९५३ को मिस्र एक गणतन्त्र राज्य घोषित कर दिया गया। नजीब उसका प्रथम प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रपति नियुक्त हुआ। १९५४ में जमल[1] अब्दुल नासिर ने सत्ता अपने हाथ में ले ली। १९७० में इसकी मृत्यु के पश्चात सादात राष्ट्रपति बने। इस्राइल से सन्धि करने के कारण उनका वध कर दिया गया।

कुछ शासकों व नगरों के नाम जिनको ग्रीक भाषा में परिवर्तित किया गया

ग्रीक भाषा	शासकों के नाम मिस्री भाषा
१. मेनेज़ (Menes)	नारमर (Narmer)
२. केयोप्स (Cheops)	ख़ूफ़ू (Khufu)
३. केफ़्रेन (Chephren)	ख़फ़े (Khafre)
४. पेपी प्रथम (Pepi I)	मेरीरे (Meryre)
५. पेपी द्वितीय (Pepi II)	नेफ़ेरकारे (Neferkare)
६. बोक्क होरिस (Boce horis)	बेकेन्रेनिफ़ (Bekenrenef)
७. नीको (Necho)	वाह इब रा (Wah – ib – ra)
८. सामतिक द्वितीय (Psamtik II)	नेफ़्रेत इब रा (Nefret – ib – ra)
९. एप्रीज़ (Apries)	हा इब रा (Haa – ib – ra)
१०. अमासिस (Amasis)	खेनुम इब रा (Khnum – ib – ra)
११. सामतिक तृतीय (Psamtik III)	अंख का इब रा (Ankh – ka – ib – ra)
१२ अखोरिस (Akhoris)	हेकर (Haker)
१३. नेक्तानेबो प्रथम (Nectanebo I)	नेख़्त नेबेफ़ (Nekht Nebef)
१४. नेक्तानेबो द्वितीय (Nectanebo II)	नेख़्त होर हेब (Nekht – hor – heb)

नगरों के नाम

१. टैनिस (Tanis)	पर रेमेसीज़ (Per Ramses)
२. नौक्रेटिस (Naucratis)	पर मेरी (Per Meri)
३. बुबास्तस (Bubastis)	बास्त (Bast)
४. हेल्यापोलिस (Heliopolis)	ओनु (Onu)
५. मेम्फ़िस (Memphis)	मेन नेफ़र (Men Nefer)
६. हेरेकानपोलिस (Hierokonpolis)	नेख़ेन (Nekhen)
७. एल काब (El Kab)	नेख़ेब (Nekheb)
८. लिश्त (Lisht)	इथ एत तवी (Ith – at – Tawi)
९. थीबीज़ (Thebes)	वेसी (Wesi)

1. जमल के अर्थ हैं 'ऊँट'। अब्दुल नासिर बहुत लम्बा होने के कारण ऊँट अब्दुल नासिर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कुछ अन्य शब्द

भारतीय भाषा	मिस्री भाषा
१. देखना	मा (आँख का चित्र)
२. रोना	रेम (रोने के लिए आँसू)
३. चलना	ई (दो पैरों का चित्र)
४. तीर	ज़िन
५. पेपर (पेपीरी)	प-पी-युर (coptic = पापीऊर)
६. हवाबील पक्षी और बड़ा	वर (पक्षी का चित्र)
७. गुबरीला	खे़पर
८. कान	मसदर या स्दम = सुनना
९. मुँह	हर (मुँह का चित्र)
१०. दिन	हर वू
११. पक्षी का पर	श्वेत
१२. टोकरी	नेबेत
१३. भगवान	नेब

मिस्र देश की लेखन कला

जिस प्रकार अन्य प्राचीन देशों में लेखन कला का जन्म चित्रों द्वारा हुआ उसी प्रकार मिस्र में भी दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के चित्रों द्वारा लेखन कला का जन्म हुआ। इसका आरम्भिक काल विद्वानों ने लगभग ३५०० ई० पू० माना है क्योंकि यह प्रमाणित हो चुका है कि मेने के शासनकाल में यहाँ चित्र – लिपि प्रचलित थी। ग्रीस निवासियों ने इसका नाम हेरोग्लिफ़िक्स (Hieroglyphics) अथवा हैरोग्लिफ़्स (Hieroglyphs) रखा जिसके अर्थ हैं 'उत्कीर्ण की हुई पवित्र लिपि' (Hieros = पवित्र; Glyphein = उत्कीर्ण करना)। इसका यह नाम इसलिये ही पड़ा क्योंकि यह मन्दिरों पर उत्कीर्ण की जाती थी। यूनानी भाषा में इसका नाम हैरोग्लिफ़िकन (Hieroglyphikon) था। इसका अन्तिम पाठ २४ अगस्त ३९४ ई० में लिखा गया तत्पश्चात् इसका ज्ञान लोप हो गया। लगभग १६०० वर्ष पश्चात् इस चित्र लिपि को जानने की उत्कण्ठा पुनः जागृत हुई और संसार के विद्वान् इसको पढ़ने का प्रयास करने लगे।

१४१९ में : सर्वप्रथम होरापोलो (Horapollo) की लिखी एक पुस्तक[1] बोन्देलमोन्ते (Boundelmonte) को ग्रीस के एक द्वीप अन्द्रोस में प्राप्त हुई जिसमें इस चित्र लिपि के विषय में विस्तार से लिखा गया था। इसको १४०५ मे ऐलडस (Aldus) द्वारा प्रकाशित किया गया।

१४३५ में : सर्वप्रथम सीरियक (Cyriac)[2] मिस्र आया और उसने उसी पुस्तक (होरापोलो की) को अपने एक मित्र निकोलो निकोली (Niccolo Nicoli) को फ़्लोरेन्स में भेज दी।

1. Pope, M. : The Story of Decipherment (London – 1975), p. – 24.
2. Pope, M. : The Story of Decipherment (1975), p. – 11.

१५५६ में : सर्वप्रथम दो विद्वान मिस्र आये। एक जी० वी० पी० बोल्ज़नी (G. V. P. Bolzani), जिसने अपने पढ़ने के प्रयास के निष्कर्ष एक पुस्तक[1] में प्रकाशित किये जो बाद में असंगत, अशुद्ध तथा क्रमहीन सिद्ध हुए। दूसरा पीरियस वलेरियेनस (Pierius Valerianus), जिसने अपना शोध कार्य एक पुस्तक[2] में प्रकाशित किये।

१६३१ में : एन० कासीन (N. Caussin) आया उसने इस लिपि के कुछ चित्र लेकर एक पुस्तक[3] प्रकाशित की।

१६३६ में : एक जिसूट[4] (Jesuit) अथानासियस किर्चर[5] (Athanasius Kircher) ने, जो गणित का प्राध्यापक था, अपना कॉप्टिक (Coptic) लिपि पर शोध कार्य १६४३ में रोम में प्रकाशित कराया। यह प्रथम विद्वान् था जिसने कॉप्टिक की व्याख्या की। तदनन्तर उसने हेरोग्लिफ़्स को पढ़ने का प्रयास किया और तीन खण्डों में उनको १६५० में प्रकाशित किया। इस शोध कार्य के कारण वह मरणोपरांत (१६८० – मृत्यु) भी कई वर्षों तक एक महान् मिस्रवेत्ता माना जाता रहा क्योंकि उस समय उसके शोध कार्य[6] का कोई खण्डन करने वाला नहीं था परन्तु उन्नीसवीं श० में उसका यह शोध कार्य निरर्थक सिद्ध हुआ। किर्चर के इस कार्य का और कुछ लाभ तो न हुआ परन्तु उसके कार्य ने विद्वानों तथा वैज्ञानिकों के मन में उस ओर शोध कार्य करने की एक जागृति तथा उत्सुकता अवश्य उत्पन्न कर दी।

१७१५ में : चैम्बरलेन (Chamberlayne) ने एक पुस्तक[7] १५२ भाषाओं में प्रकाशित की जिसके द्वारा मिस्र की कॉप्टिक भाषा अनेक योरोपीय निवासियों को ज्ञात हो गई।

१७४० में : एक अंग्रेज पादरी विलियम वर्बर्टन (Willam Warburton, १६९८–१७७९) मिस्र आया और चित्र लिपि को देखकर कहा कि यह चित्र केवल संकेतात्मक चित्र नहीं हैं और न उत्कीर्ण – पाठ केवल धार्मिक हैं। यह तो पूर्ण लिपि है।

१७४२ : अब्बे बार्थेलेमो (Abbe Barthelemy) ने हेरोग्लिफ़्स लिपि के कुछ चिन्हों की ध्वनियों को पहचानने[8] का प्रयास किया।

---

1. Bolzani, G. V. P. : Hieroglyphica (1557)
2. Valerianus, P. : The Hieroglyphs (1556) – Printed in Basle.
3. Caussin, N. : de Symbolica Aegyptiorum Sapientia (The Symbolic Wisdom of Egypt – Cologne)
4. ईसाई धर्म की एक शाखा का नाम है जिसको इग्नेशस लोयला (Ignatius Loyala) ने १५३४ में आरम्भ किया था।
5. इस शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ 'अमर' है।
6. Kircher, A. : Prodromus Coptus Sive Aegyptiacus (Introduction to Coptic or Egyptian), 1643.
   ,, ,, : Lingua Aegyptiaca Restituta (The Egyptian Language Restored) – 1650.
7. ,Lords Prayer in 15 language'.
8. Doblhofer, E. : Voices in stone (1961), p. – 44.

१७४५ में : मेरकटी (Mercati) ने भी मिस्र की इस गूढ़ चित्र लिपि पढ़ने के प्रयास किये जो निष्फल सिद्ध हुए।

अठारहवीं श० में : विद्वानों की एक होड़ सी लग गई और निम्नलिखित विद्वान् इस क्षेत्र में चित्र लिपि के गूढ़ाक्षरों के रहस्योद्घाटन के लिए सलग्न हो गये :—

पी० लुकास (P. Lucas), आर. पौकोकी (R. Pococke), सी० नीब्हुर (C. Niebuhr) यफ० यल० नॉर्डन (F. L. Norden), ए. जॉर्डन (A. Gordon), यन. फ्रेरेट (N. Freret), पी० ए० यल० डी ओरिग्नी (P. A. L. D' Origny), जे० डी० मार्शम (J. D. Marsham), सी० डी गेबेलिन (C. De Gebelin), जे० एच० शूमेकर (J. H. Sehumacher), जे० जी० कोच (J. G. Koch), टी० सी० टाइकसेन (T. C. Tychsen), पी० ई० जबलोन्सकी (P. E. Jablonski), जे० जे० बार्थेलेमी (J. J. Barthelemy), डी गुइग्नीस (De Guignes) तथा जी० ज़ोयगा (G. Zoega)। इन विद्वानों के प्रयास चित्रलिपि की समस्या को सुलझा न सके। उनके शोध विवादास्पद रहे। इतना अवश्य निष्कर्ष निकला कि इस लिपि में जो चित्र गोल घेरों (कार्टूश – Cartouches) के अन्दर उत्कीर्ण हैं वे फ़ेराओं या शासकों एवं शासिकाओं के नाम हैं।

(कार्टूश) एक रस्सी का गोला सा था जो उन शासकों का नाम घेरे हुए होती थी और उसमें एक ग्रन्थि सी लगाकर रस्सी को सीधा कर दिया जाता था। इससे यह सिद्ध किया गया कि रस्सी सूर्य देवता की गोलाई का प्रतीक थी तथा सूर्य, जो मिस्र देशवासियों का मुख्य देवता था और वहाँ का शासक उसका पुत्र माना जाता था, शासक को अपने घेरे में सुरक्षित रखा करता था। जब नाम कुछ बड़े होने लगे तो उस ग्रन्थि की गोलाई भी कुछ लम्बी होने लगी। 'फ० सं० – २८६' पर क्लयोपेत्रा का कार्टूश दिया गया है।

फलक संख्या – २८९

जुलाई १७९८ में जब नेपोलियन इंगलैण्ड पर आक्रमण न कर सका तो उसने इंगलैण्ड के पूर्वी उपनिवेशों पर अपना अधिकार जमाने का विचार किया और अपनी नौ सेना को लेकर मिस्र पहुंचा। उस समय ममलूक[1] मिस्र का, तुर्की की नाममात्र अधीनता में, शासक था। मिस्र बिलासी – जीवन का अभ्यस्त हो चुका था इस कारण उसने नेपोलियन के समक्ष तुरन्त समर्पण कर दिया। नेपोलियन की सेना में केवल सैनिक ही नहीं थे अपितु उच्च कोटि के विद्वान तथा वैज्ञानिक भी थे। उनकी सभायें होती थीं और उनमें नेपोलियन स्वयं एक सदस्य के रूप में भाग लिया करता था।

उसी सभा के एक सदस्य कैप्टन बोस्सार्ड (Captain M. Boussard) अथवा बोखार्ड (Bouchard) ने अपने निरीक्षण में नील नदी के रोसेटा (Rosetta) मुहाने से पाँच मील दूर जहाँ पर रशीद[2] नाम का

1. काकेशस पर्वत के निवासी दास।
2. बोस्सार्ड ने इसका नाम परिवर्तित करके फोर्ट सेंट जूलियन रख दिया।

एक गढ़ खण्डहर के रूप में स्थित था, उत्खनन कार्य[1] आरम्भ किया जिसके फलस्वरूप २ अगस्त १७९९ में एक काले पत्थर की शिला प्राप्त हुई। यह शिला ३ फुट ९ इंच लम्बी, २ फुट ४½ इंच चौड़ी तथा ११ इच मोटी थी। इस पर तीन प्रकार की लिपियाँ अंकित थीं। ऊपरी भाग में हेरोग्लिफ्स की १४ पंक्तियाँ सीधे से बाईं ओर उत्कीर्ण थीं। मध्य भाग में डिमॉटिक की ३२ पंक्तियाँ तथा निचले भाग में ग्रीक लिपि की ५४ पंक्तियाँ, जिसमें से २६ नष्ट हो चुकी थीं, अंकित थीं। ऊपर एवं नीचे के भाग तो कुछ अंशों में विकृत हो गये थे परन्तु मध्य का भाग पूर्णतया सुरक्षित था। तत्पश्चात् इस शिलालेख की प्रतिलिपियाँ बनवाई गयीं और उनको विद्वानों के पास शोध करने के लिए भेजा गया। नवम्बर १८०१ में नेल्सन के नेतृत्व में ब्रिटेन का एक जहाज़ी बेड़ा सिकन्द्रिया पहुँच गया। कुछ नाममात्र का युद्ध हुआ। नेपोलियन अपनी पराजय को निश्चित समझ कर अपनी सेना को छोड़ कर थल के मार्ग से फ्रांस चला गया। इसकी सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। उपर्युक्त शिला खण्ड जो फ्रांस भेजा जा रहा था १८०२ में इंगलैण्ड पहुँच गया जो रोसेटा शिला खण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा ब्रिटिश संग्रहालय के आतिथ्य में सुरक्षित हो गया।

ग्रीक लिपि को पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि २७ मार्च १९६ ई० पू० मिस्र के पुरोहितों की एक सभा जिसमें टॉलेमी पंचम को उसके सिंहासनारूढ़ होने पर सम्मानित किया गया था, मेम्फ़िस में हुई थीं जिसमें अन्य राजाज्ञाओं के साथ टॉलेमी पंचम एपीफ़ेन्स का यह भी अनुमोदन था कि घोषणा की प्रतिलिपियाँ मिस्र के सभी मन्दिरों में स्थापित कर दी जायें। उस काल की राजकीय भाषा ग्रीक थी इस कारण राजाज्ञा उसी में मुख्यतया अंकित की गई थी परन्तु उस समय व्यापारिक लिपि डिमाटिक तथा धार्मिक लिपि हैरोग्लिफ़्स थी, इस कारण ग्रीक लिपि के भावार्थ रूप में वह घोषणा इन दो लिपियों में भी अंकित की गई। पुरोहित मिस्र में सदैव सत्तावान् रहे हैं इस कारण सबसे ऊपर पुरोहितों की लिपि अंकित कराई गई थी। अब की बार इंगलैण्ड की ओर से उस शिलालेख की प्रतिलिपियाँ विद्वानों के पास पेरिस एवं अन्य स्थानों को भेजी गई।

रहस्योद्घाटन : १८०२ में सिल्वेस्त्रे दि सेसी (Sylvestre de Sacy) ने ग्रीक लिपि के पाठ की सहायता से कई नाम पढ़ने में सफलता प्राप्त की जिनमें टॉलेमी का नाम भी था। अब उसने हैरोग्लिफ़्स के कुछ चिह्न भी पहचान लिए थे परन्तु वह इसके अतिरिक्त आगे कोई प्रगति न कर सका और उसने वहीं अपने परिश्रम को विराम लगा दिया।

दि सेसी ने अपने सारे शोध का ब्योरा एक स्वीडन निवासी विद्वान् को सौंप दिया जो उस समय पेरिस में भाषाओं के ज्ञानार्जन में व्यस्त था। उस विद्वान का नाम जे. डी. ओकरब्लाड (J. D. Akerblad) था। उसने अपना शोध आरम्भ किया और उसने तुलनात्मक रूप से सर्वप्रथम डिमॉटिक को पढ़ने का प्रयास किया और कुछ नाम पहचानने में सफल हुआ। उसी पर उसने निष्कर्ष निकाला कि डिमॉटिक लिपि वर्णात्मक है जो बाद में असत्य सिद्ध हुआ। जब ओकर ब्लाड अपने निष्कर्ष दी सेसी के पास ले गया तो उसने अपनी शंका प्रगट की। इससे ओकर ब्लाड हताश हो गया और अपना शोध समाप्त कर दिया।

रोसेटा के प्रस्तर के रहस्योद्घाटन की समस्या अब अन्य विद्वानों के समक्ष पहुँची और उन्होंने लगभग १० वर्ष अपनी अटकलें लगायीं। उदाहरणार्थ काउण्ट एन० जी० दी पालिन (Count N. G. de Polin) ने अपना मत प्रकट किया कि उसने एक ही दृष्टि में उसके अर्थ समझ लिए हैं परन्तु उन अर्थों में कुछ त्रुटियाँ अवश्य रह गई हैं। एक दूसरे विद्वान अबे तैन्दू दि सेन्ट निकोलस (Abbe Tandeau de St. Nicolas) ने

---

1. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), P. – 49.

अपने वक्तव्य में कहा कि मिस्र की चित्र लिपि कोई लिपि – पद्धति नहीं है अपितु मन्दिरों आदि को सुसज्जित करने का एक साधन मात्र है। १८०६ में एक ऐसे ही प्राच्य वेत्ता वैरन वॉन हैमर पर्गस्टाल (Baron Von Hammer Purgstall) ने मिस्र के एक प्राचीन अभिलेख का अनुवाद एक अरब के सहयोग से १८२१ में किया, जो पूर्णतया भ्रमपूर्ण निकला।

अब इस प्रस्तर की समस्या टॉमस यंग (Thomas Young) के, जो कैम्ब्रिज में एक भौतिकशास्त्री थे, पास आयी। यंग का जन्म मिल्वर्टन (Milverton)–सोमरसेट (Somerset) में १७७३ में हुआ था। २० वर्ष के होने तक लगभग १२ भाषाओं का ज्ञाता हो गया था। १७९८ में सौभाग्य से इसको अपने चाचा की सारी चल अचल सम्पत्ति प्राप्त हो गयी जिसके कारण उसको अन्य विषय भी अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। उसने रोसेटा की प्रतिलिपि में से मध्य का डिमॉटिक भाग निकाल कर उसको पृथक कागज़ों पर चिपकाया और दाएँ से बाएँ पढ़ने का प्रयास किया। अब उसने ग्रीक लिपि के भाग को काट कर उसके साथ चिपकाया जिसके विषय में वह निश्चित हो गया कि यह डिमॉटिक का भाग ग्रीक लिपि से समानता रखता है। परन्तु यह पद्धति हैरोग्लिफ़्स के विषय में प्रयोग न कर सका क्योंकि ऊपर का भाग दाएँ तथा बाएँ दोनों ओर से कुछ अंशों में नष्ट हो चुका था। उसने सेसी व ओकरब्लाड की भाँति तुलना की और दो नामों को पहचाना, 'ऐलेक्ज़ेण्डर और एलेक्ज़ेन्ड्रिया'। उसने एक और शब्द 'किंग' पहचाना और देखा कि ग्रीक लिपि में ३७ बार इसका प्रयोग किया गया है जब कि डिमॉटिक में केवल ३० बार ही है। शब्द 'टॉलेमी' एक में ११ बार तथा दूसरी में १४ बार आया है। अब उसने एक ग्रीक डिमॉटिक शब्दावली बनाई जिसमें ८६ शब्द थे और वे सब ठीक सिद्ध हुए। १८१४ में सोसायटी फ़ार एन्टीक्वेरीज़ (Society for Antiquaries) के समक्ष उसने रोसेटा प्रस्तर के मध्य डिमॉटिक भाग का पूरा अनुवाद सुना दिया। इस अनुवाद में उसके प्रमाणों तथा अनुमानों का सम्मिश्रण था क्योंकि वह यह नहीं समझ सका कि यह डिमॉटिक पाठ ग्रीक पाठ का अनुवाद नहीं है।

जब उसने हैरोग्लिफ़्स पर अपना शोध किया तो उसने कई त्रुटियाँ कीं। एक तो उसको यह ज्ञात नहीं था कि मिस्र की लिपि में स्वरों का प्रयोग नहीं किया जाता दूसरे उसने कुछ चिह्नों को अनुमान से पढ़ा जो प्रगति में बाधाजनक हुए। तब भी ब्रिटेनिका के विश्व कोष[1] के १८१९ के संस्करण में उसने अपने शोध के विषय में हैरोग्लिफ़्स के रहस्योद्घाटन करने की एक विधि दर्शायी तथा यह भी बताया कि यह लिपि किस किस प्रकार से लिखी गयी है और वह पूर्णतया वर्णात्मक नहीं है। अंक केवल खड़ी लकीरों से बनाये गये हैं और बहुवचन बनाने के लिए चिह्न को तीन बार अंकित किया जाता है अथवा तीन खड़ी लकीरें खींची जाती हैं। दो भिन्न चिह्नों की एक ध्वनि भी हो सकती है। इतने परिश्रम के पश्चात् वह प्रगति न कर सका और शोध कार्य त्याग दिया।

इधर एक अन्य विद्वान् जीन फ्रैंको शैम्पोलियों (Jean Francois Champollion) भी इस कार्य में संलग्न था जिसको रोसेटा प्रस्तर की समस्या सुलझाने तथा मिस्र की लिपि का रहस्योद्घाटन करने का श्रेय प्राप्त हुआ। शैम्पोलियों का जन्म फ़िगीक (Figeac) में १७९० में हुआ। १२ वर्ष की आयु से ही उसको प्राच्य भाषाओं में अभिरुचि उत्पन्न होने लगी। १८०१ में जब उसका भ्राता उसको ग्रैनोबिल (Grenoble) अपने साथ लाया, तब उसका परिचय एक विख्यात गणितज्ञ जीन बैप्टिस्ट फ़ोरियर (Jean Baptiste Fourier) से हुआ। फ़ोरियर नेपोलियन के विद्वानों की सभा का एक सदस्य था और वह उसके साथ मिस्र

1. Encyclopaedia Britannica – 1819 Ed.

गया था। फ़ोरियर ने अपना मिस्री पुरातत्व का सग्रह दिखाया। उसमें मिस्र की प्राचीन लिपियों की वस्तुयें भी थीं जिनकी ओर शैम्पोलियों विशेष रूप से आकर्षित हुआ। उसी समय से उसने उस अज्ञात लिपि के रहस्य का उद्‌घाटन करने की ठान ली।

अब उसने भाषाओं का तथा इतिहास का अध्ययन आरम्भ कर दिया और पेरिस चला गया जहाँ उसका परिचय दि सेसी से हुआ और उसे रोसेटा – प्रस्तर के अभिलेखों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। वह दि सेसी का शिष्य बन गया। १८ वर्ष की आयु में वह ग्रेनोबिल में १८०९ में इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हो गया। परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात् उसको पदच्युत कर दिया गया क्योंकि उसकी नैपोलियन के लिए सहानुभूति प्रतीत की गयी। १८१७ में वह पुनः ग्रैनोबिल आया और उसकी एकादमी आफ़ साइन्सेज (Academy of Sciences) में पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति हो गयी परन्तु वह पुनः राजद्रोह के दोषारोपण में निर्वासित कर दिया गया। वह तुरन्त पेरिस भाग गया।

इस विपत्ति काल में भी शैम्पोलियों मिस्र तथा उसकी गूढ़ लिपि की समस्या को सुलझाने में संलग्न रहा। इसके लिए सर्वप्रथम उसने कॉप्टिक भाषा व लिपि का गहन अध्ययन किया। १८२२ के आरम्भ में उसने अकादमी (Academie des Inscriptions et Belles-lettres) के सदस्यों के समक्ष मिस्र की चित्र लिपि के ध्वन्यात्मक चिह्नों की तालिका प्रदर्शित की जिसमें उसने कार्टूशों के अन्दर अंकित चिह्नों के वर्णात्मक रूपों की घोषणा की तथा उनके गूढ़ रहस्योद्‌घाटन सम्बन्धी अपनी योग्यता का भी वर्णन किया।

इस शोध की सफलता उसको फ़िलाइ के शिलास्तम्भ (Philae Obelisk) द्वारा प्राप्त हुई। यह स्तम्भ १८१५ में डब्ल्यू० जे० बेंक्स (W. J. Bankes) को फ़िलाइ में टूटा हुआ प्राप्त हुआ था। यह स्तम्भ टॉलेमी षष्टम द्वारा १७३ ई० पू० में फ़िलाइ के मन्दिर के सामने स्थापित कराया गया था। इसमें हैरोग्लिफ़्स तथा ग्रीक लिपि में यह राजाज्ञा उत्कीर्ण की हुई थी कि "मन्दिर के दर्शन करने आने वाले यात्रियों को भोजन तथा ठहरने का स्थान प्रदान किया जायेगा"। उसको बेंक्स अपने निवास स्थान डोरसेट को ले गया। इसी स्तम्भ लेख की प्रतिलिपि शैम्पोलियों के पास भी अन्य विद्वानों के साथ भेजी गयी थी। इसमें क्ल्योपेत्रा का नाम भी अंकित था। इस प्रकार शैम्पोलियों ने लगभग ८० कार्टूश के चिह्नों को पहचान लिया। जिनमें ग्रीक व रोमन शासकों के नाम थे।

अभी तक उसने ग्रीक – वंश के पूर्व के शासकों के नाम ज्ञात नहीं किये थे। १४ सितम्बर १८२२ का दिन शैम्पोलियों के लिए एक अविस्मरणीय दिवस था। इस दिन उसको जीन निकोलस हुईओत (Jean Nicolas Huyot) एक शिल्पकार द्वारा एक मन्दिर की अभिलेखों की कई प्रतिलिपियाँ प्राप्त हुईं। यह सब अभिलेख बहुत प्राचीन थे। इसमें भी अनेक कार्टूश थे। मनेथो की वंशावली तथा बाइबिल की हज़रत मूसा की घटनायें भी उसके समक्ष थीं। इन अभिलेखों में उसने दो शासकों के नाम देखे जिनके चिह्न 'फ० सं० – २९४' पर दिये गये हैं। शैम्पोलियों ने पहले नाम का पहला चिह्न 'रा' 'रे', (सूर्य) तथा बाद के दो चिह्न 'स' 'स' पढ़ लिए। अब समस्या आयी बीच के चिह्न के लिए। कॉप्टिक में 'ms' के अर्थ होते थे 'उत्पन्न हुआ' व 'mas' के अर्थ होते थे 'बच्चा'। तभी वह समझ गया 'सूर्य का बच्चा' या 'सूर्य पुत्र' अर्थात् रेमेसीज़ (Rameses अथवा Ramesses)। इसी प्रकार दूसरे चित्र में पक्षी का पहला चित्र 'टाट देवता' का द्योतक था अर्थात् 'टाट देवता का पुत्र' टुटमिस (Thotmss)

अपनी इस सफलता के निष्कर्षों को उसने अपनी पुस्तक (Precis du Systeme hieroglyphique)

को १८२४ में प्रकाशित कराया और संसार को चकित कर दिया। उसने इस पुस्तक में सिद्ध कर दिया कि मिस्र की लिपि अति जटिल है। इस लिपि में तीनों प्रकार (चित्रात्मक, संकेतात्मक तथा ध्वन्यात्मक—Pictographic, Ideographic and Phonetic) के चिह्न न केवल एक अभिलेख या वाक्य में दृष्टिगोचर होते हैं अपितु शब्दों में भी वर्तमान होते हैं।

१८२४ से अपनी मृत्यु (१८३२) तक वह हैरोग्लिफ्स के ज्ञान की वृद्धि करने में अनवरत प्रयास करता रहा। इसी सन्दर्भ में वह फ्रांस सरकार द्वारा मिस्र भेजा गया जहाँ जाकर वह अभिलेखों की प्रतिलिपियाँ लेता रहा तथा उनका अध्ययन भी करता रहा। इसी सलग्नता के काल में उसका स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् उसके भ्राता ने पेरिस से १८४१ में 'मिस्र की व्याकरण (Grammaire Egyptienne)' तथा १८४३ में 'मिस्र का शब्दकोष' (Dictionnaire Egyptien) प्रकाशित किये जो शैम्पोलियों को अमर बना गये तथा विश्व के समक्ष एक देश की अज्ञात प्राचीन संस्कृति व इतिहास को ज्ञात बना गये।

इतने परिश्रम पर भी बहुत से विद्वान् जैसे, ए० डब्ल्यू० स्पोह्न (A. W. Spohn), जी० सेफ़ार्थ (G. Seyfarth), जे० क्लाप्रोथ (J. Klaproth) तथा सी० सिमोनाइड्स (C. Simonides) शैम्पोलियों के प्रामाणिक शोधकार्य के निष्कर्षों से सहमत नहीं हुए, परन्तु इटली के दो विद्वानों, एच० रोसेलिनी (H. Rosellini) तथा रिचर्ड लेप्सियस (Richard Lepsius) ने इस शोधकार्य की बड़ी प्रशंसा की। १८६६ में जर्मन विद्वानों के एक दल, जिसमें लेप्सियस भी था, ने टैनिस के समीप एक चूने के पत्थर की पाटिया (Slab) उत्खनित की। यह शिलालेख कैनोपस (Canopus)[1] की राजाज्ञा थी जिसमें टॉलेमी तृतीय को एक कृतज्ञ पुरोहित द्वारा मानपत्र भेंट किया गया था। संयोगवश १५ वर्ष के पश्चात् इसी प्रकार का शिलालेख जी० मैस्प्रो (G. Maspero) को प्राप्त हुआ जिस पर वही शब्द उत्कीर्ण थे। इन दोनों शिलालेखों पर तीनों लीपियाँ उत्कीर्ण थीं (ऊपर ३७ पंक्तियाँ हैरोग्लिफ़्स की, नीचे ७६ पंक्तियाँ ग्रीक लिपि की तथा ५७ पंक्तियाँ डिमॉटिक लिपि की)।

उन्नीसवीं श० के अन्त तक हैरोग्लिफ़्स का ज्ञान वैज्ञानिक रूप धारण कर चुका था। उसमें लेषमात्र भी अनुमान व संशय का स्थान न था। लुडविग स्टर्न (Ludwig Stern) एव एडोल्फ़ अर्मन (Adolf Erman) के व्याकरणीय अध्ययन ने तथा कर्ट सेथे (Kurt Sethe), सर एच० टॉम्पसन (Sir H. Thompson), एच० ग्रेपो (H. Grapo), डब्ल्यु स्पीगेलबर्ग (W. Spigelberg) तथा एस० दि बक (S. de Buck) के अनुक्रमिक कृत्यों ने शैम्पोलियों के शोध की न केवल पुष्टि की अपितु भावी पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए लिपि के अध्ययन को पर्याप्त सरल बना दिया।

लिपि की कुछ विशेषतायें : विविध विद्वानों के १५० वर्ष के अथक परिश्रम द्वारा मिस्र की रहस्यमयी हैरोग्लिफ़्स तथा अन्य लिपियों के विषय में निम्नलिखित रहस्य प्रकाश में आये :—

१. **हैरोग्लिफ़्स :** एक पवित्र लिपि मानी जाती थी। इसका प्रयोग, मन्दिरों के दिवालों पर, शासकों की समाधियों तथा शव-पेटियों पर, पिरेमिड की भीतरी दीवालों पर तथा अन्य शिलास्तम्भों आदि पर उत्कीर्ण करने में किया जाता था।

२. **इस लिपि :** का जन्म कब और कैसे हुआ, निश्चय रूप से ज्ञात नहीं हो सका। इसी कारण धार्मिक

1. Decrees of Memphis and Canopus – 3 Vols. – (London 1904).

विश्वास के अन्तर्गत यह धारणा बन गई कि इसका जन्मदाता एक देवता था जिसका नाम टाट (Thoth) था। इस देवता का सिर एक पक्षी (Ibis) का तथा शरीर मनुष्य का था।

३. इस लिपि : का प्रयोग सम्भवतः ३५०० ई० पू० से (प्रथम वंश में यह लिपि वर्तमान थी) आरम्भ हुआ और ४०० ई० तक होता रहा। तदनन्तर इसका कोई ज्ञाता न रहा।

४. इस लिपि : के उत्कीर्ण करने की विविध प्रणालियाँ थीं। उदाहरणार्थ ऊपर से नीचे (इसमें प्रथम खड़ी पंक्ति दाएँ ओर होती थी तथा दूसरी प्रथम खड़ी पंक्ति के बाएँ ओर से आरम्भ की जाती थी जिस प्रकार चीनी लिपि लिखी जाती थी), दाएँ से बाएँ[1] तथा ग्रीक वंश के शासन काल से कभी बाएँ से दाएँ भी अंकित की जाती थी।

५. इस लिपि : में तीन प्रकार के चिह्नों का प्रयोग होता था।

१. चित्रात्मक : जिसमें किसी वस्तु या प्राणी का चित्र उसी वस्तु या प्राणी का बोध कराता था।

२. संकेतात्मक : जिसमें चित्र या चिह्न किसी भाव का संकेत करता था।

३. ध्वन्यात्मक : जिसमें चित्र या चिह्न किसी ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता था।

६. इस लिपि : में ध्वन्यात्मक चित्र या चिह्न तीन प्रकार के थे :—

१. एक वर्णिक (Uniconsonantal) : जो केवल एक ध्वनि के लिए एक वर्ण रखते थे। इनकी संख्या २४ थी।

२. द्विवर्णिक (Biconsonantal) : जो एक ध्वनि के लिए दो वर्ण रखते थे। इनकी सख्या ७५ थी परन्तु लगभग ५० प्रयोग में आते थे।

३. त्रैवर्णिक (Triconsonantal) : जो एक ध्वनि के तीन[2] वर्ण रखते थे।

७. इस लिपि : में केवल व्यंजनों (Consonants) का ही प्रयोग होता था जिस प्रकार उस काल की पश्चिम एशियाई देशों की सेमिटिक लिपियों में होता था। वैसे तो यह पद्धति बड़ी कठिन व जटिल प्रतीत होती है परन्तु उस भाषा के प्रयोग करने वालों को कोई कठिनाई प्रतीत नहीं हुई होगी।[3]

८. इस लिपि : में किसी शब्द को लिखने के लिए वर्णों के प्रयोग के साथ साथ कभी कभी उस शब्द के निर्धारक (determinative—भाव को संकेत करने वाला) चित्र को भी अंकित कर दिया जाता था और उस चित्र के नीचे एक खड़ी लकीर भी खींच दी जाती थी जो इस बात को प्रमाणित करती थी कि अमुक चित्र वर्ण नहीं अपितु निर्धारक है।

---

1. लगभग २००० ई० पू० से प्रयोग में आई।
2. They are also called Uniliteral, Biliteral and Triliteral.
3. आज भी भारत में उर्दू लिपि के प्रयोग में यही पद्धति प्रचलित है। इसका एक अन्य उदाहरण I. J. Gelb ने अपनी पुस्तक 'A Study of Writing' में इस प्रकार दिया है : – Writing without vowel can also be read with ease – 'n rdng ths sntnc u wll fnd th bst prf tht th nglsh lngug cn b wrttn wtht vwls' – (In reading this sentence you will find the best proof that the English language can be written without vowels).

९. संसार : की यह सर्वप्रथम वर्गात्मक लिपि थी परन्तु इसके लिखने की प्रणालियों के कारण तथा निर्धारक चित्रों का व ध्वन्यात्मक (वर्ण) चित्रों का साथ साथ प्रयोग होने की जटिलता के कारण इसका प्रयोग मिस्र के अतिरिक्त किसी अन्य देश की भाषा के लिए प्रयोगात्मक नहीं बनाया जा सका।

१०. संसार : की यही सर्वप्रथम लिपि थी जिसके वर्णों द्वारा (पूर्णतया नहीं) उत्तरी सेमिटिक लिपियों का उद्भव हुआ परन्तु भाषा की भिन्नता के कारण उन वर्णों के नामों को परिवर्तित कर दिया गया।

११. ए० एच० गार्डिनर व सेथे के अनुसार : इस लिपि में लगभग ७०० चित्र व चिह्न हैं जिनको २० वर्गों में विभाजित किया गया है। उदाहरणार्थ ६३ चिह्न मानव शरीर के अंगों के, ५५ चिह्न मानव जीवन के आजीविका के, ५२ चिह्न स्तन वाले (mammals) प्राणियों के, ३९ चिह्न पक्षियों के, २० चिह्न क्रीड़ा व वादक यंत्रों आदि के मुख्य वर्ग हैं।

१२. इस लिपि : का एक दूसरा रूप भी था जो कागज़ पर शीघ्रता से लिखने के लिए प्रयोग किया जाता था। उसका नाम हेरेटिक (Hieratic) था। इसको भी धार्मिक क्षेत्र में ही प्रयोग किया जाता था जिसके कारण इसको भी पवित्र लिपि माना जाता था। इसके उद्भव के विषय में निश्चित रूप से कहना संभव नहीं है। कुछ विद्वानों का मत है कि यह प्रथम वंश में भी वर्तमान थी तथा कुछ विद्वानों का मत है कि इसका विकास पंचम वंश के शासन काल (२५०० ई० पू०) से दृष्टिगोचर होने लगा।

१३. इन दोनों लिपियों : का प्रयोग पुरोहित वर्ग द्वारा किया जाता था। नव दीक्षित पुरोहितों को इनके लिखने की शिक्षा देने के लिए मन्दिरों में पाठशालायें स्थापित की गयीं थीं।

१४. पच्चीसवें वंश : के शासन काल (७५१ से ६६३ ई० पू० तक) में जन साधारण के प्रयोग के लिए एक तीसरी लिपि का हेरेटिक से आविष्कार किया गया। उस काल के अनुसार यह हेरेटिक का सरल रूप था जिसका प्रयोग प्राय: व्यापारिक क्षेत्र में अधिक होता था। जनसाधारण के लिए ग्रीक भाषा में एक शब्द डिमॉस (Demos) था, उसी से इस लिपि का नाम भी डिमॉटिक रख दिया गया। नामकरण सम्भवतः ई० पू० की तीसरी शताब्दी में हुआ।

१५. प्रथम वंश : के शासन काल में एक ध्वनि वाले व्यंजन – वर्ण, जिनकी संख्या २४ थी, निर्धारित कर लिए गए थे परन्तु पांचवें वंश के शासन काल में ६ अन्य सम – ध्वनि वाले वर्णों[1] (चित्रों) का आविष्कार कर लिया गया।

१६. इस लिपि : को पढ़ने में दो बातों का ध्यान रखा जाता था :—

(क) क्षैतिज पंक्तियों (horizontal) की लिपि की दिशा (दाएँ से बाएँ या बाएँ से दाएँ) जानने के लिए चित्रों के मुख की दिशा देखी जाती थी यदि मुख बायीं ओर हो तो बाएँ से अथवा मुख दाईं ओर हो तो दाएँ से पढ़ी जाती थी।

(ख) दो व्यंजनों के मध्य अधिकतर 'ए' या 'ई' की ध्वनि का प्रयोग किया जाता था, जैसे 'Rmss' = 'Remeses'।

---

1. Homophones.

अगले चित्रों का विवरण

मिस्र के कुछ संकेतात्मक शब्द[1] : (फ० सं०–२९०) आरम्भ काल में चित्रों की संख्या लगभग दो सहस्र थी परन्तु जब लिपि का सरलीकरण होने लगा तथा चित्रात्मक से लिपि संकेतात्मक की ओर अग्रसर होने लगी तब इनकी संख्या कम होने लगी। चित्रों के संकेत निर्धारित[2] होने लगे।

'फ० सं०—२९०' पर प्रथम पंक्ति के चित्र केवल चित्रात्मक (Pictographic) हैं तथा प्रत्येक चित्र एक शब्द है इसका काल लगभग ३४०० ई० पू० माना जाता है। इसमें चित्रों के नीचे दो पक्तियाँ हैं। प्रथम में मिस्र की भाषा में नाम दिए हैं और इसी के नीचे हिन्दी भाषा में उसी चित्र के नाम दिये हैं। उस काल में ऐसे लगभग ७०० चित्रात्मक शब्द थे।

द्वितीय पंक्ति में वही चित्र कुछ सकेत देने लगे और इसको संकेतात्मक (Ideographic) लिपि कहने लगे। अब आँख केवल आँख का चित्र नहीं रहा अपितु उसके अर्थ 'देखना' हो गया तथा दो टांग का चित्र 'चलना' हो गया।

तृतीय पंक्ति में गुणवाची शब्द दिए गये हैं। चित्र भौतिक हैं पर उनसे अभौतिक भाव निकलता है।

चतुर्थ पंक्ति में निर्धारक (Determinatives) शब्दों का निर्माण किया गया है। चित्र बना देने से पूरा भाव व्यक्त हो जाता था। इस प्रकार लिपि का विकास हुआ जिसका काल गार्डिनर ने अपनी पुस्तक[3] में दिया है:—

१. प्राचीन लिपि :	३४००	से	२४०० ई० पू०
२. मध्यकालीन लिपि :	२४००	से	१३५० ई० पू०
३. अन्तिम काल की लिपि :	१३५०	से	७०० ई० पू० तक।
			और ७०० ई० पू० से ४०० ई० तक।

हैरोग्लिफ़्स के वर्ण (डिरिंजर द्वारा) : (फ० सं०—२९१) इस चित्र में वह २४ वर्ण दिए गये हैं जो प्रथम वंश के शासनकाल में प्रयोगात्मक बनाये गये। इनमें केवल व्यंजनों का ही प्रयोग होता था। प्रत्येक वर्ण[4] के चित्र का नाम तथा हिन्दी व रोमन लिपि में उसकी ध्वनि दी गई है। प्रत्येक वर्ण के लिए एक चित्र[5] है।

हेरोग्लिफ़्स के वर्ण (वैलिस बज द्वारा) : (फ० सं०—२९२) इस चित्र में हैरोग्लिफ़्स की वर्णमाला में ६ नये वर्ण जोड़े गये हैं। पाँचवें वंश में ३० वर्ण हो गये थे। ल, ओ, ऊ, न, श, प नये हैं। कुछ समध्वनियों वाले भी जोड़े गये।

ध्वनियाँ व चित्र :[6] (फ० सं०—२९३) इस चित्र में ऊपर की ओर वाले द्विवर्णिक (Bi-consonantal)

---

1. Jansen, H. : Syn, Symbol and Scripts Page—58, (1970).
2. Determinatives.
3. Gardiner, A. H. : Egyptian Grammar (1927).
4. Friedrich, J : Extinct Languages Page—12, (1962).
5. Uniconsonantal.
6. Erust Doblhofer : Voices in Stones (1955).

चित्र हैं,[1] मध्य वाले कुछ अन्य सम – ध्वनि वाले चित्र हैं जो ग्रीक काल में जोड़े गये तथा नीचे वाले त्रैवर्णिक चित्र या वर्ण[2] हैं।

हैरोग्लिफ़्स के कुछ शब्द :[3] (फ० सं०—२९४) इस चित्र के ऊपर की ओर के शब्दों में प्रथम नाम 'टॉलेमी' का है जो सर्वप्रथम दि सेसी ने पढ़ा था और इसी नाम के द्वारा शैम्पोलियों ने नीचे के नाम 'क्ल्योपेत्रा' की तुलना की थी। 'P', 'O', 'L', वर्णों को वह जानता था बाद में नाम को पहचानने पर और वर्ण जान गया। क्ल्योपेत्रा में पहला वर्ण 'C' है जो 'क' की ध्वनि के समान है और सातवें अक्षर को 'द' की ध्वनि वाले चित्र से अंकित किया गया है। संभवतः उस काल में क्ल्योपेद्रा ही उच्चारण करते हों। 'रेमेसीज़' व 'टुटमस' के नाम शैम्पोलियों ने १४ दिसम्बर १८२२ को पहचाने।

अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द : (फ० सं० – २९५) इसमें चित्र की वर्णात्मक ध्वनि, चित्र का नाम तथा उसका हिन्दी नाम फलक के सीधी ओर कुछ शब्द, उनके लिखने की अनोखी पद्धति, साथ में निर्धारक चित्र, उसका मिस्री भाषा में नाम, किन वर्णों से शब्द का निर्माण हुआ हिन्दी में उसके अर्थ आदि प्रत्येक शब्द के साथ दिये गए हैं। शब्द 'दिन (Day)' (फ० सं०–२९४) जिसको मिस्र की भाषा में 'हर वू (Har Wu)[4]' कहते हैं परन्तु लिखा जाता है 'HRW' बिना स्वरों के चार प्रकार से। उसी के नीचे एक वाक्य दिया है जिसका अंग्रेज़ी भाषा में अर्थ है 'A man lives when his name is pronounced' अर्थात् 'मनुष्य, नाम से जीवित रहता है'। इन दोनों (शब्द व वाक्य) में वर्ण तथा निर्धारक शब्द भी दिये गये हैं। उनके पास या नीचे एक खड़ी लकीर अंकित कर दी जाती थी जो सूचित करती थी कि यह चित्र ध्वन्यात्मक वर्ण नहीं अपितु निर्धारक चित्र है। इसी कारण दिन के 'सूर्य' का तथा नाम व मनुष्य के लिए मनुष्य का चित्र भी अंकित कर दिया गया है।

इस चित्र में ऊपर से नीचे तक लिपि को सरलता से पढ़ने के कारण बाएँ से दाएँ की ओर बना लिया गया है। हैरोग्लिफ़्स में जब बाएँ से दाएँ लिखा जाता है तो चित्रों की दिशा बाईं ओर होती हैं और जब दाएँ से बाएँ लिखा जाता है तो दाईं ओर होती है।

हैरोग्लिफ़्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श : बायीं ओर ऊपर से (फ० सं० – २९६):—

शब्द	उच्चारण	अर्थ
उबन	उबेन	सूर्योदय
इतन	इतेन	सूर्य का चक्र
पद	पेद	घुटना
रआमपत	रामपेत	आकाश में सूर्य
हरउ	हेरु, हर वू	दिन

इसके नीचे हेरेटिक (हैरोग्लिफ़्स का घसीट रूप) के दो काल की लिपि में एक शब्द 'हर वू' (दिन) लिखा गया है। उसमें सं० – १ में आरम्भिक हेरेटिक तथा सं० – २ में पुराकालीन हेरेटिक का

1. Friedrich, J, : Extinct Languages p-7, (1962).
2. Triconsonantal.
3. P. E. Cleator : Lost Languages—Page 49-51 (1957).
4. Gardiner, A. H. : Egyptian Grammar P – 27, (1927).

प्रतिदर्श है। इसी 'फ० सं० — २९६' पर सीधी ओर हैरोग्लिफ़्स तथा साथ साथ हेरेटिक भी दी गई है, दोनों ऊपर से नीचे लिखे[1] गये हैं जो इस प्रकार पढ़े जायेंगे :—

शब्द		अर्थ
न ख़ेम्म	=	दूर ले जाना; बचाना।
पीटना	=	निर्धारक शब्द है।
स	=	वह (स्त्री)
ह – न – अ; हीना	=	(सब) के साथ
आंख (निर्धारक)	=	देखना
र – त; इर्रत	=	स्त्री, पुरुष
स्त्री – पुरुष	=	निर्धारक शब्द हैं
नब + त; नेबेत		
निर्धारक + अक्षर	=	सब
र	=	को
स	=	वह (स्त्री)

इसका अनुवाद होगा—'उस (स्त्री) को बचाओ, उन सब स्त्री पुरुषों से, जो उसको (स्त्री) पीट रहे हैं'।

हैरोग्लिफ़्.स का घसीट रूप हेरेटिक : (फ० सं० – २९७) इस चित्र में हैरोग्लिफ़्स के कुछ वर्णों का घसीट रूप[2] दिया गया है। इसमें बाएँ से प्रथम कॉलम में चित्रों की ध्वनि (Phonetic value) दी है, दूसरे में वर्ण, तीसरे और चौथे कालम में परिवर्तन तथा पाँचवें में पूर्ण परिवर्तित रूप दिया गया है। हेरेटिक का कब निर्माण हुआ यह बिषय विवादास्पद है। कुछ विद्वानों का मत है कि हैरोग्लिफ़्स के साथ ही इसका भी प्रयोग होता था।

हैरोग्लिफ़्.स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख : (फ० सं०–२९८) इस अभिलेख[3] में ऊपर हेरोग्लिफ़्स (सरलीकरण के लिए बाएँ से दाएँ कर लिया गया है) तथा नीचे हेरेटिक, जो दाएँ से बाएँ लिखी है, दी गई है।

मिस्र की डिमॉटिक[4] : जन साधारण के लिए डिमॉटिक का आविष्कार ई० पू० की सातवीं श० में हुआ। इसका प्रतिदर्श[5] तथा वर्ण 'फ० सं० – २९९' पर दिए गये हैं।

कॉप्टिक लिपि : (फ० स०–३००) पर कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला[6] दी गई है। 'कॉप्टिक' अरबी शब्द 'क़िब्त' से गलत उच्चारण करके 'क़ोब्त' शब्द से बना। 'क़िब्त' शब्द 'इजिप्शियन' (Egyptian) के संक्षिप्त रूप गि़प्तियस (Gyptios) से बना।

---

1. यह पाठ लेखक ने स्वयं काइरा (Cairo, Egypt) के मुख्य निदेशक के सहयोग से एक हैरोग्लिफ़्स के प्रवक्ता द्वारा १९७५ में प्राप्त किया।
2. Möller, G. :Hieratische Paläographie (2 nd. Ed.) 1927, P – 36.
3. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), P-81.
4. इसकी वर्णमाला लेखक ने स्टाकहोम में प्राचीन मिस्री संग्रहालय से प्राप्त की जो यहाँ दी गयी हैं।
5. Erman : Die Hieroglyphen-p. 7.
6. Stegemann, V. : Koptische Palaeographie (Heidelburg – 1936), p-211,

मिस्र लिपि का क्रमशः विकास

फलक संख्या – २९०

हैरोग्लिफ्स के वर्ण (डिरिंजर द्वारा)
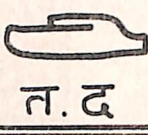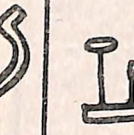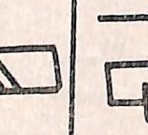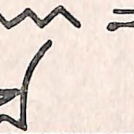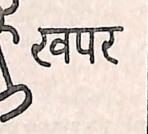
W व बटेर का बच्चा	Ā आ अग्रभुज	Y इ नर्कुल	A अ गिद्ध
M म उल्लू	F फ़ नाग	P प बैठने का स्थल	B ब पैर
Ḥ ह	H ह	R र	N न पानी
S' स्स तह किपा कपड़ा	S स चटकनी	H̱ ख योनिद्वार	H̱ ख़ आंवल
G ज जग	K क	Q क़	Š श तालाब
Ḏ ज़ अस्त्र	D द हथेली	Ṯ च पशु की गलफांस	T ट रोटी

फलक संख्या – २९१

हैरोग्लिफ्स के वर्ण (वैलिस बज द्वारा)
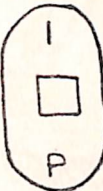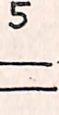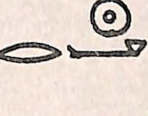
U ऊ	I ई	I ई	A अं
N न	O ओ	L ल	U ऊ
K क	M म	M म	I थ
Š श	B ब	S स	Q क़
T ट	N न	P प	Š श

६ अक्षर और जोड़े गये = ल. ओ. ऊ. न. श. प.

फलक संख्या – २९२

ध्वनियाँ व चित्र

एक चित्र दो ध्वनियाँ

फलक संख्या – २९३

हैरोग्लिफ्स के कुछ शब्द

फलक संख्या – २९४

कुछ अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द

इ द्वैत का प्रयोग	म मेर प्रेम	इव आना
इ द्वैत का प्रयोग	म मा हंसिया	श म शेम जाना
व ओ उ बटेर का बच्चा	ख़ ख़ेव कमल	अ न न मुड़ना
ल, र लियो रेव	क का प्रार्थना	फ़ स सेफ़ कल
व ओ उ वेव फ़न्दा	श श्वेत पर	न म इ मिन आज
न नेत लाल मुकट	श शा ताल	
थ थेथी फन्दा	न नत मटका	प स द पेसदे चमकना
म इम दो पसली	ड डेव पर्वत	

फलक संख्या – २९५

हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श

हेरोग्लिफ्स का घसीट रूप - हेरेटिक

अ				
क				
द				
ह				
फ़				
ख़				
च				
ई				
ग				
ल				
म				
न				
ज़				
क़				
र				
श				

फलक संख्या – २९७

हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख

फलक संख्या - २९८

डिमॉटिक की वर्णमाला

अ	ब	ग क	द	ए	इ	ई	ल	
म	न	ओ	प	र	स	त	उ	
फ़	ख	प्स	व	श	फ़	ज	व	ती

डिमाँटिक एवं कॉप्टिक के प्रतिदर्श

कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला

ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण
अ	अल्फा	Ⲁ	ल	लूला	Ⲗ	ख	किज	Ⲭ
ब	वीदा	Ⲃ	म	मीज	Ⲙ	प्स	एब्सी	Ⲯ
ग	गामा	Ⲅ	न	नी	Ⲛ	उ	उ	Ⲱ
द	डेल्टा	Ⲇ	क्स	एक्सी	Ⲝ		डिमॉटिक से FROM DEMOTIC	
ए	एजे	Ⲉ	ऊ	ओन	Ⲟ	श	शेइ	Ϣ
	सोन	Ⲋ	प	बेज	Ⲡ	फ़	फ़ेइ	Ϥ
ज़	ज़ादा	Ⲍ	र	रोन	Ⲣ	ख़	खेइ	Ϧ
इ	हादा	Ⲏ	स	सम्मा	Ⲥ	ह	होरी	Ϩ
त ह	तुत्ते	Ⲑ	त	दाउ	Ⲧ	ज	जंजिया	Ϫ
ज ई	जोदा	Ⲓ	ई	हे	Ⲩ	श	शीमा	Ϭ
क	कब्बा	Ⲕ	फ़	फ़िज	Ⲫ	त	तीं	Ϯ

फलक संख्या – ३००

मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला

अ	ए	ऐ	ई	इ	व
व.ब	प	म	न	नं	र
ल	ख	ख़	स	श	क
क़	त	ते	तै	ज़	

फलक संख्या – ३०१

मिरोइटिक डिमॉटिक की वर्णमाला तथा अभिलेख

अ	ए	ऐ	ई	इ	व	ब	प	म	न	नं	र	ल
a	e	ê	i	y	w	v-b	p	m	n	n̄	r	l

ह	ख़	स	श	क	क़	त	ते	तै	ज़
h(y)	h	s	š	k	q	t	te	tê	z

अभिलेख – दाएँ से बाएँ ←

Ê K I : N H Z I T K T : I Y E R E S A : I S Ê W

L to R.= IKÊ T(A)QTIZ HN ASEREYI WESI

PROTECT TAKTIZ AMON OSIRIS ISIS

←

ILHZE : YER TE I N M A : ÊLEKRE : RKÊZ

EZHLI AMNTARES ERKELE ZEQR

BORN AMNTARES BEGOTTEN ZEKARER

ज़केरर के पुत्र अमोनतारिस की आइसिस, ओसाइरिस व तक्तीज़ अमोन (देवता) रक्षा करते हैं।

मिस्री लिपि के अंक

१ उआ	९ पैसेत
२ सेन	१० मेत
३ ख़ेमेत	२० टाउट
४ फ़ेतू	९०
५ आउ	१०० शा
६ सिस	१००० खा
७ सेफ़ख़	१०,००० टाब
८ ख़ेम्नु	१०हृ. २हृ. ५सौ. ४०. ३

ग्रीस के निवासी जो मिस्र में आकर बसने लगे थे ५६ ई० में सेन्ट मार्क (St. Mark) द्वारा ईसाई बनाये गये थे और बाद में काप्ट्स के नाम से ज्ञात होने लगे थे। इन्होंने अपनी एक लिपि को जन्म दिया। इनकी भाषा में मिस्र व ग्रीक का मिश्रण था और मुख्य बोलियाँ, सेहीदिक (Sahidic), अख़मिनिक (Akhminic जिसमें पर्शियन के शब्दों का मिश्रण था) और फ़यूमिक (Fayumic जो मिस्र के फ़यूम प्रांत में बोली जाती थी – मियोरिस झील के निकट थी), भी सम्मिलित थीं।

जब मिस्र अरबों के अधीन हुआ तब वहाँ के लगभग सभी निवासियों ने इस्लाम धर्म अपना लिया परन्तु इन ईसाईयों ने नहीं अपनाया जिसके कारण यह लोग मुसलमान शासकों द्वारा निम्न नागरिक समझे जाते थे। इनके गिरजाघरों को नष्ट किया गया। इनके क्रास व चित्र नष्ट किये गये। इनको काली पगड़ियाँ पहननी पड़ती थीं और भारी क्रास गले में लटकाने पड़ते थे परन्तु फिर भी इन्होंने इस्लाम धर्म नहीं अपनाया।

१३४८ में धर्म युद्ध (Crusades) आरम्भ हो गये। बाद में अपनी जान के भय से कुछ ने इस्लाम अपनाया।

काप्टिक लिपि के सबसे प्राचीन अभिलेख ईसा की दूसरी शताब्दी के प्राप्त हुए परन्तु लिपि इससे पहले आरम्भ हो चुकी थी। सातवीं श० में अरबी ने कॉप्टिक की जगह लेली परन्तु धार्मिक क्षेत्रों में इसका प्रयोग अब भी काप्ट्स (ईसाईयों) द्वारा किया जाता है। दशवीं श० तक इसका प्रयोग होता रहा।

स्पीग्लिबर्ग के अनुसार इसमें २४ चिह्न कुछ नाममात्र परिवर्तित करके ग्रीक लिपि से लिए गये हैं, एक नये वर्ण का निर्माण किया गया है। इस प्रकार २५ हो गये। इसमें ७ चिह्न डिमॉटिक से लेकर जोड़ दिये। इस तरह कुल मिलाकर इसमें ३२ वर्ण[1] हो गए।

शैम्पोलियाँ ने इसी का सर्वप्रथम अध्ययन किया था।

मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला : (फ० सं०—३०१) इस चित्र में २३ वर्णों वाली मिरोइटिक वर्णमाला[2] दी गई है। मिस्र के दक्षिण में एक देश नूबिया था जिसमें अफ़्रीका निवासी रहा करते थे। उनको मिस्र के शासकों ने कई बार अपने अधीन किया, उनकी सोने की खानों से सोना लेते रहे तथा उनको निम्न कोटि के नागरिक मानते रहे। युद्ध में उनकी सेना अधिक होती थी क्योंकि मिस्र के निवासी विलासी थे। मिस्र ने सबसे पहले १९०० ई० पू० में नूबिया को परास्त किया और १४५० में उसको मिस्र का एक उपनिवेश बना लिया।

८५० ई० पू० में एक नये राज्य की स्थापना की गई जिसकी राजधानी नपाता थी और नदी के पार एक उप – राजधानी मिरोइ थी। यहाँ पहले तो मिस्र की लिपि का ही प्रयोग होता था परन्तु जैसे जैसे यह देश स्वतन्त्र होता गया इसने अपनी एक नवीन लिपि – मिस्र की पद्धति पर – का निर्माण कर लिया।

इस देश का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण लेप्सियस ने १८४४ में तथा जी० रीन्सर (G. Reinser) ने १९२१ – २३ में किया। इस सर्वेक्षण के द्वारा हैरोग्लिफ्स तथा मिरोइटिक दोनों के अभिलेख प्राप्त हुए। इनको एच० ब्रुग्श (H. Brugsch १८८७) ने अधूरा पढ़ा तथा ग्रिफ़िथ ने पूर्णतया इसका रहस्योद्घाटन

1. Stegemann, V. : Koptische Palaeographie (Heidelberg - 1936), p – 271
2. Erman, A. : Die Hieraglyphen (1927), P-37.

किया। विद्वानों के मतानुसार मिरोइटिक का जन्म व विकास नवीं शताब्दी ई० पू० से आरम्भ हो गया था और ७०० ई० पू० तक पूर्णतया प्रयोगात्मक हो गई।

जिस प्रकार मिस्र में घसीट रूप हेरेटिक विकसित हुआ उसी प्रकार मिरोइटिक का घसीट रूप डिमॉटिक लगभग ७ वीं शती में विकसित हुआ। उस काल में नूबिया वंश का शासन पूर्ण मिस्र पर था। तभी घसीट – रूप की आवश्यकता प्रतीत हुई। मिरोइ नगर को अक्सुम के शासक ऐज़ेनीज़ (Aeizanes) ने ३५० ई० में नष्ट कर दिया।

मिरोइ की डिमॉटिक : 'फ० सं० – ३०२' पर डिमॉटिक की वर्णमाला[1] दी गई है। ग्रिफ़िथ के मेमुयार्स (Memoirs) से दी गई है (चित्र के नीचे देखिये)।

अभिलेख दाएँ से बाएँ दिया गया है। उच्चारण रोमन वर्णों द्वारा दिया गया है जिसमें उसी के नीचे बायीं ओर से लिखे गये हैं। चतुर्थ पंक्ति में अंग्रेजी में अनुवाद दिया गया है तथा पूरे अभिलेख का हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। इसका अन्तिम प्रयोग ११ दिसम्बर ४५२ ई० को हुआ तदनन्तर यह लोप हो गई।

मिस्र के प्राचीन अंक : लिपि के साथ साथ गणित आदि का भी विकास हुआ जिसके लिए अंकों का आविष्कार किया गया। 'फ० स० ३०३' पर मिस्रीलिपि के अंक[2] दिये गये हैं। इस फलक में १६ कालम हैं जिनमें निम्नलिखित अंक दिए गये हैं:—

१. पहले अंक : उसका उच्चारण तथा उसको लिपि में कैसे लिखा जाय। उदाहरणार्थ । = उआ (एक) चित्रलिपि में उसी के आगे लिखा है।

इसी प्रकार दस कालमों में दस तक के अंक दे दिए गये हैं।

११. इस कालम में बीस के अक तथा उनकी लिपि है।

फलक संख्या – ३०३ क

१२. इसमें अस्सी के अंक दिए गये हैं।

१३. में सौ का अंक है।

1. Griffith : Meroitic Inscriptions, Vol. 1. xix. Memoires of Archaeological Survey of Egypt. (London. 1911), page - 73.
2. Budge, E.A.W. : Easy Lessons in Egyptian Hieroglyphics (1922), P-38.

१४. में एक सहस्र का।

१५. में दस सहस्र का।

१६. १२५४३ को हेरोग्लिफ़्स में किस प्रकार लिखा जाएगा – दिया गया है।

इसके अतिरिक्त हेरेटिक के अंक 'फ० सं० – ३०३ क' पर दिये गये हैं।

पठनीय सामग्री

Aldred, Cyril : Egypt – to the end of the old kingdom (1965).

Bevan, Edwyn : A History of Egypt under the Ptolemaic Dynasty (1927).

Birch, S. : The Egyptian Hieroglyphs (1857).

Breasted, J. H. : A History of Egypt – From the Earliest Times to Persian Conquest (1925).

Breasted, J. S. : Ancient Records of Egypt (1909).

Budge, E. A. W. : The Literature of Ancient Egyptians (1914).

" " : The Rosetta Stone (1929).

" " : Easy Lessons in Egyptian Hieroglyphics (1922).

Cleater, P. E. : Lost Languages (1957).

Cottrell, Leonard : Life Under The Pharaohs (1958).

Diringer, David : The Alphabet – A Key to the History of Mankind (1948).

Doblhofer, Erust : Voices in Stone (1955).

Erichsen, W. : Demotische Lesestuecke – 3 Vols. (1937).

Erman, Adolf : The Literature of Ancient Egyptians (1927).

Gardiner, A. H. : The Nature and Development of the Egyptian Hieroglyphic Writing (Journal of Egyptian Archaeology – 1915).

" " : Egyptian Grammar (1927).

Glan Ville, S. R. K. : The Legacy of Egypt (1957).

Griffith, F. L. : A Collection of Hieroglyphs (1898).

" " : The Inscriptions of Meroe (1911).

Jansen, Hans : Signs, Symbols and Script (1968).

Möller, G. : Hieratische Palaeographie (2nd. Ed.–1936).

Montet, Pierre : Eternal Egypt (1964). Translated in English by Doreem Weightman.

Murray, M. A. and Pilcher, D. : A Coptic Reading Book for Beginners (1933).

Peet, T. A. : The Antiquity of Egyptian Civilization (Journal of Egyptian Archaeology – 1922).

Petrie, Hilda : Egyptian Hieroglyphs of the First and Second Dynasties (1927).

Petrie, W. M. F. : A History of Egypt – 3 Vols – (1924).

" " : Ancient Egyptians (1925).

" " : The Making of Egypt (1939).

Sayce, A. H. : The Decipherment of Meroitic Hieroglyphs (1911).

Sharpe, S. : Egyptian Hieroglyphs (1861).

Sethe : The Decrees of Memphis and Canopus (1904).

Simonides, C. : Hieroglyphic Letters (1860).

Spiegelberg, W. : Demotische Grammatik (1925).

Sporry, J. T. : The Story of Egypt (1964).

Worrell, W. H. : A Short Account of Copts, (1945).

Young, Thomas : Egyptian Antiquities (1823).

अफ़्रीका महाद्वीप

अफ़्रीका के महाद्वीप को पाश्चात्य विद्वानों व पर्यटकों ने अन्ध महाद्वीप (डार्क कान्टीनेन्ट) के नाम से सम्बोधित किया है । परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इसी अन्धकारमय महाद्वीप में विश्व की एक महान् तथा प्राचीनतम संस्कृति ने जन्म लिया और आधुनिक विद्वानों को चकित करने के लिए उसने अपने प्रमाण भी सुरक्षित रखे । अन्य प्राचीन देशों का इतिहास बहुधा पौराणिकता से आरम्भ होता है । उन देशों के शासकों का कोई प्रामाणिक इतिहास भी नहीं मिलता परन्तु इस प्राचीन देश के इतिहास में किसी प्रकार की पौराणिकता नहीं मिलती लगभग ५५०० वर्ष पूर्व के प्रमाण पुरातत्त्व वेत्ताओं ने अपने अथक परिश्रम द्वारा एकत्रित किये । इस देश को आज मिस्र के नाम से पुकारते हैं ।

इस महाद्वीप में दो अन्य देशों के नाम प्राचीन इतिहास में सम्मिलित किये गये हैं और वे कार्थेज तथा बिया हैं जो आज ट्युनीशिया तथा सूडान के नाम से सम्बोधित किये जाते हैं । एक और देश प्राचीनता की परिधि में आता है, वह है इथियोपिया । इसके अतिरिक्त सारे महाद्वीप का इतिहास सत्रहवीं श० से ज्ञात हुआ । इस्लाम धर्म के सम्पर्क में आने से कुछ भागों में दसवीं श० में भी कुछ जागृति व सभ्यता के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं । उत्तरी अफ़्रीका ने यूरोप व अरेबिया के सम्पर्क में आने से सभ्यता के सुखों तथा दुष्परिणामों का आनन्द अधिक चखा ।

कुछ भागों को छोड़कर यहाँ लिपियों का जन्म अठारहवीं श० से पूर्व नहीं हुआ जिनके विषय में आगे दिया गया है ।

नुमीदिया

इतिहास : यह प्राचीन देश ट्युनीशिया तथा अल्जीरिया के आधुनिक देशों के भूभाग में स्थित था । इसकी राजधानी किर्ता (Cirta) थी । दूसरे प्युनिक युद्ध (२१८ से २०१ ई० पू० में) में, जो रोम तथा कार्थेज के मध्य हुआ था, नुमीदिया (Numidia) में दो मुख्य जातियाँ निवास करती थीं । एक जाति रोम के साथ तथा दूसरी जाति कार्थेज के साथ होकर प्युनिक युद्ध में सम्मिलित हो गई ।

इस देश का राजा मसीनिस्सा (Masinissa) था । उसके मरणोपरांत उसका पुत्र मिकिप्सा (Micipsa) राजसिंहासनारूढ़ हुआ । उसने १४८ से ११८ ई० पू० तक राज्य किया । तदोपरांत इस देश में एक गृह युद्ध हुआ तथा इसके बाद जुगुरथीन (Jugurthine) से, जो एक छोटा पड़ोसी देश था, १११ से १०६ ई पू० तक युद्ध हुआ । तत्पश्चात् यह देश क्षीण गति को प्राप्त होने लगा । ४६ ई० पू० में यह रोमन राज्य का प्रांत बन गया । ४२८ ईसवी में इस देश पर वैन्डलों (Vandal–एक जर्मन बर्बर जाति का नाम था) ने ४२८ ई० में इस पर आक्रमण किया । अंत में यह ट्युनीशिया व अल्जीरिया देशों का एक भाग बन गया और देश का नाम लुप्त हो गया ।

लिपि : नुमीदिया के देश में दो प्रकार की लिपियाँ प्रचलित थीं । एक का नाम नुमीदियन तथा दूसरी का नाम बर्बर लिपि था । इन लिपियों के अनेक शिलालेख, जो रोमन राज्य के शासन काल में उत्कीर्ण किये गये।

अफ्रीका – (अठारहवीं श० के अंत में)

फलक संख्या – ३०४
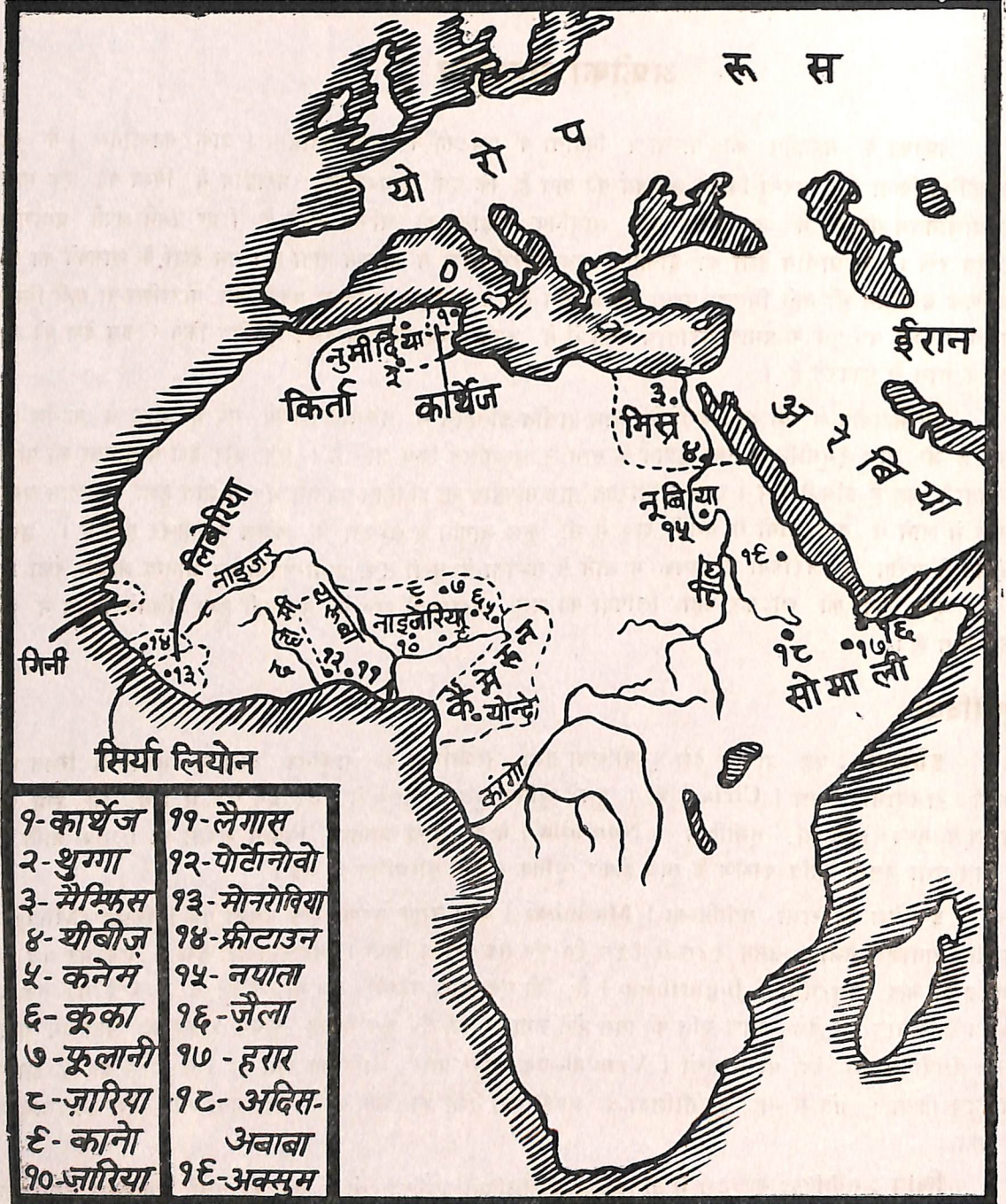
थे आधुनिक मोरीतैनिया व ट्युनीशिया से प्राप्त हुए। यह लिपि संसार के विद्वानों को १६३१ में ज्ञात हुई जब एक द्विभाषिक शिलालेख, जिस पर नुमीदियन व प्युनिक लिपियाँ अंकित थीं, थुग्गा (Thugga)–आधुनिक दौग्गा (Dougga)[1] से प्राप्त हुआ। थुग्गा कार्थेज व तेबेस्सा के मध्य प्युनिक काल[2] में एक प्राचीन मुख्य नगर था। यहाँ जुपिटर, जुनो व मिनर्वा देवी व देवताओं के बड़े सुन्दर व भव्य मन्दिरों को मार्कस औरेलियस (Marcus Aurelius), जो रोमन राज्य का ईसा की दूसरी श० में सह-शासक था, ने निर्माण करवाये थे। वे मन्दिर आज भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

अभी तक इस लिपि के लगभग एक सहस्र अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं जिनमें से १५ अभिलेखों पर नुमीदियन व लैटिन लिपियां तथा ६ पर नुमीदियन व प्युनिक लिपियाँ उत्कीर्ण हैं। इनके गूढ़ाक्षरों के रहस्योद्घाटन का प्रयास १८४३ में दि साल्सी (de Saulcy)[3] द्वारा थुग्गा की द्विभाषिक[4] लिपि के अभिलेख से आरम्भ किया गया। तत्पश्चात् हलेवी (Halevy) ने लगभग २५० अभिलेखों का भाषांतरण तथा अनुवाद किया। उसके बाद अन्य विद्वानों ने इनको पढ़ा जिसमें मुख्य माइनहाफ़ (Meinhof) और मर्सियर (Mercier) के नाम उल्लेखनीय हैं। माइनहाफ़ के अनुसार इनमें स्वर वर्ण नहीं होते तथा ऊपर से नीचे व दाएँ से बाएँ लिखी जाती थीं।

नुमीदियन लिपि का एक आंशिक पाठ : यह पाठ थुग्गा से प्राप्त एक द्विभाषिक — नुमीदियन + प्युनिक — अभिलेख[5] के एक भाग[6] से लिया गया है। इसको दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा। ('उ' की ध्वनि 'व' है) लिप्यन्तरण :—**"खकन तबगग् बंजफ़श मसनसन गलदत् उ – गज्ज गलदत् उ – जल्लसन शफ़त सबनदग् सगदत् सजसग् गलद मकूसन शफ़त गलदत्** उ – **फ़शन गलदत् मोसनगशनक उ – बनज उ – शनक दशफ़त उ – म [ग्न]" 'फ० स०–३०६' अर्थः "मिकिप्सा के राज्य काल के दसवें वर्ष में थुग्गा के निवासियों ने नृप मसोनिस्सा, आत्मज नृप गज, आत्मज सुफ़ेतन ज़िल्लसन, के लिये एक मन्दिर का निर्माण करवाया। नृप फशन आत्मज शनक, आत्मज बंज, आत्मज नगम, आत्मज तंकू, का पुत्र शफ़त (था), जो सौ का कमाण्डर था"।**[7]

बर्बर लिपि का एक आंशिक पाठ : यह आंशिक पाठ बर्बर लिपि के एक अभिलेख[8] से लिया गया है जिसका अनुवाद हलेवी ने किया है। यह बर्बर लोग एक यायावरीय जाति के थे, जिनको तुआरेग कहते थे। उनकी भाषा का नाम 'तमाशेक' था, जिसको बर्बर भाषा में 'तिफ़ीनार' भी कहते थे। लिप्यन्तरण :—

"बिंक रिन गरु हस्करु करुतनहस हसनक क़रहलन न नसबी करु रतकल दूर कनहरत" अर्थ :

---

1. इस नगर को लेखक ने फरवरी १९७५ में स्वयं जाकर देखा है। वहाँ रोम राज्य की भव्यता अब भी दर्शनीय है।
2. यहाँ फ़िनीशिया की संस्कृति ७०० से १०० ई० पू० तक समृद्धि काल में रही।
3. Journal Asiatic (1849)–P. 248.
4. Meinhof, C. : 'Der libysche Text der Massinissa—Inschrift von Thugga' in Orientalist Literary Zeitung (1926), P 744
5. Chalbot, J. B. : 'Inscriptions punicalibyques'—Journal Asiatic (March-April 1918), P. 259, 301.
6. केवल प्युनिक भाग की दो पंक्तियों तथा नुमिदियन भाग की तीन पंक्तियों का अनुवाद दिया गया है।
7. अंग्रेजी के अनुवाद से किया गया है :—"This temple the citizens of Thugga built for King Masinissa, Son of King Gaja, son of the Suffetan Z(i)llasan, the tenth year of the reign of Micipsa, in the year of King Shft, Son of King fshn. The Commander of the Hundred (were) Shnk, Son of the Bnj and Shft, Son of Ngm, Son of Tnkw"
8. Hanoteau, E. : Essai de la langue Tamachek (Paris., 1860) p.-132

नुमीदियन लिपि

अ (अलिफ़)	ब	ग	द
ह	उ	ज	ज़
श	ख़	त	ईज़
क	ल	म	न
स	श	ग़	प - फ़
क़	र	श	त
	त़		

फलक संख्या – ३०५

नुमीदियन लिपि का आंशिक पाठ

नसनसम (?) श फ़ जनब गगबत नकख़

त़ दलग जजगउ त़ दलग

ग़ द नस बस त फ़ श नस ललज उ

नस उ कम द लग ग़ सजस त़ दगस
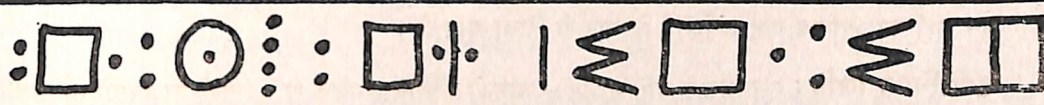
ग़ नसउम त़ दलग नशफ़ उ त़ दलग त फ़ श

म उ त फ़ श द क नश उ जनब उ कनश

फलक संख्या – ३०५ क

बर्बर लिपि

अ (अलिफ़)	ब	ग़	द
ह	उ	ज़	स़
श़	ख़	त	ईज़
क	ल	म	न
स	प-फ़	क़	ग
र	श	त	बत
रत सत	गत लत	मत नत	शत नक

फलक संख्या – ३०६

बर्बर लिपि का आंशिक पाठ

उ र क स ह उ र ग़ न इ र क इ ब

न न ल ह र क़ क न स ह स ह न त उ र क

उ द ल क त र उ र क इ ब स न

यह आंशिक पाठ दाएँ से बाएँ पढ़ा जाएगा

त र ह न क र

फलक संख्या ३०७

तुर्देतेनियन लिपि के कुछ वर्ण

अ ब ग द उ उ क न

ल ल ल स स त त

फलक संख्या – ३०७ क

अर्थ : ' एक कुत्ते को एक हड्डी मिल गई। वह उसका चर्वण करने लगा। हड्डी ने उससे कहा 'मैं बहुत कष्टकारक हूँ।' कुत्ते ने उससे कहा 'चिन्ता मत कर, मुझे अन्य कोई कार्य करने को नहीं है'।"

इस अर्थ का अनुवाद एक अंग्रेज़ी[1] के पाठ से लिया गया है।

तुर्देतेनियन लिपि : स्पेन देश के दक्षिणी भू – भागको तुर्देतेनिया कहते थे। उसकी राजधानी तारतेसो[2] थी। लगभग ५०० ई० पू० में यह नष्ट हो गई। इसकी लिपि २०० ई० पू० में कुछ सिक्कों पर उत्कीर्ण दृष्टिगोचर हुई। यह लिपि नुमीदियन लिपि से कुछ समानता रखती है। इसके कुछ वर्ण जो सिक्कों द्वारा प्राप्त हो सके 'फ० सं० – ३०७ क' पर दिये गये हैं। इसका एक भी अभिलेख प्राप्त नहीं हो सका।

सर्वप्रथम ज़ोबे दि ज़ंग्रोनिज़ (Zobe de Zangroniz) ने, जिसने इसको प्रकाशित भी किया, रहस्योद्घाटन करने का प्रयत्न किया, जो आंशिक अशुद्ध था तत्पश्चात् माइनहोफ़ (Meinhof) ने किया और इसको लीबियन बताया।

कैमेरून

इतिहास : १४८२ में सर्वप्रथम पुर्तगाली यहाँ पहुँचे। सोलहवीं श० में फ्रेंच, डच्छ तथा अंग्रेज़ भी पहुँचे। १८६८ में जर्मन व्यापारी भी यहाँ आये। १४ जुलाई १८८४ को डा० नाचिगल (Dr. Nachtigal) ने कैमेरून को जर्मन संरक्षण में आने की घोषणा कर दो। १९०५ में इस देश का अन्तरांश जर्मनो के अधीन हो गया। १९१२ में रेलगाड़ी का चलना आरम्भ हो गया।

१९१४ के महायुद्ध में फ्रेंच और ब्रिटिश सैनिक इस जर्मन उपनिवेश में पदार्पण कर गये। दौला को अधीन कर लिया और १९१६ में योन्दे को भी ले लिया। तत्पश्चात् देश को फ्रेंच व ब्रिटिश के मध्य विभाजित कर लिया गया। महायुद्ध समाप्त होने पर जर्मनी निवासियों को अपनी निजी भूमि फिर से खरीदने की अनुमति मिल गई परन्तु दूसरे महायुद्ध के प्रथम चरणों में अर्थात् १९३९ में पुनः छीन ली गई।

१ जनवरी १९६० को यह देश स्वतन्त्र हो गया।

बामुन लिपि : कैमेरून के देश के एक भूभाग बामुन[3] के राजा यनजोया (NJOYA) ने १९०३ को इस लिपि का आविष्कार बामुन जाति के लोगों की बामुन भाषा के लिये किया। सर्वप्रथम यह लिपि चित्रों द्वारा आरम्भ हुई। तदनन्तर यह वर्णात्मक बनाई गई। दुगास्ट (Dugast) के अनुसार इसमें ६ प्रकार का विकास पाया जाता है। सर्वप्रथम १९०३ में इसमें केवल ४५० चिह्न थे जो सरलीकरण व्यवस्था के अन्तर्गत कम होकर १९११ में केवल ८० रह गये।

जब यनजोया की मृत्यु १९३२ में हो गई तो इसका प्रयोग भी कम होते-होते लुप्त सा हो गया।

इसकी विकसित पद्धति[4] 'फ० सं०—३०८' पर दी गई है।

---

1. Jensen, H. : Syn, Sympol and Scribt—(1968)—p. 155
   "A dog found a bone, he gnawed it. The bone said to him, 'I am very hard'. Said the dog to it, 'Don't worry, I have nothing else to do".
2. सम्भवतः यह तारतेसो वही हो, जिसके विषय में प्राचीन बाइबिल में तारशिश लिखा गया है।
3. 'बामुन' को 'बामुम' भी सम्बोधित करते हैं।
4. Friedrich, J. : Alaska und Bamum Schrift, Ztschr d. dtsch, Morgen l. Ges. 104 (i) (1954), P—317.

बामुनन लिपि

शब्द	अर्थ	१६०७	१६०६	१६११	१६१६	१६२८	ध्वनि	
							नाम	ध्वनि
म्फ़ोन	राजा						फ़ो	फ़
पवो	शस्त्र						प्वो	प
णा	यहां						णा	ण
मी	मुख						मी	म
ना	पकाना						ना	न
कू	दृढ़						कू	क
ला	रात्रि विश्राम						ला	ल
यू	भोजन						यू	य
री	उठाना						री	र

फलक संख्या – ३०८

सोमालीलैण्ड

इतिहास : इसका प्राचीन नाम सोमालिस (Somalis) था। यहाँ के निवासी अपना सम्बन्ध हेमेटिक वंश (हज़रत नूह – Noah – के एक पुत्र हाम) से मानते हैं। इनमें से एक कबीला अपने को शरीफ़ ईशाक़ बिन अहमद के वंशज से सम्बन्धित मानता है। शरीफ़ ईशाक़ अपने चालीस साथियों के साथ दक्षिण अरेबिया के एक प्राचीन देश हैद्रामौत से स्थानान्तरण करके तेरहवीं श० में सोमालिस आया था। सातवीं श० में यमन, जो दक्षिण-पश्चिमी अरेबिया में स्थित है, के कुरैश जाति के लोगों ने यहाँ एक राज्य स्थापित किया था जिसकी राजधानी ज़ौला थी। तेरहवीं श० में यह राज्य एक साम्राज्य में परिवर्तित हो गया क्योंकि इस राज्य ने अपने पड़ोस के छोटे छोटे अफ़्रीकी राज्यों को अपने अधीन कर लिया था। सोलहवीं श० में इसकी राजधानी हरार हो गई। तब तक ज़ौला यमन के अधीन हो गया। बाद में यह तुर्की के अधीन हो गया।

१८४० में ब्रिटिश सरकार ने तज़ुरा के सुलतान से तथा ज़ौला के प्रांतपति से व्यापारिक संधियाँ कर लीं। १८७५ में मिस्र के शासक इस्माइल पाशा ने तजूरा, बरबेरा, बुलहर और हरार को अपने अधीन कर लिया। जब १८८४ में मिस्री सूडान ने विद्रोह कर दिया, ब्रिटिश सरकार ने ज़ौला, बरबेरा तथा बुलहर को अपने अधीन कर लिया। १८८६ में कई सोमाली सरदारों ने ब्रिटिश संरक्षण के लिए संधियाँ कर लीं।

१८८८ में ब्रिटिश व फ्रांस ने एक संधि के अन्तर्गत सोमालिस को विभाजित कर लिया। १८८९ में इस देश का कुछ भाग इटली ने अपने अधीन कर लिया था। १८९६ में ब्रिटिश का भाग सोमालीलैण्ड तथा फ़्रांस का भाग फ्रेंच सोमालीलैण्ड कहलाने लगा। बाद में ब्रिटिश वाले भाग का नाम सोमाली हो गया और फ़्रांस वाले भाग का नाम अफ़ार्स और ईसास हो गया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् इटली वाला भाग भी ब्रिटिश के पास आ गया जो १९५० में इटली को लौटा दिया गया। राष्ट्रीय जागृति के कारण इन दोनों भागों को मिला दिया गया तत्पश्चात् २६ जून १९६० को स्वतन्त्र हो गया। फ़्रांस वाला भाग अब भी फ़्रांस का एक उपनिवेश है और अब इसका नाम जिबुती (Djibuti) हो गया है। यह भी २७ जून १९७६ को स्वतन्त्र हो गया।

सोमाली लिपि : सोमाली कबीले के एक सदस्य उस्मान युसुफ़ ने, जो सोमाली के सुलतान युसुफ़ अली का एक पुत्र था, एक २२ व्यंजनों तथा पाँच स्वर – वर्णों की एक वर्णमाला का आविष्कार १८२५ में किया। जब स्वर वर्णों के उच्चारण को दीर्घ करना होता था तो उसमें एक दूसरा चिह्न, जो इसके लिये निर्धारित किया गया था, लगा दिया जाता था। इसकी दिशा इटेलियन लिपि के कारण बाएँ से दाएँ रखी गई थी। परन्तु जब अरबी लिपि का प्रयोग होने लगा तब यह लिपि बीसवीं श० के आरम्भ में लोप हो गई।

सोमाली लिपि के वर्ण तथा कुछ शब्द 'फ० सं० – ३०९, ३१०' पर दिये गये हैं जो एक पुस्तक[1] से लिये गये हैं।

लिबेरिया

इतिहास : सर्वप्रथम १४६१ में एक पुर्तगाली पेद्रो दि सिन्तरा (Pedro de Cintra) ने लिबेरिया की भूमि पर अपने चरण रखे। उसी ने केप माउन्ट तथा केप मेसूरेडो नाम रखे। सत्रहवीं श० में जो व्यापार पुर्तगालियों के हाथ में था इंगलिश, फ्रेंच व डच्छ लोगों के हाथ में चला गया। अठारहवीं श० में दासों का व्यापार होता रहा।

1· Bauer, H. : Ursprung des Alphabets (1937), p – 32.

सोमाली लिपि

अ	ब	त	ज	ह	ख़
द	र	स	श	ड	ग
ऑ	फ	क़	क	ल	म
न	व	ह	य	ई	उ
	ओ	आ	ए		

फलक संख्या – ३०९

सोमाली लिपि के कुछ संयुक्त अक्षर व शब्द

ba = ब   bā = बा   बि   बी   बे

बेए   बेए   बो   बू   बूऊ

द अल   ड ए ए र   ल ओ ओ   ग ड   म अ   ग ड

ओ र स आ द ओ   श ई ऑ   य ए   ल ओ ओ

ग ड   म आ   द ए ग ओ

इस के अर्थ

दूर देश में वे हम से विवाह नहीं करेंगे। विदेशों को मत जाओ।

फलक संख्या – ३१०

१८२१ में केप मेसूरेडो, अमेरिकन कालोनाइज़ेशन सोसायटी (American Colonization Society) ने उन दास नीग्रो लोगों का एक स्थायी स्थान बनाने के लिये निर्वाचित किया जो अमरीका से प्रथम बार स्वतंत्र करके भेजे गये थे। तब से अमरीकी – दास – नीग्रो यहाँ बसने के लिये निरन्तर आते रहे। १८२५ तक लगभग बीस हज़ार अपनी मातृभूमि अफ़्रीका आ गये जिसमें से लगभग ५० प्रतिशत मॅनरोविया में बस गये।

लिबेरिया को स्थापित करनेवाला प्रथम श्वेत अमरीका निवासी यहूदी अशमुन (Jehudi Ashmun) था जो अमरीका द्वारा दासों को बसाने के कार्य के लिये मेसूरेडो जो अब मॅनरोविया कहलाने लगा था, भेजा गया था। राबर्ट गुर्ले (Robert Gurley) ने इस स्थान का नाम लिबेरिया (Liberia) रखा। अन्तिम अमरीकी गवर्नर का १८४१ में स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् एक नीग्रो गवर्नर नियुक्त हुआ। २६ जुलाई १८४७ को एक गणतंत्र राज्य हो गया और पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

वई लिपि : इस लिपि का प्रयोग वई-नीग्रो के जाति वाले करते हैं। इनकी भाषा मेण्डे (Mende) है। इनकी संख्या लगभग ५० सहस्र है। यह जाति लिबेरिया, सोरे-लियोन तथा अपर-गिनी के भूभागों में निवास करती है।

वई लिपि का ज्ञान १८४६ में यूरोप निवासियों को एक अमरीकी इंजीनियर एफ़० ई० फ़ोर्बेस् (F. E. Forbes) द्वारा हुआ। यह इंजीनियर स्वयं अपने कार्यवश अफ़्रीका गया था। इसने अपने अफ़्रीका के अनुभवों को प्रकाशित कराने के साथ वई लिपि को भी प्रकाशित किया। जब इस लिपि का आभास एक अफ़्रीकी – भाषा – शास्त्री एफ़० डबल्यु० कोयल्लो (F. W. Koello) को मिला, वह तुरन्त वई लिपि के प्रयोगकर्त्ताओं के स्थान पर अफ़्रीका पहुँचा और उसके जन्म व विकास पर शोध करने लगा।

वहाँ पहुँचकर उसको ज्ञात हुआ कि इस लिपि का जन्मदाता एक मनुष्य मोमरु दाउलू बुकेरे (Momru Doalu Bukere) था। क्लिंगेनहेबेन ने इसका उच्चारण मोमोलू दुवालू बुकेले (Momolu Duwalu Bukele) किया। कहा जाता है कि उसको एक स्वप्न में इस लिपि का ज्ञान हुआ था। तत्पश्चात् एक फ्रेंच अफ़्रीका-विशेषज्ञ देलाफ़ोस्से (Delafosse) ने इस लिपि पर अपना शोध किया। यह फ्रेंच का विशेषज्ञ बुकेरे के विषय में कुछ नहीं जानता था। इसके विचार से कुछ मूल निवासियों ने लगभग २०० वर्ष पूर्व इसका आविष्कार किया।

क्लिगेनहेबेन के अनुसार बुकेरे की मृत्यु १८५० में हुई थी। उसने तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार लगभग १६० चिह्न निर्धारित किये और एक्रोफ़ोनो पद्धति से कुछ वर्णों का निर्माण किया। 'फ० सं० – ३११' पर उदाहरणार्थ 'ब' की ध्वनि 'ब' शब्द से की, जो बकरे से लिया गया इसी प्रकार निम्नलिखित चिह्नों से वर्ण बने। इस लिपि की वर्णमाला[1] क्लिगेनहेबेन ने प्रस्तुत की है जो ३६ वर्णों की दी गई है और लगभग प्रत्येक वर्ण के साथ ६ स्वरों की ध्वनि जोड़कर एक वर्णावली (Syllabary) प्रस्तुत की गई है। इस लिपि पर भी भारत का प्रभाव पड़ा है (फ० सं० – ३१२ से ३१२ ग)।

सियरें लियोन

इतिहास : 'लियोन' शब्द के अर्थ हैं 'शेर' (Lion) अर्थात शेर के जैसा देश। यहाँ एक पर्वत है जिसका आकार शेर से मिलता है (हो सकता है अधिक शेर जंगल में रहते हैं इस कारण इसका नाम पड़ा)। यहाँ के मूल निवासी इसको रोमारंग (Romarang) के नाम से सम्बोधित करते हैं।

---

1. Klingenheben, A. : The Vai Script, Africa – VI (1933). p – 158.

एक्रोफ़ोनी पद्धति से चित्रों द्वारा वर्णों का विकास

नाम	अर्थ	चित्र	वर्ण	ध्वनि
सोवो	घोड़ा			सो
फ़ू	फूल			फ़ू
ता	अग्नि			ता
कून	सिर			कू
कोन	वृक्ष का तना व शाखें		E	को
मी	उंगली - पहहै		||||	मी

फलक संख्या – ३११

वई लिपि

ध्वनि	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
अ							
ब							
ब्ब							
अं							
द							
ड							
फ							
ग							
गवं							

फलक संख्या – ३१२

वई लिपि

ध्वनि	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
ह							
हं							
जं							
क							
कप्							
कपं							
ल							
म							
म्ब							

फलक संख्या – ३१२ क

वई लिपि

ध्वनि	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
स							
त							
व							
व							
वं							
य							
ज़							
ग़ं							

फलक संख्या – ३१२ ग

यहाँ सर्वप्रथम १४६२ में एक पुर्तगाली पेद्रो आया था। तत्पश्चात् यहाँ ब्रिटिश व्यापारी आये तथा दास - व्यापार आरम्भ कर दिया। १७८६ में हेनरी स्मिथमैन (**Henry Smeathman**) ने, जो यहाँ चार वर्ष रह चुका था, एक योजना बनाई, जिसके अन्तर्गत उसने सेना तथा नौसेना के भूतपूर्व सैनिकों को (जो नीग्रो व गोरे थे) यहाँ बसाने का विचार किया। १७८७ में ४०० नीग्रो तथा ६० योरोपियन बसाये गये। १७८८ में यहाँ के मूल निवासी शासक नेम्बाना ने समुद्री किनारे की कुछ भूमि बेच दी। १७९१ में ऐलेक्ज़ेण्डर फ़ैल्कनब्रिज (**Alexander Falconbridge**) ने एक नई बस्ती बसाई जिसमें लगभग ११०० नीग्रो दास थे। १७९४ में इस नगर का नाम फ़्री टाउन (**Free Town**) पड़ गया। १८०७ में इस नगर को ब्रिटिश शासक को सौंप दिया गया। दास – व्यापार अवैध कर दिया गया।

जब फ़्रांस भी उस भूभाग को अपने अधीन करने पहुँचा तब ब्रिटिश सरकार ने एक नीग्रो पदाधिकारी एडवर्ड डब्ल्यु० ब्लीडेन (**Edward W. Blyden**) को नियुक्त किया। तब उसने फ़लाबा व तिम्बो का निरीक्षण किया। १८७३ में यह दोनों मुस्लिम देश विभाजित कर दिये गये। फ़लाबा ब्रिटिश के अधीन हो गया और तिम्बो फ्रांस के।

२३ दिसम्बर १८९३ को फ़्रांस व ब्रिटिश की सेनाओं में मुठभेड़ हो गई। १८९५ में एक संधि – पत्र पर दोनों सेनाओं के सेनापतियों ने हस्ताक्षर कर दिये। इस संधि के अन्तर्गत जो भूमि भाग ब्रिटिश के अधीन हो गया था १८९६ में ब्रिटिश की संरक्षणता में आ गया।

कुछ समय पश्चात् एक तिमने जाति के मुखिया बाई बुरेह (**Bai Bureh**) ने ब्रिटिश के विरुद्ध एक विद्रोह कर दिया। १८९८ में मेण्डी जाति के मुखिया ने विद्रोह कर दिया और कई ईसाई धर्म – प्रचारकों तथा ब्रिटिश सरकार के कई पदाधिकारियों का वध कर दिया।

तदनन्तर एक राष्ट्रीय राजनीति की जागृति आरम्भ होने लगी। स्वतंत्रता के लिये संघर्ष होने लगा फलस्वरूप २१ अप्रैल १९६१ को देश स्वतंत्र हो गया।

मेण्डे लिपि : सियरें लियोन के निवासी नीग्रो मेण्डे जाति से सम्बन्धित हैं और वई नीग्रो जाति के सम्बन्धी हैं। यह अपनी लिपि का ही प्रयोग करते हैं जो लगभग एक शताब्दी पूर्व बनी। इसके विषय में एल्बर्ल एलबर (**Elberl Elber**) ने पर्याप्त प्रकाश डाला है। १९३५ में सियरें लियोन देश के कोने कोने में उसने पर्यटन किया।

इसका आविष्कार एक नीग्रो दर्जी किसिमी कमाला ने वमा ग्राम – ज़िला बारी – में किया था। इसकी वर्णावली[1] लगभग चार माह में तैयार की गई थी और वई लिपि का कुछ अंशों में अनुकरण, किया गया था। इस वर्णावली के कुछ चिह्न 'फ़० सं०—३१३' पर दिये गये हैं। इसमें १९० चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

नाइजेरिया

इतिहास : ग्यारहवीं श० में इस देश में एक कनेम नाम का साम्राज्य स्थापित हुआ था चौदहवीं श० में क्षीण होकर एक राज्य के रूप में रह गया। तेरहवीं श० में यहाँ के लोगों ने इस्लाम धर्म अपना लिया। इस क्षीण राज्य का नाम परिवर्तित होकर पोर्नू हो गया। तदनन्तर कानो, ज़ारिया, दौरा, गोबिर और कतसीना के राज्य बन गये। इनमें आपसी युद्ध होते रहते थे। प्रत्येक राज्य अपनी सत्ता स्थापित करने में संलग्न था।

---

1. **Friedrich, J. : 'Zu einigen Schrifterfindungen der neusten Zeit.' Z. d. d. Ges. 92 (1938) p-192.**

मेण्डे लिपि

की	का	कू	वी	बी	ई	अ
उ	सी	सा	सू	ही	हा	हू
वू	म्बी	म्बा	म्बू	गबी	गबू	ली
क्पा	न्डी	न्डा	हां	हीं	क्पी	ईं
सूं	म्बीं	ओ	क्पो	बे	ए	बीं

फलक संख्या – ३१३

अन्त में कनेम राज्य के अस्किया नाम के राजा ने सबको परास्त कर एक साम्राज्य स्थापित कर लिया । जब कनेम राज्य क्षीण होने लगा तो हौसा की कई जातियों के परास्त शासक स्वतन्त्र होने लगे । वे पुनः आपस में युद्ध करने लगे । इनमें से दो राज्य – बोर्नू तथा केब्बी पुनः शक्तिशाली हो गये ।

यहाँ की जातियों में एक पर्यटक जाति फुलानी थी जो घूमा करती थी परन्तु अब वे लोग नगरों में बस गये थे । उन्हीं में से एक उसुमान दन फ़ोदियो (Usuman Dan Fodio) एक शेख था जो हज भी कर आया था । जब बहुत से फुलानी लोग दास बना लिये गये तो १८०२ में इस शेख ने आपत्ति की जिसके कारण गोबिर के राजा ने उसको पकड़ने की आज्ञा दी । उसुमान को फुलानी तथा हौसा के मुसलमानों से सहयोग मिला और उसने गोबिर की सेना को परास्त कर दिया । तत्पश्चात् उसने काफ़िरों (मूर्ति पूजक) पर जिहाद (धार्मिक युद्ध) किया और बहुत से हौसा के भूभाग अपने अधीन कर लिये ।

१८०८ में बोर्नू का राज्य स्वतंत्र हो गया और फुलानी के कई छोटे – छोटे राज्यों के शासक बना दिये गये । तत्पश्चात् फुलानी साम्राज्य की स्थापना हो गई । उसुमान के मरणोपरान्त उसका पुत्र बेल्लो सोकोतो सुलतान बना और सब फुलानी राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली । १८०८ में जब बोर्नू की सेना की पराजय हो गई तो उसका शासक माई भाग गया । उसके साथ उसको एक छोटी सेना भी थी, जिसका सेनापति लैमिनो (मोहम्मद अल अमीन अल कनेमी) था । लैमिनो ने फिर एक सेना एकत्रित की और उसने फुलानी राज्य का अन्त कर दिया और बोर्नू राज्य के बाहर निकाल दिया । माई फिर शासक बन गया परन्तु नाममात्र, सारी राजसत्ता लैमिनो के हाथ में रही । १८३५ में लैमिनो की मृत्यु हो गई । माई ने पुनः अपनी सत्ता बढ़ाई परन्तु लैमिनो के पुत्र उमर ने उसका वध कर दिया और स्वयं बोर्नू का शासक बन गया ।

१८९३ में रबाब ज़ुबैर ने बोर्नू पर आक्रमण कर दिया और १९०० में वह स्वयं शासक बन गया । यही रबाब फ्रेंच सेना द्वारा मार डाला गया ।

बोर्नू में कई जातियाँ निवास करती थीं । उनमें से प्रमुख यरूबा तथा ईबो की जातियाँ थीं । यरूबा जाति के लोग सम्भवतः मिस्र की ओर से आये थे । सबसे पहले वे ईफ़ो में बस गये । ईफ़ो इस यरूबा जाति का मुख्य धार्मिक स्थान हो गया । पहले तो ओयो का अलाफ़िन पूरी यरूबा जाति का शासक था परन्तु १८१० के पश्चात् राज्य छोटी छोटी जागीरों में विभाजित हो गया और प्रत्येक जागीर का सरदार बहुत अंशों में स्वतंत्र होने लगा । अलाफ़िन की केन्द्रीय सत्ता नाममात्र को रह गई । ओयो (Oyo) का देश क्षीण होने लगा तथा दाहोमी की ओर से आक्रमण भी होने लगे । उत्तरी भाग पुनः फुलानी जाति के अधीन आ गया । छोटी छोटी जातियाँ – ओयो, एग्बा, ईफ़ि, इजेबू आदि आपस में पुनः लड़ने लगे । पकड़े हुये बन्दी दासों के रूप में बेचे जाने लगे और दासों का व्यापार बढ़ने लगा । इस दास – व्यापार का मुख्य केन्द्र लैगास था जो बाद में नाइजेरिया की राजधानी बना ।

अठारहवीं श० में अनेक यूरोप निवासी आये । १८४९ में लैगास के राजा कोसोके के दरबार में ब्रिटिश राजदूत नियुक्त हो गया । १८८६ में रोआयेल नाइजर कम्पनी (Royal Niger Co.) की स्थापना हुई जिसको समुद्री किनारे के भूभाग का प्रबन्धकर्त्ता बना दिया गया । १८९७ में फुलानी राज्य के शासक इलोरिन नूफ़े को कम्पनी ने अपने अधीन करने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप कम्पनी के एक नगर पर फुलानी सरकार ने आक्रमण कर दिया तथा कई अंग्रेज़ों को बन्दी बनाकर ले गये और उनको मारकर खा डाला ।

१ जनवरी १९०० को कम्पनी ने अपना पूरा अधिकार कर लिया । १ मई १९०६ को नाइजेरिया ब्रिटिश का एक उपनिवेश बन गया और लैगास उसकी राजधानी बन गई । द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् एक राष्ट्रीय विद्रोह

यनसिब्दी लिपि
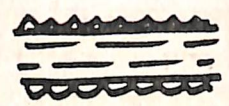
फलक: संख्या – ३१४
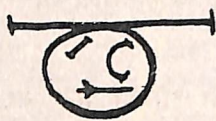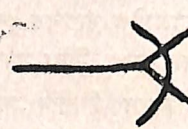
आरम्भ हो गया और यह देश १ अक्टूबर १९६० को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। तीन वर्ष के पश्चात् एक गणतंत्र राज्य स्थापित हो गया।

यनसिब्दी लिपि : सिबिदी (Sibidi) के अर्थ प्रतिनिधि के हैं। यनसिब्दी लिपि का ज्ञान १९०५ में मैक्सवेल (Maxwell) तथा मैक ग्रेगर (Mc – Gregor)[1] द्वारा योरोप निवासियों को मिला। यह लिपि ईबो व इजिक जातियों में प्रचलित थी। इसका प्रयोग एक गुप्त समाज द्वारा जादू – मंतर झाड़ – फूंक आदि के लिये किया जाता था। यह लिपि संकेतात्मक थी जिसके लिये कुछ चिह्न निर्धारित कर लिये जाते थे। उनमें से कुछ चिह्न 'फ० सं० – ३१४' पर दिये गये हैं। इसका आविष्कार किसने किया तथा कब किया निश्चयपूर्वक ज्ञात नहीं।

अबीसीनिया

इतिहास : लगभग १२०० ई० पू० सेमिटिक जाति के लोगों ने दक्षिण अरेबिया के प्राचीन देश सबा को त्याग कर अफ़्रीका में अपना घर बसाया और तिगरे (Tigre) में अक्सुम (Aksum) के नाम से राज्य की स्थापना भी की। कुछ हबासत से भी आये थे। इस कारण अपने देश का नाम हबाशित रखा जिसका यूरोप के निवासियों ने बिगाड़ कर अबेसी तथा अबीसीनिया (Abyssinia) कर दिया।

इस देश के राज्य ने ईसा की प्रथम शताब्दी में बहुत उन्नति की और अपनी एक लिपि भी बनाई।

लिपि : इस लिपि का नाम प्राचीन अबीसीनियन लिपि रखा गया। यह दक्षिण सेमिटिक वंश की एक शाखा है। इसमें २३ वर्ण थे। इसको लिटमन (Littmann) ने पढ़ा था। इसका जन्म लगभग ई० पू० की छठी शताब्दी में हुआ था। इसकी दिशा दाएँ से बाएँ है। 'फ० सं० – ३१५' पर इसकी वर्णमाला दी गई है। कुछ वर्णों के चिह्न दो – दो भी हैं पर उनमें थोड़ी भिन्नता है।

इथियोपिया

इतिहास : हेरोडोटस ने इथियोपियन्स को दो भागों में विभाजित किया। एक तो खड़े बालों वाले जो पूर्व की ओर निवास करते थे तथा दूसरे ऊनी बालों वाले जो पश्चिम की ओर निवास करते थे। अठारहवें वंश के शासन काल (१५७० से १३०४ ई० पू० तक) में इथियोपिया (Ethiopia) मिस्र का प्रांत बन गया था। वहाँ का प्रांत पति, जो इथियोपिया का ही शासक था, किश (कुश भी कहते थे जो नूबिया का दूसरा नाम था, नूबिया इथियोपिया का प्राचीन नाम था) का राजकुमार था, जो मिस्र के शासकों को नीग्रो – दास व सैनिक, बैल, हाथीदाँत तथा पशुओं की खालें कर के रूप में भेंट किया करता था।

ईसा पूर्व की ग्यारहवीं श० में नूबिया (इथियोपिया) का राज्य पुनः स्वतन्त्र हो गया। आठवीं श० में एक शासक पियांखी ने मिस्र को परास्त कर मिस्र का शासक बन कर पच्चीसवें वंश की स्थापना की। इस वंश ने ७५१ से ६६३ ई० पू० तक मिस्र पर शासन किया। परन्तु असीरिया के एक शक्तिशाली शासक अशुरबनीपाल के आक्रमण के कारण, जो ७७१ में हुआ था, इस वंश का अन्त हो गया।

इथियोपिया ने मिस्र पर पुनः कभी आक्रमण नहीं किया परन्तु उसको सुडान की जंगली जातियों से युद्ध करना पड़ता था। २४ ई० पू० में रोमन सैनिकों ने इस पर आक्रमण किया तथा उसकी राजधानी नपाता को नष्ट कर दिया।

---

1. Mc Gregor : 'Some Notes on Nsibdi' – Journal of Royal Anthropological Institute – No. 39. (1909), p – 209.

प्राचीन अबीसीनिया की लिपि

अ ब ज द ह

व ह य क ल म न

आ (ऐन) फ़ स क़ र श

त स ख़ ज़ प

फलक संख्या – ३१५

इथियोपिया – (उन्नीसवीं श०)

फलक संख्या – ३१६
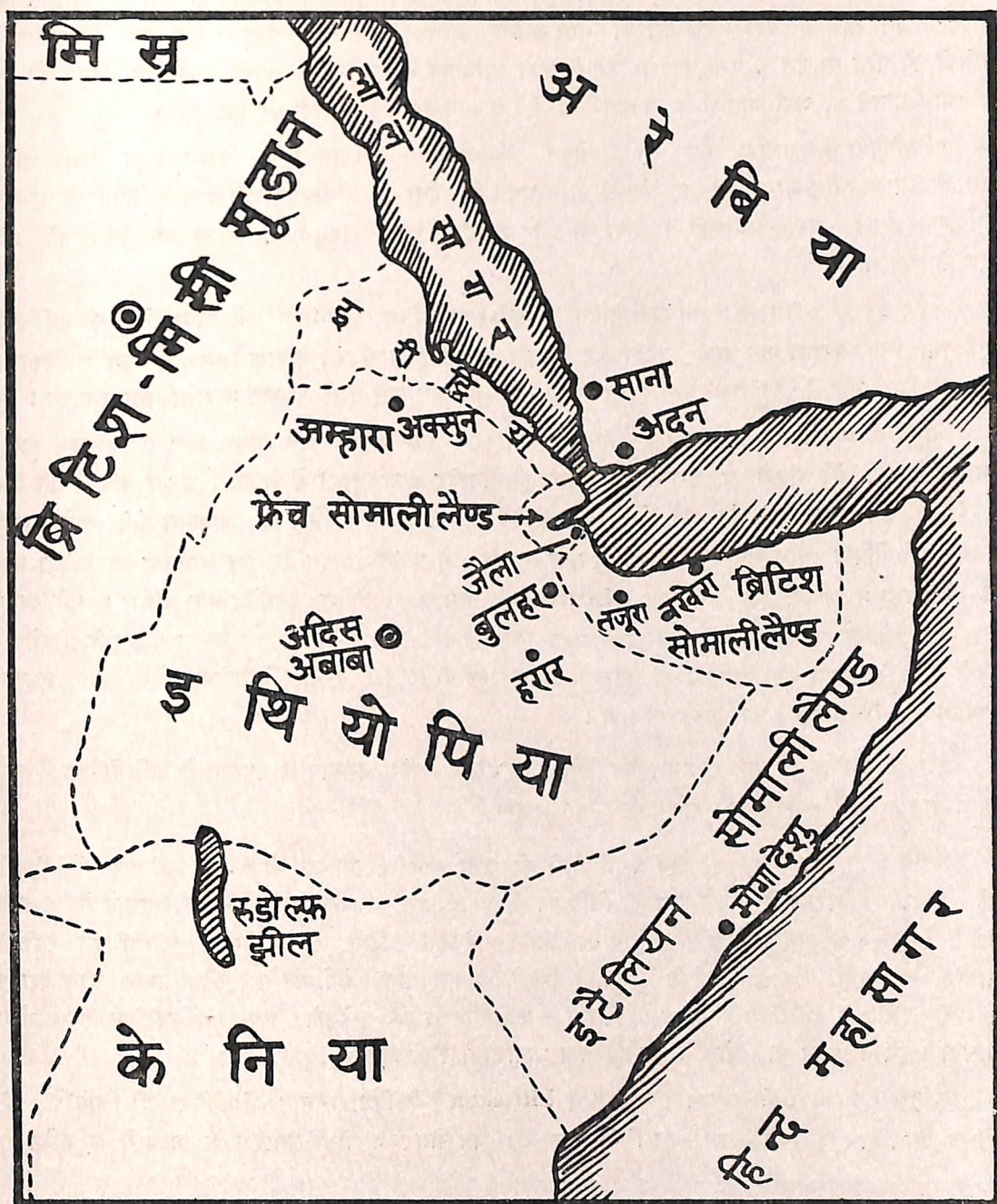
ई० पू० की सातवीं श० में सेमिटिक जाति के लोग, जो दक्षिण अरब से व्यापारियों के रूप में शनैः शनैः यहाँ आकर बसने लगे, इथियोपिया के निवासी हेमेटिक[1] थे। कुछ दिनों पश्चात् इन बाहर से आने वालों ने अपना एक राज्य स्थापित कर लिया तथा अक्सुम उसकी राजधानी बनाई। यह लोग हबाशत के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। इसी नाम के कारण इस देश का नाम अबेसी, अब्सी अबीसीनिया पड़ा। यह लोग इथियोपिया के निवासियों को गौण समझते थे इसी कारण उनको अपने आधिपत्य में रखते थे। अपनी राजधानी अक्सुम को बड़ा पवित्र स्थान मानते थे, जहाँ शासकों के राज्याभिषेक होते थे और यह १८६८ तक भी होते रहे।

इथियोपिया के शासक अपने को सोलोमन (Solomon – सुलेमान), जो इस्राइल का सबसे अधिक शक्तिशाली तथा धनवान् शासक था, के वंशजों में से मानते थे। ईसा की चौथी शताब्दी में इथियोपिया के शासकों ने काप्टिक – ईसाई – धर्म – प्रचारकों से दीक्षा ली और ईसाई हो गये। अक्सुम का राज्य अपने अंत की ओर अग्रसर हो रहा था।

८११ ई० में फ़लाशा की शासिका योदित (Yodit) या जूडिथ (Judith) ने इथियोपिया को बड़ी हानि पहुँचाई तथा उसको परास्त कर अपने अधीन कर लिया। तत्पश्चात् ज़गुये वंश के एक शासक ने इस शासिका को परास्त कर दिया और १२६८ तक राज्य किया। तदनन्तर पुनः सोलोमन वंशी शासकों ने सत्ता प्राप्त कर ली।

आधुनिक इथियोपिया का पुनर्जन्म १८५५ में थ्योडोर (Theodore) के शासन काल से आरम्भ हुआ। इस शासक ने छोटे छोटे राज्यों को परास्त कर शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। परन्तु नेपियर की सेना ने १८६२ में इस शासन का अंत कर दिया। उधर १८७२-७६ के मध्य मिस्र के आक्रमण होने लगे जिसके फलस्वरूप इथियोपिया लाल सागर से पृथक हो गया। १८८० में इटली ने इस देश पर आक्रमण कर दिया और १८६० में इटली ने अपना एक इरीट्रिया (Eritrea) के नाम से उपनिवेश स्थापित कर लिया। मेनेलिक ने १८६६ में इटली को परास्त कर देश को स्वतंत्र कर लिया और १६०६ में ब्रिटिश, फ्रांस व इटली के देशों की सरकारों ने इथियोपिया की सीमाओं को मान्यता प्रदान कर दी। १६२३ में इथियोपिया 'लीग आफ़ नेशन्स' (League of Nations) का सदस्य बन गया।

१६३६ में इटली ने पुनः आक्रमण कर दिया। १६४१ में ब्रिटिश सरकार के सहयोग से इथियोपिमा ने पुनः स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। अब इसकी राजधानी अदिस अबाबा है।

लिपि : जो प्रवासी अरब से आये थे वे अपने को तथा अपनी भाषा को गीज़ या घेर्ज़ कहते थे जिसके अर्थ हैं 'प्रवासी'। आरम्भ में तो वे सबा की लिपि का ही प्रयोग करते थे परन्तु ईसाई – धर्म अपनाने के पश्चात् इन लोगों ने ३५० में दूसरे प्रकार की लिपि का प्रयोग आरम्भ कर दिया, जो प्राचीन – अबीसीनियन – लिपि के नाम से ज्ञात हुई। ईसाई – धर्म के अनुयायी होने के पश्चात् इन लोगों का सांस्कृतिक सम्बन्ध ग्रीस देश से हो गया और लिपि में परिवर्तन होने लगे। प्राचीन – अबीसीनियन का परिवर्तित रूप ही इथियोपिक अथवा गीज़ लिपि पड़ा। इसका प्रयोग आज भी इस देश की अन्य भाषाओं के लिये होता है।

फ़्रेड्रिख़ (Friedrich) तथा लिटमन[2] (Littmann) के विचारानुसार इथियोपिया की लिपि के २६ अक्षरों के साथ-साथ ७ स्वरों का मिश्रण किया गया है। यह तीसरी व चौथी शताब्दी के मध्य में फ़्रूमेन्शियस

---

1. हज़रत नूह (Noah) के दो पुत्रों के नाम से दो जातियाँ बनीं। एक का नाम साम था जिसके वंशज सेमिटिक जाति के तथा दूसरे का नाम हाम था जिसके वंशज हेमेटिक जाति के लोग कहलाये।
2. **Littmann : Deutsche Aksum – Expedition, iv, P – 76.**

इथियोपिया की वर्णमाला

ह-H ሀ	हू ሁ	ही ሂ	हा ሃ	हे ሄ	हि ህ	हो ሆ
ल-L ለ	लू ሉ	ली ሊ	ला ላ	ले ሌ	लि ል	लो ሎ
ख-Ḥ ሐ	खू ሑ	खी ሒ	खा ሓ	खे ሔ	खि ሕ	खो ሖ
म-M መ	मू ሙ	मी ሚ	मा ማ	मे ሜ	मि ም	मो ሞ
श-Ś ሠ	शू ሡ	शी ሢ	शा ሣ	शे ሤ	शि ሥ	शो ሦ
र-R ረ	रू ሩ	री ሪ	रा ራ	रे ሬ	रि ር	रो ሮ
स-S ሰ	सू ሱ	सी ሲ	सा ሳ	से ሴ	सि ስ	सो ሶ

फलक संख्या – ३१७

इथियोपिया की वर्णमाला

क़-Q	क़ू	क़ी	क़ा	क़े	क़ि	क़ो
ቀ	ቁ	ቂ	ቃ	ቄ	ቅ	ቆ
ब-B	बू	बी	बा	बे	बि	बो
በ	ቡ	ቢ	ባ	ቤ	ብ	ቦ
त-T	तू	ती	ता	ते	ति	तो
ተ	ቱ	ቲ	ታ	ቴ	ት	ቶ
ख़-Ḫ	ख़ू	ख़ी	ख़ा	ख़े	ख़ि	ख़ो
ኀ	ኁ	ኂ	ኃ	ኄ	ኅ	ኆ
न-N	नू	नी	ना	ने	नि	नो
ነ	ኑ	ኒ	ና	ኔ	ን	ኖ
अ-’	अू	अी	आ	अे	अि	ओ
አ	ኡ	ኢ	ኣ	ኤ	እ	ኦ
क-K	कू	की	का	के	कि	को
ከ	ኩ	ኪ	ካ	ኬ	ክ	ኮ

फलक संख्या –३१७ क

इथियोपिया की वर्णमाला

व-W	वू	वी	वा	वे	वि	वो
ወ	ዉ	ዊ	ዋ	ዌ	ው	ዎ
अ-ℯ ×	अू	अी	आ	अे	अि	ओ
ዐ	ዑ	ዒ	ዓ	ዔ	ዕ	ዖ
ज़-Z	ज़ू	ज़ी	ज़ा	ज़े	ज़ि	ज़ो
ዘ	ዙ	ዚ	ዛ	ዜ	ዝ	ዞ
ज-J	जू	जी	जा	जे	जि	जो
የ	ዩ	ዪ	ያ	ዬ	ይ	ዮ
द-D	दू	दी	दा	दे	दि	दो
ደ	ዱ	ዲ	ዳ	ዴ	ድ	ዶ
ग-G	गू	गी	गा	गे	गि	गो
ገ	ጉ	ጊ	ጋ	ጌ	ግ	ጎ

× इस अक्षर का नाम ऐन (AIN) है। इसकी ध्वनि 'अ' जैसी ही होती है।

क्रमशः

इथियोपिया की वर्णमाला

त-Ṭ ጠ	तू ጡ	ती ጢ	ता ጣ	ते ጤ	ति ጥ	तो ጦ
प-P̣ ጰ	पू ጱ	पी ጲ	पा ጳ	पे ጴ	पि ጵ	पो ጶ
स-Ṣ ጸ	सू ጹ	सी ጺ	सा ጻ	से ጼ	सि ጽ	सो ጾ
द्ज़-Ḍ ፀ	द्ज़ू ፁ	द्ज़ी ፂ	द्ज़ा ፃ	द्ज़े ፄ	दिज़ ፅ	द्ज़ो ፆ
फ़-F ፈ	फ़ू ፉ	फ़ी ፊ	फ़ा ፋ	फ़े ፌ	फ़ि ፍ	फ़ो ፎ
प-P ፐ	पू ፑ	पी ፒ	पा ፓ	पे ፔ	पि ፕ	पो ፖ

अलिफ़ के लिए भाषा शास्त्रियों ने (ʾ) निर्धारित किया है इसकी ध्वनि भी अ जैसी होती है। इसी प्रकार से ऐन=(ʿ)।

फलक संख्या – ३१७ ग

(**Frumentius**) और थियोफ़िलास (**Theophilos**) के अनुसार भारतीय धर्म-प्रचारकों द्वारा किया गया। भारत में इस प्रकार की पद्धति को बारहखड़ी अथवा वर्णावली कहते थे। इस प्रकार २६ अक्षरों को ७ से गुणा कर देने से १८२ चिह्न बनाये गये।

आरम्भ में इसकी दिशा दाएँ-से-बाएँ थी परन्तु ग्रीस तथा भारत के सम्पर्क में आने से इसकी दिशा लगभग दसवीं श० में बाएँ से दाएँ[1] हो गई।

'फ० सं० – ३१७-३१७ ग' पर इथियोपिया की लिपि[2] दी गई है।

पठनीय सामग्री

Barth, H. : The Northern Tribes of Nigeria (1948).
Budge, E. W. : History of Ethiopia, Nubia and Abyssinia, 2 Vols. (1928)
Burns, Sir Alan : History of Nigeria (1955).
Ceruli : Oriente moderno, XII. (1932).
Crawford, O. G S. : Article on Bamun Writing (Antiquity December—1935).
Davis, Nathan : Carthage and Her Remains. (1861).
Eberl, E. : Westafrikas letztes Ratsel (1936).
Erskine, S, : Vanished Cities of North. Africa (1927),
Forde, C. D. and Jones, G. I. : The Ibo and Ibibio Speaking Peoples of Southern Eastern Nigeria (1950).
Goddard, T. N. : The Hand-Book of Sierre Leone (1925).
Greenwall, H. J. and Wild, R. : Unknown Liberia (1936).
Humphrey, H. N. : Origin and Progress of the Art of Writing (1938).
Jansen, Hans : Syn, Symbol and Script (1968).
Jones, A. H. M. and Monroe, E. : History of Abyssinia (1935).
Kucznski, R. R. : The Cameroons and Togoland (1939).
Mac Gregor, J. K. : Some Notes on Nsibdi (Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland – 1909),

1. Dillmann : Grammar der äthiopic Sprache (1899), P – 19.
2. Grohmann : 'Über den Ursprung and die Entwicklung der äthiopic Schrift' - Archaeologie für Schriftkunde, 1. (1914), p – 35)

Mason A. W. : A History of Writing (1924).
Mass – aquot : 'The Vai People and Their Writing.
(Journal of African Society Vol. X. – 1910).
Mogeod, F. W. H. : The Syllabic Writing of the Vai People (Journal of the African Society – 1910).
Moorhouse, A. C. : Writing and Alphabet (1927).
Moreno, M. M. : Il Somalo della Somalia, (Rome – 1955).
Sahni, Swarn : Book of Nations (1972).
Smith, A. D. : Through Unknown African Countries (1897).
Springling, M. : The Alphabet–Its Rise and Development (1931),
Sumner. A. T. : Sierre Leone Studies (1932).
Talbot, P. A. : The Peoples of Southern Nigeria.
Werner, A. : The Language Families of Africa (1925).
Young, J. C. : Liberia Rediscovered (1934).

□ □ □
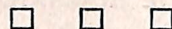
अध्याय : ७

यूरोपीय देशों की लेखन कला का इतिहास

यूरोपीय देश

यूरोप जंगली जातियों का स्थान रहा है। यहाँ सबसे प्राचीन संस्कृति केवल ग्रीस, सायप्रस तथा इटली में मिलती थी। यही जंगली जातियाँ युद्ध करती रहीं तथा सभ्यता की ओर अग्रसर होती रहीं, साथ-साथ अपना विकास करती रहीं। इनमें एक गुण था कि वे साहसिक थीं। यही जातियाँ सारे विश्व की शासक बन गयीं और आज विज्ञान, तकनीकी में सब से आगे हो गई। किस प्रकार से यूरोप के देशों में लिपियों का जन्म व विकास हुआ है इस अध्याय में विस्तार से दिया गया है।

सायप्रस

इतिहास : ग्रीक भाषा में इस देश का नाम किप्रॉस है। पुरातात्त्विक उत्खनन से ज्ञात हुआ है कि यहाँ ३४०० से ३२०० ई० पू० में कृषि होती थी और तात्कालिक संस्कृति के मिट्टी के बरतनों में एक प्रधानता पायी जाती थी जिसको पुरातत्त्ववेत्ताओं ने कोम्ब्ड पॉटरी (combed pottery) के नाम से सम्बोधित किया है। इस प्रकार के मिट्टी के बर्तन किसी अन्य प्राचीन संस्कृति में दृष्टिगोचर नहीं होते। लगभग २४०० व २००० ई० पू० के मध्य यहाँ लाइनियर प्रकार की लेखन कला भी आरम्भ हुई थी। तथा २००० – १५०० ई० पू० के मध्य, देश के बाहर की अन्य जातियों ने यहाँ आकर बसना आरम्भ कर दिया।

पन्द्रहवीं श० में माइसीनिया के निवासी यहाँ आये, जो अपने साथ चक्र-निर्मित मिट्टी के बर्तन, अपने भिन्न प्रकार के अस्त्र तथा अपनी भाषा व लिपि भी लाये। यह बाद में किप्रो-माइसीनियन के नाम से ज्ञात हुये। यहाँ से मिस्र व मेसोपोटामिया को ताँबा निर्यात किया जाता था। लगभग बारहवीं श० में अकाइयन (Achaeon) उपनिवेशी यहाँ पहुँचे। उस काल में यहाँ एक राज्य स्थित था जिसकी राजधानी पाफ़ोस (Paphos) थी और तमीरादई (Tamiradae) राजा के वंशज राज्य करते थे।

८०० ई० पू० में फ़िनीशियन आने लगे। टायर (आधु० सूर) नगर – राज्य ने किटियन में अपनी एक बस्ती भी बसा ली थी। यह बात पुरातात्त्विक उत्खनन द्वारा अनेक फ़िनीशियन अभिलेखों के प्राप्त होने से प्रमाणित होती है।

७०९ ई० पू० में प्रथम बार सायप्रस की स्वतंत्रता को ठेस पहुँची जब सरगोन द्वितीय ने, जो अक्काद (असीरिया) का शासक था, आक्रमण करके सायप्रस को परास्त कर दिया। तब सायप्रस का नाम यतनान-दनाओई का द्वीप (Yatnana the Isles of Danaoi) पड़ गया। ६६७ ई० पू० में यह देश अशुरबनीपाल को उपहार देता रहता था। तदनन्तर सायप्रस ने लगभग सौ वर्ष स्वाधीनता का आनन्द लिया और वह स्वर्ण युग कहलाया। इसी शताब्दी में स्टेसीनास (Stasinos) ने एक महाकाव्य 'किप्रिया' के नाम से रचा।

असीरिया की अधीनता के पश्चात् मिस्र की अधीनता आई परन्तु मिस्र के शासकों ने इस पर शासन नहीं किया। सायप्रस को कर के रूप में मिस्र को उपहार भेजने पड़ते थे। ५२५ ई० पू० में कैम्बेसिज़ ने इसको पर्शिया का उपनिवेश बना लिया और डैरियस ने इसको अपने देश के पाँचवें प्रान्त में सम्मिलित कर लिया। सायप्रस ने

सायप्रस

फलक संख्या – ३१८
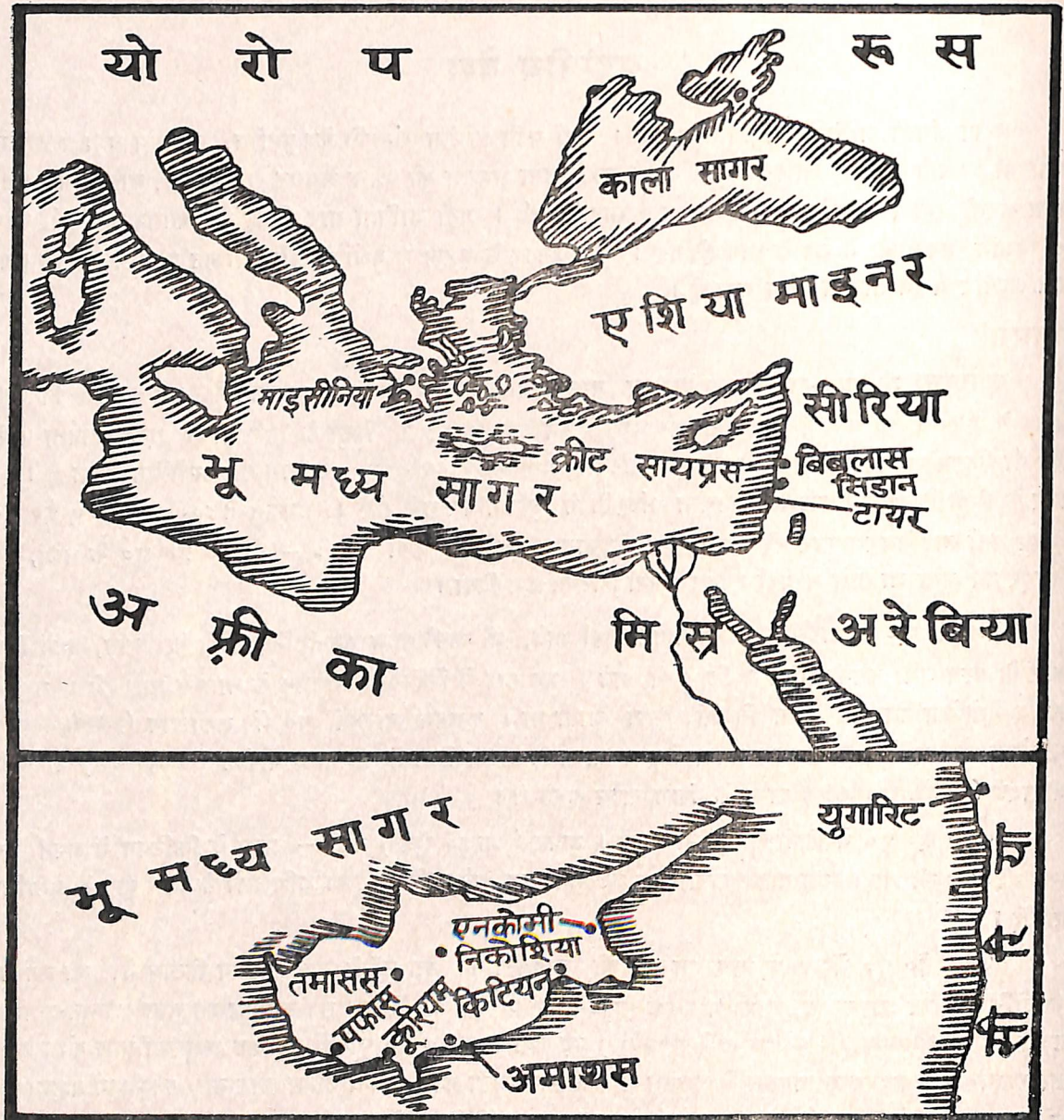
४८० ई० पू० में, जब ज़र्कसीज़ ने ग्रीस पर आक्रमण किया था, अपनी नौसेना के साथ १५० जलपोत सहयोग के रूप में ज़र्कसीज़ को भेंट किये। ३३३ ई० पू० में सिकन्दर के आक्रमण का स्वागत किया गया।

३२३ में सिकन्दर के मरणोपरांत सायप्रस मिस्र के शासक टॉलेमी प्रथम के अन्तर्गत आ गया। ३०६ में डेमेट्रियस ने इस पर अधिकार कर लिया। २९५ में पुनः टॉलेमी ने अपने अधीन कर लिया और राजवंश के एक प्रांतपति द्वारा शासन होता रहा।

५८ ई० पू० में रोम ने पोर्कियस काटो (Porcius Cato) को सायप्रस रोमन राज्य के अन्तर्गत करने के लिये भेजा। जिसमें युद्ध हुआ। सहस्त्रों मनुष्यों का हनन हुआ। सलामिस[1] नष्ट किया गया और सायप्रस से सब यहूदियों को निकाल दिया गया। सातवीं श० में अरब के विध्वंसक आक्रमण होने लगे। ३०० वर्षों तक सायप्रस न मुसलमानों के अधिकार में रहा और न पूर्णतया बैज़ेन्टाइन के अधिकार में रहा। दोनों ही आक्रमणकारियों ने उसको अपना एक अड्डा एक दूसरे पर आक्रमण करने को बना लिया। तत्पश्चात् २०० वर्षों तक यह बैज़ेन्टाइन साम्राज्य के अन्तर्गत रहा।

१२११ में सायप्रस ब्रिटिश धार्मिक – युद्ध – सैनिकों (Crusdaers) के विरुद्ध हो गया। तब रिचर्ड प्रथम ने आक्रमण करके इसको अपने अधीन कर लिया। तत्पश्चात् इसको जेरूसेलम के हाथों बेच दिया। सायप्रस के शासकों ने धर्म-युद्ध को जीवित रखा। १४६० से १५७० ईसवी तक यह वेनिस (इटली) के अधीन रहा। १५७१ में ऑटोमन (उस्मान से ओथोमन तथा ऑटोमन) तुर्कों के अधीन आ गया और ३०० वर्षों तक तुर्की शासन में रहा। १७६४ से १८२१ तक तुर्कों के विरुद्ध अनेक विद्रोह हुये। १८७८ में तुर्कों ने सायप्रस का शासन ब्रिटिश के हाथों में सौंप दिया। १९१४ में यह ब्रिटिश के अधीन हो गया। १९२५ में यह ब्रिटेन के राजवंश का एक उपनिवेश (Crown Colony) बन गया। १९३१ में ग्रीस के सायप्रस नागरिकों ने ग्रीस के साथ मिलाने के लिये विद्रोह किया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् यह विद्रोह और शक्तिशाली हो गया।

१९५९ में एक गणतन्त्र राज्य बनाने की योजना बनी जिसमें तुर्कों की अल्प संख्या को सुरक्षा प्रदान करने का वचन दिया गया और यह निश्चय हुआ कि एक ग्रीक राष्ट्रपति हो तथा तुर्क उप – राष्ट्रपति। २६ अगस्त १९६० को एक स्वतन्त्र गणराज्य स्थापित होने की घोषणा कर दी गई। यहाँ तीन भाषाओं – ग्रीक, तुर्की एवं अंग्रेज़ी – का प्रयोग साथ साथ चलता है। निकोशिया इसकी राजधानी स्थापित हुई।

लेखन कला : उन्नीसवीं श० के मध्य तथा बीसवीं श० के आरम्भ में सायप्रस में कई पुरातात्त्विक उत्खनन किये गये। उत्खनन कार्य करने वालों के निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं :—

टी० बी० सैण्डविथ (T. B. Sandwith), आर० एच० लैंग (R. H. Lang), एल० पी० दि सेसनोला (L. P. di Cesnola), ओ० रिखतर (O. Richter), एस० एल० मायर्स (S. L. Myres) तथा एम० मार्कीडीज़ (M. Markides)। इस उत्खनन कार्यों द्वारा पता लगा कि यहाँ लाइनियर बी (Linear B) की लिपि शैली, जो माइसीनियन प्रवासियों के साथ लाई गई थी, ई० पू० की पन्द्रहवीं श० से आठवीं श० तक प्रचलित रही। यह भी ज्ञात हुआ कि ई० पू० की सातवीं श० से प्रथम श० तक एक वर्णावली का प्रयोग होता रहा जिसमें ४५ चिह्नों का प्रयोग किया जाता था। इसके लिखने की दिशा दाएँ से बाएँ तथा हल चलाने की पद्धति (Beoustrophoden Style) प्रचलित थी।

---

1. इसी नाम का दूसरा नगर ग्रीस में एथेन्स के भी निकट था।

उत्खनन द्वारा कई द्विभाषिक अभिलेख भी प्राप्त हुये जिसके द्वारा यहाँ की लिपि के रहस्योद्घाटन में पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई। रहस्योद्घाटन के कार्य[1] का भी श्रीगणेश करने के लिये कुछ प्राथमिकतायें हैमिल्टन (Hamilton), लैंग (Lang) तथा जी० स्मिथ (G. Smith) द्वारा पूर्ण की गईं। लैंग व स्मिथ ने फ़िनीशिया – सिप्रियाटिक द्विभाषिक अभिलेखों को पढ़ने का प्रयास किया। ५६ चिह्नों में से १८ अक्षर पहचान लिये गये। तत्पश्चात् अन्य विद्वानों के सहयोग से एक वर्णावली प्रस्तुत की गई।

सिप्रियाटिक लिपि की वर्णावली : में वर्णों के रूप तथा पाँच स्वर सम्मिलित हैं। ५०० के लगभग जो पाटियां उत्खनन में प्राप्त हुईं उनको जॉर्ज स्मिथ ने तथा वेन्ट्रिस – चैडविक ने पढ़ा और एक वर्णावली[2] प्रस्तुत की। उसी के कुछ वर्ण 'फ० सं० – ३१९' पर दिये गये हैं। इसका समय ७०० ई० पू० निर्धारित किया गया तथा अभिलेखों की भाषा ग्रीक है।

सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन लिपि से सम्बन्ध : 'फ० सं० – ३२०' पर क्रीट की लाइनियर – 'A' और 'B' लिपियाँ एवं सिप्रो – मीनियन से सिप्रियाटिक लिपि का विकास[3] दिखाया गया है। अब यह बात सर्वमान्य हो चुकी है कि आरम्भ काल में क्रीट व माइसीनिया की संस्कृतियों का सायप्रस पर प्रभाव पड़ा और लिपि का उद्‌भव इन्हीं देशों से आरम्भ हुआ परन्तु बाद में फ़िनीशिया व बेबीलोन आदि के सम्पर्क में आने से बहुत से परिवर्तन भी हुये।

सिप्रियाटिक लिपि का अभिलेख : यह अभिलेख सेसनोला द्वारा एक उत्खनन में, जो सलामिस (Salamis) – आधुनिक एनकोमी (Enkomi) – में किया गया, प्राप्त हुआ। इसका रहस्योद्घाटन तथा अनुवाद जॉर्ज स्मिथ ने १८८९ में किया। इसको दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा। **''ईरास ने इसे अपोलो को भेंट किया''** (फ० सं० – ३२१). (ईरास ग्रीस का एक पौराणिक प्रेम – देवता था, अपोलो सूर्य देवता था।)

ग्रीस

इतिहास : ग्रीस का इतिहास सारे देश का इतिहास नहीं है। क्योंकि ग्रीस प्राचीन काल में कभी एक देश या राष्ट्र के रूप में नहीं रहा। उसका इतिहास छोटे छोटे नगर-राज्यों का इतिहास है। फिर भी संस्कृति के दृष्टिकोण से यह देश एक रहा है। इस संस्कृति का प्राचीन नाम एजियन संस्कृति था जिसका जन्म लगभग ३००० ई० पू० में हुआ। कुछ विद्वानों के विचारानुसार एजियस (Aegeus) एथेंस के राजा का नाम था। जब उसने अपने पुत्र थेसियस (Thesius), जो क्रीट पर आक्रमण करने गया था, की मृत्यु का समाचार सुना, वह समुद्र में कूद पड़ा और आत्महत्या कर ली उसी के नाम पर 'एजियन संस्कृति' का नाम पड़ा। कुछ विद्वान् इस देश की संस्कृति को हेलेनिस्तिक (Hellenistic civilization) संस्कृति के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह थेसली के दक्षिण

---

1. Friedrich, J. : Entziffering verschollener Schriften und Sprachen (Berlin–1924), p - I02.
2. Ventris and Chadwick : 'Evidence for Greek Dialect in the Mycenaean Archives' Journal of Hellenic Studies Vol. LXXIII. (1953); p – 84.
3. Daniel, J. F. : Prolegamena to Cypro – Minoan Script'—American Journal of Arch-aeology, Vol. 45. (1941), p – 249; Evans : Scripta Minos (1909) p – 70 Eisler, R. : J. R. A. S. (1923), p-169.

सिप्रियाटिक लिपि की वर्णमाला

A	E	I	O	U
अ	ए	ई	ओ	ऊ
क	के	की	को	कू
त	ते	ती	तो	तू
प	पे	पी	पो	पू
ल	ले 8	ली	लो	लू
र	रे	री	रो	रू
स	से	सी	सो	सू
म	मे	मी	मो	मू
न	ने	नी	नो	नू
ज	जे			
फ़ व	फ़े वे	फ़ी वी	फ़ो वो	
ज़				
क्स	क्से			

फलक संख्या – ३१९

सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन से सम्बन्ध

ध्वनि	लाइनियर-A	लाइनियर-B	सिप्रोमीनियन	सिप्रियाटिक
व				
सी				
प				
के				
लो				
त				
ले				
न				
को				
ती				
पी				
पू				

फलक संख्या – ३२०

सिप्रियाटिक लिपि के कुछ शब्द

सेसनोला (CESNOLA) के संग्रह से प्राप्त

फलक संख्या – ३२१

में निवास करने वाली एक जाति, जिसका नाम हेलास (Hellas) था, के नाम पर रखा गया। कुछ विद्वान् ग्रीस की संस्कृति को यूनानी संस्कृति भी कहते हैं। यह नाम आयोनियन (Ionion) के नाम पर यूनान अथवा यवन कहलाने के कारण यूनानी संस्कृति हो गई। मतभेदों का कारण केवल प्रमाण की अनुपस्थिति है।

अब यह मत सर्वमान्य हो चुका है कि ग्रीस के मूल निवासी पेलासगियन (Pelasgeon) थे। उत्तर की ओर से कुछ जातियाँ आकर बसने लगीं और उन्होंने नगर – राज्यों को स्थापित किया। इनके आने का काल लगभग २००० ई० पू० माना जाता है। तदनन्तर २१०० से ७०० ई० पू० तक तीन जातियों ने आकर अपने अपने नगर–राज्य स्थापित किये। उन जातियों के लोगों के नाम आयोलियन्स (Aeolians), डोरियन्स (Dorians) तथा आयोनियन्स (Ionions) थे। यह नगर – राज्य गृह – युद्ध में रत रहते थे तथा एक दूसरे पर शासक बनने के लिये आक्रमण करते रहते थे। कुछ दिनों पश्चात् कुछ राज्य मिल कर एक संघ (League) का निर्माण करने लगे तब एक संघ दूसरे संघ से युद्ध करता रहता था।

ई० पू० की पाँचवीं श० में ग्रीस अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। चौथी व तीसरी शताब्दी में यह मैसीडोनिया के अन्तर्गत आगया। दूसरी श० से रोम के प्रभाव में आ गया। ईसवी सन् की चौथी श० में बैज़ेन्टायन साम्राज्य के अधीन रहा। १४५३ में ओटोमन साम्राज्य में आ गया। १८२१ – २९ तक यह टर्की से युद्ध करता रहा और ब्रिटिश, फ़्रांस व रूस के सहयोग से २५ मार्च १८२९ को टर्की के शासन से मुक्त हो गया। १९२५ में यह गणतंत्र राज्य घोषित कर दिया गया। १९३५ में फिर एक राजा के शासन के अन्तर्गत आ गया। १ जनवरी १९५२ से विधान के अन्तर्गत शासन चलने लगा।

ग्रीस के प्राचीन मानचित्र में संख्याओं का निर्देशन

(इसमें कुछ द्वीपों के तथा राज्यों के नाम लिख दिये गये हैं नगरों को संख्या से दिखाया गया है जिसकी तालिका निम्नलिखित है)

१. नसास (Knossos)
२. फ़ैस्टास (Phaistos)
३. हगिया त्रियदा (Hagia Triada)
४. कइदोनिया (Cydonia)
५. लिन्डस (Lindus)
६. रोड्स (Rhodes)
७. क्नीडस (Cnidus)
८. कोस (Cos)
९. हेलीकार्नेसस[1] (Halicarnasus)
१०. मिलेटस (Mil tus)
११. सार्डिस[2] (Sardis)
१२. एफ़िसस (Ephysus)
१३. समोस (Samos)
१४. कियास (Chios)
१५. ट्रॉय[3] (Troy)
१६. पोतीदइया (Potidaea)
१७. साइनास्कीफ़लाइ (Cynoseephalae)
१८. थर्मापली (Thermopylae)
१९. डेलियम (Delium)
२०. मराथन (Marathon)
२१. एथेन्स (Athens)
२२. थीबीज़ (Thebes)

1. इसी नगर में हेरोडोटस-प्रसिद्ध प्राचीन इतिहासकार-का जन्म लगभग ४८० ई० पू० में हुआ था। यह इतिहास का जन्मदाता माना जाता है।
2. यह नगर प्राचीन काल में बड़ा प्रसिद्ध राजनैतिक केन्द्र रहा है।
3. होमर के महाकाव्य का मुख्य नगर जिसका पुरातात्विक उत्खनन करके हेनरिख़ शिलीमान (Heinrich Sehliemann) ने १८९१ में एक कल्पना को पुर्नजीवित कर दिया।

प्राचीन ग्रीस – ई० पू० की दूसरी शती तक

फलक संख्या – ३२२
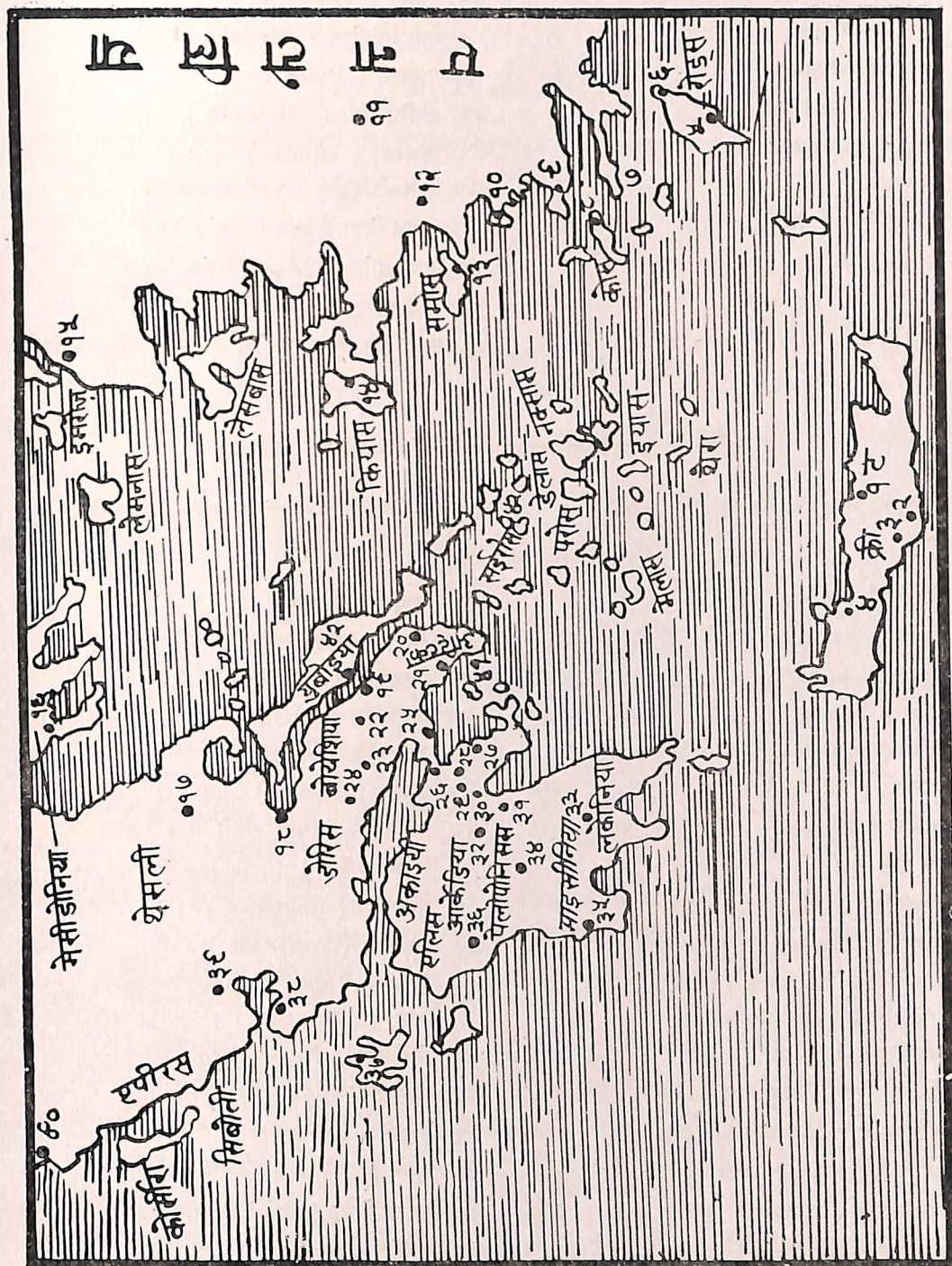
२३. ल्यूकत्रा (Leuctra)
२४. डेल्फ़ी (Delphi)
२५. मेगारा (Megara)
२६. कोरिंथ (Corinth)
२७. एपीडौरस (Epidaurus)
२८. निकियास (Nicias)
२९. माइसीनिया (Mycanea)
३०. अर्गास (Argos)
३१. तीगिया (Tegea)
३२. मन्तीनियो (Mantineo)
३३. स्पार्टा (Sparta)
३४. मेगालोपोलिस (Megalopolis)
३५. पाइलस (Pylos)
३६. ओलिम्पिया (Olympia)
३७. इथाका (Ithaca)
३८. एनक्टोरियम (Anactorium)
३९. अम्ब्रेसिया (Ambracia)
४०. एपोलोनिया (Apollonia)
४१. एजीना (Aegina)
४२. काल्किस या खालसिस (Chalcis or Khalkis)

ग्रीस के आधुनिक मानचित्र में संख्याओं का निर्देशन

इसमें नगरों के नाम लिख दिये गये हैं। छोटे बड़े द्वीप संख्या द्वारा दिये गये हैं, जिनके नाम निम्न-लिखित हैं :–

१. केसॉस (Kasos)
२. कर्पेथॉस (Karpathos)
३. टेलॉस (Telos)
४. कॉस (Kos)
५. केलिमनॉस (Kalymnos)
६. इकारा (Ikara)
७. समोस (Samos)
८. कियॉस (Chios)
९. लेसबॉस (Lesbos)
१०. इमरोज़ (Imroz)
११. लेमनॉस (Lemnos)
१२. समोथ्रेस (Samothrace)
१३. थासोस (Thasos)
१४. स्कियाथोस (Skiathos)
१५. स्केपेलॉस (Skepelos)
१६. नार्थ स्पोरेड्स (North Sporades)
१७. स्काइरॉस (Skyros
१८. युबोइया (Euboea)
१९. एन्ड्रॉस (Andros)
२०. तेनॉस (Tenos)
२१. क्यॉस (Keos)
२२. सिरॉस (Syros)
२३. किथनॉस (Kythnos)
२४. सेरीफ़ॉस (Seriphos)
२५. सिफ़नॉस (Siphnos)
२६. मेलॉस (Melos)
२७. सिकिनॉस (Sikinos)
२८. इयॉस (Ios)
२९. सन्तोरिन (Santorin)
३०. एमार्गोस (Amargos)
३१. पेरॉस (Paros)
३२. नक्सॉस (Naxos)
३३. मिकोनॉस (Mykonos)
३४. किमोलॉस (Cimolos)
३५. केरीगो (Cerigo)
३६. ज़ान्ते (Zante)
३७. केफ़ालोनिया (Cephalonia)
३८. ल्युकॉस (Leukas)
३९. पेक्सॉस (Paxos)
४०. कर्फ़ू – कर्कीरा (Corfu – Kerkyra)

आधुनिक ग्रीस

फलक संख्या – ३२३

लेखनकला

विद्वानों के मतानुसार ग्रीस के प्राचीन काल—१३०० से ८०० ई० पू०—में लेखन कला का जन्म फ़िनीशिया के एक राजकुमार कैडमस[1] (Cadmus) द्वारा लगभग ११०० ई० पू० में हुआ, जो अपने साथ फ़िनीशिया के वर्ण लाया था। हेरोडोटस के अनुसार कैडमस ने वर्णों का उद्‌भव ग्रीस (बोयेशिया – Boetia) में किया तथा थीबीज़ (Thebes) नगर की स्थापना भी की। आधुनिक विद्वान् भी निम्नलिखित कारणों से उपर्युक्त विचारों का समर्थन करते हैं :—

१. ग्रीस की वर्णावली में फ़िनीशिया की वर्णावली का क्रम उपस्थित है।

२. ग्रीस के वर्णों के नाम भी फ़िनीशिया के वर्णों के नामों से समानता रखते हैं।

३. ग्रीस के प्राचीनतम अभिलेखों में फ़िनीशिया की (दाएँ-से-बाएँ ओर) लिखने की पद्धति पायी जाती है।

४. ग्रीस के वर्णों के चिह्नों में भी फ़िनीशिया के चिह्नों से समानता दृष्टिगोचर होती है।

मेंज़ (Mentz – 1936) ने भी इस बात का समर्थन किया है कि ई० पू० की चौदहवीं श० में कैडमस द्वारा फ़िनीशिया के वर्ण सर्वप्रथम क्रीट लाये गये तत्पश्चात् बोयेशिया (Boetia) पहुँचे। १९१३ में शिनाइदर (H. Schneider) ने भी इसी विचार का समर्थन किया तथा सुण्डवल ने १९३१ में क्रीट के चिह्नों की तुलना भी फ़ीनीशिया के वर्णों से की है, जिसका चार्ट इस पुस्तक के तीसरे अध्याय के फ़िनीशिया देश की लिपियों में 'फ० सं० – १४५' पर दिया गया है।

ग्रीस एवं फ़िनीशिया की भाषाओं में अन्तर होने के कारण ग्रीस के तात्कालिक विद्वानों ने निम्नलिखित परिवर्तन किए :—

१. कुछ फ़िनीशियन वर्णों की ध्वनियों में परिवर्तन किया। उदाहरणार्थ :—

—अलिफ़ की ध्वनि को 'अ' (a – alpha) में।

—ह (हेथ) की ध्वनि को 'इ' (e – eta) में। ग्रीक भाषा में 'ह' की ध्वानि शांत है।

—य (योद) की ध्वनि को 'ई' (i – iota) में।

—ऐन को ध्वनि को 'ओ' (O – Omicron) में।

—ए या ई की ध्वनि को 'ए' (e – epsilon) में।

—व (वाव) की ध्वनि को 'उ' (u – upsilon) में।

२. फ़िनीशियन लिपि में स्वर नहीं थे जो ग्रीस ने लगभग ई० पू० की ग्यारहवीं श० में दिए। इसी के कारण फ़िनीशियन लिपि के वर्णों के नाम व्यंजनों में अंत होते हैं और ग्रीक लिपि के वर्णों के नाम स्वरों में अन्त होते हैं, जैसे अलिफ़ का एल्फ़ा, बेथ का बीटा (वीदा), गिमिल का गामा, दलेथ का डेल्टा आदि हो गया।

३. फ़िनीशिया लिपि की दिशा को, जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी, लगभग ई० पू० की आठवीं श० में बाएँ से दाएँ कर दी गई।

कुछ विद्वानों के नाम, जिन्होंने आठवीं व सातवीं श० के मध्य में प्राप्त हुए ग्रीस के प्राचीन अभिलेखों पर शोध कार्य किया है, उल्लेखनीय हैं, गूटर्सलाब (Guterslob – 1887), वाइडेमान (F. Wiedemann –

---

1. कैडमस के तात्कालिक वंशजों काल ईस्लर (Eisler) ने अपनी पुस्तक (Kenit Weihin Scriften – Page 118) में १३५० से १२०९ ई० पू० तक का निर्धारित किया है, जब वे टायर (Tyre) के नगर राज्य में शासन करते थे। कुछ विद्वान कैडमस को फ़िनीशिया का देवता भी मानते हैं।

1899), हिलर वॉन (Hiller von.), गायरट्रिंगन (Gaertringen – 1924), ई० एस० रार्बट्स (E. S. Roberts – 1887) और ई० ए० गार्डिनर (E. A. Gardiner – 1905) जिन्होंने एक पुस्तक[1] भी प्रकाशित की, ओ० कर्न (O. Kern – 1913), रोहेल (Roehl – 1907) और जे० कर्चीनर (J. Kirchiner – 1948)। किर्चॉफ़ (Kirchoff) ने इन प्राचीन वर्णों का नाम हरा (Green) रखा है जिनके प्राचीनतम् अभिलेख थेरा (Thera) और मेलास (Melos) से प्राप्त हुये हैं।

ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव : 'फ०सं०–३२४; ३२४ क' के चार्ट के निम्नलिखित कॉलमों का विवरण :–

१—सिनाइ लिपि के चित्र। २—चित्रों के नाम।

३—फ़िनीशियन लिपि के २२ वर्ण जिनका जन्म सिनाइ के चित्रों से हुआ।

४—फ़िनीशियन लिपि के हेब्रू नाम।

५—जिस प्रकार से परिवर्तित होकर वे ग्रीक लिपि के १९ वर्ण बने। कुछ दो व तीन प्रकार के भी हैं।

६—उन वर्णों के नाम। ७—उन वर्णों की ध्वनियाँ।

८—ग्रीस के विद्वानों ने वर्णों के स्थान में परिवर्तन किया तथा (तारे लगे नये) अन्य चिह्नों का आविष्कार करके अपनी वर्णमाला में जोड़ दिये। अब ग्रीक लिपि में २४ वर्ण हो गये।

९—ग्रीक वर्णों की ध्वनियाँ।

क्रीट व माइसीनिया

इतिहास : प्रामाणिक रूप से क्रीट के इतिहास का आदिकाल तथा अन्त काल का निर्णय करना कठिन है परन्तु फिर भी यह धारणा विद्वानों में मान्य होने लगी है कि इस संस्कृति का सूर्योदय लगभग ३००० ई० पू० में हुआ और उसका अन्त लगभग १४०० ई० पू० में हो गया। एक ऐसी आकस्मिक विपत्ति टूट पड़ी जिसने एक छोटे से समृद्ध तथा सम्पन्न देश को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उसके सारे गाँव, नगर व भव्य भवन उजड़ गये जो पुनः वह सम्पन्नता तथा वैभव न ला सके। यह विध्वंस कोई ऐसा प्रमाण छोड़ कर नहीं गया जिससे इतिहास के पृष्ठों द्वारा संसार को कुछ ज्ञात हो सकता। धन्य हैं वे विद्वान् जिनके अथक परिश्रम ने क्रीट की समस्या पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। इस विपत्ति के पश्चात् क्रीट के इतिहास पर ऐसे घनघोर बादल छा गये कि संसार क्रीट को भूल ही गया परन्तु डोरियन जाति के लोग यहाँ पुनः आकर बस गये और क्रीट पुनः जीवित हो उठा। उनका ७०० ई० पू० तक अधिकार रहा।

विद्वानों का विचार है कि क्रीट अपने समृद्धि काल में अपने पड़ोसी देश मिस्र से पर्याप्त सम्पर्क रखता था उसने बहुत कुछ मिस्र से सीखा था। क्रीट खालों, फलों, अनाज, मदिरा, पशुधन, काष्ठ और बालक व बालिकाओं का व्यापार किया करता था।

पौराणिक कथाओं के अनुसार क्रोनस (Cronos) देवताओं का एक राजा था। उसने आकाशवाणी द्वारा सुना कि उसके पुत्र ही उसके सर्वनाश का कारण बनेंगे। इसको सुनते ही उसने अपने पुत्रों को उत्पन्न होते ही निगलना आरम्भ कर दिया परन्तु जब ज़्यूस (Zeus) का जन्म हुआ तो उसकी माता रिया (Rhea) ने

---

1. Gardiner, E. A. : An Introduction to Greek Epigraphy (1905), p–17.

ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव

1	2	3	4	5	6	7	8	9
	बैल		अलिफ़		ऐलफ़ॉ	अ		अ
	घर		बेथ		बीटा	व ब		ब
	ऊंट		गिमेल		गामा	ग		ग
	द्वार		दलेथ		डेल्टा	द		द
	खिड़की		हे		ऐप्सीलोन	ए		ए
	हुक		वाव		उप्सीलॉन	उ		ज
	अस्त्र		ज़ैन		ज़ेटा	ज़		इ
	बाड़		हेथ		ऐटा	इ		थ
	क्रास		तेथ		थेटा	थ		ई
	भुजा		योद		आइओटॅ	ई		क
	हाथ		कॉफ़		कप्पा	क		ल

फलक संख्या – ३२४

ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव

1	2	3	4	5	6	7	8	9
	अंकुश	ᒐ	लमेद	Λ	लम्दा	ल	Λ	म्यु
	जल	M	मीम	M	म्यु	म	N	न्यु
	सर्प	N	नून	N	न्यु	न	Ξ*	एक्स
		ǂ	समेख				O	ऑ
O	आंख	O	ऐन	O	ओमीक्रोन	ऑ	Γ	प
	मुंह	)	पे	)	पी	प	P	र
		ш	सीन				Σ	स
	गांठ	ø	क़ॉफ़				T	त
							V	उ
	सिर	9	रेश	9	रो	र	Φ*	फ़
ω	दन्त	W	शिन	ξ	सिगमा	स	ϙ*	ख़
							Ψ*	प्स
+	चिन्ह	T	ताव	T	ताउ	त	ω*	ऊ

उसको क्रीट के एक पर्वत ईदा की कन्द्रा में लाकर छिपा दिया। रिया ने एक अप्सरा को भी बच्चे के पालन-पोषण के लिये नियुक्त कर दिया। अप्सरा ने उसको मधु व बकरी का दूध पिला पिला कर बड़ा किया। जब वह बड़ा हो गया तब उसने अपने पिता का वध कर दिया और संसार के सारे देवताओं व मनुष्यों का राजा बन गया। उसने टायर के राजा की पुत्री युरोपा से विवाह किया और उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम मिनास (Minos) था।

मिनास की पत्नी का नाम पेसीफ़ी (Pasiphae) था, जिसने एक दैत्य मिनोटौर (Minotaur) को जन्म दिया, जो आधा मनुष्य तथा आधा बैल था। मिनास ने इसको अपने महल की भूलभुलइयों में रखा था। एथेंस के राजकुमार थ्यूसियस ने क्रीट की राजकुमारी अरियाद्ने (Ariadne) की सहायता से इस दैत्य का वध कर दिया। उसी ने थ्यूसियस को भूलभुलइयों की कुंजी दी थी। इतिहासकार मिनास को फ़ेराओ की भाँति शासक की पदवी का नाम मानते हैं, एक शासक का नाम नहीं। मिनास एक विशाल नौसेना का मालिक था और एक शक्तिशाली शासक था।

क्रीट का प्राचीन नाम क्रीटा अथवा कण्डिया था और उसकी राजधानी का नाम कानिया था। ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में कई जातियों के लोग यहाँ आकर बस गये थे। ई० पू० की चौथी शताब्दी में ग्रीस के दार्शनिक व इतिहासकार क्रीट की ओर आकर्षित हुए। ३३० ई० पू० में विदेशी जातियों का हस्तक्षेप आरम्भ होने लगा। जब ग्रीस में नगर – राज्य आपसी गृह – युद्ध करने लगे तो ग्रीस ने सैनिकों को यहाँ भर्ती करना आरम्भ कर दिया। अब क्रीट समुद्री – डाकुओं के छिपने का एक मुख्य स्थान बन गया। ई० पू० की दूसरी शताब्दी में रोम ने क्रीट पर एक दृष्टि डाली और ६७ ई० पू० में यह रोमन साम्राज्य का एक प्रान्त बन गया।

इस रोमन शासन काल में भी क्रीट विद्रोही तथा अशास्य समझा जाता रहा जहाँ जनसंहार होते रहते थे और समुद्री डाकू, व्यापारी जलपोतों को लूटते रहते थे। ८३२ ई० सन् में अरब व सीरिया के लुटेरों ने आकर अपना अधिकार जमा लिया और ९६० तक यह मुसलमानों के अधिकार में रहा। तदनन्तर निकेफ़ोरस फ़ोकस (Nicephorus Phocas) ने इसको अपने अधीन कर लिया। १२०४ में धार्मिक – युद्ध (क्रूसेड्स) करने वालों ने इसको अपने अधीन करके बोनीफ़ेस (Boniface) को दे दिया जिसने क्रीट को वेनिस (Venice) के हाथों बेंच दिया। १२१० में वेनिस का एक प्रांतपति नियुक्त कर दिया गया। अब वेनिस और क्रीट का सम्मिश्रण आरम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप एक नये प्रकार की संस्कृति ने जन्म लिया।

अनेक युद्ध हुये, अनेक शासक आये और गये। इसी प्रकार के परिवर्तनों में १८३७ में क्रीट टर्की साम्राज्य का एक प्रांत बन गया। १४ नवम्बर १८९८ को टर्की की सारी सेना ने इस द्वीप को छोड़ दिया और यह ग्रीस के अधीन हो गया। २६ जुलाई १९०९ को अन्य विदेशी सैनिकों ने यहाँ से कूच कर दिया और ग्रीस का झण्डा फहराने लगा। दूसरे महायुद्ध में कुछ दिनों के लिये यह जर्मनी के अधीन रहा परन्तु महायुद्ध के अन्त होने तक यह ग्रीस के अधिकार में आकर सदैव के लिये ग्रीस देश का एक अभिन्न अंग बन गया। आज भी प्राचीन खण्डहर रो रो कर क्रीट की प्राचीन संस्कृति की कहानी सुनाते हैं।

माइसीनिया

१४०० ई० पू० में क्रीट तो नष्ट हो गया परन्तु उसकी संस्कृति माइसीनियन संस्कृति के नाम से ग्रीस के मुख्य भू भाग पर जीवित रही। माइसीनिया क्रीट का उत्तराधिकारी बन गया। माइसीनिया व क्रीट की संस्कृतियों

का मिलन तो उसी समय से आरम्भ हो चुका था जब से माइसीनिया के चरण क्रीट पर लगभग १५०० ई० पू० में पड़े थे। क्रीट के नष्ट हो जाने से क्रीट की संस्कृति का केवल स्थानातरण हुआ था।

माइसीनिया की संस्कृति के विषय में लगभग सभी विद्वान् एक मत हैं कि उसका विकसित काल १५५० से ११०० ई० पू० तक रहा। यह धारणा पुरातात्त्विक सामग्री के उत्खनन द्वारा प्रामाणित हो चुकी है। लगभग १५०० ई० पू० में माइसीनियन संस्कृति ने ग्रीस की भूमि पर अनेक केन्द्र नगर – राज्यों के रूप में स्थापित कर दिये थे जो इस प्रकार थे—थेसली में इयोलकास नगर – राज्य, बोयेशिया में थीबीज़ और आर्कोमिनास के नगर – राज्य, अट्टिका में ऐथेंस का नगर – राज्य तथा पेलोपोनेसस में पाइलस व माइसीनिया के नगर–राज्य। यह सब केन्द्र ग्रीस की पूरी उपजाऊ भूमि पर अपना अधिकार जमाये हुये थे। शेष भूमि पर्वत-मालाओं से घिरी थी। यातायात का साधन केवल सागर था।

११०० ई० पू० में डोरियन (Dorian) तथा अक्काइयन (Achaean) जातियों ने, जिनको लगभग सभी प्राचीन इतिहासकार आर्य मानते हैं, माइसीनिया की सभ्यता को नष्ट किया। उनके नगर राज्यों को या तो अपने अधीन कर लिया या नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इन दो जातियों के आगमन के प्रश्न पर इतिहासकारों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि वे बाल्कन पर्वतों से आये और कुछ की धारणा है कि वे अनाटोलिया (Anatolia), आधुनिक टर्की (Turkey) से पधारे। पुरातत्त्व वेत्ता उनका आगमन उत्खनित सामग्री के आधार पर, जैसे घोड़ों की हड्डियां, अस्त्र-शस्त्र आदि, अनाटोलिया की ओर से मानते हैं। इसी आगमन के पश्चात् से ग्रीस के इतिहास का श्री गणेश हुआ। इन जातियों ने अपने नगर – राज्य स्थापित किये जिनमें आपसी युद्ध चलते रहे, उस समय तक जब तक ग्रीस में एक राष्ट्रीय–भावना की एकता जागृत नहीं हुई।

लेखन कला का इतिहास

जिस प्रकार प्रत्येक प्राचीन देश में लेखन कला का उद्भव पुरातात्त्विक सामग्री के उत्खनन पर निर्भर करता है उसी प्रकार क्रीट व माइसीनिया में भी जब तक वैज्ञानिक रूप से उत्खनन नहीं हुआ प्राचीन लेखन कला का ज्ञान संसार को न हो सका।

१८७० के पूर्व तक होमर (Homer) के वीर काव्यों को एक कल्पना मात्र ही समझा जाता रहा और ट्रॉय (Troy) का नगर भी एक पौराणिक कालीन नगर माना जाता रहा। प्रसिद्ध इतिहासकार जॉर्ज ग्रोट (George Grote) का भी यही विचार था। १८६८ में जर्मनी का एक व्यापारी हाइनरिख शिलीमान (Heinrich Schliemann–b. 1822) ग्रीस पहुँचा और १८७१ में उसने हिसार्लिक (Hissarlik) के खण्डहरों में, जो ट्राय का नष्ट नगर समझा जाता था, उत्खनन आरम्भ किया। जहाँ एक नहीं लगभग ९ नगर एक के ऊपर एक निकले। इस उत्खनन ने होमर के ट्रॉय को पुनर्जीवित कर दिया। उसने माइसीनिया में भी उत्खनन किया। तत्पश्चात् १८९० में शिलीमान की मृत्यु नेपिल्स (Naples) में हो गई। वह क्रीट भी जा रहा था और चालीस हज़ार फ्रैंक्स उस भूभाग के दाम भी निश्चय हो गये थे परन्तु वह धोखे से बच गया क्योंकि उत्खनित सामग्री टर्की-राज्य की हो जाती।

१८८९ में ऑक्सफ़ोर्ड के एश्मोलियन संग्रहालय (Ashmolean Museum) का रक्षक (Keeper) आर्थर ईवान्स (Arthur Evans) था। ग्रेविले चेस्टर (Greville Chester) ने उसके पास क्रीट का मुद्रा-पत्थर (Seal-Stone) भेजा जिस पर कुछ अज्ञात चिह्न व चित्र उत्कीर्ण थे। इस पत्थर ने उसके मन में ऐसी प्रेरणा जागृत की जिसके कारण वह ग्रीस की ओर चल दिया और १८९४ में वह क्रीट पहुँच गया। उसने अपने

कार्य करने की योजना के लिये छान–बीन आरम्भ कर दी। १८९६ में ईसाई तथा मुसलमानों में उपद्रव आरम्भ हो गये। १८९९ में उसने ग्रीस के राजकुमार से एक नासास (Knossos) के निकट भू-भाग मोल लिया और ३० मार्च १९०० में उसने अपना उत्खनन कार्य आरम्भ कर दिया।

इस उत्खनन द्वारा उसको सहस्रों की संख्या में मिट्टी की पाटियाँ प्राप्त हुईं तथा एक विशाल राजमहल दृष्टिगोचर हुआ जिसमें विशाल कमरे, महाकक्ष, ऊपर – नीचे खण्ड, जल–निर्गम–प्रणाली तथा गर्म व ठण्डे जल से स्नान करने का प्रबन्ध आदि उपस्थित थे। ईवान्स ने प्राचीन काल की इस उच्च कोटि की संस्कृति का नाम पौराणिक शासक मिनास के नाम पर मिनोअन संस्कृति रखा। यही नाम अब सारे विद्वान् प्रयोग करते हैं।

ईवान्स ने भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री का निरीक्षण करके इस संस्कृति को तीन भागों में तथा तीनों भागों को पुनः तीन-तीन भागों में विभाजित कर दिया, जो निम्नलिखित हैं :—

१—पूर्वकालीन युग (Early Minoan = E M)

- E M – I, ३२०० ई० पू० } मिस्र में प्राचीन राज्य (Old Kingdom) का शासन था।
- E M – II, २६०० ई० पू० }
- E M – III, २४०० ई० पू०

२—मध्यकालीन युग (Middle Minoan = M M)

- M M – I, २२०० ई० पू०—मिनास के राजमहल का निर्माण हुआ।
- M M – II, २००० ई० पू०—राजमहल को नष्ट किया परन्तु पुनः निर्माण हुआ।
- M M – III, १८०० ई० पू०—फिर आक्रमण हुये, विध्वंस हुआ, निर्माण हुआ।

३—उत्तरकालीन युग (Late Minoan = L M)

- L M – I, १५५० ई० पू०—मिस्र की पाटरी प्राप्त हुई। माइसीनियन लोग आकर बसे।
- L M – II, १४५० ई० पू०—१४०० के लगभग पूर्णतया नष्ट होकर उजड़ गया।
- L M – III, १३७५ ई० पू०—पुनः कुछ लोग आकर बसे परन्तु चले गये।

इस उत्खनन ने विद्वानों के मन में एक नवीन उत्सुकता उत्पन्न कर दी और यह जिज्ञासा जागृत हुई कि क्रीट की इस उच्च कोटि की संस्कृति के जन्मदाता कौन थे। इसका उत्तर निम्नलिखित विद्वानों ने दिया :—

थ्यूकीडाइडीज़ (Thucydides) ने कहा कि क्रीट का शासक मिनास ग्रीक था। **हेरोडोटस** ने कहा कि ग्रीक नहीं था। **होमर ने कहा** कि क्रीट में पाँच प्रकार की जातियाँ निवास करती थीं। **डार्पफ़ेल्ड** (W. Dorpfeld), जो शिलीमान का, ट्राय के उत्खनन में, एक सहायक था, ने कहा कि क्रीट व माइसीनिया की संस्कृति फ़िनीशियन संस्कृति है। **एक प्राचीन इतिहासकार एडवर्ड मीयर** (Eduard Meyer) ने कहा कि क्रीट की संस्कृति प्राचीन एशिया माइनर की संस्कृति है। **परन्तु ईवान्स** ने कहा कि क्रीट के मूल निवासी अफ़्रीका तथा मिस्र के निवासी थे तथा माइसीनिया ने क्रीट को नष्ट किया। यह विचार ईवान्स की मृत्यु (१९४१) तक अटल रहे और किसी ने इनका खण्डन नहीं किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् पुनः विद्वान् अपने अनुमान लगाने लगे।

कुछ विद्वानों का विचार था कि क्रीट ने ग्रीस के मुख्य भूभाग पर आक्रमण किया।

ईवान्स ने क्रीट की लिपि, जो चित्रात्मक, भावात्मक तथा अक्षरात्मक थी, को दो मुख्य भागों में विभाजित किया। एक लाइनियर – ए[1] तथा दूसरी लाइनियर – बी। लाइनियर – ए का काल १७०० से १५०० ई० पू० निर्धारित किया तथा लाइनियर – बी का काल १४५० ई० पू० निर्धारित किया।

ईवान्स के अतिरिक्त निम्नलिखित पुरातत्त्व-वेत्ताओं ने उत्खनन कार्य सम्पन्न करके तथा पुरातात्त्विक सामग्री पर शोध करके अपने अपने निष्कर्ष संसार के समक्ष रखे :—

जी० पी० केरातेल्ली (G. P. Carratelli) ने लाइनियर – ए के २५० अभिलेखों का निरीक्षण किया तथा ८५ चिह्नों को प्रकाशित किया और सिद्ध किया कि लिपि अक्षरात्मक तथा संकेतात्मक है। एक अमेरिकन **सी० डबल्यु० ब्लेगन** (C. W. Blegan) तथा एक ग्रीक **कुरुनियातिस** (Kuruniotis) ने १६३६ में पाइलस (Pylos) के निकट इपानो इंगलियानस (Epano Englianos) में एक राजमहल का उत्खनन किया जिसमें से अनेक अभिलेख वहाँ के तात्कालिक शासक के अभिलेखालय से प्राप्त हुये। जिनका काल १२०० ई० पू० निर्धारित किया गया है। ब्लेगन ने पुनः १६५२ के उत्खनन द्वारा ४०० मिट्टी की पाटियाँ भूगर्भ से निकालीं। **अंग्रेज़ वेस** (Wace) **तथा ग्रीक मैरीनैटस** (Marinatos) ने १३ वीं श० के ३६ अभिलेखों को प्राप्त किया। **सिल्तिक** (Siltiq) ने सिप्रियाटिक तथा लाइनियर – बी के चिह्नों को समान बताया। **हैलभर** (Halbherr) ने हैगिया त्रियदा (Hagia Triada) के शासकीय महल के उत्खनन से १५० छोटी छोटी मिट्टी की पाटियाँ निकालीं। **एक स्वीडन के विद्वान् फ़ुरुमार्क** (Furumark) ने लाइनियर – बी का काल १६०० ई० पू० निर्धारित किया। **ए० ई० कावले** (A. E. Cowley) के मतानुसार लाइनियर – एवं बी की भाषा एक है।

ईवान्स ने १९०९ में लण्डन से अपनी 'स्क्रिप्टा मिनोआ' (Scripta Minoa) प्रकाशित की जिसमें १७२२ पाठों (Texts) का उल्लेख था। उसमें इस बात का भी उल्लेख किया गया था कि १४५० से १२०० तक के भवनों में स्याही का भी प्रयोग किया गया है। २५ वर्ष पश्चात् ईवान्स ने अपनी पुस्तक[2] में १२० पाटियों का उल्लेख किया है परन्तु फिर भी ३००० पाटियाँ उसकी मृत्यु तक प्रकाशित न हो सकीं। उसके मरणोपरांत उसके सहयोगी जे० एल० मेयर्स ने 'Scripta Minoa II' के नाम से १९५२ में प्रकाशित किया।

ब्लेगन द्वारा १९३९ के उत्खनन की पाटियों को सिन्किनाती विश्वविद्यालय के एक विद्वान् एमेट एल० बेनेट (Emmett L. Benett) के पास निरीक्षण के लिए भेज दी गईं जिनका निष्कर्ष विश्व के समक्ष – पाइलस की पटियाँ "The Pylos Tablets (1951)" – के रूप में आया। उसी काल ब्रुकलिन (Brooklyn) में एक अमेरिका निवासी एलिस ई० कोबर (Alice E. Kober) – के १९४३ से १९५० तक के लेख प्रकाशित हुये।

१९५२ में क्रीट व माइसीनिया के अभिलेखों के रहस्योद्घाटन पर दो शोधकर्ता दो भिन्न स्थानों पर अपने अपने कार्य में संलग्न थे। उनके नाम माइकिल वेन्ट्रिस (Michael Ventris) तथा जॉन चैडविक

1. Jordon, C. H. : First Pub. in J. of 'Near Eastern studies', Vol. xvii (1958), P – 145.
2. Palace of Minos (1935).

(John Chadwick) थे। इन दोनों विद्वानों ने सुण्डवाल, बेनेट तथा कोबर के शोध कार्यों का अध्ययन किया था। उस अध्ययन के तथा अपने परिश्रम के आधार पर १९५६ में लाइनियर – बी की एक वर्णमाला प्रस्तुत की। तत्पश्चात् बेनेट ने भी लगभग १०० संकेतात्मक चित्रों की एक तालिका प्रस्तुत की।

क्रीट की चित्रात्मक लिपि – 'फ० सं० – ३२५' पर ऊपर की ओर कुछ चित्र[1] दिये गये हैं जो क्रीट निवासियों ने आरम्भ में अपनी लिपि के लिये बनाये। उसी के नीचे चित्रों द्वारा लाइनियर – ए एवं लाइनियर – बी के वर्णों की रचना की तथा उनकी ध्वनि निर्धारित की।

माइसीनिया की वर्णावली[2] – 'फ० सं० – ३२६' में ऊपर पाँच स्वरों के चिह्न – वर्ण दिये गये हैं तथा कुछ वर्णों के चिह्न दिये गये हैं जिनके साथ स्वरों को जोड़ कर उनकी ध्वनि दी गई है। यहाँ के उत्खनन में अनेक पाटियाँ[3] निकलीं।

पाइलस की त्रिपद पाटिया – (फ० सं० – ३२७ – ३२७) क : १९३९ – ५२ में पाइलस (Pylos) के निकट एक राजमहल में उत्खनन किया था और उत्खनन सामग्री का निरीक्षण कर इसको 'पाइलस टैबलेट्स' (Pylos Tablets)[4] के नाम से १९५५ में प्रकाशित करवाया और इसका रहस्योद्घाटन बेन्ट्रिस और चैडविक ने किया। यह एक तीन पैर वाली पाटिया (Tripod Tablet) है जो पाइलस के उत्खनन से प्राप्त हुई थी। इसमें शब्द चिह्न भी दिये गये हैं। यह पद्धति सम्भवतः क्रीट निवासियों ने मिस्र से सीखी होगी। इस चित्र के शब्दों में कुछ आर्य भाषा (संस्कृत) का आभास मिलता है।

क्रीट की लाइनियर – 'ए' के चिह्न 'फ० सं० – ३२८' में क्रीट की लाइनियर 'ए' के चिह्न दिये गये हैं जिनका निरीक्षण कैरातिल्ली (G. P. Carratelli) ने किया था। अभी इन चिह्नों का निर्णयपूर्वक रहस्योद्घाटन नहीं किया जा सका है। जार्डन ने भी इसका अध्ययन[5] किया।

फ़ैस्टास चक्रिका 'फ० सं० – ३२९' : इस चित्र में एक मिट्टी की चक्रिका[6] के दोनों ओर के संकेतात्मक चित्र दिये गये हैं। इसका नाम फ़ैस्टास डिस्क (Phaistos Disc) रखा गया है क्योंकि यह १९०८ में एक इटली निवासी पुरातत्त्व – वेत्ता लुईगी पर्नियर (Luigi Pernier) द्वारा क्रीट के एक राजमहल से, जो फ़ैस्टास में स्थित था, उत्खनन में प्राप्त हुई। यह चक्रिका पकी हुई मिट्टी की बनी है। इसका व्यास लगभग ६ इंच है। इसका काल १७०० ई० पू० के लगभग का निर्धारित किया गया है।

इसमें दोनों ओर के चिह्न मिलाकर २४१ हैं। एक ओर इसमें ३१ अनुभाग तथा १२३ चिह्न हैं और दूसरी ओर ३० अनुभाग तथा ११८ चिन्ह हैं। इसका आरम्भ बाएँ से दाएँ हुआ है। कारण यह है कि चित्रों के मुँह सीधी ओर हैं। इसमें पर्नियर के अनुसार ४५ प्रकार के चिह्न हैं।

---

1. Evans, A. J. : 'Primitive Pictographs' – J. of Hellenic Studies(1898), p – 270.
2. Ventris And Chadwick : 'Evidence for Greek Dialect in Mycenaean Archives' – Journal of Hellenic Studies, Vol. LXXIII, page – 86.
3. Wace, A. J. B. : 'The Discovery of Inscribed Clay Tablets at Mycenaea' – Antiquity – 27, (1953), p – 84.
4. Blegen and Bennett : The Pylos Tablets, Texts of Inscriptions Found (1939 – 54), Published in 1955, p – 271.
5. Jordon, C. H. : Journal of Near Eastern Studies, Vol. XVII (1958), p – 245.
6. Evans, A. J. : Scripta Minoa, Vol. 1, Plate – XII (1909) p – 275.

जब यह चक्रिका संसार के विद्वानों के समक्ष आई, उन्होंने अपने अनुमान लगाने आरम्भ कर दिये। उदाहरणार्थ मेकेंज़ी (Mackenzie), ईवान्स, मायर्स (Myers), पेन्डिलबरी (Pendlebury) एवं बोस्सर्ट (Bossert) के विचार हैं कि यह एनाटोलिया (आधु० टर्की) से लाई गई है। मैकालिस्टर (Macalister) का विचार है कि जो कलगीदार सिर के चित्र से आरम्भ होनेवाले अनुभाग हैं वे किसी शासक के नाम हैं। कुमारी स्टावेल (F. M. Stawell) का विचार है कि यह ज्यूस देवता की माँ रिया की प्रार्थना (Hymn) है। एफ़० सी० जार्डन (F. C. Jordan) के विचार से यह प्रार्थना वर्षा – देवता के लिये की गई है। सुन्डवाल (Sundwall) के विचार से इस चक्रिका के चिह्न क्रीट से लिये गये हैं अभी तक फ़ैस्टास चक्रिका की समस्या सुलझ नहीं सकी है कि यह किससे सम्बन्धित है तथा इसके गूढ़ाक्षर क्या हैं। विद्वान् अपने शोध कार्य में रत हैं और एक दिन इस समस्या का हल संसार के समक्ष अवश्य आ जायेगा।

अभी कुछ दिन पूर्व जोहान्सवर्ग के विटवाटर्सरैंड विश्वविद्यालय के प्रो० एस० डेविड ने पिछले कुछ वर्षों में इस गोल चक्रिका का सूक्ष्म अध्ययन किया और इसके पाठ को राजमहल की प्रतिष्ठा में फ़ेस्टास के राजा नोकियल द्वारा किये गये भक्तिपूर्ण अनुष्ठान का सूचक माना है। उनकी आधुनिकतम प्रस्थापनाएँ बहुत शीघ्र ग्रंथ – रूप में प्रकाशित होगी।
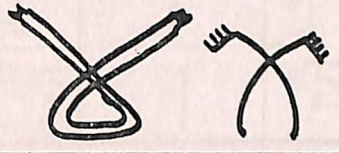
पठनीय सामग्री

Allen. A. B. : Romance of Alphabet (1937).

Baikie, J. ; Ancient Crete (1924).

Bennett, E. L. ; A Minoan Linear – B – Index (1953).

Ibid ; Pylos Tablets (1955).

Blegen, C. W. and : The Pylos Tables and Texts Found in 1939 – 54. (1955).

Bennett Browning, R. : 'The Linear – B Texts from Knossos – Transliterated and Edited' – Bulletin of the Institute of Class Studies of the University of London. (1955).

Casson, S. : Ancient Cyprus (1937).

Cleater. P. E. : Lost Languages (1962).

Daniel, J. F. : 'Prolegomena to the Cypro – Minoan Script' – American Journal of Archaeology – 45 (1941).

Evans, A. J. : Cretan Pictographs and Pre – Phoenician Script (London – 1895).

Ibid : Scripta Minoa – 1 (Oxford – 1909).

Ibid : Palace of Minos – 1 – IV (London 1921).

Freese, J. H. : A Short Popular History of Crete (1897).

Gelb, I. J. : A Study of Writing (1952).

Hall, H. R. : The Relation of Aegean with Egyptian Art – J. of Egyptian Arch. (1925).

Hutchinson, R. W. : Prehistoric Crete (1951).
Jordon, C H. : 'Minoan Linear – A' – Journal of Near Eastern Studies, XVII – (1958).
Karageorghis. V. : Ancient Civilization of Cyprus (1951).
Newman, P. : A short History of Cyprus (1940).
Palmer, L. R. : Mycenaeans and Minoans (1932).
Persson, A. W. : Schrift und Sprache Alt Kreta (Uppsala – 1950).
Pigott Stuart : Dawn of Civilization (1928).
Pike, E. R. : Finding Out about Minoans (1963).
Taylor, William : The Mycenaeans (1964).
Thumb, A, and Scherer : Handbuch der griechischen Dialekte II (Heidelberg—1959).
Ventris, M. and Chadwick, J. : The Decipherment of Linear – B (Cambridge – 1958).
Ibid : Documents in Mycenaean Greek (1956).
Ibid : 'Evidence for Greek Dialect in Mycenaeans Archives' – J. of Hellenic Studies, LXXII (1953).
Ibid : Languages of Minoan and Mycenaean Civilization (N. Y. – 1950).
Ibid : Ancient History of West Asia, India and Crete (1944).
Wace, A. J. B. : 'The Discovery of Inscribed Clay Tablets at Mycenaea' – Antiquity – 27 (1953).
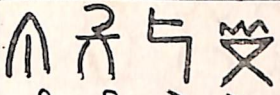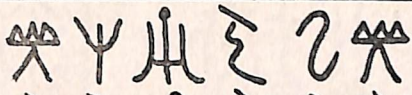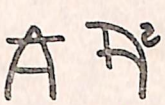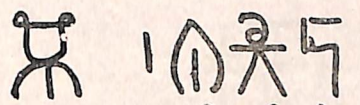
□

क्रीट की चित्रात्मक लिपि
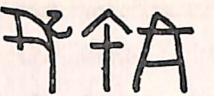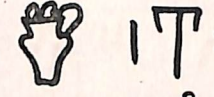
माइसीनिया की वर्णावली

ध्वनि→	अ	ए	ई	ओ	ऊ
स्वर					
द		दे	दी	दो	दू
ज		जे		जो	
क		के	की	को	कू
म		मे	मी	मो	मू
न		ने	नी	नो	नू
प		पे	पी	पो	पू
क़		क़े	क़ी	क़ो	
र		रे	री	रो	रू
स		से	सी	सो	सू
त		ते	ती	तो	तू
व		वे	वी	वो	
ज़		ज़े		ज़ो	ज़ू

फलक संख्या – ३२६

पाइलस की त्रिपद पाटिया

फलक संख्या – ३२७

पाइलस की त्रिपद पाटिया

फलक संख्या – ३२७ क

क्रीट की लाइनियर-ए के चिन्ह

फलक संख्या – ३२८

फ़ैस्टास चक्रिका (दोनों ओर के चित्र)

फलक संख्या – ३२६

ग्रीस के नगर राज्य

लगभग ६०० ई० पूर्व में ग्रीस की भूमि पर अनेक नगर-राज्य थे जिनमें लिपियों का विकास फ़िनीशिया की लिपि से ही हुआ था परन्तु उनमें कुछ भिन्नता थी। उन्ही नगर-राज्यों का संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जा रहा है।

एथेन्स

इतिहास : ग्रीस की प्राचीन संस्कृति १५०० से ११०० ई० पू० तक जीवित रही। तदनन्तर उत्तर से आक्रमण हुये और नगर राज्यों का जन्म होने लगा। इन नगर – राज्यों में दो नगर बड़े प्रसिद्ध थे। एक स्पार्टा (Sparta) तथा दूसरा एथेन्स (Athens)। एथेन्स का अपना एक राज्यक्षेत्र था जिसका नाम अट्टिका (Attica) था। ई० पू० की सातवीं श० में एथेन्स बड़ा शक्तिशाली राज्य था। ६८३ ई० पू० में एथेन्स ने वंशानुगत राजाधिकार का उन्मूलन कर दिया। ५९४ ई० पू० में सोलोन (Solon) ने एक नयी विधि – संहिता (Law Code) स्थापित की। तदनन्तर कई राजाओं ने राज्य किया जिसमें पिसिसट्रेटस (Pisitratus), जिसने ५६० से ५१७ ई० पू० तक राज्य किया, बड़ा प्रसिद्ध था।

५०८ ई० पू० में क्लिस्थिनीज़ (Cleisthenes) ने सुधार किये और प्रजातंत्र का जन्म हुआ। ४९३ ई० पू० में थेमिस्टाकिल्स (Themistocles) एथेन्स के ९ न्यायधीशों में से प्रथम न्यायधीश – शासनाधिकारी निर्वाचित हुआ। उसने एक विशाल नौसेना की स्थापना की क्योंकि उसको पर्शिया के आक्रमण की अनुभूति हो गई थी। ४९० में पर्शिया को अट्टिका में मराथन (Marathon) युद्ध में पराजित किया। ४८० में ज़रक्सीज़ ने सलामिस (Salamis) को नष्ट कर दिया। थर्माप्ली के युद्ध में स्पार्टा (पेलोपोनीशियन लीग – Peloponnesian League) के सहयोग से पर्शिया को पुनः परास्त किया। अब एथेन्स की क़िलाबन्दी कर दी गई।

एथेन्स पेरिकिल्स (Pericles) के शासन काल (४६० – ४३१) में बड़ा वैभवशाली हो गया तथा पेलोपोनीशियन लीग[1] से पृथक हो गया और स्पार्टा से युद्ध करने में रत हो गया। ४३१ से ४०४ ई० पू० तक स्पार्टा से दूसरा युद्ध हुआ। ३९९ ई० पू० में सुकरात (Socrates) को विष – पान द्वारा मृत्यु का दण्ड दिया। कोरिंथियन के युद्ध में एथेन्स ने स्पार्टा के विरुद्ध कोरिंथ का साथ दिया। ३३८ ई० पू० में मेसीडोन (Macedon) के शासक फ़िलिप द्वितीय (Phillip II) से युद्ध हुआ जिसमें एथेन्स की पराजय हुई और एथेन्स मेसीडोनिया के अधीन हो गया। ३३२ तक उसी के शासन में रहा।

इसी बीच एथेन्स ने रोम से मित्रता कर ली और उसी की सहायता से मेसीडोनिया के शासन से स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। इस स्वतंत्रता के लिये १९७ ई० पू० में साइनास्की फ़लाइ (Cynosce – phalae) में एक युद्ध लड़ना पड़ा जिसमें मेसीडोनिया परास्त हुआ। अब एक अकाईयन लीग (Aehaean Laegue) बन गई। १४६ ई० पू० में रोम ने इस लीग को समाप्त कर दिया और अकाईया रोमन साम्राज्य का एक अंग बन गया।

---

1. कुछ राज्य मिल कर एक संघ बना लेते थे और वे राज्य एक दूसरे की हर प्रकार की सहायता करने के लिये वचन-बद्ध होते थे।

५४ ई० सन् में यहाँ सेन्ट पॉल (St. Paul) आया। ३९५ ई० सन में एथेन्स को गोथ्स (Goths) ने अपने अधीन कर लिया। १२०४ में यह इटली के अधीन हो गया।

१४५६ में ओटोमन (ओथोमान – उसमान) तुर्कों ने इसको अपने अधीन कर लिया। १६८७ में वेनिस निवासियों ने अपने अधिकार में ले लिया। १८३५ में एथेन्स आधुनिक ग्रीस की राजधानी बन गया। दूसरे महायुद्ध की १९४१ में जर्मनी के अधिकार में आ गया और १४ अक्टूबर १९४४ को स्वतंत्र हो गया।

किर्चोफ़ ने इस लिपि के वर्णों का नाम हल्का नीला (Light Blue) रखा है और यह साइक्लेड्स (Cyclades) के द्वीप समूह में, एथेन्स, सलामिस व एजीना में लगभग ई० पू० की सातवीं व छठवीं शताब्दी में प्रचलित थी। इसकी दिशा बाएँ से दाएँ थी।

'फ० सं० – ३३०' पर इस लिपि के वर्ण तथा सातवीं श० का एक अभिलेख जो एथेन्स से प्राप्त हुआ था नीचे दिया गया है। परन्तु इस अभिलेख का पाठ दाएँ से बाएँ है। अभिलेख का अनुवाद **"अब जो नृत्य करने वालों में से सबसे अच्छा नृत्य करेगा, वह इसको प्राप्त करेगा।"** इस अभिलेख का रहस्योद्घाटन किर्चोफ़ ने किया है।

कोरिंथ

इतिहास : कोरिंथ (Corinth) का इतिहास डोरियन काल (लगभग ई० पू० को ग्यारहवीं श०) से आरम्भ होता है जब डोरियन लोगों के आक्रमण उत्तर की ओर से आरम्भ होने लगे थे। इस नगर – राज्य का संस्थापक एक पौराणिक एलेटीज़ (Aletes) अर्थात् घुमक्कड़ था। इसी काल में यहाँ फ़िनिशिया के निवासी भी आकर बसने लगे थे।

आठवीं श० से कोरिंथ ने अपने उपनिवेश स्थापित करना आरम्भ कर दिये थे। उसका प्रथम उपनिवेश ग्रीस के पश्चिम में एक द्वीप कोर्सीरा था तथा दूसरा सीराकूज़ (Syracuse), सिसली का एक नगर था। उस समय कोरिंथ की सामुद्रिक शक्ति अपनी चरम सीमा पर थी। कोर्सीरा ने कोरिंथ के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और फलस्वरूप ६६४ ई० पू० में एक युद्ध हुआ। ६५२ ई० पू० एलेटीज़ के वंशज बक्कहीस (Bacchis) अन्तिम शासक को कांइप्सेलस (Cypselus) ने परास्त कर दिया और स्वयं एक शक्तिशाली राजा बन गया। उसने अम्ब्रेसिया (Ambracia), एनक्टोरियम (Anactorium) तथा ल्यूकास (Leucas) के उपनिवेशों को स्थापित किया। उसने अपने राज्य में सर्वप्रथम मुद्रा का प्रचलन आरम्भ किया। उसके मरणोपरांत उसका पुत्र पेरि्यण्डर (Periander) शासक बना जिसने ६२५ से ५८५ ई० पू० तक शासन किया। उसने भी अपनी नौसेना को शक्तिशाली बना कर दो नये उपनिवेश अपोलोनिया (Apollonia) तथा पोतीदइया (Potidaea) स्थापित किये। पेरि्यण्डर की मृत्यु के पश्चात् राजसत्ता एक शासक से निकल कर कुछ धनी – नागरिकों के हाथ में आ गई और कोरिंथ एक धनी-तांत्रिक (Oligarchy) राज्य स्थापित हो गया। यह शासन कर्ता व्यापार की उन्नति में संलग्न रहते थे।

५०७ ई० पू० में कोरिंथ भी स्पार्टा की पेलोपोनेशियन लीग का एक सदस्य बन गया और स्पार्टा के विरुद्ध एथेन्स के प्रजातन्त्र का साथ दिया। ४८० ई० पू० में पर्शिया के युद्ध में अपनी पूरी शक्ति के साथ भाग लिया। कुछ दिनों के पश्चात् यह एथेन्स के विरुद्ध हो गया और ४६२ – ४४६ के मध्य इन दोनों में युद्ध हुये। एथेन्स ने कोरिंथ के व्यापार को बड़ी हानि पहुँचाई परन्तु इससे अधिक हानि कोर्सीरा के विद्रोह तथा एपीडेमनस के गृह-युद्ध द्वारा पहुँची। युद्ध में कोरिंथ परास्त हो गया और एपीडेमनस (एपोलोनिया के उत्तर में) कोर्सीरा का उपनिवेश बन गया। कोर्सीरा अब एथेन्स का मित्र बन गया।

एथेन्स की लिपि के वर्ण

एथेन्स की लिपि का एक अभिलेख

Who now of all the dancers performs most gracefully, he shall receive this.

फलक संख्या – ३३०

अब कोरिंथ ने पेलोपोनीशयन लीग को एथेन्स के विरुद्ध उकसाया और युद्ध की घोषणा कर दी जिसमें स्पार्टा को एथेन्स के विरुद्ध अनिच्छा से लड़ना पड़ा। इसमें कोरिंथ को अपने अन्य उपनिवेशों से हाथ धोना पड़ा। अन्त में ४२१ ई० पू० में निकियास (Nicias) में एक सन्धि हो गई परन्तु सन्धि से कोरिंथ असन्तुष्ट रहा। अब स्पार्टा का युद्ध ४२८ ई० पू० में एथेन्स से पुनः हुआ जिसमें मन्तीनिया में तथा ४१५ में सिसली में एथेन्स की पराजय हुई। इस युद्ध में कोरिंथ को स्पार्टा का साथ देना पड़ा तथा सीराकूज़ का भी साथ दिया। अब स्पार्टा एथेन्स का साथी हो गया। इस बार के युद्ध में जो पुनः स्पार्टा और एथेन्स के मध्य हुआ कोरिंथ ने स्पार्टा के विरुद्ध थीबीज़, अर्गास और एथेन्स का साथ दिया। परन्तु इस युद्ध में कोरिंथ की बड़ी हानि हुई और वह अर्गास के अधीन हो गया। ३८६ में उसने पुनः पेलोपोनीशियन लीग की सदस्यता स्वीकार कर ली।

३४३ ई० पू० में मेसीडोन के राजा फ़िलिप द्वारा कोरिंथ को बड़ी हानि पहुँची और उसको फ़िलिप के अधीन होना पड़ा। ३३८ में कोरिंथ फ़िलिप की हेलेनिक लीग (Hellenic League) का केन्द्र बन गया। दो वर्ष पश्चात् सिकन्दर ग्रीस का निर्विरोध नेता बन गया। अब कोरिंथ व्यापार का एक मुख्य केन्द्र बन गया। १४३ ई० पू० में एराटस (Aratus) ने इसको स्वतन्त्र कर लिया और अकाईयन लीग का सदस्य बन गया। २९६ ई० पू० में फ़्लेमिनस (Flaminus) ने रोम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। १४६ ई० पू० में मेमियस (Memmius) ने कोरिंथ को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और वहाँ की कला का एक विशाल संग्रह अपने साथ रोम ले गया।

लगभग २०० वर्ष तक कोरिंथ खण्डहर की दशा में पड़ा रहा परन्तु सीज़र ने उसके पास एक नवीन नगर की स्थापना की और उसका नाम भी कोरिंथ रखा। रोम के शासक आगस्टस के काल में अकाइया रोम का एक प्रान्त बन गया और कोरिंथ पुनः समृद्धशाली होने लगा। ग्रीस में ईसाईयों की सर्वप्रथम बस्ती सन् ५४ में सेंट पॉल द्वारा कोरिंथ में बनी।

ईसवी सन् की तीसरी शताब्दी में अन्य नगर – राज्यों की भाँति गोथों और अन्य बर्बर जातियों द्वारा कोरिंथ को भी बड़ी हानि हुई। २६७ ईसवी में कोरिंथ का दूसरा नगर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पुनः इसका निर्माण हुआ और पुनः ३९६ में अलारिक द्वारा नष्ट कर दिया गया परन्तु पुनः निर्माण किया गया और अपना वैभव प्राप्त करने लगा। तदनन्तर यह बैज़ेन्टाइन साम्राज्य के अधीन रहा परन्तु छठी शताब्दी में एक भूकम्प द्वारा नष्ट हो गया और जुस्टीनियन द्वारा पुनः निर्मित हुआ।

ईसवी सन् की नवीं शताब्दी में यह धार्मिक तथा राजनीतिक केन्द्र बन गया। तत्पश्चात् यहाँ एक विशाल सैनिक केन्द्र खोला गया तथा सिल्क का उद्योग स्थापित हो गया। ११४७ में सिसली के नार्मन रॉजस द्वितीय (Roges II) द्वारा इटली के अधिकार में आ गया। तदनन्तर पुनः बैज़ेन्टाइन साम्राज्य का एक अंग बन गया। १४५९ में यह आटोमान तुर्कों के अधीन हो गया। कुछ दिनों बाद यह टर्की से स्वतन्त्र होकर सत्रहवीं व अठारहवीं शताब्दियों में यह माल्टा तथा वेनिस के अधिकार में रहा परन्तु पुनः स्वतन्त्रता की श्वास न ले सका। इसके पश्चात् इसका पृथक इतिहास समाप्त हो गया अब वह आधुनिक ग्रीस का एक अंग बन गया था, जो अब भी वर्तमान है।

लिपि : कोरिंथ की लिपि के वर्णों का नाम क़िर्चोफ़ ने गहरा नीला (Blue) रखा। इस लिपि का प्रयोग अर्गास, मेगारा तथा एशिया के पश्चिमी किनारे के कुछ नगरों में होता था। इसका काल ई० पू० की छठी शताब्दी माना जाता है। इसका प्रयोग बाएँ से दाएँ होता था।

कोरिंथ की लिपि के वर्ण

अ	ब	ग	द	ए
फ़	ज़	इ	थ	ई
क	ल	म	न	स
ओ	प	स	क़	र
त	व	फ	च-ख	प्स

फलक संख्या – ३३१

प्राचीन कोरिंथ (विध्वंस) नगर में 'अमरीकन स्कूल एट एथेन्स' (American School at Athens) के विद्वानों तथा पुरातत्त्व वेत्ताओं ने १८९६ में उत्खनन कार्य आरम्भ किया जो १६१६ तक चलता रहा। तत्पश्चात् यह कार्य १९२५ में पुनः आरम्भ हुआ। प्राचीन पुरातात्त्विक सामग्री तथा अभिलेख बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त हुये जिनके द्वारा प्राचीन कोरिंथ पर प्रकाश पड़ सका।

'फ० सं० — ३३१' पर कोरिंथ की लिपि के वर्ण दिये गये हैं।

बोयेशिया

इतिहास : इस राज्य की संस्कृति लगभग पाँच सहस्र वर्ष पूर्व वर्तमान थी परन्तु इसका इतिहास ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ। ४८० में जब पर्शिया ने ग्रीस पर आक्रमण किया तो बोयेशिया पर्शिया की ओर हो गया। युद्ध के समाप्त होने पर अन्य नगर राज्यों ने इसका बहिष्कार किया। बोयेशिया लीग का अन्त कर दिया गया। ४५७ में स्पार्टा ने एक अन्य लीग की स्थापना की परन्तु एथेन्स द्वारा इसको समाप्त कर दिया गया और लगभग १० वर्ष बोयेशिया पर इसका अधिकार रहा।

तदनन्तर ९ नगरों की एक नई लीग बोयेशिया (Boetia) में स्थापित हुई जिसका अध्यक्ष थीबीज़ का नगर – राज्य बना। इसका कार्य ६० वर्ष तक चलता रहा। पेलोपोनेशियन युद्ध मे बोयेशिया ने स्पार्टा का पक्ष लेकर एथेन्स को परास्त किया परन्तु निकियास की सन्धि से, जो ४२१ ई० पू० में हुई, एथेन्स असंतुष्ट रहा। इसी के कारण एक युद्ध स्पार्टा और थीबीज़ के मध्य हुआ। ३८२ में स्पार्टा के एक सैनिक अधिकारी ने थीबीज़ के नगर – राज्य को अपने अधीन कर लिया। ३७९ में एक प्रजातंत्र ने शासन का अधिकार हस्तगत कर लिया जिसके कारण शनैः शनैः स्पार्टा का प्रभाव समाप्त होने लगा। तत्पश्चात पुनः बोयेशिया लीग की स्थापना की गई जो पूर्णतया थीबीज़ के अन्तर्गत रही। यह थीबीज़ के साम्राज्यवाद का एक दूसरा रूप था।

३७१ ई० पू० में बोयेशिया की सेना ने ल्यूकत्रा में स्पार्टा को परास्त कर दिया। यह युद्ध इपामीनोडस (Epaminodus) के नेतृत्व में हुआ। इस विजय से थीबीज़ का प्रभाव बढ़ने लगा और मध्य ग्रीस व पेलोपो – नीशिया के नगर – राज्य इससे मित्रता का सम्बन्ध रखने लगे। ३६२ ई० पू० में स्पार्टा के साथ एक दूसरा युद्ध मन्तीनिया में हुआ जिसमें इपामीनोडस वीर गति को प्राप्त हुआ। फलस्वरूप थीबीज़ की शक्ति क्षीण होने लगी और उसका नेतृत्व समाप्त होने लगा।

कुछ दिनों के पश्चात् मेसीडोनिया ने थीबीज को अपने प्रभाव में लिया तदनन्तर अपनी सेना का केन्द्र बना दिया। जब ३३५ ई० पू० में थीबीज़ ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया तो सिकन्दर ने थीबीज़ को पूर्णतया नष्ट कर दिया। ई० पू० को दूसरी श० में बोयेशिया निवासियों ने मेसीडोनिया का रोम के विरुद्ध पक्ष लिया परन्तु इस कार्य से उनको रोम के क्रोध द्वारा बड़ी हानि उठानी पड़ी। कुछ समय पश्चात् १४६ में उन्होंने अकाइयन लीग के विद्रोह का पक्ष लिया जिसके कारण बोयेशिया लीग को सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया अब बोयेशिया रोमन राज्य का एक अंग बन गया। कुछ दिनों में बोयेशिया का नाम इतिहास के पृष्ठों से लोप हो गया।

लिपि : किर्चोफ़ ने इस लिपि के वर्णों का नाम 'लाल वर्ण' रखा। यह बोयेशिया के नगर – राज्यों में छठी शताब्दी में प्रचलित थे जो 'फ० सं० – ३३२' पर दिये गये हैं।

बोयेशिया की लिपि के वर्ण

अ	ब	ग	द	ए
फ़	ज़	इ	थ	ई
क	ल	म	न	स
ओ	प	र	स	त-ट
ऊ		फ		प्स

फलक संख्या – ३३२

आर्केडिया

इतिहास : प्राचीन काल में आर्केडिया (Arcadia) में पेलासग्यिन जाति के लोग निवास करते थे। ५५० ई० पू० में स्पार्टा ने आर्केडिया के मुख्य नगर – राज्य तीगिया (**Tegea**) को परास्त कर दिया। ४८० में आर्केडिया के नगर – राज्यों ने पर्शिया की सेना से युद्ध किया। ४२१ में उसकी एथेन्स से सन्धि हो गई। ४१८ ई० पू० में स्पार्टा से मन्तीनिया में युद्ध हुआ जिसमें आर्केडिया पुनः परास्त हुआ। जब ल्यूकत्रा में स्पार्टा की पराजय तथा थीबीज़ की विजय ३७१ में हुई, तब मन्तीनिया के राजा लाइकोमिडीज़ ने एकता की एक योजना बनाई। ३६८ में राज्यों के संघ की राजधानी मेगालोपोलिस[1] (**Megalopolis**) को बनाया गया।

३६५ ई० पू० में आर्केडियन्स ने ओलिम्पिया[2] (**Olympia**) पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् राज – नैतिक तथा सामाजिक छोटे छोटे युद्ध होते रहे। आर्केडियन – नगर – राज्य ३६२ ई० पू० में आपस में ही मन्तीनिया में युद्ध करते रहे। इन झगड़ों को रोकने के लिए पुनः एक संघ बना जो ३०० ई० पू० तक जीवित रहा। तदनन्तर सिकन्दर के उत्तराधिकारी आर्केडिया पर शासन करते रहे परन्तु मेगालोपोलिस मैसीडोनिया के विरुद्ध रहा। कुछ दिनों पश्चात् मैसीडोनिया का प्रभाव भी समाप्त हो गया और अकाइयन लीग की शक्ति बढ़ गई। २३५ ई० पू० में लिडिया के निवासियों ने मेगालोपोलिस को भी साथ अकाइयन लीग में सम्मिलित कर लिया। तत्पश्चात् आर्केडिया अन्य नगर – राज्यों के इतिहास के साथ सम्मिलित हो गया।

लिपि : किर्चोफ़ ने इस लिपि के वर्णों का नाम लाल वर्ण – रखा था। इन वर्णों का प्रयोग आर्केडिया के नगर राज्यों में पाँचवीं शताब्दी में हुआ करता था। इसकी दिशा भी बाएँ से दाएँ थी। 'फ० सं० – ३३३' पर आर्केडिया के वर्ण दिये गये हैं। उसी के साथ ग्रीक साहित्यिक काल (**Classical Period**) के वर्ण भी दे दिये गये हैं। पहले कालम में आर्केडिया की लिपि तथा दूसरे में साहित्यिक काल की लिपि दी गई है।

ग्रीक के आधुनिक वर्ण : इस चित्र में ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण दिये गये हैं जो मुद्रण में प्रयोग किये जाते हैं। इसमें छोटे व बड़े – दोनों प्रकार के वर्ण दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त वर्णों के नाम भी दिये गये हैं (फ० सं० – ३३४)।

१—वर्णों की ध्वनि।
२—बड़े वर्ण (Capital letters)।
३—छोटे वर्ण (Small letters)।
४—उनके नाम।

---

1. पोलिस (**Polis**) के अर्थ हैं नगर राज्य। मेत्रोपोलिस या मेट्रोपोलिस (**Metropolis**) 'मात्र' शब्द से 'मेत्रो' अर्थात् जहाँ नगर का जन्म हुआ अर्थात् मुख्य नगर। ऐक्रोपोलिस (ऐक्रो के अर्थ हैं ऊँचा) इस कारण ऊँचे पर बना रक्षा केन्द्र (**Acropolis**) अर्थात् गढ़। नेक्रो पोलिस (**Necropolis; Nekros** = मृत) अर्थात् मुर्दों का नगर = क़ब्रस्तान।
2. ७७६ ई० पू० में सर्वप्रथम खेल – कूद की विश्व प्रतियोगिता का यहीं से जन्म हुआ।

आर्केडिया एवं साहित्यिक काल के वर्ण

अ	A A	A	स	+	Ξ
ब	B	B	ओ	O	O
ग	< C	Γ	प	Π Π	Π
द	D Δ D	Δ	स		Ϡ
ए	Ɛ E	E	क़	Ϙ	ϙ
ज़	I	I	र	R	P
इ	日	H	श	ϟ Ƹ	Σ
थ	⊕	⊙	त	T	T
ई	I	I	व	V	Y
क	K	K	फ		Φ
ल	Λ Λ	Λ	च	Ψ	X
म	M	M	प्स	Ж	Ψ
न	N	N	उ		Ω

फलक संख्या - ३३३

पठनीय सामग्री :

Botsford, G. W. and Robinson, C. A. : Hellenic History (1956).

Buckley, C. : Greece and Crete (1952).

Bury, J. B. : A History of Greece (1951).

Carpenter, R. : 'The Antiquity of the Greek Alphabet'—American Journal of Archaeology—XXXVI (1933).

Ibid. : 'The Greek Alphabet Again' American J. of Arch. XLII (1969).

Casson, S : Essays in Aegean Archaeology (Oxford—1927).

Glotz, G. : Aegean Civilization (1925).

Hall, H. R. : The Oldest Civilization of Greece (1908).

Harland, J. P, : 'The Date of Hellenic Alphabet'—University of North Carolina Studies in Philology—XLII (1945).

Hood, M. S F. : The Home of Heroes (London – 1967).

Leake, W. M. : Travels in Northern Greece (1835).

Neill, J. G. O. : Ancient Corinth (1930).

Ridgeway, W. : Early Age of Greece (1901).

Roberts, E. S. and Gardner, E. A. : An Introduction to Greek Epigraphy, 2. Vols. (Cambridge—1905).

Schwnrz, B. : 'The Phaistos Disk'—Journal of the Near Eastern Studies, XVIII (1959).

Stillwell, A .N : 'Corinth' – American Journal of Archaeology, XXXVII (1933).

Tarn, W. W. : Hellenistic Civilization (1932).

Thomson, E. M. : Hand book of Greek and Latin Palaeography (London—1906).

Ibid : An Interoduction to Greek and Latin Palaeog.aphy (Lond.—1912).

Ullman, B. L. : 'How Old is the Greek Alphabet ?' American Journal of Archaeology, XXXVIII (1933).

□

इटली

इटली देश प्राचीन काल में एक सम्पूर्ण देश नहीं था। यहाँ भी नगर – राज्य थे तथा उनकी अपनी लिपियाँ भी थीं। उन्हीं नगर – राज्यों का वर्णन नीचे दिया गया है।

इटरूरिया

इतिहास : अभी तक यह प्रमाणित नहीं हो सका है कि एट्रस्कन (Etruscan) लोग कौन थे और कहाँ से आये तथा उनकी भाषा क्या थी। इन पहेलियों को हल करने के लिये विद्वानों ने अपने अपने मत इस प्रकार प्रकट किये हैं :—

हेरोडोटस के अनुसार : ई० पू० की नवीं शताब्दी में लीडिया में अती (Aty) का पुत्र मनेज़ शासन करता था। उसी काल में एक अकाल पड़ा जो लगभग २८ वर्ष तक रहा। खाद्य पदार्थों की इतनी कमी हुई कि राजा ने यह निश्चय किया कि देश के आधे निवासी किसी अन्य देश को चले जायें। इस बात का निर्णय करने के लिये भाग्य का सहारा लेना पड़ा और लाटरी डाली गई जिसमें स्वयं राजा तथा उसका पुत्र भी सम्मिलित हुए। पुत्र का नाम टाईरेनस (Tyrhenus) था। जाने वालों में पुत्र का नाम निकला और वह अन्य नागरिकों के साथ स्मिर्ना (Smyrna), जो समुद्र के किनारे पर स्थित था, पहुँचा और सब लोगों ने मिल कर जलपोत बनाना आरम्भ कर दिये। तत्पश्चात् उन लोगों ने अपने सारे सामान को उस में लाद दिया और पश्चिम की ओर अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। कुछ दिनों की यात्रा के पश्चात् वे लोग ओंब्रिकी पहुँचे जहाँ वे लोग बस गये और उन्होंने नगर – राज्यों की स्थापना की। उसी भू भाग को इतिहास में इटरूरिया सम्बोधित किया जाता है।

डायोनीसियस[1] (Dionysius), जो हेलीकारनेसस (Halicarnasus) का एक प्रसिद्ध इतिहासकार था, के अनुसार एट्रस्कन इटली के ही प्राचीन निवासी थे तथा उनकी भाषा अनोखी थी।

एफ़० दि संसुरे : (F. de Sanssure) के अनुसार यह लोग एशिया निवासी थे।

वी० थामसेन : (V. Thomsen) के अनुसार यह लोग काकेशियन जाति के थे।

इन मतभेदों के होने पर भी अब यह धारणा बन चुकी है कि यह लोग ग्रीस की ओर से ही आये क्योंकि इनकी लिपि में ग्रीक लिपि के वर्ण दृष्टिगोचर होते हैं। ई० पू० की सातवीं शताब्दी तक इन लोगों ने इटरुरिया में अपना एक राज्य – संघ स्थापित कर लिया था जिसमें लगभग १२ नगर – राज्य सम्मिलित थे। इस संघ की राजधानी तारकुइनिया (Tarquinia) तथा कायरी – (Caere) – आधु० कर्वेतरी (Cerveteri), वीआइ (Veii), क्लूसियम (Clusium), पापूलोनिया (Populonia), वेतूलोनिया (Vetulonia) आदि मुख्य थे। जहाँ यह आकर बसने लगे थे वहाँ के मूल निवासी विल्लोनोवन (Villonovans) थे, तथा दक्षिण की ओर के, जिसको बाद में लैटियम (Latium) सम्बोधित करने लगे, मूल निवासी सबीनी (Sabine) थे।

---

१. इस का काल ई० पू० की प्रथम शताब्दी है।

यह दो प्राचीन जातियाँ कृषि करती थीं तथा भेड़ों को पालती थीं। यह दोनों जातियाँ सभ्य थीं और इनके प्रजातंत्र राज्य थे प्रत्येक ग्राम की अपनी सभा थी और वह स्वतंत्र थे।

लगभग आठवीं श० में जिस प्रकार इटरूरिया में नगर – राज्य स्थापित हो गये उसी प्रकार लैटियम में भी ६ नगर – राज्य स्थापित हुये। अब लैटियम व इटरूरिया के नगर – राज्यों में युद्ध आरम्भ होने लगे थे। दो शताब्दियों में, पूर्व से अब तक, इटरूरिया पर्याप्त उन्नति कर चुका था। उसने अपने नगर – राज्यों की सुरक्षा के लिये नगरों के चारों ओर बड़ी दीवारों तथा छोटे छोटे गढ़ों का निर्माण करवा लिया था। उनके पास कुशल सैनिक तथा आज्ञाकारी भूमिदार तथा कृषिक थे। वे लोग बड़े परिश्रम तथा कुशलता से कृषि करते थे। वे लोग खानों से लोहा व तांबा आदि निकाल कर उससे सुन्दर सुन्दर वस्तुयें बनाकर उद्योग व व्यापार में भी उन्नतिशील हो गये थे। फ़िनीशिया व ग्रीस से व्यापार होता था। देश समृद्ध हो रहा था।

रोम का नगर – राज्य एट्रस्कन शासकों के ही अन्तर्गत था। इसका प्रथम शासक रोमूलस (Romulus) था, संभवतः उसी के नाम पर रोम नाम पड़ा था। इसके चारों ओर भी लगभग ६ मील लम्बी दीवार थी जिसमें लगभग दो लाख मनुष्य सुरक्षित रह सकते थे। एट्रस्कन पूरे लैटियम पर राज्य करना चाहते थे। इस कारण लैटियम के कुछ नगर – राज्यों से युद्ध भी होते रहते थे। उनके नगरों के नाम गबीआइ (Gabii), अरीकिया (Aricia) तथा आर्दिया (Ardea) आदि थे। अब लैटियम राज्यों का एक पृथक संघ बन गया था।

प्राचीन इटली के नगरों की सूची

क्रम संख्या	नगरों के नाम — प्राचीन	नगरों के नाम — आधुनिक	क्रम संख्या	नगरों के नाम — प्राचीन	नगरों के नाम — आधुनिक
१	मेस्साना		२२	क्लूसियम	क्यूसी
२	नियपोलिस	नेपिल्स	२३	फ़्लोरेंतिया	फ़िरेंज़े
३	नोला		२४	अग्नोन	
४	कुमाय	कीमाय	२५	हिस्टोनिया	वास्तो
५	कैसिलिनम	कपुआ	२६	पियांसेज़ा	
६	पोम्पेआइ		२७	माग्रे	
७	रोमा	रोम	२८	आर्दिया	आर्दियाटाइन केव्स
८	अरीकिया		२९	लुगानो	
९	गबीआइ		३०	कार्थेज	ट्यिूनिस
१०	प्रायनेस्ते	पैलेस्ट्राइन	३१	किर्ता	
११	टीबुर	टिवोली	३२	सीराकूज़	
१२	वीआइ	फ़ार्मेलो	३३	जेनुवा	जेनोवा
१३	कायरे	कर्वतरी	३४	सोन्द्रियो	
१४	तारकुइनी	तारकुइनिया	३५	बोल्ज़ानो	
१५	वेंतूलोनिया		३६	अगरम	ज़गरेब
१६	पापूलोनियम	पापूलोनिया	३७	विनीज़िया	वेनिस
१७	फलेरीआइ	सिविटा कैस्टिलाना			
१८	टूडर	टोडी			
१९	इगूवियम	गुब्वियो			
२०	वोलसिनीआइ	बोलसेना			
२१	टस्कोनेला	टस्केनिया			

प्राचीन इटली का मानचित्र

परन्तु इस संघ का नेता तारकुइनिया – राजवंश का ही शासक था। ५०६ ई० पू० में रोम व कार्थेज के मध्य प्रथम संधि हुई। यह संसार का सर्वप्रथम प्रलेख (document) था।

इटरूरिया में प्रजातंत्र नाम मात्र था। सभायें बहुत कम होती थीं परन्तु लैटियम में प्रजातंत्र सुचारु रूप से कार्य करता था। लैटियम के नगर – राज्य जब तारकुइनी – शासकों के हाथ आये तब नागरिक एक प्रकार के दास बन गये। ५०६ ई० पू० (अब परम्परानुगत इसी को मानने लगे) में लैटियम के नगर – राज्यों ने एट्रस्कन-शासन के विरुद्ध विद्रोह इस बात पर कर दिया कि वे भवनों के निर्माण में नागरिकों से बेगार करवाते थे। इस विद्रोह के कारण उनको रोम छोड़ना पड़ा परन्तु फिर भी एट्रस्कन आक्रमण करते ही रहते थे। बीच में क्लूसियम के शासक लार्स पोर्सेन्ना ने कुछ दिनों के लिए विजय प्राप्त कर ली थी परन्तु ४९६ ई० पू० में एक युद्ध हुआ जिसने एट्रस्कन शासकों का सदैव के लिये रोम पर से शासन समाप्त कर दिया। तत्पश्चात् लैटियम का एक स्वतंत्र राज्य – संघ बन गया जिसका नेता रोम था। अब शनैः शनैः रोम शक्तिशाली होता गया।

कहाँ तो एट्रस्कन रोम (लैटियम) को सभ्य बनाने में उनके गुरु तथा शासक थे परन्तु अब दिशा परिवर्तित होने लगी। ३९६ ई० पू० में रोम ने एट्रस्कन का मुख्य नगर वीआइ अपने अधीन कर लिया। यह नगर रोम से केवल १० मील उत्तर की ओर था। कुछ दिनों पश्चात् कपुआ (Capua) तथा फ़्लेरीआइ (Flerii) ने भी रोम की अधीनता स्वीकार कर ली।

इधर दक्षिण की ओर से सिसली (Sicily) निवासी ग्रीक लोगों ने तथा उत्तर की ओर से केल्ट्स (Celts), कुछ लोग सेल्ट्स भी उच्चारण करते हैं, की जातियों ने आक्रमण करना आरम्भ कर दिये। इन युद्धों में रोम की भी बड़ी हानि हुई। ३९० ई० पू० में वे लोग रोम को परास्त करके तथा बहुत सा सोना लेकर पुनः उत्तर की ओर कूच कर गये। तत्पश्चात् रोम अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने लगा। उसने एक एक करके इटरूरिया के नगरों को अपने अधीन करना आरम्भ कर दिया था। ई० पू० की चौथी शताब्दी के अन्त तक उसने सारे नगरों को अपने अधीन कर लिया था और ३०८ ई० पू० में तारकुइनी शासन को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार एक प्राचीन सभ्यता, जिसने एक दिन रोम को सभ्य बनाया था, का उसी रोम द्वारा अन्त हो गया।

एट्रस्कन लिपि : ई० पू० की सातवीं शताब्दी से प्रथम श० तक के छोटे बड़े लगभग ९००० अभिलेख पुरातत्त्व वेत्ताओं द्वारा प्राप्त हो चुके हैं। इनमें से बहुत से पावली (Pauli – 1893) द्वारा प्रकाशित[1] हुए तत्पश्चात् डैनिएल्सन (Danielson) और हर्बिग (Herbig) द्वारा उत्खनित किये गये। जी० बौनामिकी (G. Buonamici) ने १९३२ में यह अभिलेख अपनी पुस्तक[2] में प्रकाशित करवाये। इन ९००० अभिलेखों (लगभग सभी दाह संस्कार से सम्बन्धित छोटे छोटे अभिलेख हैं) पर केवल नाम अंकित हैं। इनमें से केवल ९ अभिलेख लम्बे हैं और इनमें से भी तीन उल्लेखनीय हैं जो निम्नलिखित हैं :—

१. एक मिट्टी की बनी मुद्रा है जिस पर ३०० शब्द उत्कीर्ण किये हुये हैं।

२. दूसरी पाटिया बछड़े के यकृत को आकृति की है। जिस पर देवी देवताओं के नाम अंकित हैं (फ० सं० – ३४५)।

३. तीसरी कपड़े पर लिखी हुई पाण्डुलिपि है जो पहले पूरी और गोल लिपटी हुई थी पर बाद में काट काट कर एक मिस्री – स्त्री की ममी को लपेटने के लिए, जो ग्रीक रोमन युग (प्रथम शताब्दी ई० पू०) की थी – प्रयुक्त

1. Corpus Inscriptionum Etruscarum (1893)
2. Buonamici, G. : Epigraphia Etrusca (Florence – 1932)

की जाती रही। इसमें १५०० शब्दों का एक लेख है, जो ज़गरेब (प्राचीन अगरम) के संग्रहालय में सुरक्षित रखा है। अभी तक इसका अनुवाद नहीं हो सका है।

इन अभिलेखों के रहस्योद्घाटन का शोधकार्य निम्नलिखित विद्वानों ने किया :—

हर्बिग (Herbig), बुग्गे (Bugge), टॉर्प (Torp), स्कुत्श (Skutsch), फ़ीज़ल (Fiesal), गोल्डमान (Goldmann) तथा ओल्शा (Olzscha)। इनके अतिरिक्त एट्रस्कन भाषा के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० पैलोटिनो (Palotino) ने दाह – संस्कार के अनेक अभिलेखों को साथ साथ रखा और उन शब्दों की सूची तैयार की जिनका प्रयोग बारम्बार हुआ है। उन शब्दों की संख्या लगभग २०० है। उनके अर्थ भी निश्चित हो चुके हैं। उसी तरह के कई वाक्यांशों के अर्थ भी अनुमान से जान लिये गये हैं।

द्विभाषी अभिलेख (लैटिन – एट्रस्कन) जो प्राप्त हुए वे इतने छोटे और कम हैं कि उनसे किसी प्रकार की कुंजी प्राप्त न हो सकी जो एट्रस्कन लिपि का रहस्योद्घाटन कर सकती। यह भाषा भारोपीय भाषाओं में नितांत विचित्र तथा भिन्न है। किसी जाति से भी एट्रस्कन की सजातीयता का निश्चित प्रमाण अभी तक नहीं मिला और न किसी भाषा से कोई समानता मिली। वर्णों के विषय में यह प्रमाणित हो चुका हैं कि प्राचीन लैटिन के वर्ण ग्रीक से लिये गये। इटरुरिया के दक्षिणी भाग से अनेक अलंकृत कलशों, थालियों, बर्तनों व प्लेटों पर तथा लघु – शिलाओं पर ग्रीक वर्णों से समानता रखने वाले वर्ण अंकित मिले हैं। इनका काल भी आठवीं तथा सातवीं श० निर्धारित हो चुका है। जो अंकित वर्ण प्राप्त हुये हैं उनको टेलर (Taylor) ने पेलासगियन[1] (Pelasgian) के नाम से तथा गार्ड थाउसन (Von Gard Thausen) ने प्रोटो टाइरेनियन[2] (Proto Tyrrhenian) के नाम से सम्बोधित किया है तथा किर्चोफ़ (१८८७) ने उनका नाम पश्चिमी (ग्रीक के) वर्ण रखा। यह वर्ण कालसिस[3] से चल कर सिसली पहुँचे उस समय कालसिस अपने कई उपनिवेश – नगर सिसली में स्थापित कर चुका था। ग्रीक निवासियों ने इटली के पश्चिमी किनारे के भूभाग पर कुमाय (Cumae), लगभग ई० पू० की नवीं शताब्दी में स्थापित किया था जहाँ बाद में नियोपोलिस स्थापित हुआ जिससे नेपिल्स (Naples) नाम निकला जो आज भी प्रचलित है। इसी स्थान से ग्रीक वर्णों को एट्रस्कन द्वारा अपनाया गया तथा इन्हीं वर्णों से लैटिन – फ़ैलिस्कन (Latin – Faliscan) का भी जन्म हुआ।

किर्चोफ़ की इस मान्यता का खण्डन करते हुये हैंमरस्ट्रोम (Hammerstrom) ने कहा कि लैटिन – फ़ैलिस्कन वर्ण एट्रस्कन के साथ नहीं जन्मे अपितु एट्रस्कन वर्णों से जन्मे तथा एट्रस्कन वर्णों का उद्भव प्रोटो – टाइरेनियन वर्णों द्वारा हुआ। तदनन्तर एट्रस्कन वर्णों द्वारा इटली के उत्तर व दक्षिण में कई अन्य प्रकार के वर्णों का जन्म हुआ जिसके विषय में आगे लिखा जायेगा। इन मतभेदों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह बात निश्चित हो जाती है कि एट्रस्कन वर्ण ग्रीक वर्णों द्वारा ही विकसित हुए।

हैंमरस्ट्रोम के अनुसार B.D.O.X. वर्ण एट्रस्कन वर्णों में नहीं अपनाये गये परन्तु कुछ विद्वानों का मत इसके विरुद्ध हैं। एक (F) की ध्वनि के लिए लीडिया का एक वर्ण 8 लिया गया और इसी एक वर्ण के आधार पर एट्रस्कन की जन्मभूमि लीडिया मान ली गई।

---

1. ग्रीस के मूलनिवासी थे।
2. **Faulmann : Illustration Gesch der Schrift (Berlin – 1924) p – 239.**
3. कालसिस या खाल्किस (Chalcis – Khalkis) यूबिया का मुख्य नगर – राज्य था जिसने सिसली में लगभग 30 नगर अपने उपनिवेश बना कर स्थापित किये थे। इसके ग्रीस के अन्य नगर – राज्यों से युद्ध होते रहते थे। इस पर कई देशों का शासन रहा। अंत में इसका नाम कैस्ट्रो पड़ गया। 1894 के भूकम्प में इसका बहुत सा भाग नष्ट हो गया।

'फ० सं० – ३४३' पर एट्रस्कन वर्णो[1] का उद्भव टाइरेनियन लिपि (अर्थात पश्चिमी ग्रीक लिपि) द्वारा दिया गया है।

कम्पेनिया

इतिहास : कम्पेनिया लैटियम के दक्षिण में एक प्राचीन प्रान्त था जिसके मुख्य नगरों से ओस्कन (Oscan) लिपि के अभिलेख प्राप्त हुये हैं। कम्पेनिया का अपना कोई इतिहास नहीं है इस कारण उन नगरों के विषय में ही कुछ वृतांत दिया गया है।

कपुआ (Capua) : यह कम्पेनिया का प्राचीन मुख्य नगर था। इसका आरम्भिक नाम कैम्पस (जिसका विशेषण कैम्पेनस, जिससे कम्पेनिया बना) था और इसकी स्थापना ६०० ई० पू० में हुई। सैमिनी जातियों के आक्रमणों से ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में यहाँ से एट्रस्कन आधिपत्य उठ गया। ३४० ई० पू० में यह रोम के अधिकार में आ गया। १२३ ई० पू० के पश्चात् से यह रोम के एक निर्वाचित न्यायाधीश के शासन में रहा तदनन्तर ई० पू० की प्रथम श० में आगस्टस के अधीन आ गया। ४५६ ई० में गायसेरिक (Gaiseric) ने इसको नष्ट – भ्रष्ट कर दिया परन्तु पुनः इसका निर्माण हो गया। ८४० में मुसलमानों ने इसे नितांत नष्ट कर दिया। १२३२ में फ्रेड्रिक (Frederick II) ने यहाँ एक गढ़ का निर्माण करवाया। १५०२ में सीज़र बोगिया (Caesar Borgia) ने इसको परास्त किया। १८६० तक यह नेपिल्स के राज्य का एक भाग बना रहा तत्पश्चात् यह इटालियन राज्य में आ गया।

यहाँ के समाधि – स्थानों से पकी हुए मिट्टी की पाटियाँ प्राप्त हुईं जिनका काल सातवीं श० निर्धारित किया गया। यह ओस्कन लिपि में अंकित थीं। ३ पाटियाँ लैटिन लिपि में भी प्राप्त हुई। कुल १९ पाटियाँ यहाँ के उत्खनन से प्राप्त हुई।

नोला (Nola) **:** ५०० ई० पू० में यह नगर एट्रस्कन के अधीन था। ३२८ ई० पू० में इसने रोम के विरुद्ध युद्ध किया। ३१३ ई० पू० में रोम ने इसको अपने अधीन कर लिया। सामाजिक युद्ध में इसने समीनियों (Samnites) का साथ दिया परन्तु ८० ई० पू० में सुल्ला (Sulla) ने इसको पुनः रोम के अधीन कर दिया। आगस्टस ने इसको रोम का उपनिवेश बना लिया और यहीं उसकी मृत्यु हो गई। ४५५ ई० में इसको गायसेरिक ने तथा ८०६ ई० में मुसलमानों ने अपने अधीन रखा। तेरहवीं श० में मैनफ्रेड (Manfred) ने अपने अधिकार में कर लिया। पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं श० में भूकम्पों ने इसका सर्वनाश कर दिया। यहाँ से भी ओस्कन लिपि की कुछ पाटियाँ प्राप्त हुई।

पोम्पेआई (Pon peii) : इस नगर की हिरेकिलस (Heracles) ने स्थापना की। स्ट्राबो (Strabe)[2] के अनुसार पहले यहाँ ओस्कन लोग बसे तदनन्तर पेलासगियन तथा टाइरेनियन आकर बसे और अन्त में समीनी जाति के लोग आये। ८० ई० पू० में यह रोम के अधीन हो गया।

ई० सन् की प्रथम शताब्दी में यह नगर समृद्धि की चरम सीमा पर पहुँच गया था। सन् ६३ और ७९ के दो भूकम्पों ने इस नगर का सर्वनाश कर दिया और सारा नगर भूगर्भ में चला गया।

---

1. Pauli. : Studi Etruschi, Vol III, p. – 81.
2. इसका नाम ग्नेइयस पोम्पेइयस (Gnaeus Pompeius) था। भेंगी – दृष्टि के कारण इसका नाम स्ट्राबो पड़ा। इसने अनेक सामाजिक युद्ध किये। ८ ई० पू० में इसकी मृत्यु बिजली गिरने के कारण हो गई।

ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण

ध्वनि[1]	बड़े वर्ण[2]	छोटे वर्ण[3]	नाम[4]	ध्वनि[1]	बड़े वर्ण[2]	छोटे वर्ण[3]	नाम[4]
अ	Α	α	alpha	न	Ν	ν	nū
ब	Β	β	bēta	क्स	Ξ	ξ	xī
ग	Γ	γ	gamma	ओ	Ο	ο	omicron
द	Δ	δ	delta	प	Π	π	pī
ए	Ε	ϵ	epsīlon	र	Ρ	ρ	rhō
ज़	Ζ	ζ	zēta	स	Σ	σ ς	sigma
इ	Η	η	ēta	त	Τ	τ	tau
थ	Θ	θ ϑ	theta	उ	Υ	υ	upsilon
ई	Ι	ι	iōta	फ	Φ	φ	phī
क	Κ	κ	kappa	ख	Χ	χ	chī
ल	Λ	λ	lambda	प्स	Ψ	ψ	psī
म	Μ	μ	mū	ओ	Ω	ω	ōmega

फलक संख्या - ३३४

१५९४ – १६०० के मध्य एक गहरी नाली के निर्माण करने में दोमिनिको फोन्ताना (Domenico Fontana) को कुछ अभिलेख प्राप्त हुये। १७६३ में यहाँ वैज्ञानिक ढंग से उत्खनन हुआ और १८०६ में इस कार्य को शासकों ने रुकवा दिया। १८६१ में इटली – शासन के जी० फ़्योरेली (G. Fiorelli) ने पुनः उत्खनन आरम्भ किया और ओस्कन तथा ग्रीक लिपि के कुछ अभिलेख प्राप्त किये। कई अभिलेख विज्ञापन के रूप में दीवारों पर अंकित दृष्टिगोचर हुये। एक घर से तो पूरी एक पेटी अभिलेखों से भरी प्राप्त हुई। कई अभिलेख अग्नोन (Agnone) के ग्राम से भी प्राप्त हुए। यह ग्राम नोला व अबेल्दा के मध्य स्थित था।

जे० ज़्वेतेफ़ (J. Zwetaieff – 1878) के अनुसार, जो उपर्युक्त नगरों में ओस्कन लिपि की पाटियाँ मिली हैं, उनका काल ई० पू० की छठवीं व पाचवीं श० है। उनकी दिशा भी दाएँ से बाएँ है।

इसके अतिरिक्त ओस्कन लिपि के अभिलेख अपूलिया (Apulia), लुकेनिया (Lucania), मेस्साना (Messana – आधु० मेसीना), सेमनियम (समीनी जाति का निवास स्थान), फ़्रेन्तनी (Frentani), हर्पीनी (Herpini), पायलिग्नी (Paeligni), मर्रुकिनी (Marrucini), वेस्तिनी (Vestini), टूडर (आधु० तोडी) आदि से भी प्राप्त हुये हैं। ओस्कन का नामकरण रोमन द्वारा 'लिंगुआ ओस्का' (Lingua Osca) उस भाषा का हुआ, जो कम्पेनिया की एक जाति 'ओस्की' द्वारा बोली जाती थी।

'फ० सं० – ३३७' पर ओस्कन लिपि के वर्ण दिये गये हैं। इसकी दिशा दाएँ से बाएँ थी।

अंब्रिया

इतिहास : इटली के पूर्वी किनारे के निवासी अंब्रिया भाषा – भाषी थे, इसी कारण इस भूभाग को अंब्रिया कहते थे। ई० पू० की छठी श० में उनका मुख्य केन्द्र इगूवियम (Iguvium) था, इसका आधुनिक नाम **गुब्बियो है।** ई० पू० की तीसरी श० में यह रोम के (एक संधि द्वारा) अधीन हो गया। इलूरिया का राजा जेन्टियस तथा उसका पुत्र अपने देश से भाग कर यहीं आकर छिपा था। इटली के सामाजिक युद्ध के पश्चात् इगूवियम के विषय में कुछ नहीं सुना गया। ४१३ में एक ईसाई – धर्म – पुजारी ने इसके विषय में कुछ वृतांत सुनाये। ५५२ ई० में गोथ जाति के सैनिकों ने इसको नष्ट कर दिया परन्तु नार्सेज़ के सहयोग से यह पुनः बन गया। इगूवियम अपने प्राचीन सिक्कों तथा पाटियों के लिये प्रसिद्ध है।

लिपि : १४४४ में ९ पाटियाँ, जिन पर अंब्रियन लिपि अंकित थी, प्राप्त हुईं, जिनको वहाँ की नगर – पालिका ने १४५६ में मोल ले लिया। इसके पूर्व ही दो पाटियाँ १५५४ में वेनिस पहुँच गई थीं। १७२४ में प्रथम बार वे प्रकाशित हुईं। ओतफ़्रीड मुलर (Otfried Muller) ने अपनी पुस्तक[1] में बताया कि यह लिपि एट्रस्कन से समानता रखती है परन्तु भाषा इटालियन है। कार्ल लेप्सियस ने अपने निबन्ध[2] में अंब्रियन वर्णों की ध्वनियों को निर्धारित किया है। इस पर यस० टी० औफ़रेख़्त (S. T. Aufrecht) तथा किर्चोफ़ (J. W. H. Kirchoff) ने १८४९ – ५१ में अपनी एक वैज्ञानिक व्याख्या प्रकाशित की। १८७५ में एम० ब्रील (M. Breal) ने कुछ अधिक प्रकाश डाला और अन्त में बुखेलर (F. Bucheler) ने १८८३ में 'अंब्रिका' (Umbrica) के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित कर दी।

---

1. Die Etrusker (1828).
2. 'De Tabulis Egubinis (1833).

प्रोटो-टाइरेनियन द्वारा एट्रस्कन वर्णों का उद्भव

ध्वनि	प्रोटो-टायरेनियन	एट्रस्कन	ध्वनि	प्रोटो-टायरेनियन	एट्रस्कन
अ	A	A A	न	N	И Ч
ब	B		स	⊞	
ग	< C	Ɔ 7 (क)	ओ	O O	
द	D		प	P	7
ए	E	∃	श	Ч M	⋈
व	F		क़	◖ ♀	♀ Φ
ज़	I	I ǂ ±	र	P	ᗡ 9
ह	⊟	⊟ 目	स	ξ	ϟ Ʒ
थ	⊕ ⊙	⊗ ⊙	त	T	+
ई	I	I	उ	Y Y	Y V Y
क	K	ꓘ	फ	Φ	⦶
ल	L	⅃	ख	Ψ	Ψ ↓
म	M	M M	फ़	लीडिया के चिन्ह हैं →	8 8 8 7

ओस्कन लिपि के वर्ण

अ	ब	ग-क	द
ए	व	त्स	ह
ई	क	ल	म
न	प	र	स
त	उ	फ	ऊ

फलक संख्या – ३३७

अंब्रियन लिपि के वर्ण

अ	ब	ग	द
ए	व	ह	इ
क	ल	म	न
प	र	स	त
उ	फ	र्स	च

फलक संख्या – ३८

सात कांसे की पाटियों पर दाह – संस्कार के पाठ अंकित हैं जिनमें से लगभग आधे अंब्रियन भाषा के तथा आधे लैटिन भाषा के हैं।

इसके अतिरिक्त भी टोडी (**Todi**) के प्राचीन नगर से, जहाँ अंब्रियन रहा करते थे – जिसका आधु – निक नाम टूडर (**Tuder**) है और जो इटली के पिगूरिया (**Peguria**) प्रांत का एक नगर है – कुछ प्राचीन कांसे की पाटियां अंब्रियन लिपि में प्राप्त हुई हैं। 'फ० सं० – ३३८' पर इस लिपि के वर्ण दिये गये हैं।

फ़लेरीआइ

इतिहास : फ़लेरीआइ (Falerii) इटरूरिया का एक प्राचीन नगर दक्षिण की ओर था। यह एट्रस्कन के १२ नगर – राज्यों में से एक था। प्रथम प्यूनिक युद्ध में इसने रोम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसके कारण रोम ने २४१ ई० पू० में इसका अर्ध – भाग नष्ट कर दिया। तदनन्तर एक नवीन नगर का निर्माण हुआ जो पहाड़ी के नीचे स्थित है। १०६४ में यहाँ के निवासियों ने प्राचीन नगर को छोड़ दिया और नये नगर में बस गये। फ़लेरीआइ नगर का आधुनिक नाम सिविटा कैस्टेलाना (**Civita Castellana**) है।

लिपि : यहाँ के उत्खनन से जो अभिलेख प्राप्त हुए उनकी लिपि तथा भाषा लैटिन से मिलती है। इसकी दिशा दाएँ से बाएँ है। इस लिपि का नाम फ़ैलिस्कन (Faliscan)[1] है।

'फ० सं० – ३३९' पर इसके वर्ण दिये गये हैं। इसकी दिशा भी दाएँ से बाएँ थी।

रेशिया

इतिहास : प्राचीन रेशिया (Raetia) का भूभाग दक्षिणी आल्प्स पर्वत में स्थित था। यहाँ के निवासी एट्रस्कनों से सम्बन्धित थे। इस भाग में तीन प्रकार की लिपियों के अभिलेख प्राप्त हुये जिनको एक वर्ग में रख दिया गया और नगरों के नाम पर उन लिपियों का भी नामकरण कर दिया गया।

बोल्ज़ानो (Bolzano) नगर बोल्ज़ानो प्रांत की राजधानी था। सातवीं ईसवी में बोल्ज़ानो बवरिया के सामन्त के अधीन था। १०२७ ई० में यह महाराजा कोनराड द्वितीय (Conrad II) द्वारा ट्रेन्ट के बिशप को दान – स्वरूप भेंट कर दिया गया। १०२८ में स्थानीय बिशप (सामन्त) के अधीन हो गया। १४६२ में बिशप ने एक त्यागपत्र द्वारा बोल्ज़ानो को जर्मनी के एक प्रांत हैब्सबर्ग (Habsburg) को सौंप दिया जो १९१८ तक उसी के अधीन रहा।

लिपियाँ : यहाँ के उत्खनन से प्राप्त अभिलेखों की लिपि का नाम भी बोल्ज़ानो रख दिया गया।
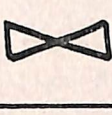
बोल्ज़ानो : इस लिपि की वर्णमाला लेयेऊन (**M. Lejeune**) ने १९५७ में प्रस्तुत की जो 'फ० सं० – ३४०' पर दी गई है।

रेशिया : की दो अन्य प्रकार की लिपियाँ माग्रे (Magre) व सोन्द्रियो (Sondrio) से प्राप्त हुईं। माग्रे की वर्णमाला 'फ० सं० – ३४१' पर तथा सोन्द्रियो की वर्णमाला 'फ० सं० – ३४२' पर प्रस्तुत की गयी है।

इन तीनों प्रकार की लिपियों का काल ई० पू० की तीसरी शताब्दी निर्धारित किया गया है। इनमें B. D. G. के वर्णों का प्रयोग नहीं होता था।

---

1. Stolte, E.: Glotta, 17 (1928), p–113.

फैलिस्कन लिपि के वर्ण

अ	ब	ग-क	द
ए	फ़	त्स	ह
थ	ई	क	ल
म	न	ओ	प
स	क़-क	र	स
त-ट	उ	क्स	ख

फलक संख्या – ३३९

बोल्ज़ानो लिपि के वर्ण

अ	ए	व
ह	थ	ई
क	ल	म
न	प	स्स
र	स	त
उ	फ	ख

फलक संख्या – ३४०

माग्रे लिपि के वर्ण

अ	ए	व
ह	थ ई	क
ल	म	न
प	स्स	र
स	त	उ
फ	ख	ज़

फलक संख्या – ३४१

सोन्द्रियो लिपि के वर्ण

अ	ए	व
ज़	इ	ई
क	ल	म
न	ओ	प
स्स	र	स
त		उ

फलक संख्या – ३४२

लुगानो लिपि के वर्ण

अ	ए	ज़
इ	क	ल
म	न	ओ
प	स्स	र
स	त	उ
फ	ख	ई

फलक संख्या – ३४३

वेनेती लिपि के वर्ण

अ	ए	व	ज़
ह	थ	इ	क
ल	म	न	ओ
प	स्स	र	स
त	उ	फ	ख
	ई		

फलक संख्या – ३४४

उत्तरी इटली

इटली के उत्तर की ओर दो अन्य प्रकार की लिपियों के अभिलेख प्राप्त हुए जिनके नाम भी उन नगरों के नाम पर दिये गये जहाँ से वे प्राप्त हुए ।

लुगानो : एक लिपि का लुगानो (Lugano) या लेपोन्टाइन (Lepontine) नाम रखा गया । स्वीट्ज़रलैण्ड (Switzerland) के दक्षिणी भाग के एक प्रांत लेपोन्टाइन में एक बड़ी झील है जिसका नाम लुगानो है और उसी के किनारे पर बसा एक नगर भी लुगानो के नाम से स्थित है ।

वेनेती : दूसरे प्रकार की लिपि का नाम वेनेती (Venetic) रखा गया क्योंकि इसके अभिलेख, जो लगभग २०० की संख्या में थे, वेनिस नगर से प्राप्त हुये । लगभग ई० पू० की चौथी श० में इन वेनिस निवासियों की भाषा वेनेती थी । इनकी लिपि में भी 'B. D. G.' के वर्ण नहीं थे । वे लोग 'ब' (B) की ध्वनि के स्थान पर 'फ़' (F) की ध्वनि का प्रयोग करते थे, उदाहरणार्थ 'Boius' – बोइयस को फ़ोइयस लिखते थे, ईगो (ego) को ईखो लिखते थे तथा 'द' (D) के स्थान पर 'ज़' (Z) का प्रयोग करते थे । दिशा भी दाएँ से बाएँ थी । इन दोनों को बॉटलिस्ती (Botlisti) ने १९३४ में पढ़ा है । 'फ० सं० – ३४३' पर लुगानो के वर्ण दिये गये हैं ।

तथा 'फ० सं० – ३४४' पर वेनेती लिपि के वर्ण दिये गये हैं । दोनों लिपियों की दिशा दाएँ से बाएँ थी ।

कांसे की पाटिया

इटली के पियासेंज़ा नामक स्थान से एट्रूस्कनों द्वारा कांसे पर बनाया गया बछड़े के यकृत का नमूना प्राप्त हुआ । इस पर एट्रूस्कन देवो – देवताओं के नाम उत्कीर्ण हैं । इसका प्रयोग शिक्षार्थी ज्योतिषियों को प्रशिक्षित करने के लिये किया जाता था ।

लिपि में एट्रूस्कन वर्ण हैं परन्तु भाषा का ज्ञान न होने के कारण अभी तक निश्चित रूप से पाटिया का रहस्योद्घाटन न हो सका ।

'फ० सं० – ३४५' पर पाटिया का चित्र दिया गया है ।

लैटियम

इतिहास : लैटियम (Latium) इटली के उस प्राचीन भू भाग को कहते हैं जो इटली के पश्चिमी किनारे पर स्थित था । इसके उत्तर में एट्रूस्कन के नगर – राज्य थे जिसको इटरूरिया के नाम से सम्बोधित किया जाता था ; लैटियम का मुख्य नगर रोम (रोमा) था । इसका इतिहास इटरूरिया के इतिहास से पृथक नहीं किया जा सकता इसी कारण इटरूरिया के इतिहास के साथ सम्मिलित कर दिया गया है ।

लैटियम की लिपि व भाषा का नाम लैटिन था । आरम्भ में मिस्र के चित्रों को हेब्रू भाषा के नाम देकर सिनाइ के द्वारा फ़िनीशियनों ने अपने स्वर – रहित २२ वर्णों का निर्माण किया । ग्रीस निवासियों ने ई० पू० की लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में कैडमस द्वारा फ़िनिशिया के १९ वर्णों द्वारा अपनी लिपि का विकास किया । इस विकास काल में अनेक परिवर्तन हुये और अंत में फ़िनीशिया के १९ वर्ण ग्रीक लिपि में स्थापित हो गये और उन्होंने अपनी भाषा की ध्वनि के अनुसार ५ वर्णों के – उ, फ़, ख़, प्स, ऊ (उनके नाम – उपसीलोन, फ़ी, ख़ी, प्सी और ओमेगा थे) – चिह्नों का आविष्कार करके अपनी २४ वर्णों की वर्णमाला को प्रयोगात्मक बना लिया (फ० सं० – ३२४) ।

कांसे की पाटिया

फलक संख्या – ३४५
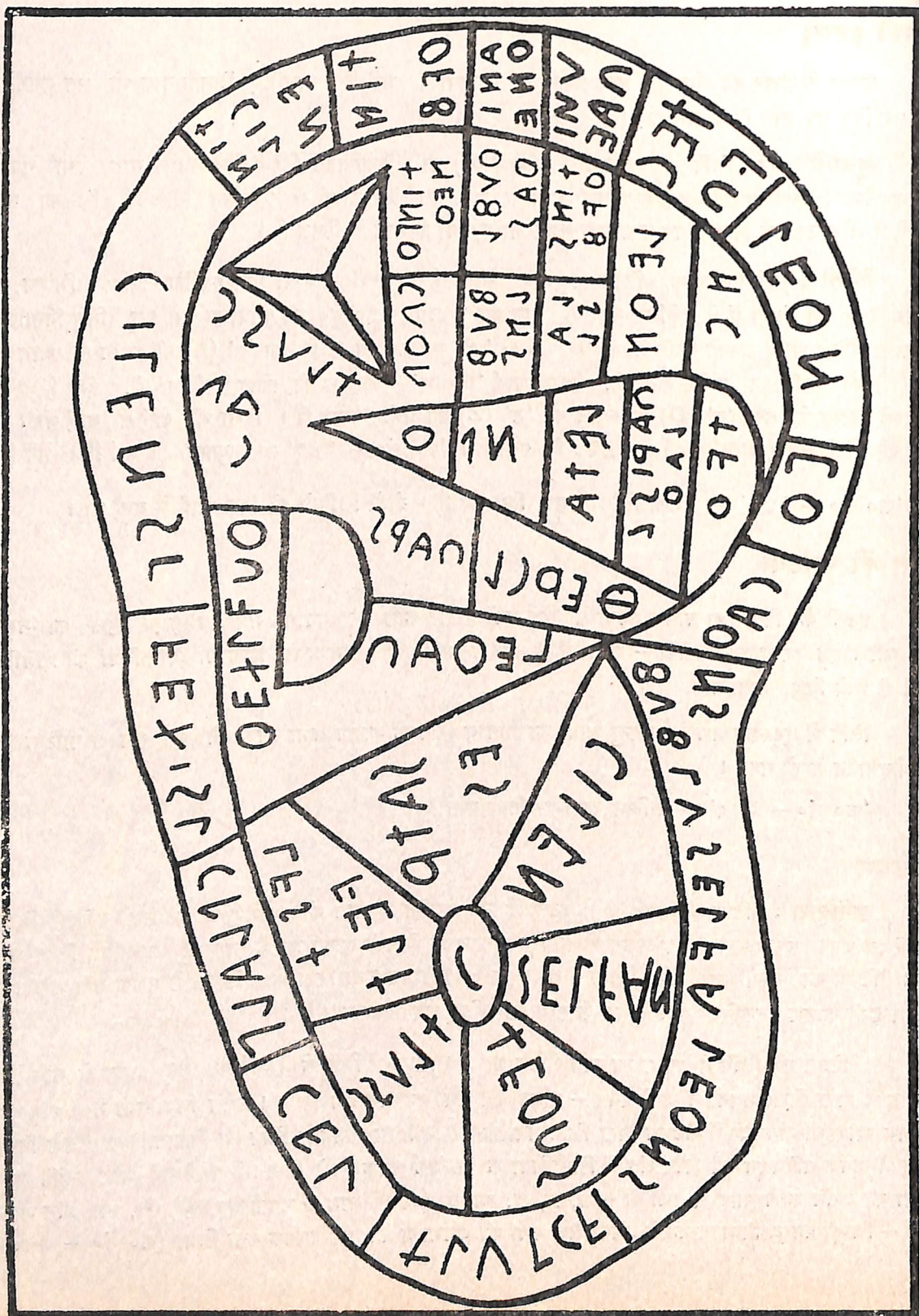
लिपि : जब ग्रीक लिपि के वर्ण एट्रस्कनों द्वारा लैटियम पहुँचे जहाँ लैटिन भाषा थी तब ग्रीक वर्ण लैटिन भाषा के लिये प्रयोग किये जाने लगे। परन्तु उनमें अनेक परिवर्तन किये गये क्योंकि जो ध्वनियाँ ग्रीक वर्णों की थीं वे सब लैटिन भाषा के लिये उपयुक्त नहीं थीं। इस कारण F. Q. जो ग्रीक लिपि में छोड़ दिये गये थे वे लैटिन में ले लिये गये। G. के स्थान पर C को ले लिया गया तथा Z के स्थान पर G को कर दिया गया। पहले तो Z को छोड़ दिया गया परन्तु लैटिन भाषा में एट्रस्कन एवं ग्रीक भाषा के शब्दों का प्रयोग होने लगा तो लैटिन में पुनः Z को ले लिया गया और अंत में रख दिया गया। V की ध्वनि को परिवर्तित करके जो पहले U की थी 'व' कर दी गई और उसको गोल कर U का वर्ण बना लिया गया। I. E. की ध्वनि के लिये Y बना लिया गया। लगभग १००० ई० में I को विभाजित करके I और J बना लिया गया। साथ साथ U को दुगना दोहरा करके डबल + यू = डबल्यु = W बना दिया गया। इस प्रकार हेर – फेर करके प्राचीन लैटिन के २१ वर्णों को २६ बना लिया गया जो आज रोमन लिपि के नाम से प्रसिद्ध हैं और लगभग संसार की आधी जन संख्या इनका प्रयोग करती है।

लैटिन (लातीनी) वर्ण : इस चित्र के प्रथम कालम में वर्णों की ध्वनियाँ[1] दी गई हैं। दूसरे में प्राचीन लैटिन (Archaic Latin) दी गई है जिसका काल ई० पू० की पाँचवीं व चौथी शताब्दी के मध्य का माना जाता है। तीसरे कालम में साहित्यिक काल (Classical period) के वर्ण दिये गये हैं। चौथे में, जो नये वर्ण जोड़े गये हैं, दिये हैं तथा पाँचवें में जैसे वर्तमान काल में वर्णों का स्थान है, उस प्रकार दिये गये हैं।

३१२ ई० पू० में एपियस क्लाडियस कैकस (Appius Claudius Caecus) ने, जब Z की ध्वनि का कार्य S की ध्वनि से चलने लगा, तो Z के वर्ण को पृथक कर दिया। ग्रीक भाषा में Q O का प्रयोग किया जाता था जिसको लैटिन में Q U का प्रयोग कर दिया गया। क्योंकि एट्रस्कन में 'O' नहीं था। Q अकेला कार्य नहीं कर सकता था (फ० सं० – ३४६)।

मैनियस की कटार (Manios Clasp) : लैटिन का प्राचीनतम् अभिलेख फ़ोरम रोमानम[2] (Forum Romanum) से एक काले पत्थर पर उत्कीर्ण १८६६ में प्राप्त हुआ था परन्तु वह इतना मिट चुका था कि उस का रहस्योद्घाटन करना कठिन था। उसकी लेखन पद्धति हल – चलने वाली (Boustropheden Style) [3] थी।

इसके अतिरिक्त प्राचीन अभिलेखों में एक कटार[4] प्राप्त हुई। जिसका काल ६०० ई० पू० का है। इसका नाम 'मैनियस क्लैस्प'[5] है। संभवतः कोई उत्तम प्रकार का कलाकार रहा होगा जिसका नाम मैनियस था और

---

1. लैटिन वर्णों की ध्वनियाँ अनेक हैं। उदाहरणार्थ A. की ध्वनियाँ हैं—अ, आ, ए, ऐ; D=द, ड; C=क, स; E=ए, इ; G=ग, ज; O=ओ, अ, आ आदि।
2. यह दो पहाड़ियों – पैलाटीन व कैपिटोलीन – के मध्य स्थित मैदान का नाम था। यह शब्द स्टैडियम के लिये प्रयोग किया जाने लगा जहाँ नीचे खेल – कूद होते थे और ऊपर रोम – निवासी उनको देख देख कर आनन्द लेते थे। तदनन्तर यह शब्द नगरों के बाजारों के लिये भी प्रयोग में आने लगा।
3. जब कोई अभिलेख दाएँ से बाएँ या बाएँ से लिखा जाये, तदनन्तर पंक्ति समाप्त होने पर पुनः उसकी दिशा परिवर्तित कर दी जाये, अर्थात् दाएँ से बाएँ लिखा गया लेख बाएँ से दाएँ तथा बाएँ से दाएँ लिखा गया दाएँ से बाएँ लिखा जाये, तब इस पद्धति को 'हल – चलाने की' पद्धति कहेंगे।
4. Blakeway : Journal of Roman Studies, Vol.XXV, (London – 1936), p – 141.
5. Sandys – Campbell : Latin Epigraphy (1927), page – 36.

उसने नुमायसियस को वह कटार भेंट रूप में दी होगी, इसी कारण उसने उस कटार पर यह शब्द **"मैनियस ने नुमायसियस के लिये बनाई"** अंकित किये होंगे। यह कटार १६२६ में प्रायनेस्ते[1] में ब्रील के उत्खनन कार्य द्वारा प्राप्त हुई। इसकी पद्धति दाएँ से बाएँ है (फ० सं० – ३४७)।

कुछ वर्णों का विकास : इस चित्र में सबसे ऊपर फ़िनोशियन वर्ण, उसके नीचे ग्रीक वर्ण, तदनन्तर लैटिन वर्ण तथा उनके परिवर्तन की क्रम दिया गया है। ईसा की चौथी शताब्दी से आठवीं के मध्य एक प्रकार का वर्णों में परिवर्तन आया जिसके द्वारा अनशियल (Uncial)[2] वर्ण बने। आठवीं शताब्दी के पश्चात् कैरोलीन वर्ण बने। कैरोलीन (Caroline) का नाम उस विद्वान् के नाम पर पड़ा जो यार्क (York – इंगलैण्ड) नगर का निवासी था। यही बाद में फ्रांस का राजा बना (७६८ से ८१४ ई० तक) और इसी ने इन वर्णों का आविष्कार ७९६ में किया। इसका नाम था कार्लमेगना (Charlemagne) या चार्ल्स दि ग्रेट, रोम के पोप लियो तृतीय (Leo III) ने इसका राज्याभिषेक ८०० ई० के बड़े दिन पर किया था। इसका राज्य इंगलिश चैनेल से टर्की तक था (फ० सं० – ३४८)।

गोथिया

इतिहास : गोथिया का इतिहास, क्योंकि गोथिया नाम का कोई देश स्थायी रूप से स्थिर नहीं हो सका, (Goths) का नहीं है। गोथ एक जर्मनी की प्राचीन पर्यटनशील जाति का नाम था। कुछ विद्वानों का विचार है कि वे नार्वें के मूल निवासी थे। वे देशों को परास्त करते थे और जीत का कुछ दिनों ठहरकर, आनन्द उठा कर चल दिया करते थे परन्तु बाद में वे बस गये। स्पेन के देश पर राज्य भी किया और उसी का नाम गोथिया पड़ा जो अधिक दिनों के लिये स्थिर नहीं रह सका। इस जाति के दो भाग थे जो पृथक होकर विसी – गोथ (Visigoths) = अर्थात् पश्चिमी गोथ तथा ऑस्ट्रोगोथ (Ostrogoths) = अर्थात् पूर्वी गोथ कहलाये। यह लोग टिटोनिक (Teutonic) जाति के वंशज थे। यह लोग लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी से आक्रमणकारी बन गये थे। इतिहासकार जर्मनी को ही इनका मूल स्थान मानते हैं।

---

1. इस नगर का आधुनिक नाम पैलेस्ट्रीना है। यह लैटियम का अति प्राचीन नगर था (मान चित्र फ० सं० – ३३५ पर देखिए)। ई० पू० की आठवीं श० में यह एक समृद्धिशाली नगर था। एट्रस्कनों से इसका व्यापार चलता था। ४९९ ई० पू० में इसने रोम से सन्धि कर ली परन्तु जब रोम एवं गॉलों (Gauls) के आक्रमणों से दुखी होने लगा तो इसने भी रोम के साथ झगड़े आरम्भ कर दिये। ३४० – ३८ में खुलकर युद्ध हुआ जिसमें रोम की विजय हुई। रोम ने दण्ड के रूप में, इसके सब अधीन – उप – नगर तथा भूमि छीन ली, केवल मुख्य नगर को नष्ट नहीं किया। अब यह रोम के प्रभाव में आ गया बाद में रोमन राज्य का अंग बन गया। पैलेस्ट्रीना बड़ा रमणीक था तथा ग्रीष्म ऋतु में शीतल रहता था। रोम के धनी – नागरिक यहाँ आकर आनन्द लेते थे। ११ में एक महान् व्याकरणाचार्य वेरियस फ्लेकस (Verrius Flacus) द्वारा निर्मित तिथिपत्र (कैलेण्डर) प्राप्त हुआ तथा समाधि – स्थल (Necropolis) से भी बड़ी अमूल्य पुरातात्त्विक सामग्री प्राप्त हुई जिसमें धातु व हाथी – दांत की बड़ी सुन्दर वस्तुयें क़ब्रों से प्राप्त हुईं।

2. 'Uncia' (Latin) = an incb; 'Uncus' = Crooked; इन दो लातीनी शब्दों से 'अनशियल' (Uncial) बना। इसका भावार्थ है, 'घसीट में लिखने से अक्षर एक इंच ऊपर तथा एक इंच नीचे जाना चाहिये'

लैटिन वर्ण

अ	ΔA	A		A	ओ	O	O		N
ब	ꓭB	B		B	प	ΊΓ	P		O
क ग	Ↄ	C क		C	क	ϘϨ	Q		P
द	ᗡ	D		D	र	ዋ	R		Q
ए	Ǝ	E		E	स	⟨ Ϛ	S		R
फ़	ꟻ	F		F	त ट	T	T		S
ज़ ग	I	G ग		G	उ	V	V	U	T
ह	⊟	H		H	व			V	U
ई	I	I		I	व			W	V
क	ꓘ	K		J	क्स			X	W
ल	⅃	L		K	य			Y	X
म	Ɯ	M		L	ज़			Z	Y
न	И	N		M	ज			J	Z

फलक संख्या – ३४६

मैनियस की कटार——६०० ई० पू०
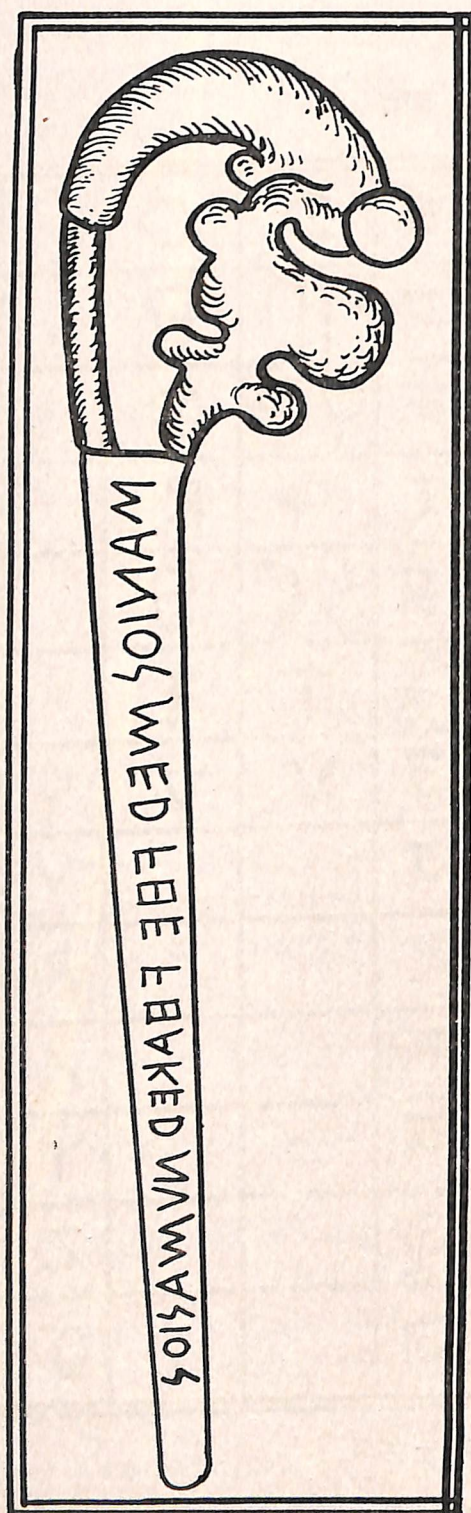
SOISAMVN DEKAHF EHF DEM SOINAM

(Read from Right to Left)

MANIOS MED FHE FHAKED NUMASIOS

(Read from Left to Right)

Meaning : **"Manios Made Me For Numasios**

अर्थः मैनियस ने मुझे नुमासियस के लिए बनाया

फलक सख्या - ३४७

कुछ वर्णों का विकास

१४००ई०पू	𐤀	𐤁	𐤂	Δ	𐤄	𐤇	𐤊	𐤌
८००ई०पू	Δ	8	⊓	Δ	Ǝ	日	ꓘ	M
२०० ई०पू०	A	B	C	D	E	H	K	M
३०० ई०	A	B	C	δ	Є	h	k	m
८००	a	b	c	d	e	h	k	m
६००	A	b	c	d	e	h	k	m
११००	a	b	c	d	e	h	k	m
१२००	a	b	c	d	e	h	k	m
१४००	a	b	c	d	e	h	k	m

UNCIALS = ЄTCNLOqueBλT

half uncial · δ : D · D

यूरोप की प्राचीन जातियों का विस्तार

पांचवीं से ग्यारहवीं श० तक
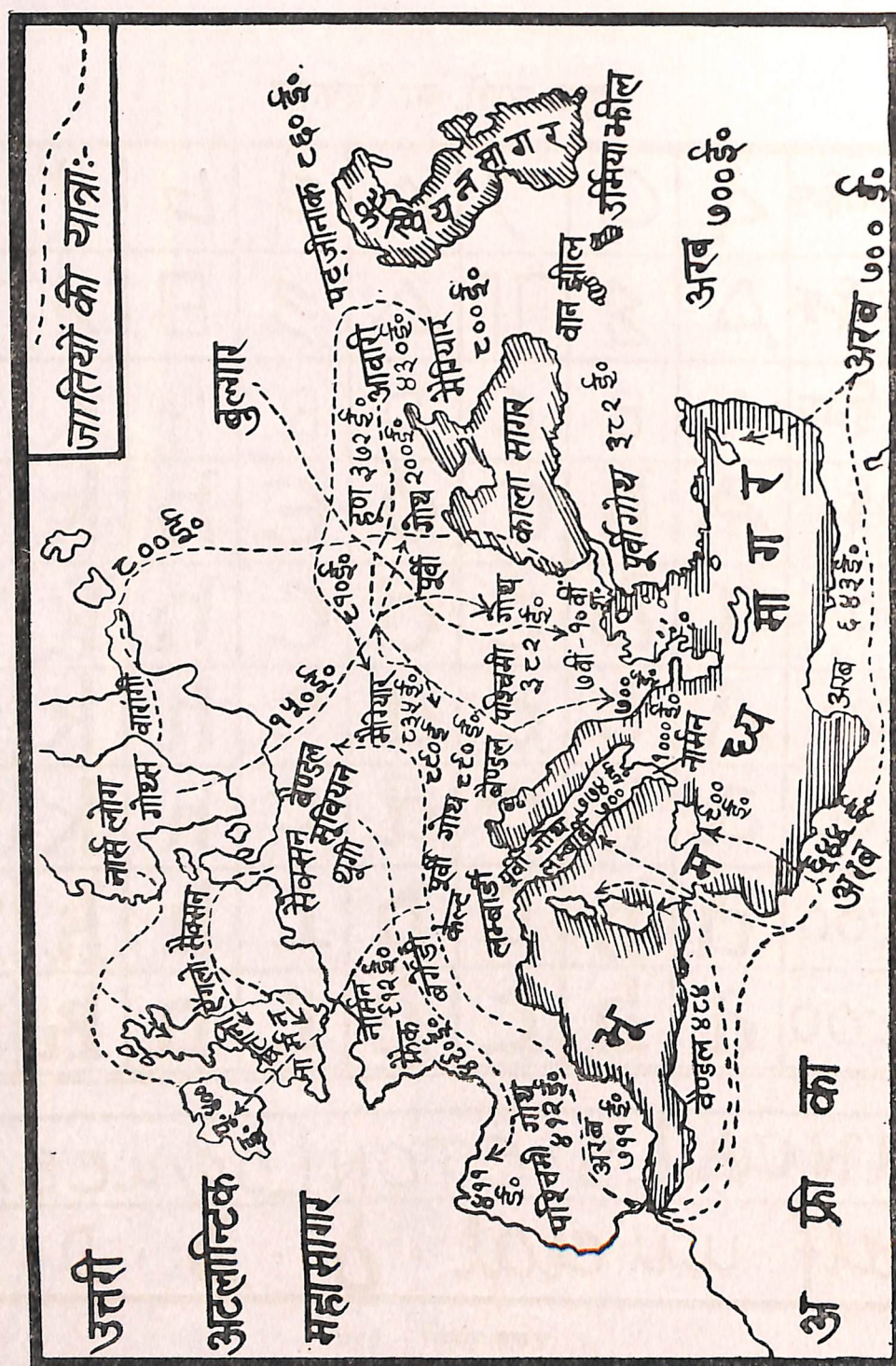
फलक संख्या - ३४८ क

पश्चिमी गोथों ने पूर्वी गोथों के राजा फ़स्टीडा (Fastida) को ईसा को प्रथम शताब्दी में परास्त किया था। वैन्डल जाति के राजा विसोमार (Visimar) को भी परास्त किया। तत्पश्चात् गोथों के प्रसिद्ध शासक हर्मेनिक (Hermanic) ने हूणों के आक्रमण के कारण, जो ३७० ईसवी में इन पर हुआ था, आत्महत्या कर ली। पूर्वी – गोथ हूणों के अधीन हो गये।

३७६ ई० में पश्चिमी गोथों के शासक फ़्रिथोगर्न (Frithigern) ने डैन्यूब नदी को पार करके रोम के प्रांत पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में रोम का महाराजा वालियस (Valeus) का स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर रोम के सिंहासन पर थिओडोसियस (Theodosius) बैठा। उसने ३८१ में गोथों से सन्धि कर ली। ३९५ में गोथों ने ग्रीस पर आक्रमण किया। ४०२ तथा ४०८ में इटली पर आक्रमण किया। अब इनका नेता एलारिक (Alaric) था। इसने तीन बार रोम को घेरा। तीसरी बार रोम को नष्ट कर दिया। एलारिक की ४१० में मृत्यु हो गई।

तत्पश्चात् अताउल्फ़ (Ataulf) शासक बना जिसने थिओडोसियस की पुत्री प्लेसीडिया (Placidia) से विवाह कर के रोम से सन्धि कर ली। ४१५ में बार्सीलोना में इसका वध कर दिया गया। तदनन्तर वालिया (Wallia) शासक बना परन्तु उस का भी ४१९ में देहांत हो गया। अब थिओडोरिक प्रथम (Theodoric I) शासक बना। अब पूर्वी तथा पश्चिमी गोथ आपस में मिल गये क्योंकि हूणों के आक्रमण अट्टिला के द्वारा आरम्भ हो गये थे। इस युद्ध में थियोडोरिक ४५१ में वीरगति को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् वे दोनों पुनः पृथक हो गये।

पश्चिमी गोथों ने अपना राज्य गाल और स्पेन में स्थापित कर लिया था और इन देशों का शासक युरिक (Euric) बन गया था। इसने ४६६ से ४८५ तक शासन किया। अब गोथों ने रोमन संस्कृति को अपना लिया था परन्तु ईसाई धर्म को नहीं अपनाया था। ५०७ में फ़्रैंकों (Franks) ने आक्रमण कर दिया और गोथों की पराजय हुई। अब इनका राज्य केवल स्पेन में रह गया।

जब हूणों के नेता अट्टिला की मृत्यु हो गई, तब पूर्वी गोथ स्वतंत्र हो गये और उन्होंने ४०६ में रोम पर आक्रमण कर दिया। ४९३ तक पूर्वी गोथों का शासन पूरी इटली व सिसली पर स्थापित हो गया। कुछ दिनों पश्चात् पूर्वी तथा पश्चिमी गोथ पुनः एक दूसरे के निकट आने लगे और पूर्वी गोथों के राजा थिओडोरिक की पुत्री का विवाह पश्चिमी गोथों के राजा एलारिक द्वितीय से सम्पन्न हो गया। ५०७ में एलारिक का स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर अमालारिक (Amalaric) राजा बना।

थिओडोरिक की मृत्यु के पश्चात् दोनों गोथ जातियाँ पुनः पृथक हो गईं। पूर्वी गोथों का नाम सदैव के लिये लोप हो गया परन्तु पश्चिमी गोथों का साम्राज्य स्पेन में स्थापित रहा। अब स्पेन के बहुत से गोथ ईसाई बन गये थे और वे स्पेन राज्य से असंतुष्ट थे क्योंकि शासक अभी तक ईसाई नहीं बना था। ५६ में जब ल्योविगिल्ड (Leovigild) शासक बना तो उसने स्पेन को शक्तिशाली बनाने के प्रयास में कई युद्ध किये। खोये हुये गाल के भाग भी अपने राज्य में सम्मिलित किये तथा गोथों के सामन्तों को भी, जो स्वतंत्र हो गये थे, परास्त कर अपने राज्य के अधीन कर लिया। ५८६ में उसके पुत्र ने पिता की मृत्यु के पश्चात् रोम के ईसाई – धर्म को अपना लिया जिसके कारण स्पेन रोम के पोप के प्रभाव में आ गया। अब सब कुछ रोम जैसा ही था केवल नाम के लिये गोथ – राज्य था। ७११ में इस्लाम के आने से जो शेष स्पेन रह गया था गोथिया के नाम से सम्बोधित होने लगा।

लिपि : चौथी ईसवी में पश्चिमी – गोथों के एक पादरी उलफ़िलास (Ulfilas) अथवा वुलफ़िलास (Wulfilas) ने, जो डैन्यूब नदी के दक्षिण में धर्म प्रचार का भी कार्य करता था, अपने अनुयाईयों के लिये एक

लिपि का आविष्कार किया जिसका नाम वेस्ट गोथिक[1] पड़ गया। वह इसी लिपि में बाइबिल का अनुवाद भी करना चाहता था। इस लिपि के लिये उसने ग्रीक तथा लैटिन वर्णों का उपयोग किया परन्तु उनमें कुछ परिवर्तन अवश्य किया। उसका जन्म ३१८ तथा मृत्यु ३८८ में हुए।

इस लिपि में २७ वर्ण थे जो 'फ० सं० – ३४९' पर दिये गये हैं। डेनमार्क निवासी एक विद्वान् एल० विम्मर (L. Wimmer) के अनुसार यह लिपि साहित्यिक ग्रीक (Classical Greek) व लैटिन (Latin) वर्णों द्वारा बनाई गई है। मारस्ट्राण्डर (C. T. S. Marstrander) के अनुसार यह वर्ण केल्ट जाति के लोगों में, जो पूर्वी एल्प्स पर्वतों पर ईसा की प्रथम शताब्दी में निवास करते थे, प्रचलित थी। ट्यूटन्स (Teutons) के आने पर इसी लिपि[2] से रून के वर्ण बने।

पठनीय सामग्री

Bloch, R. : The Ancient Civilization of Etruscans (1928).
Bodmer, F. : Loom of the Language (London – 1961).
Bucheler, F. : Umbrica (Bonn – 1883).
Buck, C. D. : Grammar of Oscan and Umbrian (1904).
Buonamici, G. : Epigraphia etrusca (Florence – 1932).
Carpentar, R. : 'The Alphabet in Italy' – American Journal of Archaeology XLIX (1945).
Conway, R. S. : 'The Ancient Alphabet of Italy' – Cambridge – Ancient History, Vol. IV., p.p. 395 – 403 (1930).
Egbert, J. C. Introduction to the Study of Latin Inscriptions (N. Y. – 1923).
Fell, R. A. : Etruria and Rome (1932).
Gutenbrunner : Über den Ursprung des gotischen Alphabets, 72 (1890).
Jensen, H. : Syn, Symbol and Script (London – 1970).
Johnston, M. A. : Etruria – Past and Present (Lond. – 1930).
Kirchoff : Das Gotishe Runenalphabet (Berlin – 1854).
Madona, A. N. : A Guide to Etruscan Antiquity (1954).
Mason, W. A. : A History of the Art of Writing (N. Y. – 1920)
Ogg, Oscar : The 26 Letters (1966).
Pallatiuvo, M. : The Etruscans (1956).
Panli, W. : Corpus Inscriptionum Etruscarum (1893).
Ibid : Studi Etruschi, Vol. III – (1902).
Randall, D. : The Etruscans (1927).
Wright, J. A Primier of Gothic Language (1892).

---

1. Gutenbrunner : Über den Urspung des gotischen Alphabets (1890), p – 500.
2. Kirchoff : Das gotische Runnenalphabet (Berlin – 1854), p – 109.

गोथिक लिपि

अ ग्रीक	ब B ग्रीक	ग Γ ग्रीक	द d ग्रीक
ए Є ग्री०	क़ (Q) U लैटिन	ज़ Z ग्री०	ह h लैटिन
फ Ψ ग्री०	ई I ग्री०	क K ग्री०	ल λ ग्री०
म M ग्री०	न N ग्री०	ज G लैटिन	उ n रून
प Π ग्री०	ग्री०	र K लै०	स S लै०
त T ग्री०	व Y ग्री०	फ़ F लै०	क्स X ग्री०
व्ह (hw) ⊙ ग्री०	ज रून	↑ ग्री०	इस लिपि २७ वर्ण हैं

मोराविया – ६२० से ११२५ ई० के मध्य

आधुनिक बुल्गारिया

फलक सख्या – ३५०
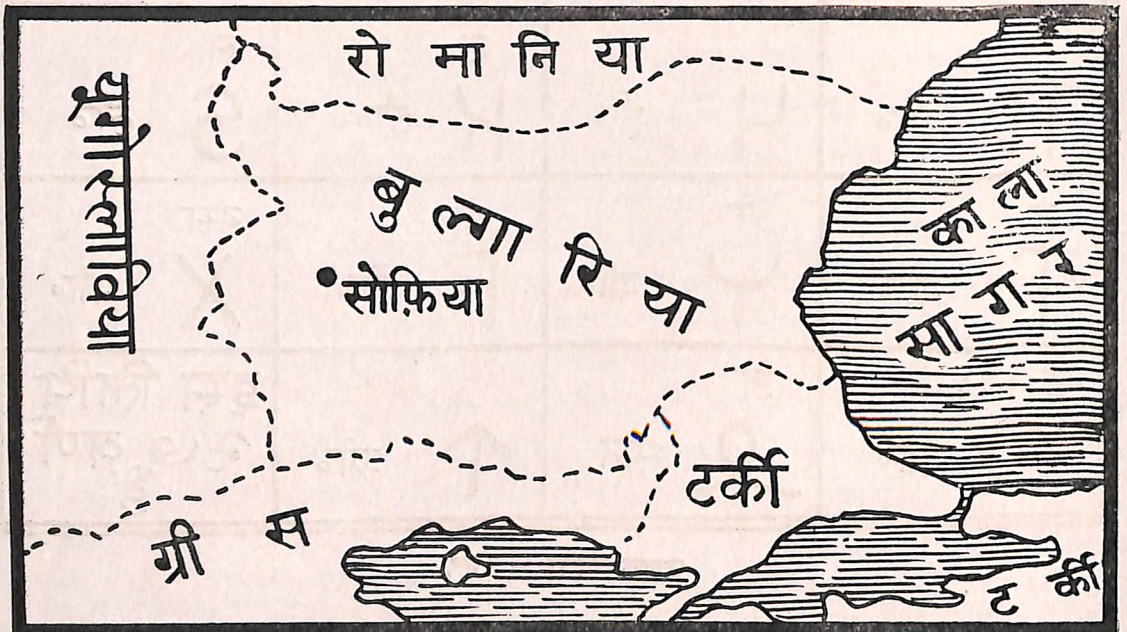
बुल्गारिया

इतिहास : प्राचीन काल में इस देश का नाम मोयशिया (Moesia) था। यह दक्षिण – पूर्वी यूरोप में डैन्यूब नदी के दक्षिण में स्थित था। इसमें थ्रेशियन लोग निवास करते थे। ७५ ई० पू० में रोम ने इस देश पर आक्रमण कर दिया तथा २९ ई० पू० में इसको परास्त कर दिया। पन्द्रहवीं ईसवी में यह रोम का एक प्रांत बन गया। तत्पश्चात् यह दो भागों में विभाजित कर दिया गया। उत्तरी मोयशिया बाद में सर्बिया के नाम से ज्ञात हुआ तथा दक्षिणी मोयशिया बुल्गारिया के नाम से ज्ञात हुआ।

ईसवी सन् की चौथी शताब्दी में गोथों ने इस को अपने अधीन कर लिया और स्लाव जाति के लोग भी यहाँ आकर बस गये। सातवीं श० में उत्तर पश्चिम को ओर से बुल्गार जाति के लोग यहाँ आकर बसने लगे। इसके कुछ पूर्व वे लोग बेस्सर्बिया में आकर बस चुके थे। अब यह मिल कर स्लाव कहलाने लगे। इन्हीं लोगों ने अपना एक राज्य स्थापित कर लिया। इनका एक राजा बोरिस ८०५ ई० में ग्रीक – चर्च के ईसाई धर्म का अनुयायी हो गया। तत्पश्चात् इसका पुत्र ज़ार सिमियन (Simeon) ने, ८९३ में बैज़न्टाइन संस्कृति को अपनाया परन्तु भाषा को नहीं अपनाया।

९६७ में रूस ने तथा ९७२ में बैज़ेन्टाइन ने इस पर आक्रमण कर दिया। ११८५ तक यह बैज़ेन्टाइन साम्राज्य का एक अंग बना रहा। तत्पश्चात् स्वतंत्र होकर १३६६ तक राज्य किया। तदनन्तर ऑटोमन साम्राज्य के अधीन आ गया। १८७६ में टर्की के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसमें सहस्रों मनुष्यों का संहार हुआ। १८७७ – ७८ में रूस व टर्की में युद्ध हुआ और बुल्गारिया एक स्वतंत्र राज्य बन गया। १८८५ में सर्बिया से इसका युद्ध हुआ और १८९६ में यह रूस का मित्र बन गया। १९०८ में यह टर्की से पूर्णतया स्वतंत्र हो गया।

प्रथम बाल्कन युद्ध में इसको १९१३ में अपने देश का बहुत सा भाग अन्य पड़ोसी देशों को देना पड़ा। प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध में यह जर्मनी की ओर रहा। १९४४ में रूस ने इस पर आक्रमण कर दिया। १५ सितम्बर १९४६ को इसने एक गणतंत्र राज्य होने की घोषणा कर दी और समाजवादी बन गया।

मोराविया का इतिहास : ईसा की छठी शताब्दी में इस भूभाग में स्लाव तथा मोराावियन आकर बस गये। नवीं शताब्दी में कार्लमैगने (मृत्यु – ८४३) द्वारा यह देश ईसाई धर्म का अनुयायी बना लिया गया। ८७० में इसने जर्मनी के शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और एक स्वतंत्र राज्य बन गया। ८९३ में हंगेरी के अधीन हो गया और ९०६ ईसवी तक बहुत से मैग्य्यार यहाँ आकर बस गये। दसवीं शताब्दी में यह पोलैण्ड तथा बोहेमिया राज्यों का एक भाग बन गया। १०२९ में यह पूर्णतया बोहेमिया के अधीन होगया। १८४९ में यह एक प्रथक राज्य हो कर आस्ट्रिया राज्य का भाग बन गया और इसकी राजधानी बर्नो (Barno) स्थापित हो गई। १९१८ में सदैव के लिये यह ज़ेकोस्लोवाकिया का एक भाग बन गया।

लिपि : ८६२ में मोराविया के शासक रोस्टिस्लाव (Rostislav) ने क़ुस्तुनतुनिया (कान्सटैन्टीनोपिल) को अपना एक राजदूत भेजा और निवेदन किया कि शासकीय गिर्जाघर में स्लावों के लिये स्लाव भाषा में धर्म – प्रचार के लिये किसी स्लाव – भाषा के ज्ञानी को भेजा जाये। उस समय वहाँ के शासक ने एक उच्च – पदा – धिकारियों की सभा का आयोजन किया जिसके द्वारा यह निश्चय किया गया कि सैलोनिका (Salonica) के निवासी, जहाँ स्लाव भाषा का प्रयोग किया जाता था, दो भाईयों – कान्सटैन्टाइन (Constantine) एवं मेथाडियस (Methodius) – को इस कार्य के लिये मोराविया भेजा जाय।

वैसे तो इससे पूर्व भी स्लावों ने अपने लिये अपनी भाषा के अनुरूप एक लिपि बनाने के लिये प्रयास किये थे परन्तु उनमें सफलता न मिल सकी। जब यह दोनों भाई वहाँ पहुँचे तो इन्होंने एक लिपि का आविष्कार किया। प्रो० पीटर दिनेकोव (Peter Dinekov) के अनुसार उपर्युक्त भ्राताओं ने सर्वप्रथम बुल्गारिया में लिपि का आविष्कार किया। तत्पश्चात् यह लोग मोराविया गये और दो प्रकार के वर्णों का आविष्कार किया। पहले ग्लेगो – लिथिक (Glagolithic) तदनन्तर सीरिलिक (Cyrillic) वर्णों का। ग्लेगोलिथिक का प्रयोग तो समाप्त हो गया परन्तु सीरिलिक वर्णों का प्रयोग आज भी बुल्गारिया, यूगोस्लाविया तथा रूस में किया जाता है। वैसे तो इन दो प्रकार के वर्णों में अन्तर है परन्तु दोनों की पद्धति एक है।

कान्सटैन्टाइन का जन्म सैलोनिका में ८२७ में हुआ था। इसकी शिक्षा बैज़न्टाइन की राजधानी के उच्चकोटि के स्कूल में सम्पन्न हुई। वहाँ इसकी भेंट पोन्टियस (Pontius) से हुई और यह उसका शिष्य बन गया। जिस काल में इसने उपर्युक्त लिपियों का आविष्कार किया, ईसाई संसार में केवल तीन भाषायें पवित्र समझी जाती थीं – ग्रीक, लैटिन तथा हेब्रू – और इन तीन के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में बाइबिल के पवित्र – धर्म का प्रचार करने की आज्ञा नहीं थी। इस आज्ञा के बन्धन का इन दो भाइयों ने मानवता की भलाई के लिये उल्लंघन किया और स्लावों के लिये लिपि का आविष्कार करके बाइबिल तथा धर्म के अन्य साहित्य का इस लिपि एवं भाषा में अनुवाद भी किया। इस बात पर रोम के पादरियों में बहुत विवाद भी हुआ अन्त में इन दो भाइयों को मान्यता प्रदान की गई। कान्सटैन्टाइन बाद में संत सीरिल (St. Cyril) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ८६९ में इस संत का स्वर्गवास हो गया। उसी के नाम पर लिपि का नाम भी सीरिलिक रखा गया।

ग्रूबीसिख़ (Grubissich) के अनुसार, प्राचीन ग्लेगोलिथिक लिपि में ४० वर्ण थे। कुछ विद्वानों – जे० ग्रिम (J Grimme), चाड्को (Chadzko), लेनोरमान्ट (Lenormant), हानुस (Hanus) तथा हाम (Ham) – का मत है कि इनका आविष्कार प्राचीन रून वर्णों (Runic Letters – 'फ० सं० – ३६४' पर) द्वारा किया गया। मिलर (Miller) का मत है कि इनका विकास 'अवेस्ता' के वर्णों से किया गया। कुछ अन्य विद्वानों – सफ़ारिक (Safarik), वोण्ड्राक (Vondrak) – के विचारानुसार इस लिपि का विकास फ़िनीशियन – हेब्रू द्वारा किया गया। नथीगल (Nathigal) काप्टिक से, गैस्टर (Gaster) तथा अबिट (Abicht) जार्जियन से और गाइट्लर (Geitler)[1] अल्बेनियन से मानते हैं। लिण्डनर (Lindner) ग्रीक लिपि से इसका उद्भव मानते हैं और टेलर (Taylor), यागिक (Jagic) आदि इस विचार का समर्थन करते हैं।

सीरिलिक लिपि में ४२ वर्ण हैं जिसमें से २४ वर्ण नवीं – दसवीं श० की ग्रीक लिपि से लिए गये हैं। ग्लेगोलिथिक लिपि[2] के वर्ण 'फ० सं० – ३५१' पर, प्राचीन सीरिलिक[3] (बुल्गारियन ग्लेगोलिथिक) के वर्ण 'फ० सं० – ३५२' पर तथा बुल्गारी सीरिलिक[4] (छोटे – बड़े वर्णों सहित) 'फ० सं० – ३५३' पर दिये गये हैं।

---

1. Geitler : Studien Zur Palaeographie Und Papyruskunde, Vol. XIII (1913), p – 41.
2. Altheim : Hunnische Runen (1948), p – 18.
3. Sobolew kij : Slavjano Russkaja paleografia (St. Petersburg – 1908)
4. Selšcev : Staroslavjanskij ja.

रूस

इतिहास : इस देश में ईसा की पाँचवीं से आठवीं श० के मध्य पूर्वी स्लाव – जाति के लोग बसना आरम्भ हो गये थे। ९ वीं शताब्दी में स्वीडन व नार्वे की ओर से एक वारंगियन जाति के लोग आना आरम्भ हो गये और उन्होंने नोवगोरोड (Novgorod) तथा कीव (Kiev) के नगरों की स्थापना की तथा बाल्टिक सागर से काला सागर तक व्यापार भी आरम्भ किया। इनमें से एक रूरिक (Rurik) था जिसने रूस राज्य की ८५० ई० में स्थापना की।

१२२४ ईसवी सन् में रूस पर मंगोलों के आक्रमण होने लगे और १२४० में उन्होंने इसको अपने अधीन कर लिया। तातारी खान लोगों (Tatar Khanate of Golden Horde) ने, जिनकी राजधानी सराय थी, इस देश से कई प्रकार के कर लेना आरम्भ कर दिये। चौदहवीं व पन्द्रहवीं श० में मास्को राज्य के शासकों ने अपनी सत्ता बढ़ाई और तातारी मंगोलों को साइबेरिया तक भगा दिया तथा अन्य छोटे राज्यों को भी अपने अधीन कर लिया। इन शासकों में इवान चतुर्थ (Ivan IV), जिसने १५३३ से १५८४ तक राज्य किया रूस का प्रथम ज़ार (Tsar) बना। उसीने अस्त्रा खान तथा कज़ान को परास्त कर रूस से खदेड़ दिया। १६१३ से रोमानोव के वंश के शासकों के अधीन रहा। १६५४ से १६६७ तक पोलैण्ड से युद्ध होता रहा। १७०० की लड़ाई में युक्रेन के भाग को अपने अधीन कर लिया। पीटर प्रथम ने बाल्टिक सागर की ओर जाकर लिथूनिया (Lithunia) तथा पोलैण्ड के कुछ भागों को १७७२ से १७६५ तक अपने अधीन कर लिया तथा काला सागर के उत्तरी भागों को भी रूस के देश में सम्मिलित कर लिया।

१८०६ में फ़िनलैण्ड तथा १८१२ में बेस्सरबिया (Bessarbia) को भी ले लिया। १८१२ में फ्रांस से युद्ध हुआ। १८१३ में जॉर्जिया तथा काकेशस के राज्यों को अपने अधीन कर लिया। वार्सा का बहुत सा भाग भी ले लिया। १८६० में पश्चिमी चीन का भाग अपने अधीन कर लिया और १८६७ में एलास्का (Alaska) को अमरीका के हाथ बेच दिया तथा अफ़ग़ानिस्तान की सीमा तक पहुँच गया १८७५ में सखालिन को अधीन कर लिया परन्तु १६०५ में जापान से परास्त हुआ। मंचूरिया से अधिकार समाप्त हो गया। प्रथम महायुद्ध (१६१४ – १६१७) में इंगलैण्ड का साथी रहा।

नवम्बर १६१७ की महान् क्रान्ति में ज़ार के शासन का अन्त कर दिया गया। १६१८ – २० के मध्य गृह – युद्ध हुआ और १६२१ में एक अकाल पड़ा। १६२२ में सोवियेट – सोशलिस्ट – गणतन्त्र राज्यों का एक संघ (U. S S. R.) बना। १६२४ में लेनिन का स्वर्गवास होने के पश्चात् नेताओं में सत्ता पाने के लिये संघर्ष होने लगा। १६२६ में स्टॅलिन की विजय हुई और वह रूस का एक शक्तिशाली नेता बन गया। १६२६ में ट्राट्स्की को देश से निर्वासित कर दिया गया। १६३६ में एक नया संविधान का निर्माण हुआ जिसके अन्तर्गत ११ गणतंत्र राज्य स्थापित किये गये। १६३१ में जर्मनी से युद्ध न करने के वचन के एक सन्धि – पत्र पर हस्ताक्षर हुए। १६३६ में पूर्वी पोलैण्ड को अपने अधीन कर लिया। १६४० में फ़िनलैण्ड के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। २२ जून १६४१ को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया। १६४४ को जर्मनी की सेना को देश के बाहर कर दिया और अप्रैल १६४५ में रूस ने बर्लिन को (अन्य मित्र – सेनाओं के साथ) परास्त कर दिया।

लिपि : रूस ने सीरिलिक लिपि को अपनाया परन्तु इसमें कुछ परिवर्तन किये गये तथा सरलीकरण के क्रम में कुछ वर्ण बनाये गये तथा कुछ निकाल दिये गये। पहले इसमें ३५ वर्ण थे। परन्तु अब केवल ३३ हैं। इसमें तारे के चिह्न लगा वर्ण 'फ़ा' को भी हटा दिया गया।

'फ० सं० – ३५५' पर आधुनिक लिपि की वर्णमाला दी गई है। पहले कालम में ध्वनियाँ दी गई हैं। दूसरे में मुद्रिण हेतु वर्ण (बड़े) तथा तीसरे में छोटे वर्ण दिये गये हैं। चौथे व पाँचवें कालम में हस्त-लिखित वर्ण – बड़े व छोटे दिये गये हैं और छठे कालम में वर्णों के नाम दिये गये हैं।

इस लिपि के वर्णों में जो परिवर्तन किये गये वे एलियस कोपीविच (Elias Kopivitch) द्वारा पीटर महान् के काल (१७०८) में किये गये। पीटर ने इन वर्णों का नाम ग्राज़दांसकाया (GrazJanskaya = **Civil Alphabets**) रखा और १७३५ से इनका प्रयोग आरम्भ हुआ। तब ३५ वर्ण थे। १९१७ में कुछ और परिवर्तन हुए जिससे आधुनिक लिपि को सर्वमान्य बना दिया गया।

'फ० सं० – ३५६' पर रूस की लिपि के कुछ शब्द उच्चारण तथा अर्थों सहित दिये गये हैं।

पठनीय सामग्री

Cludd, E. : Story of the Alphabet (N. Y. – 1938).

Cot.rell L. : Reading the Past – The Story of Deciphering Ancient Languages (London – 1972).

Diringcr, D. : Writing (1962).

Gelb, I. J. : A Study of Writing (London – 1963).

Grimme, W. : Kleine Schriften (1902).

Lgoio, G. C. : Bulgaria – Past and Present (1936).

Martin, W. J. : The Origin of Writing (1943).

Masor, W. A. : A History of the Art of Writing (N. Y. – 1920).

Pares, B : History of Russia (1947).

Paszkiewicz, H. : Origin of Russia (1954).

Runciman, S. : History of Bulgarian Empire (1930).

Seliscev : Starcslave janskiji jazykl (1951).

Sobolewskij : Slavjano russkaja paleografia (St. Peters burg – 1908

□

ग्लेगोलिथिक लिपि

अ	ब	व	ग	द	ए	ज झ
दज़	ज़	ई	य	क	ल	म
न	ओ	प	र	स	थ	ऊ
फ़	ख	ऑ	स्त	त्स	त्श	श
औ	इय	ऐ	यु	जे	अह	जह
जाह	पाह	य	ये	ईय	इस लिपि में	४० वर्ण हैं

फलक संख्या – ३५१

प्राचीन सीरिलिक लिपि

अ а	ब Б	व В	ग Г	द Д	ए Е	झ Ж
द्ज़ Ѕ	ज़ З	ई И	य І	क К	ल Л	म М
न N	ओ О	प П	र Р	स С	त Т	ऊ У
फ़ Ф	ख Х	ऑ Ѡ	स्त Щ	त्स Ц	त्श Ч	श Ш
औ Ъ	इय Ꙑ	ऐइ Ь	ऐ Ѣ	जू Ю	जा Ꙗ	जे Ѥ
जै Ѧ	जै Ѧ	ग्राह Ѫ	ये Ѩ	जेह Ѭ	पोह Ѱ	पाह Ѳ

फलक संख्या – ३५२

बुलगारी सीरिलिक लिपि

अ А а	ब Б б	व В в	ग Г г	द Д д	ए Е е
ज-झ Ж ж	ज़ З з	ई И и	य Й й	क К к	ल Л л
म М м	न Н н	ओ О о	प П п	र Р р	स С с
थ Т т	ऊ У у	फ़ Ф ф	ख Х х	त्स Ц ц	त्श Ч ч
श Ш ш	श्त Щ щ	अह Ъ ъ	यह Ь ь	यु Ю ю	यः Я я

फलक संख्या – ३५३

रूस—१००० ई० के लगभग
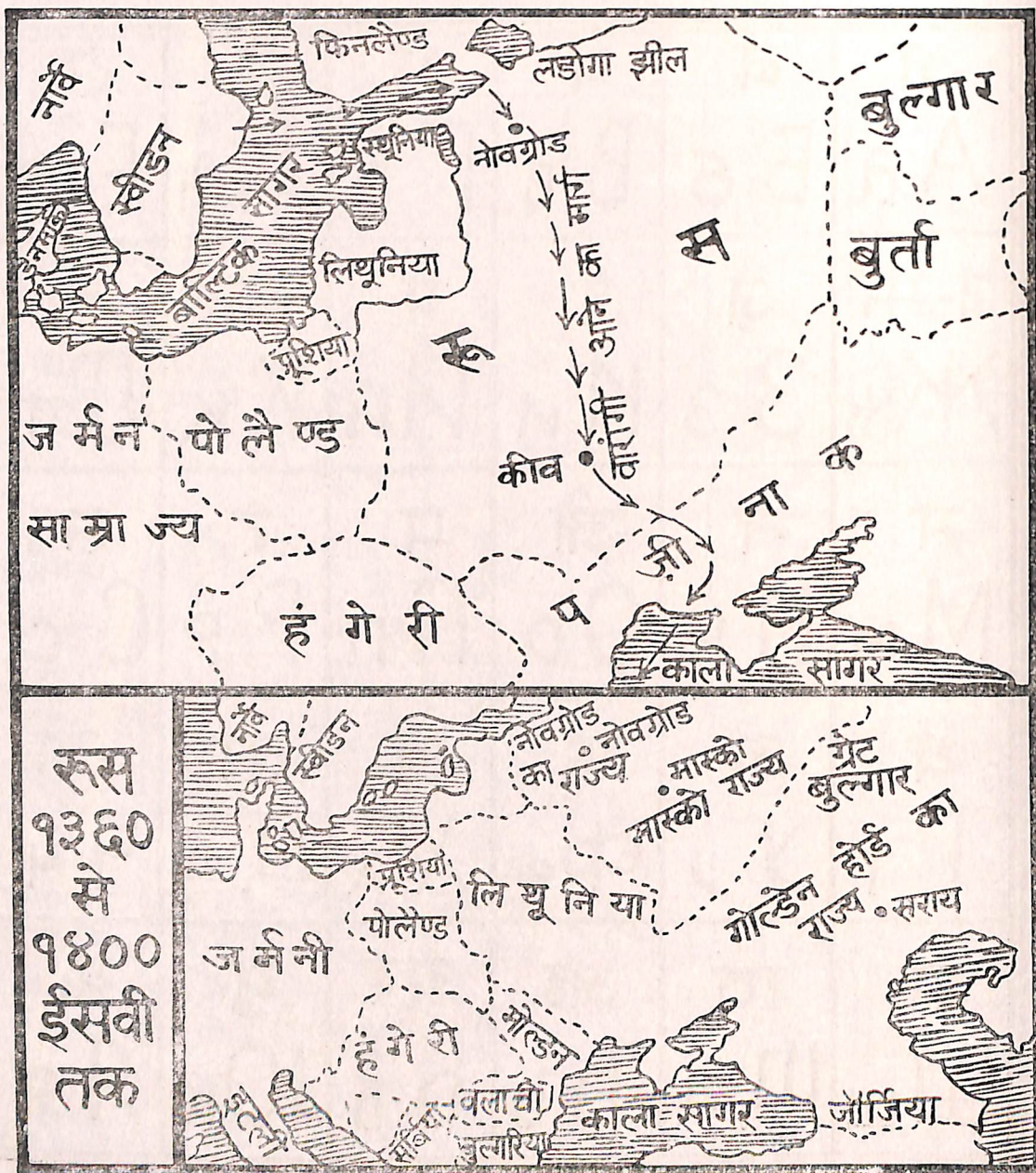
रूस की सीरिलिक लिपि

आ	А	а	А	а	ऐ	र	Р	р	Р	р	एर
ब	Б	б	Б	б	बेह	स	С	с	С	с	एस
व	В	в	В	в	वेह	त	Т	т	Т	т	तेह
ग	Г	г	Г	г	गेह	उ	У	у	У	у	ऊ
द	Д	д	Д	д	देह	फ़	Ф	ф	Ф	ф	एफ़
य	Е	е	Е	е	ये	ख़	Х	х	Х	х	ख़ाह
या	Ё	ё	Ё	ё	यो	त्स	Ц	ц	Ц	ц	त्सेह
ज	Ж	ж	Ж	ж	ज्हे	च	Ч	ч	Ч	ч	चेह
ज़	З	з	З	з	ज़े	शा	Ш	ш	Ш	ш	शाह
ई	И	и	И	и	ई	श्च	Щ	щ	Щ	щ	श्चेह
इ	Й	й	Й	й	इ		Ъ	ъ	Ъ	ъ	कठोरचिन्ह
का	К	к	К	к	कह	इ	Ь	ъ	ы	ы	कठोर इ
ल	Л	л	Л	л	एल		Ь	ь	Ь	ь	मृदुचिन्ह
म	М	м	М	м	एम	ए	Э	э	Э	э	ए
न	Н	н	Н	н	एन	यू	Ю	ю	Ю	ю	यू
ओ	О	о	О	о	ओ	या	Я	я	Я	я	या
प	П	п	П	п	पेह	फ़ा	Ѳ	ѳ	Ѳ	ѳ	फ़ीता *

फलक संख्या – ३५५

रूस की लिपि के कुछ शब्द

Кем работает ваш отéц?
क्येम रबोतइत वाश अत्येत्स् ?
आपके पिता का पेशा क्या है?

Он слýжащий Рабóтает
бухгáлтером в однóм учре-
श्रोन स्लूज्हशिचय्। रबोतइत
ждении. बुगल्तिरम व् अदनोम उचरिज्हदेनिइ
"वह नौकर है। वह एक दफ़्तर मे मुनीम के रूप मे काम करते है।"

вдовец вдова муж женá мать
व्दव्येत्स् व्दवा मूश ज्हिना मात्य्
विधुर विधवा पति पत्नी मां

फलक संख्या – ३५६

आयरलैण्ड

इतिहास : आयरलैण्ड का इतिहास केल्ट जाति के इतिहास से आरम्भ होता है। केल्ट भारोपीय जाति के लोग थे जो सर्वप्रथम स्कैण्डीनेविया[1] में रहा करते थे इसी कारण उनको नार्डिक के नाम से भी सम्बोधित किया गया। तत्पश्चात् यह लोग आल्प के पर्वतों के आस पास रहने लगे। ई० पू० की पाँचवीं श० से इनका विस्तार होना आरम्भ हो गया।

ई० पू० की चौथी शताब्दी में उनके कुछ लोग इटली की ओर गये और रोमन[2] सैनिकों से युद्ध हुये। वहाँ से लूटमार करके पूर्व की ओर अग्रसर हुये। उन्होंने एड्रियाटिक तथा मैसेडोनिया के नगरों पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया और २८० में थिसली को अधीन कर लिया। परन्तु वहाँ इनके पैर जम न सके और २७९ में ही वहाँ से भगा दिये गये। तदनन्तर यह थ्रेस को पराजित कर वहाँ जम गये तथा अपना राज्य स्थापित कर लिया। टाइल (Tyle) इनकी राजधानी बन गई। २२० ई० पू० में इनके राजा कैवरस (Cavarus) की मृत्यु हो गई और तब थ्रेस निवासियों ने इनका संहार आरम्भ कर दिया। इनको वहाँ से पुनः भागना पड़ा और यह पूर्व की ओर बढ़ते गये। अंत में यह सीथिया पहुँचे और उनके साथ हिल – मिल गये। अब उनका नाम केल्टो - सीथी पड़ गया।

ई० पू० की तीसरी श० में कुछ लोग दक्षिण – पश्चिम की ओर बढ़े और फ्रांस होते हुये स्पेन पहुँच गये। वहाँ यह लोग आइबेरियनों[3] (Iberians) के साथ घुल - मिल गये और इनका नाम केल्टीबेरियन पड़ गया।

ई० पू० की पाँचवीं श० के अन्त में इनकी दो जातियों—ब्राइथन (Brythons) तथा गोइडेल (Goidels) ने पश्चिम की ओर प्रस्थान किया और ब्रिटिश द्वीप समूह पहुँच गये। ब्राइथन तो ब्रिटेन में और वेल्स में फैल गये परन्तु गोइडेल आयरलैण्ड पहुँच गये और वहाँ के मूल निवासी पिक्ट (Picts) इनके अधीन हो गये और इन्ही की भाषा को भी अपना लिया। इन दो बड़े द्वीपों का प्राचीन नाम एल्बियन (Albion) इंगलैन्ड आदि के लिये और ऐवर्ना (Iverna) आयरलैण्ड के लिये तथा बाद में हैवर्नी (Haburni) हो गया। ग्रीक निवासियों ने इन दोनों द्वीपों का नाम प्रितानी (Pretani) रखा था। सीज़र ने इनका नाम ब्रिटानी (Brittani – Britanni) कर दिया। इन नामों में पुनः परिवर्तन होते रहे – ब्रिटेनिया व ब्रिटन्स (Britannia – Brittones – Britons) आदि।

केल्ट जब आयरलैण्ड पहुँचे तो इनको पिक्टों से कोई बड़ा युद्ध नहीं करना पड़ा। पिक्टों ने तुरन्त इनकी भाषा व संस्कृति को अपना लिया। अब केल्टों ने अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिये जिसके बीज– रूप का नाम 'टुआथ' (Tuath) रखा। इस प्रकार के उन्होंने पांच राज्य स्थापित किये। सब लोगों की सभा का स्थान टुआथ था। राजा ही सब कुछ था जिस प्रकार सुमेर के नगर राज्यों का राजा ही सब कुछ होता था। वही शासक, वही न्यायधीश, वही युद्ध में सेना-नायक इत्यादि। स्वतंत्र नागरिकों को ओइनक (Oinach) कहते थे। शासन सम्बन्धी सभा (Senateor Curia) को एरेक्ट (areacht) कहते थे। सभा के सदस्य राजा के साथी केली (Celi) कहलाते थे और

---

1. 'आइसलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, फ़िनलैण्ड तथा डेनमार्क' के पाँच देश स्कैन्डीनेविया कहलाते हैं।
2. रोम के ऊपर तो पहले से ही सेमिनी जातियों के आक्रमण हो रहे थे। यह एक नयी विपत्ति खड़ी हो गई। रोम ने इनको बहुत सा सोना देकर ३९० ई० पू० में बिदा किया।
3. आइबेरियन प्राचीन काल में स्पेन की आइबेरिया नदी के पास रहा करते थे जिसके कारण इनका यह नाम पड़ा। अब इस नदी को एब्रो (Ebro) के नाम से सम्बोधित करते हैं।

सभा भी राजमहल में ही हुआ करती थी। प्रत्येक टुआथ के नागरिक को उर्राद (Urrad) तथा दूसरे टुआथ का आया हुआ नागरिक देवराद (Deorad) ओर विदेशी को अलमुराक (Almurach) कहते थे। उनमें कुछ लोग ऐसे भी थे जो देवी-देवताओं, रीति-रिवाज तथा मृत्यु के पश्चात् के एवं भविष्य के ज्ञान के विषय में भी अपने को महान् ज्ञाता कहते थे। इनका नाम ड्रूड्स[1] (Druids) था। यह लोग केल्टों के पुरोहित थे।

शनैः शनैः केल्ट, शक्तिशाली व सम्पन्न होने लगे और उनको राज्य विस्तार करने की सूझी। तारा के राजा ने ब्रिटेन पर २९० ई० में आक्रमण करना आरम्भ कर दिया तथा कुछ राज्य आपस में ही अपनी सत्ता बढ़ाने के लिये युद्ध करने लगे। इसी शताब्दी में जब रोमन वहाँ[2] पहुँचे तो उन लोगों ने केल्टों को एक नये नाम से सम्बोधित किया – स्काटी (scotti) तथा एटीकोट्टी (atecotti) जिसके अर्थ हैं आक्रमणकारी तथा प्राचीन निवासी। चौथी श० में रोम की सेना में बहुत से एटीकोट्टी भर्ती कर लिये गये। नवीं शताब्दी में ब्रिटेन का पश्चिमी भाग केल्टों के अधीन रहा तथा स्काटलैण्ड का शासक भी केल्ट था।

ईसाई धर्म के बहुत से अनुयायी बन्दी के रूप आयरलैन्ड में पहली से चौथी शताब्दी तक रहते रहे परन्तु पांचवीं शताब्दी में संत पैट्रिक (St. Patrick) ने धर्म-प्रचार आरम्भ करके आयरलैण्ड में धर्म-परिवर्तन करवाया। बहुत से लोग ईसाई बन गये।

आठवीं श० के अंत में तथा नवीं के आरम्भ में उत्तर से नार्स लोगों (नार्वे-स्वीडन) के आक्रमण होने लगे। ८४१ से ८४५ तक उन्होंने आयरलैण्ड के पूर्वी किनारे के कई बन्दरगाह ले लिये तथा वहाँ के राजा का वध कर दिया। तत्पश्चात् आयरलैण्ड के राजा नार्स होने लगे। उन्होंने इंगलैण्ड तथा स्काटलैण्ड पर कई आक्रमण किये। ९१४ में वाटरफ़ोर्ड व लिमेरिक के नगर भी अपने अधीन कर लिये। फिर भी नार्सों का आयरलैण्ड पर पूर्णतया अधिकार नहीं हो पाया। आयरलैण्ड के अन्य राज्य निरन्तर नार्स के राजाओं से युद्ध करते रहे।

१०९८ में नार्वे का शासक मैगनस स्वयं एक बड़ी नौसेना लेकर आया और स्काटलैण्ड पर अपना अधिकार कर लिया परन्तु ११०३ में उसका वध कर दिया गया। ११७१ में इंगलैण्ड का राजा हेनरी द्वितीय वाटरफ़ोर्ड के नगर पहुँचा जहाँ उसका भव्य स्वागत हुआ। ११७२ में वह वापस चला गया परन्तु डबलिन के निकट की भूमि पर अपना राज्य स्थापित कर गया, जिसको पेल (Pale) कहने लगे। १६४१ – ४२ की क्रान्ति के पश्चात् क्रामवेल (Cromwell) ने आयरलैण्ड की सारी जागीरों को अपने अधीन कर लिया जो स्काटिश, वेल्श और इंगलिश लोगों ने स्थापित कर ली थीं। १६९० में बोयन के निकट के एक युद्ध के परिणामस्वरूप जेम्स द्वितीय ने ग्रेट ब्रिटेन की एक संघीय – विधान सभा स्थापित की। आयरलैण्ड को उसमें सम्मिलित कर लिया गया।

तदनन्तर १८०१ में एक क्रान्ति आरम्भ हुई जो अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध आयरलैण्ड ने की और १८८६ में उसको होम रूल प्रदान कर दिया गया। तत्पश्चात् पुनः ईस्टर विद्रोह हुआ। यह विद्रोह सोमवार २४ अप्रैल १९१६ को ईस्टर के दिन होने के कारण ईस्टर विद्रोह के नाम से ज्ञात हुआ। १९१९ – २१ में गृह – युद्ध हुआ और १९२१ में स्वतंत्रता प्रदान कर दी गयीं परन्तु इंगलैण्ड का शासक नाममात्र को आयरलैण्ड का शासक बना रहा— अर्थात् डोमीनियन स्टैटस (Dominion Status) दिया गया। १९२५ में आयरलैण्ड का विभाजन हो गया। उत्तरी भाग इंगलैण्ड के अन्तर्गत रहा।

---

1. कुछ विद्वानों का मत है कि ड्रूइस आयर लैण्ड के ही मूल निवासी थे। कुछ भी हो वे पूजा पाठ करने वाले थे।
2. तीसरी शताब्दी के कुछ लैटिन भाषा व लिपि के अभिलेखों द्वारा यह बात मानी जाती है।

आयर लैण्ड

१०० ई०पू०
उलीद
आचेन
केम्भाव
लबन
डुआड
गवायर
लबन देस
गवायर
टेमूर
मुमान
१
५०० - ६०० ई०
ऐलेच
अर्पियाल
कनाचता
मीडे
लैगन
मूमा
२
१३०० ई०
३
१५०० ई०
४
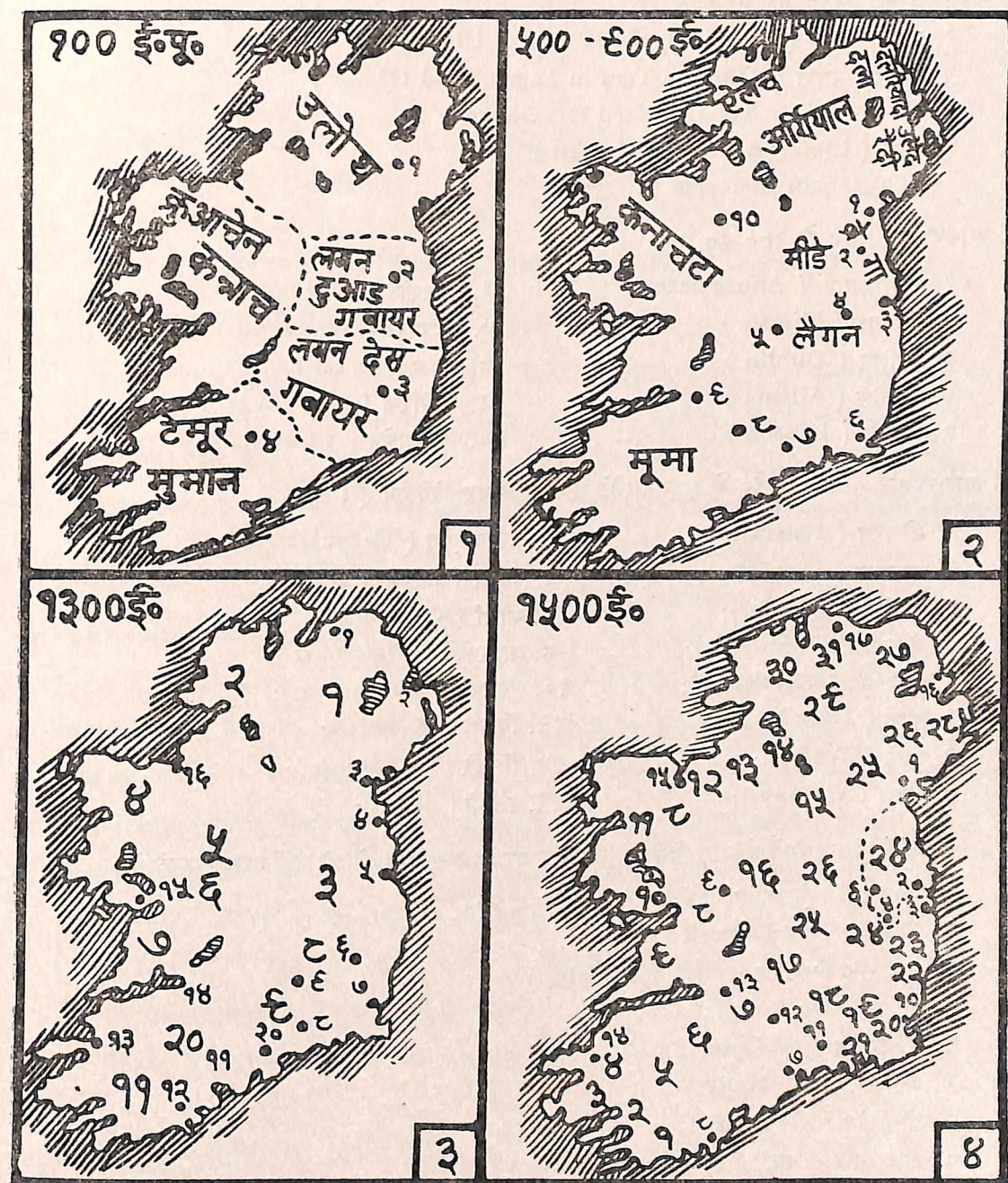
आयरलैण्ड के मानचित्र के संकेत

(१) आयरलैण्ड – १०० ई० पू० तक

१. इमायन माचा (Emain Macha in Coised Uloth)
२. तिमुर – तारा (Timur – Tara in Lagan Tuad Gabair)
३. दीन रिग (Din Rig in Coised Des Gabair)
४. एरन्न (Erann in Temuir Muman)
(Cruachain Connacht)

(२) आयरलैण्ड ५०० से ९०० ई० तक

१. अन्नागस्सान (Annagassan)
२. तिमायर (Timair)
३. डबलिन (Dublin)
४. ऐलेनोल (Ailenol)
५. उस्नेक (Usnech)
६. वेक्सफोर्ड (Wexford)
७. वाटरफोर्ड (Waterford)
८. कैसेल (Caisel)
९. लिमेरिक (Limeric)
१०. किरुआचेन (Ciruachain)

(३) आयरलैण्ड – १३०० ई० में : इसमें छोटे अंकों में नगर दिये गये हैं।

१. कोलरेन (Coleraine);
२. कैरिकफर्गस (Carrickfergus);
३. डुण्डाल्क (Dundalk);
४. ड्रोगेदा (Drogheda);
५. डबलिन (Dublin);
६. कार्लो (Carlow);
७. वेक्सफोर्ड (Wexford);
८. वाटरफोर्ड (Waterford);
९. किलकेनी (Kilkenny);
१०. डुंगरवन (Dungarvan);
११. कार्क (Cork);
१२. किंसेल (Kinsale);
१३. ट्रेली (Tralee);
१४. लिमेरिक (Limerick);
१५. गाल्वे (Galway);
१६. स्लीगो (Sligo);

बड़े अंकों में जागीरों के नाम दिये गये हैं, जिन पर सामन्त, राजाओं की भाँति राज्य करते थे।

१. ओनील आफ़ टाइरोन (O'Neil of Tyrone)
२. ओ-डोनेल (O' Donnell)
३. अर्ल आफ़ किल्डेयर (Earl of Kidalre)
४. डी वर्ग (De Burgh)
५. ओ-कन्नोर (O' Connor)
६. ओ-केल्ली (O' Kelly)
७. ओ-ब्रियेन (O' Brien)
८. लैण्ड आफ लीन्सटर (Land of Leinster)
९. अर्ल आफ ओरयण्ड (Earl of Ormond)
१०. अर्ल आफ डिसमान्ड (Earl of Dismond)
११. मैक्कार्थी मोर (Mac Carthy More)

४. आयरलैण्ड—१५०० ई० में।

नगरों के नाम :—(छोटे अंकों की संख्या देखिए)

१. कार्लिंग फ़ोर्ड (Carling Ford); २. डबलिन;
३. डलकेग (Dalkeg); ४. नास (Naas);
५. विकलोव (Wicklow); ६. ट्रिम (Trim);
७. डुगरवन; ८. किसेल; ९. अथेन्री (Athenry);
१०. वेक्सफोर्ड; ११. वाटरफोर्ड; १२. किलकेनी; १३. लिमेरिक;
१४. ट्रेली (Tralee); १५. स्लीगो; १६. कोलरेन; कैरिकफ़र्गास ।

जागीरों के नामः—(बड़े अंकों की संख्या देखिए)

१. मैक्कार्थी बीच (Ma Ccarthy Beach); २. ओ सुलीवान बयर (O' Sullivan Beare)
३. ओं सुलीवान मोर (O' Sullivan Mor); ४. नाइट आफ केरी (Knight of Kerry)
५. मैक्कार्थी मीर (MacCarthy Mor); ६. अर्लडम आफ देसमण्ड (Earldom of Desmond)
७. अर्लडम आफ ओर्मण्ड (Earldom of Ormand); ८. मैकविलियम उचतर (Macwilliam Uaehtar)
९. थामन्ड ओ ब्रियन (Thomond O' Brien); १०, ओ फ्लेसी (O' Flapty)
११. ओ मेलो (O' Maille); १२. ओ कोनोर सिलीगो (O' Conor Sligo)
१३. पश्चिमी ब्रेफना (West Breini); १४. मैगुयेर आफ फर्मांग (Meguire of Fermangu)
१५. पूर्वी ब्रेफनी (E. Brefni); १६. ओ केलीमेनी (O' Kelly Many)
१७. एली ओ करोल (Ely O' Carroll); १८. मैकगिल्ला पैट्रिक (Macgilla Patrick)
१९. लेक्स ओ मोर (Leix O' Mor); २०. मैकमरो कवनाग (Mac Murrough Kavanagh)
२१. इंगलिश आफ वेक्सफोर्ड (English of Wexford); २२. ओ बीरोन (O' Byrone);
२३. ओ टूले (O' Toole); २४. दि पेल (The Pale);
२५. मैकमोहन आफ मोनागन (MacMohan of Monaghan)
२६. सुपरेमेसो आफ ओ नीलमोर (Suferamaay of O' Neill Mor);
२७. ओ नील आफ क्लेण्डेबाय (O' Neill of Clondeboy);
२८. सैवेज आफ दि आर्डस (Savage of the Ards);
२९. टीरोगेन (Tireoghain)
३०. ओ डोगर्टी (O' Dogherty); ३१. ओ कहान (O' Cahan)

लिपियों का विकास : यहाँ की प्राचीन लिपि चौथी ईसवी में ओगम (Oghams) वर्णों द्वारा प्रचलित हुई। अरंज़ (Arntz – d, 1935) के अनुसार इस लिपि के लगभग ३६० अभिलेख प्राप्त हुये हैं जो बहुधा समाधियों के पत्थरों पर उत्कीर्ण पाये गये। लगभग ३०० तो दक्षिण आयरलैण्ड से प्राप्त हुये। ६० वेल्स, इंगलैण्ड

आदि से प्राप्त हुये। उनकी भाषा केल्टिक है। प्राचीनतम् अभिलेख केल्टिक – लैटिन द्विभाषी भी प्राप्त हुये जिनका काल ईसवी सन् की चौथी शताब्दी माना गया है।

पौराणिक धारणा के अनुसार यह सहस्रों वर्ष पुरानी मानी जाती है तथा इसका जन्मदाता एक देवता 'ओगमा' माना जाता है। इस लिपि की वर्णमाला अर्बोइस दि जुबेनविल्ले[1] (Arbois de Jubeinville – 1881) द्वारा पाँच खाँचों से, जो भिन्न भिन्न दिशाओं में बनाये गये थे, प्रस्तुत की गयी है। इसके पठन की समस्या की कुंजी एक छोटे लेख द्वारा मिली। यह हस्तलिखित लेख बैलीनोट की पुस्तक से प्राप्त हुआ। यह लेख चौदहवीं शताब्दी का था।

ओगम लिपि का जन्म एवं विकास की समस्या पर निम्नलिखित विद्वानों ने अपने मत दिये हैं :—

१. मारस्ट्रैण्डर (Marstrander) के अनुसार यह गाल (प्राचीन फ्रांस के निवासी) द्वारा आई।

२. राउलिंग्स (Raulings) के विचार से यह रून लिपि के द्वारा निर्मित हुई।

३. ग्रीनबर्गर (Grienberger) के अनुसार इसका विकास रोमन लिपि के घसीट रूप से हुआ।

४. नार्वे निवासी बुग्गे (Bugge) के कथनानुसार इसका उद्भव ग्रीक लिपि से हुआ क्योंकि दोनों लिपियों में 24 वर्ण हैं।

मैकालिस्टर[2] (१९२८) के विचारानुसार यह गूंगे – बहरे लोगों वाली सांकेतिक लिपि है जैसे वे उँगलियों को एक उँगली से छू छू कर अपने विचारों को व्यक्त कर लेते हैं उसी प्रकार प्राचीन काल के पुजारी (Druids) भी अपनी पवित्र तथा गोपनीय बातों को इन संकेतों से व्यक्त करते होंगे। इसके लिये अंकित करने की या लिपि का रूप देने की बात उन लोगों ने कभी सोची भी नहीं होगी परन्तु बाद में पुरोहितों ने उन संकेतों को लिपि में परिवर्तित कर लिया। इस विचार का समर्थन मारस्ट्रैण्डर (१९२८), अरंज़ (१९३५) तथा क्रौज़ (Krause – १९३८) ने भी किया है। ज़िमर (Zimmer – १९०९) के अनुसार यह लिपि गॉल (फ़्रांस) से आई। 'ओगम' का शब्द लूशियन द्वारा ज्ञात हुआ कि केल्ट, हिरेकिल्स को ओगमियस कहते थे और वह उनका देवता बन गया। इस लिपि में २० वर्ण होते हैं जो 'फ० सं०–३५८' पर दिये गये हैं। नीचे अंग्रेज़ी भाषा का एक वाक्य 'I am going' दिया गया है।

६५० में यह लिपि लैटिन (रोमन) लिपि द्वारा समाप्त कर दी गयी। इसमें भी केल्टिक भाषा के उच्चारणार्थ कुछ हेर फेर किये गये और कुछ लिखने में भी अंतर आ गया। इस लिपि के मुद्रित तथा हस्तलिखित वर्ण 'फ० सं०–३५८' पर दिये गये हैं।

आयरलैण्ड की रोमन लिपि : ६५० ई० से रोमन (लैटिन) लिपि का प्रभाव आरम्भ हो गया। केल्टिक भाषा के समावेश के कारण ध्वनियों व चिह्नों में कुछ परिवर्तन करके भाषा के अनुरूप बना दी गई। इस लिपि के हस्तलिखित तथा मुद्रित वर्ण 'फ० सं० – ३५९' पर दिये गये हैं।

1. Atkinson, G. M. : Some account of Ancient Irish Treatises on Ogham Writing— The Royal Historical and Archaeological Association of Ireland, XIII, P – 202.
2. Macalister : The Archaeology of Ireland (London–1928), P-216.

ओगम लिपि

फलक संख्या - ३५८

आयरलैण्ड की रोमन लिपि

ध्वनि	प्राचीन बड़े वर्ण	प्राचीन छोटे वर्ण	आधुनिक बड़े वर्ण	आधुनिक छोटे वर्ण	ध्वनि	प्राचीन बड़े वर्ण	प्राचीन छोटे वर्ण	आधुनिक बड़े वर्ण	आधुनिक छोटे वर्ण
अ	a	a	A	a	म	m	m	m	m
ब	b	b	b	b	न	n	n	n	n
क स	C	c	C	c	ओ	O	o	O	o
ड	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	प	P	p	P	p
ए	E	ε	e	e	र	R	ꞃ	R	ꞃ
फ़	F	ꝼ	F	ꝼ	स	S	fs	S	ꞅ
ग ज	ᵹ	ᵹ	ᵹ	ᵹ	ट	ꞇ	ꞇ	ꞇ	ꞇ
ह	h	h	h	n	उ	U	u	U	u
ई	I	ı	l	ı	व	V	r		
ल	L	l	L	l					

हंगेरी

इतिहास : हंगेरी के प्राचीन नाम पन्नोनिया (Pannonia) तथा डैकिया (Dacia) थे। रोम निवासियों को, जो यहाँ आकर बस गये थे, जर्मन जातियों ने निकाल बाहर किया और जर्मन जातियों को हूण[1] जातियों ने मार भगाया। ४५३ ई० में, जब अट्टिला की मृत्यु हो गई, तब गोथिक जातियाँ यहाँ आकर बसने लगीं। छठी शताब्दी में लम्बार्डों की जातियाँ पन्नोनिया में तथा गेपिदाइ (Gepidae) की जातियाँ डैकिया में बसने लगीं। ५६७ में एवार व लम्बार्ड जातियों ने गेपिदाइ की जातियों को नष्ट कर दिया। तदनन्तर एवार तथा लम्बार्ड जातियों में युद्ध हुआ और लम्बार्ड इटली के उत्तर में आकर बस गये। एवार राज्य की सत्ता क्षीण होने पर हंगेरी के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग स्वतंत्र हो गये। अब स्लाव जाति का राज्य स्थापित हो गया। ७९२-७९७ ई० में कार्लमैगने ने अवार राज्य को परास्त कर प्रथम ओस्टमार्क राज्य स्थापित किया। ८२८ में डैन्यूब नदी के उत्तर में स्लाव - राज्य (मोराविया) स्थापित हो गया।

हंगेरी राज्य के संस्थापक मैग्यार थे जो यूराल पर्वतों के निवासी उग्रियन जातियों के लोगों से सम्बन्धित थे। ईसा की प्रथम शताब्दी में रोम के निवासियों ने उनको पूर्व की ओर खदेड़ दिया और तब से वे तुर्क जातियों के घनिष्ठ सम्बन्धी बन गये। पाँचवीं से नवीं शताब्दी के मध्य उन्होंने अपना एक ओनोगुर (ओनओगुर) के नाम से संघ भी स्थापित कर लिया था। ओनोगुर का स्लाव भाषा में (ओगुर, अंगुर, हंगेर, हंगेरी) हंगेरी हो गया।

८९३ में ओनोगुर संघ की मैग्यार जातियों ने हंगेरी पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। ९५५ में जर्मनी के सम्राट ओटो प्रथम को परास्त कर दिया। १००० ई० में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गया तथा लैटिन - ईसाई - धर्म ग्रहण कर लिया। ग्यारहवीं शताब्दी में हंगेरी ने दलमतिया, स्लैवोनिया तथा क्रोशिया के राज्य अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये। १२४१ में मंगोलों ने इस देश पर आक्रमण कर दिया। १३०१ में एलफ़्रेड नरेश की मृत्यु हो गई तत्पश्चात् शासक का निर्वाचन आरम्भ होने लगा।

१३०८ से १३८२ तक अंजोऊ के वंशजों का तथा १३८३ से १४३७ तक सिगिसमण्ड (जर्मन नरेश) का शासन चलता रहा परन्तु हुनियादी (मृत्यु १४५६) के शासन काल में तुर्कों का प्रथम आक्रमण हुआ। मथियास कोर्वीनस (Matthias Corvinus) के १४५८ - १४९० शासन काल में सिलीशिया, मोराविया तथा दक्षिणी आस्ट्रिया को परास्त करके राज्य का विस्तार किया गया। अब हंगेरी मध्य - योरोप का शक्तिशाली राज्य हो गया। १५२६ के तुर्कों के आक्रमणों ने हंगेरी की सत्ता को बड़ी हानि पहुँचाई। ट्रांसिल्वैनिया स्वतंत्र हो गया और हंगेरी का बहुत सा भाग तुर्कों तथा आस्ट्रिया के शासक द्वारा विभाजित कर दिया गया।

१६८६ में बूदा नगर पर पुनः अधिकार कर लिया तदनन्तर स्लेवोनिया तथा ट्रांसिलवैनिया पर भी अधिकार कर लिया। १६९९ में बनात को छोड़कर सम्पूर्ण हंगेरी आस्ट्रिया के अधिकार में चला गया। १८४८ में एक विद्रोह हुआ जिसका १८४९ में अन्त हो गया। १८६७ से १९१८ तक आस्ट्रिया - हंगेरी के नरेशों के अन्तर्गत द्वि - नृपराज्य रहा। तत्पश्चात् एक स्वतंत्र लोकतंत्र राज्य बन गया। १९१९ में यह रूस के प्रभाव में आ गया तथा इस देश का बहुत सा भाग पृथक हो गया। द्वितोय महायुद्ध में इसने जर्मनी का साथ दिया। १९४५ में रूस ने इस देश के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। १९४६ में पुनः लोकतंत्र राज्य हो गया।

---

1. कुछ विद्वान् हंगेरी का नाम हूणों से सम्बन्धित मानते हैं।

हंगेरी

फलक संख्या – ३६०

हंगेरी की प्राचीन लिपि

अ आ अ ब त्स च द ए.ए फ़ फ़ ग

जी जी ह ह ई ई ई ई ज ज ज क अक

ल ली म.म न न नी ओ ओ ऊ प इत श श श

त त ती ती उ.ऊ उ ऊ व ज़ ज़ ज़

क त ज ई श क ल त म अ स ई इत अ

न त श ल (घोड़ा) ह क च अ श अ र इ त त ब ए

श आ ज़ ल ओ व ल } स्वर अनुमानित — केतेजी शेकेल

तेमास इर्तानेत शलीम (तुर) हक चाशार इतेत बे शाज़। अर्थ : केतेजी तेमास ने (यह) लिखा "तुर्की सम्राट सलीम ने यहां से सौ घोड़ों के साथ हमला किया"
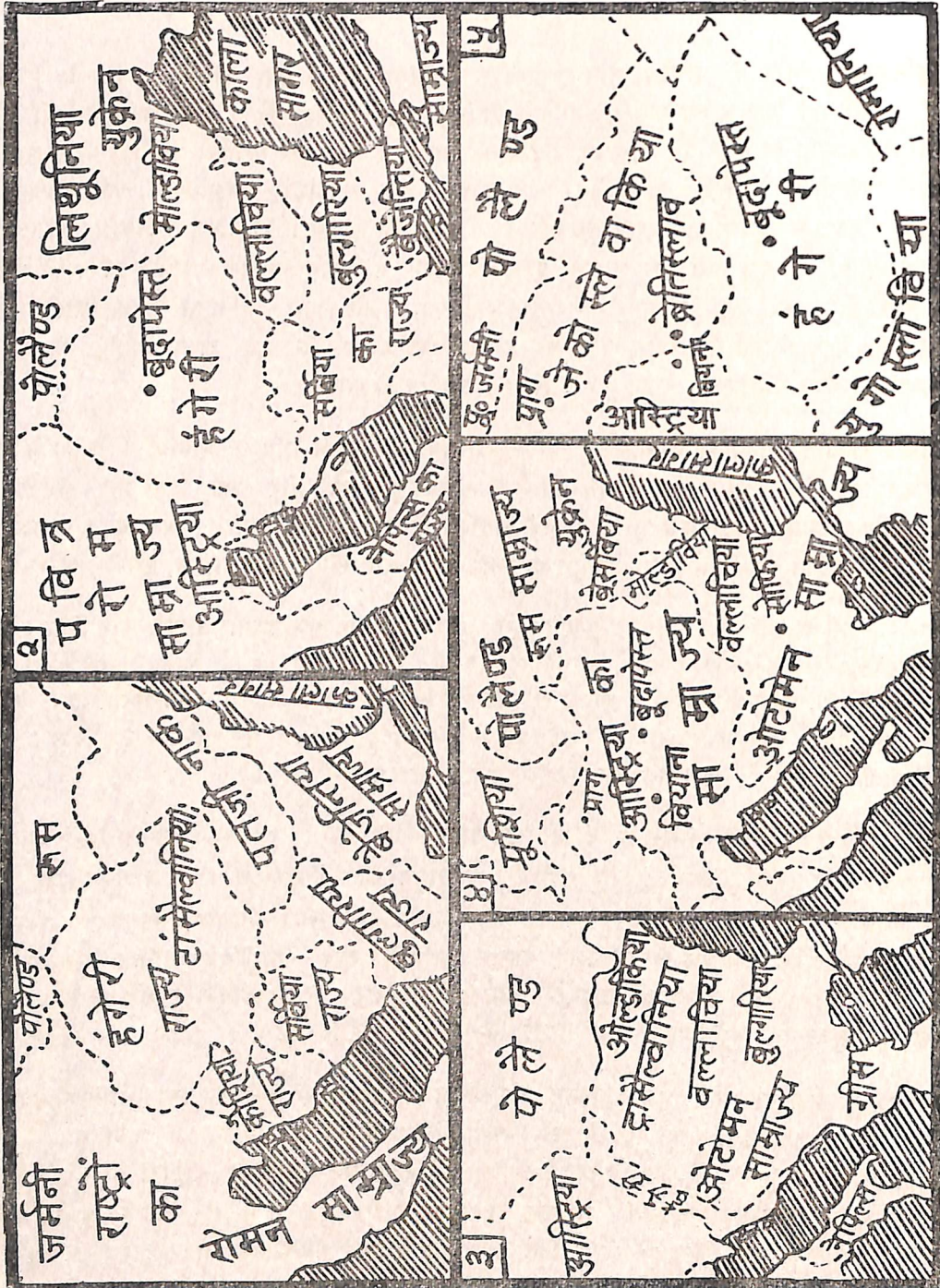
लिपियाँ : हंगेरी में दो प्रकार की लिपियाँ पायी गयी हैं ।

पहली **प्राचीन हंगेरी की** लिपि तथा दूसरी **निकोल्सबर्ग** की । प्राचीन लिपि का आधार तुर्की एवं ग्रीक लिपियाँ हैं जिन पर अरमायक का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है । इसके ३२ वर्णों में दो बुल्गारिया की ग्लेगोलिथिक लिपि के हैं, जिनकी ध्वनि 'अ' तथा 'ती' है । दो ग्रीक वर्ण हैं, जिनकी ध्वनि 'फ़' और 'ह' है । अन्य वर्ण साइबेरिया की लिपि से सम्बन्धित हैं । नागी (Nagy) तथा नेमेथ (Nemeth – 1934) का कहना है, 'जो सिद्धान्त एल्थीम (Altheim) ने निर्धारित किया है वह समर्थन के योग्य है' । इसी सिद्धान्त के अनुसार प्राचीन लिपि का काल नवीं श० माना गया तथा निकोल्सवर्ग लिपि का काल बारहवीं श० निर्धारित किया गया है। इसका सम्बन्ध दूसरी लिपि से जोड़ा जा सकता है अपितु किसी भी खोजकर्त्ता के मन में यह संशय रहना अनिवार्य है कि नवीं तथा बारहवीं श० के मध्य काल में, जो तीन सौ वर्षों का होगा, इनका सम्बन्ध कैसे मिलाया जाये। एल्थीम का कहना है कि शेकलर जाति के लोगों ने हंगेरी की प्राचीन सात मैग्गियार जातियों के साथ आठवीं जाति के रूप में अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया । यह लोग हंगेरी के पश्चिमी सीमान्त पर बस गये । शेकलर जाति के लोग साइबेरिया के मूल निवासी थे जो अपने साथ अपनी लिपि भी लाये । इस लिपि को अपनी जाति की गोपनीय – लिपि मानते थे इस कारण उसका प्रयोग छिपा कर करते थे । इसी कारण से इसके अभिलेख भी अधिक संख्या में प्राप्त न हो सके तथा इस लिपि पर साइबेरिया की ओरहन[1] लिपि का प्रभाव अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता है ।

इस प्राचीन लिपि के विषय में सर्वप्रथम एक हंगेरी के यात्री हन्स देरुशवान् (Hans Deruschwan 1494 – 1569) के द्वारा उस अभिलेख से ज्ञात हुआ जो उसको कुस्तुनतुनिया से १५१५ ई० में प्राप्त हुआ था। इसका रहस्योद्घाटन सर्वप्रथम जे० थेलेग्दी (J. Thelegdi) ने सोलहवीं श० के अन्तिम काल में किया था। उसने हूणों की भाषा पर एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उसने लिखा है कि 'इस प्राचीन – हंगेरी लिपि का अभिलेख (जिसका कुछ अंश 'फ० सं०—३६१' पर दिया गया है) कुस्तुनतुनिया का है ।' इस लिपि का नाम–करण थेलेग्दी ने ही किया था । हंगेरी निवासी इस लिपि को रोवस – इरस (Rovas – iras) कहते थे जिसके अर्थ हैं खांचेदार लिपि अथवा नाच्छ लिपि (Notch Script) । इस की दिशा बाएँ से दाएँ है ।

दूसरी लिपि निकोल्सबर्ग की है । इसकी भी दिशा दाएँ से बाएँ है । इस लिपि का एक छोटा सा अभिलेख नागी ज़ेन्ट मिक्लास (Nagy Szent Miklos) को न्यूरेम्बर्ग[2] (Nuremburg) से १७९९ में प्राप्त हुआ। यह एक चर्मपत्र पर अंकित था । अब यह अभिलेख हंगेरी के राष्ट्रीय संग्रहालय – बूदापेस्ट में सुरक्षित है, जिसका काल बारहवीं सदी निर्धारित किया गया है । वी० थामसन (V. Thomsen) तथा एल्थीम इसको नवीं श० का मानते हैं । नेमेथ इसको तुर्की भाषा का मानते हैं । इस लिपि के वर्ण तथा उपर्युक्त अभिलेख 'फ० सं० – ३६२' पर दिया गया है ।

जर्मनी

इतिहास : टैसिटस (Tacitus) इतिहासकार के अनुसार प्राचीन जर्मनी (जर्मेनिया) में तीन मुख्य धार्मिक जातियां निवास करती थीं जिनके नाम इंगायवोन, हर्मीनोन तथा इस्तायवोन थे । इनके अपने-अपने पृथक देवी-देवता थे । इनके अपने-अपने राजा थे । इन तीन जातियों के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न जातियां निवास करती थीं ।

1. फ० सं०—२४७.
2. हंगेरी के दक्षिणी भाग में स्थित है ।

जर्मनी

१—दूसरी श०; २—नवीं श०; ३—चौदहवीं श०; ४—उन्नसवीं श०

निकोलसबर्ग लिपि के वर्ण

नवीं श० का एक लघु अभिलेख

र द उ क त र स न

यह दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा - स्वर लगाईये

न(अ)स;(इ)रत(अ):क(ओ)द(उ)र

नास इरता कोदूर = प्रातः एक घूंट के साथ

फलक संख्या – ३६२

उदाहरणार्थ, इंगायवोन के धर्मानुयायी किम्बरी, ट्यूटन, वन्डाल, जूट, ऐंगिल तथा फ्रीजियन थे। हर्मीनोन के मतानुयायी सुयेवी तथा लम्बार्ड थे और इस्तायवोन के मतानुयायी चेरूसी, बटावी, सिकाम्ब्री आदि थे। इसके अतिरिक्त बवरियन, सैक्सन, फ्रैंक तथा अलामन भी निवास करते थे। जर्मेनिया विभिन्न जातियों का एक संग्रहालय था। ये सब जातियां भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य करती थीं, जैसे, मछली पकड़ना, किश्तियों का बनाना, खेती करना, व्यापार करना आदि। ये जातियां आवश्यकताओं के अनुसार तथा मंगोलों के आक्रमणों के कारण अपना निवास-स्थान परिवर्तन करती रहती थीं। ये लोग रूनी लिपि का प्रयोग वृक्षों की छालों पर खोदकर किया करते थे।

सर्वप्रथम सीज़र ने आल्प पर्वतों को पार कर इन जातियों को अपने अधीन करने का प्रयत्न किया था। तदनन्तर रोम ने कई बार जर्मेनिया पर आक्रमण किये। शनैः-शनैः इन जातियों ने रोम की संस्कृति को अपनाना आरम्भ कर दिया। जर्मनी के मज़दूर तथा युवक रोम की सेना में भर्ती होने लगे। रोम की पद्धति पर जर्मनी में कई नगरों का निर्माण आरम्भ होने लगा। रोम के साम्राज्य के इस विस्तार के कारण अब दो सम्राट नियुक्त किये गये। एक रोम में तथा एक ट्रायर (Trier) में। ट्रायर का सम्राट कांस्टैंटियस नियुक्त हुआ जो स्पेन, गाल तथा ब्रिटेन पर शासन करता था।

जब ४१० में गोथों ने रोम पर आक्रमण कर दिया तब जर्मेनिया से रोम – सेना भेज दी गयी। रोम – सेना की अनुपस्थिति में फ्रैंन्कों ने ट्रायर पर अधिकार कर लिया। अलामनों ने अलसासे (Alsace) पर अधिकार कर लिया तथा बर्गण्डियों ने अन्य भूभाग को पराजित करके अपना एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। विसीगोथों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया। जब हूणों के जर्मेनिया पर आक्रमण होने लगे तब यह राज्य एक हो गये। ४५ में पुनः हूणों का आक्रमण हुआ। इस बार ऐटियस के नेतृत्व में हूणों को सदैव के लिये खदेड़ दिया गया। अट्टिला का वध उसी की पत्नी, जो जर्मनी की एक राजकुमारी थी, द्वारा कर दिया गया। इस युद्ध ने पश्चिम को मुक्ति प्रदान कर दी। शनैः-शनैः रोम का प्रभुत्व समाप्त होने लगा।

४७६ में रोम का अंतिम सम्राट सिंहासनारूढ़ हुआ जिसको केवल एक वर्ष पश्चात् ही अधिकार मुक्त कर दिया गया। इस सम्राट का नाम रोमलस आगस्टलस था। जर्मनी ने अपना नया सम्राट ओडोसर (Odoacer) जो सीथिया का एक राजकुमार था, निर्वाचित कर लिया। उसने रोम-राज्य के चिन्ह को रोम के सम्राट को, जो कुस्तुनतुनिया (कांसटैन्टीनोपिल) से शासन करता था, लौटा दिया। इसके अर्थ स्पष्ट थे कि जर्मन सम्राट अब रोम के सम्राट के अधीन नहीं रहा। छठी शताब्दी के अंत में लम्बार्डों ने जर्मनी का बहुत सा भाग (मोराविया, बोहेमिया, आस्ट्रिया आदि) अपने अधीन कर लिया। विसीगोथों ने स्पेन और दक्षिणी गाल अपने अधीन कर लिये। जो भाग जर्मनी का शेष रह गया वह जर्मन जातियों ने आपस में विभाजित कर लिया। ये सभी जातियां अब ईसाई धर्म की अनुयायी बन चुकी थीं। फ्रांस फ्रैंकों के अधीन, इटली ओस्ट्रोगोथों के अधीन, अफ्रीका वण्डालों के अधीन तथा इंगलैण्ड[1] ऐंग्लों-सक्सनों के अधीन हो गये थे।

फ्रैंकों के राजा क्लोविस ने, जो ४८१ में गद्दी पर बैठा, अपनी प्रजा के सहयोग से बड़े सुचारु रूप से शासन किया परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् परम्परा के अनुसार, उसका राज्य उसके पुत्रों में विभाजित कर दिया गया। सत्ता को पाने के लिए आपस में युद्ध हुए। उनमें से चार्ल्स मार्तेल विजयी हुआ। उसने ७१४ से ७४१ तक शासन किया। उसने मुसलमानों को दक्षिण की ओर भगा दिया तथा राज्य को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। उसके

1. इंगलैण्ड का नाम भी ऐंगिल-लैण्ड से इंगलैण्ड पड़ा।

पुत्र पेपिन ने ७४१ से ७६८ तक शासन किया । उसने रोम को लम्बार्डों के आक्रमण से बचा लिया तथा रोम के पादरी को कुछ भू-भाग दान-रूप में प्रदान कर दिया, जिसका नाम पापल-स्टेट पड़ा । पेपिन के मरणोपरांत उसका पुत्र चार्ल्स सिंहासनारूढ़ हुआ । इसने सैक्सनों से ३० वर्ष युद्ध किया । उनको परास्त कर ईसाई-धर्म का अनुयायी बना लिया । जब यह कुछ विद्रोहियों का दमन करने रोम गया, तब रोम के पादरी ने प्रार्थना उपरांत पहली जनवरी ८०० को उसके सिर पर मुकुट रख दिया और घोषणा की चार्ल्स सारी रोम जाति का सम्राट है । इसके मरणोपरांत लुई सिंहासन पर बैठा और उसने ८१८ से ८४० तक राज्य किया ।

अब उत्तर से आक्रमण होने लगे । बड़ी अराजकता फैलने लगी । ९३६ में ओटो महान् सम्राट बना जिसने मेग्यिारों को खदेड़ दिया और उनको हंगेरी में निवास करने के लिये विवश किया । अब जर्मनी ने पूर्व की ओर अपना विस्तार किया और तेरहवीं शताब्दी में प्रूशिया पर अधिकार कर लिया । १५१७ में लूथर ने प्राचीन ईसाई-धर्म के विरुद्ध क्रांति कर दी । जर्मनी का विभाजन धर्म के अनुसार कैथोलिक व प्रोटेस्टैंटों में हो गया । १६१८ से १६४८ तक युद्ध होता रहा । १८०६ में पवित्र रोमन साम्राज्य समाप्त कर दिया गया । १८१५ में आस्ट्रिया के अन्तर्गत एक संघ स्थापित हुआ जिसका कार्य १८६६ तक चलता रहा । १८६६ में एक युद्ध हुआ जिसमें आस्ट्रिया को पराजित करने का प्रयास किया गया । अब जर्मनी एक डोर में बंध गया । १८७१ में फ्रांस से युद्ध हुआ और एक जर्मन – साम्राज्य स्थापित हुआ जिसका प्रथम चांसलर बिसमार्क हुआ । १८७९ में आस्ट्रिया से तथा १८८२ में इटली से मैत्री सन्धियाँ हुईं । १८८४ में जर्मनी ने अपना विस्तार आरम्भ कर दिया । १९१४ में प्रथम महायुद्ध हुआ । कैसर को राज्यपद से पृथक कर दिया गया और १९१८ में एक लोकतंत्र स्थापित हुआ । युद्ध के पश्चात् जर्मनी के बहुत से उपनिवेश जर्मनी से ले लिये गये । १९३९ में दूसरा महायुद्ध आरम्भ हुआ । ८ मई १९४५ को यह युद्ध जर्मनी की हार में समाप्त हो गया । १९४९ में पूर्वी तथा पश्चिमी भागों में विभाजित हो गया । पश्चिमी भाग अमरीका एवं इंगलैण्ड के प्रभाव में तथा पूर्वी रूस के प्रभाव में आ गया ।

लिपि :—जर्मनी की प्राचीन लिपि के वर्णों का नाम 'रून' था । 'रून' शब्द जर्मन – केल्ट भाषा का है जिसका सम्बन्ध अज्ञात है । इसके अर्थ गोथिक भाषा के शब्द 'रूना' में 'गोपनीय' है । प्राचीन आयरिश भाषा में भी इसके अर्थ 'गोपनीय' हैं । ऐंग्लो – सैक्सन भाषा में इसके अर्थ 'गोपनीय' कानाफूसी के हैं । सर्वप्रथम 'रून' के अभिलेख सत्रहवीं श० में ब्यूरेन्स (Burens) और वर्मियस (Wormius) द्वारा प्रकाशित किये गये । तद – नन्तर बहुत से अभिलेख प्रकाशित हुए । इनका तथा अन्य कई अभिलेखों का रहस्योद्‌घाटन डब्ल्यु० ग्रिम (W. **Grimme**), ब्राइन्यूल्फ़सन (Brynjulfsson) तथा लिल्येग्रिन (j = य) (**Liljegren**) द्वारा उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में हुआ । तत्पश्चात् इस लिपि पर और अधिक शोध कार्य नार्वे के विद्वान् बुग्गे (Bugge – 1905) तथा डेनमार्क के विद्वान् विम्मर (Wimmer – 1874) द्वारा सम्पन्न हुए ।

सबसे प्राचीन अभिलेख उत्तरी जर्मनी से प्राप्त हुआ जिसका काल चौथी श० निर्धारित किया गया है । इस लिपि की दिशा बाएँ से दाएँ है परन्तु कुछ अभिलेख दाएँ से बाएँ की दिशा वाले भी प्राप्त हुये हैं ।

प्राचीन जर्मनी के रूनों[1] में २४ वर्ण प्रचलित थे । इनका उद्‌भव लगभग चौथी श० में हुआ तथा इनका प्रयोग रोमन लिपि के प्रयोग के कारण आठवीं सदी में बिलकुल समाप्त हो गया । इन चौबीस वर्णों को तीन भागों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक भाग में आठ आठ वर्ण रखे गये हैं । प्रत्येक भाग को आठ वर्णों का एक कुटुम्ब माना गया है जो वर्णों की ध्वनियों पर निर्भर हैं । उन तीन भागों को फ़्रेयर का (**Freyr's**), हैगाल का (**Hagall's**) तथा टायर का (**Tyr's**) कुटुम्ब कहते हैं । (फ० सं० – ३६४) ।

1. Arntz, H. : Handbuch der Runenkunde (1935), p – 46.

प्राचीन जर्मनी के रून

फ़	उ	उ	थ	थ	अ	र	र	क	क
य	व	व	ह	ह	न	ई	ज	ज	जज
ऐ	प	प	प	ज़/र ------->			स	स	त
ब	ब	ए	ए	म	ल	नं	नं	नं	नं

वर्ण-ध्वनि २४ हैं	द	द	ओ	ओ	इस लिपि में ४५ चिन्ह हैं

फलक संख्या – ३६४

नार्वे-स्वीडन-डेनमार्क

नार्वे का इतिहास : नार्वे का प्राचीन युग प्राचीन जर्मनी से सम्बन्धित था। जर्मनी के प्राचीन रूनी लिपि के अभिलेख, जिनका काल ईसा की तृतीय शताब्दी निर्धारित किया गया, यहाँ से प्राप्त हुए। यहाँ की प्राचीन भाषा भी प्राचीन-जर्मन थी। ऑस्लो के निकट का भूभाग, जिस पर स्थानीय राजा राज्य करते थे, डेनमार्क (प्राचीन-युत लैण्ड) के अन्तर्गत रहा। इस देश का इतिहास ८१३ से आरम्भ होता है। इसको नार्स भी कहते हैं। यहाँ के निवासी नार्समेन (नार्थमेन) कहलाते थे। उन्होंने इसी शताब्दी में आइस लैण्ड, ग्रीन लैण्ड, आयर लैण्ड तथा स्काट लैण्ड अपने अधीन कर लिये थे। ९९५ में इस देश ने ईसाई धर्म अपना लिया। यहाँ के एक शासक ने १०६६ में इंगलैण्ड पर आक्रमण कर दिया।

१३८० में इसकी राजधानी ट्रोण्डहाइम (**Trondheim**) थी। १३९७ से यहाँ डेनमार्क का शासन स्थापित हो गया। १८१४ में कील के एक सन्धिपत्र के अनुसार नार्वे स्वीडन के अधीन कर दिया गया। स्वीडन ने इस राज्य का विधान पृथक रखा परन्तु शासन अपने नृप-राज्य का ही रखा। १९०५ में यह पृथक होकर पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

स्वीडन का इतिहास : प्राचीन नार्स भाषा में स्वीवर (**Sviar**), स्वीडिश भाषा में स्वीअर (**Svear**) तथा एंग्लो-सैक्सन भाषा में स्वीवन (**Sweon**) के नामों से सम्बोधित किया जाता रहा। यहाँ के निवासी स्वीन कहलाते थे। यहाँ वाइकिंग जाति के लोग भी निवास करते थे। प्राचीन नार्स भाषा में वाइकिंग के अर्थ वीर-योद्धा होते थे। इस जाति के लोगों का काम भी सामुद्रिक लूटमार था। यहाँ से ही गोथ जाति के तथा वारंगी जाति के लोगों ने रूस तथा दक्षिणी यूरोप की ओर प्रस्थान किया।

ग्यारहवीं शताब्दी में यह देश ईसाई-मत का अनुयायी बन गया। बारहवीं शताब्दी में इसने फ़िनलैण्ड को परास्त किया। १३९७ में यह डेनमार्क तथा नार्वे से मिल गया। १५१३ में इस संघ से पृथक हो गया तथा अपना विस्तार करना आरम्भ कर दिया। १५६१ में स्तोनिया, १६२९ में लिवोनिया, १६४५ में गोटलैण्ड द्वीप आदि अपने अधीन कर लिये। १६६० में डेनमार्क का बहुत सा भाग भी अपने देश में मिला लिया। १७००-२१ के युद्ध में इस की सत्ता क्षीण होने लगी। १७४३ में फ़िनलैण्ड रूस के अधिकार में चला गया। १८१४ में नार्वे के साथ सम्मिलित हो गया। १९०५ में दो देश स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे। दोनों महायुद्धों में यह राज्य तटस्थ रहा।

डेनमार्क का इतिहास : यहाँ डेन[1] जाति के लोग छठी शताब्दी में आकर बस गये। प्राचीन काल में युत जाति के निवास करने के कारण यह युतलैंड भी कहलाता था। ८००-१००० के मध्य डेन लोग भी वाइकिंग लूटमारों के साथ मिल गये और इंगलैण्ड, फ्रांस तथा दक्षिणी देशों पर आक्रमण किये। १०१८ से ईसाई मत के अनुयायी होने लगे। ११५७ में वाल्डिमार ने एक नया राजवंश स्थापित किया। १४०० में यह जर्मनी के प्रभाव में आ गया। १४४८ से १४६३ तक यह देश एक नृपराज्य रहा।

१५३६ में उसने प्रोटेस्टैन्ट-ईसाई-मत अपना लिया। इस देश ने कई युद्ध लड़े और अपने कई उपनिवेश खो दिये। १८६४ में आस्ट्रिया के युद्ध में पराजित हुआ। प्रथम महायुद्ध में तटस्थ रहा। १९१७ में वेस्ट इण्डीज को अमेरिका के हाथ बेच दिया। १९१८ में आइसलैण्ड की स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान कर दी। द्वितीय महायुद्ध में यह देश १९४० से ४५ तक जर्मनी के अधीन रहा।

---

1. डेन ट्यूटन जाति की शाखा थी।

नार्वे – स्वीडन – डेनमार्क के रून : प्राचीन जर्मनी के रूनों का प्रयोग जर्मनी तक ही सीमित रहा, जो आठवीं श० के पश्चात् समाप्त हो गया और डेनमार्क के दक्षिणी भाग के ऊपर न बढ़ सका। इसके पश्चात् इनका अधिक प्रयोग नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क में हुआ। इनका उद्‌भव नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क में प्राचीन रूप से हुआ। इसमें केवल सोलह[1] रून थे अर्थात् प्राचीन रूनों में से आठ वर्ण कम कर दिये गये तथा उनकी ध्वनियों का भार इन सोलह वर्णों के ऊपर रख दिया गया। उदाहरणार्थ 'त/ट' के चिह्न से 'द/ड' का भी उच्चारण किया गया, इसी प्रकार 'ई' के चिह्न से 'ए' की, 'ब' के चिह्न से 'प' की, 'क' के चिह्न से 'ग' और 'इंग' की और 'उ' के चिह्न से 'ओ' और 'व' की ध्वनियों का कार्य लिया गया (फ० सं०—३६६)।

इस लिपि के अभिलेख स्मृति – शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण किये हुये प्राप्त हुये हैं, जो मृतक के सम्बन्धी उनकी समाधियों पर एक स्मारक के रूप में स्थापित कर देते थे। ऐसे अभिलेखों की संख्या लगभग दो सहस्र पाँच सौ से कुछ अधिक है जो नार्वे – स्वीडन से प्राप्त हुए। उनका काल सातवीं से आठवीं श० का माना जाता है। इसका सबसे प्राचीन अभिलेख एक कटार पर उत्कीर्ण नार्वे से प्राप्त हुआ है। यह कटार अस्थि के दस्ते की बनी है। इसका काल आठवीं सदी निर्धारित किया गया है (फ० सं० – ३६६क)। इसका रहस्योद्‌घाटन अरंज (Arntz) द्वारा किया गया है। जो उसकी पुस्तक[2] में प्रकाशित हुआ। 'फ० सं०—३६६' पर पाँच कालम दिये गये हैं। तृतीय कालम में वर्णों की ध्वनियाँ दी गई हैं। चतुर्थ कालम में वर्णों के नाम तथा पंचम में नामों के अर्थ[3] दिये गये हैं।

बिन्दी वाले रून : जब वाइकिंग काल में (Viking – ८०० से १०५० तक) नार्वे – स्वीडन वाले रूनों की संख्या चौबीस से घट कर केवल सोलह रह गई और उच्चारण का भार दूसरे चिह्नों पर रख दिया गया तब शनैः शनैः मानव प्रगति के साथ कुछ कठिनाई प्रतीत होने लगी। इसके अतिरिक्त रोम के राज्य तथा धर्म के बढ़ते कदमों ने रोम की लिपि को भी प्रगति प्रदान की। इन कारणों से दसवीं सदी में नार्वे – स्वीडेन के रूनों में कुछ परिवर्तन किये गये। उदाहरणार्थ 'क' और 'ग' की ध्वनियों के लिए जो एक चिह्न निश्चित किया गया था उसका रूप तो वैसा ही रखा गया परन्तु 'ग' की ध्वनि को पृथक करने के लिए उसी चिह्न या रून में एक बिन्दी लगा दी गई। इसी प्रकार अन्य ध्वनियों को पृथक करने के लिये उसी प्रकार के रूनों में बिन्दी का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया गया। साथ साथ उनके स्थानों में भी परिवर्तन कर दिया गया। यह परिवर्तन रोम की लैटिन लिपि के अनुसार किया गया (फ० सं० – ३६७)।

पी० जी० थोरसेन (P. G. Thorsen, 1877) के अनुसार यह परिवर्तन वाल्डेमार नरेश (नार्वे – स्वीडन) के शासन काल (१२०२ से १२४१ ई० तक) में पूर्ण[4] हो गया। इन रूनों का नाम स्टुंगनार रूनिर (Stungnar Runir) अर्थात् बिन्दी वाले रून रख दिया गया।

---

1. Neckel : 'Die Runen'—Acta Philologie, vol. XII (1938), p–102.
2. Die Runen Schrift, (1938), p–76.
3. Johannesson, A. : Grammatik d r urnordischen Runeninschriften (Heidelberg—1928), p–97.
4. Thorsen, P. G. : Our Ru ternes Brug til Skrift uden for det monumentale – (1877), p–29.

नार्वे–स्वीडन
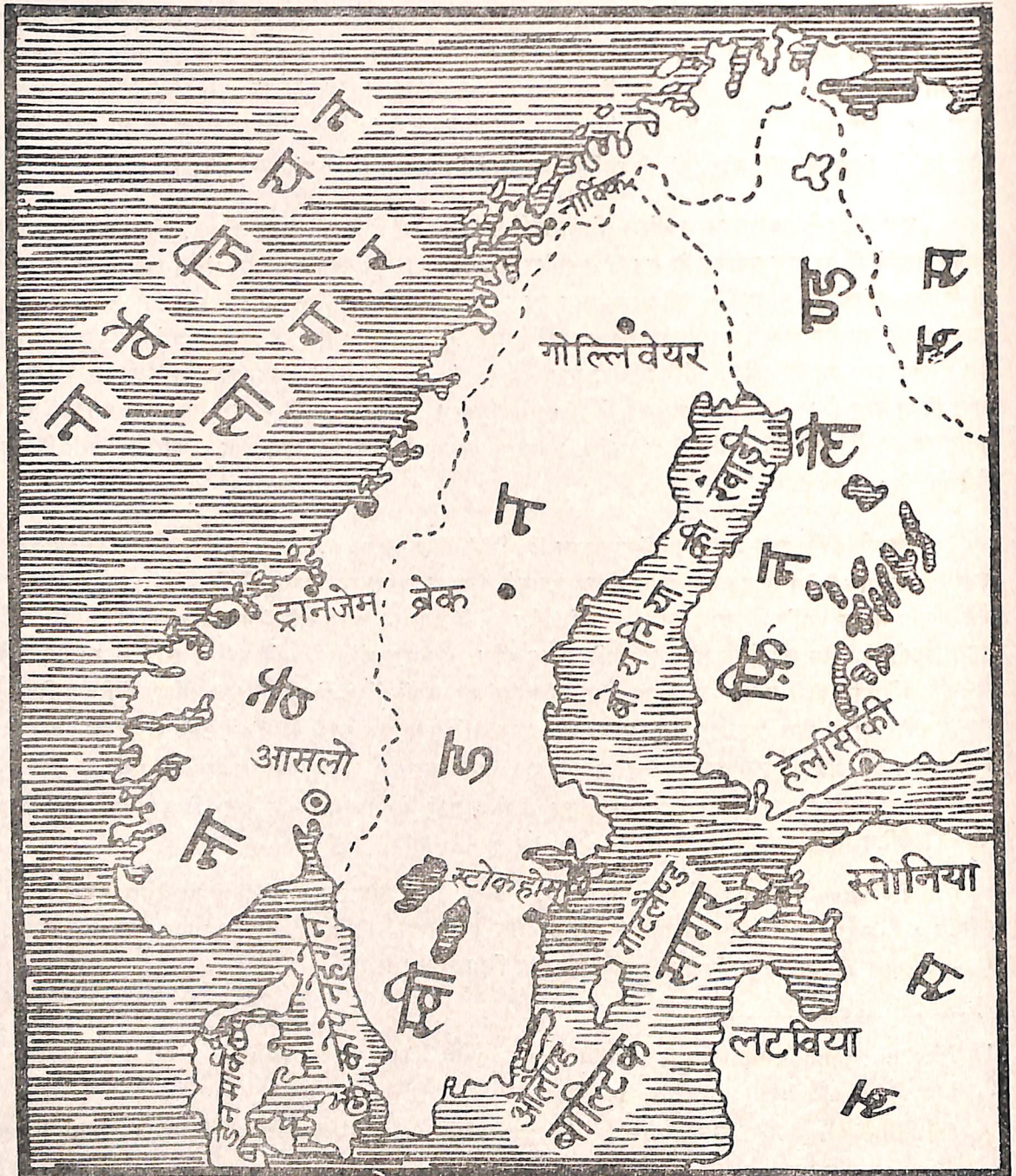
फलक संख्या – ३६५

डेनमार्क, नार्वे-स्वीडन रून

डेनमार्क	ना॰ स्वी॰	ध्वनि	नाम	अर्थ
ᚠ	ᚠ	फ़	फ़िउ	प्रथम (पशुधन)
ᚢ	h ᚢ	उ,ओ,व	उर	बाद में (हल्की वर्षा)
ᚦ	ᚦ	प, थ	थुरिस	दानव (तीसरा डण्डा)
ᚨ	ᚬ	अ,आ	आस	अस्थि (उससे ऊपर)
R	R	र	रट	चढ़ना (अंतिम डिब्बा)
ᚴ	ᛍ	क,ग,न	कौन	सूजन (चिपकना)
ᚼ	ᚽ	ह	हगाल	ओला
ᚾ	ᚿ	न	नौत	संकट
ᛁ	ᛁ	ई	आइस	बर्फ़ (ईस)
ᛅ	ᚴ+ᛆ	अ	अर	वर्ष
ᛋ N	ᛁ	स	सोल	सूर्य
↑	ᛐ	त,द,न्द	तइर	रांगा
B ᛒ	ᛔ ᛒ	प,ब,म्ब	बजरको	वृक्ष की छाल (ब्योर्की)
ᛘ Φ	ᛙ ♀	म	मद्र	मनुष्य
ᛚ	ᛚ ᛚ	ल	लगु	पानी
ᛦ	ᛁ	र	यर	धनुष

फलक संख्या – ३६६

दल्सका रून : स्वीडन के एक जनपद औरे दलार्नें (Övre Dalarne)[1] में इनका आज भी गोपनीय रखने के लिए — किसी प्रकार के पत्रव्यवहार अथवा किसी अन्य बात के लिए प्रयोग किया जाता है । इनका एक छोटा सा अभिलेख एक छड़ी पर अंकित अल्फ़दलेन ग्राम से प्राप्त हुआ जो १७५० ई० का माना जाता है । दल्स्का रूनों की वर्णमाला 'फ० सं० – ३६७' पर दी गई है ।

एक प्रतिदर्श

स इ ग ल इ स न अ ह ल ए
'सिगलिस नहलै' = यह भूषण संकटों को दूर रखता है।
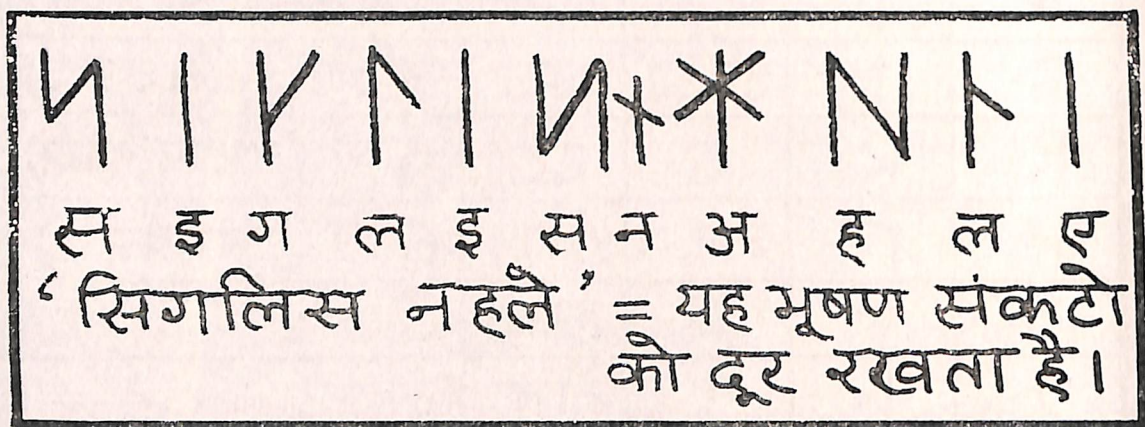
फलक संख्या – ३६६ क

प्राचीन इंगलैण्ड

इतिहास : प्राचीन इंगलैण्ड के विषय में आयरलैण्ड के पाठ के साथ कुछ वृतान्त दे दिया गया है । यहाँ के मूल निवासी ब्रतानी थे । तत्पश्चात् योरोप की अन्य जातियाँ यहाँ आकर बसने लगीं उनमें से दो जातियाँ मुख्य थीं, एक ऐंगिल दूसरी सैक्सन ।

टैसीटस इतिहासकार के कथनानुसार ऐंगिल जाति के लोग मूलतः ट्यूटोनी जाति के थे । ट्यूटोनी जाति हेलवेती जाति की एक शाखा थी जो स्वीट्ज़रलैण्ड में निवास करती थी । यह सब जातियाँ केल्ट जाति की उपजातियाँ थीं । ट्यूटोनी जाति के लोग रोमनिवासियों के सम्पर्क में लगभग १०३ ई० पू० में आये । ऐंगिल जाति के लोग इंगलैण्ड आने के पूर्व एक ऐंगुलस द्वीप में निवास करते थे जो डेनमार्क के निकट था । इसको वर्तमान काल में शिलेसविग प्रांत कहते हैं । पाँचवी सदी में इन लोगों ने इंगलैण्ड के पूर्वी भाग पर आक्रमण किया और वहीं बस गये ।

1. Noreen ; Ovre Dalrane (1903), page-405,

बिन्दी वाले रून

अअब क-स द द ए फ़.व ग हर

A B C D E F G H

ई ज क ल म नन ओओओ प प क़र

I J K L M N O P Q R

ससस टट पपउ व यय ज़ज़ज़ ओम अ

S T Z Ö Ä

दल्स्का रून

अ अ ब क.स द द ए फ़ फ़ ग

ह ह ई क क ल म न ओ प प क़र

स ट उ व क्स यय आआ ऐऐ अअ

संयुक्त अ+उ = औ ; अ+न = अन ; उ+क = उक ; ट+अ = टा

फलक संख्या – ३६७

इंगलैण्ड

फलक संख्या – ३६८

ऐंग्लो-सैक्सन रून

वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम
ᚠ	फ़	फ़ियो feoh	ᛄ	ज़	जर zer	ᛞ	द ड	दयेग daeg
ᚢ	उ	उर Ur	ᛇ	यो	यो eow	ᛟ	ओय	येपेल epel
ᚦ	थ	थोर्स Thors	ᛈ	प	प्योरो peoro	ᚪ	आ	आक āc
ᚩ	ऑ	ऑस ōs	ᛉ	क्स	योलक्स eolx	ᚫ	अये	अयेस्क aesk
ᚱ	र	राड Rād	ᛋ	स	सीगेल sigel	ᛠ	इय	इयर ēar
ᚳ	क	केन Cen	ᛏ	त ट	तीर tir	ᚣ	य	यर ȳr
ᚷ	ग	गीफ़ू gyfu	ᛒ	ब	बेयोर्क beorc	ᛡ	ईया	ईयार ior
ᚹ	व	व्यून wyun	ᛖ	ए	एह eh	ᛢ	क	वियोर्द weord
ᚻ	ह	हैगल haegl	ᛗ	म	मन man	ᛣ	क	काल्क calc
ᚾ	न	नीद nyd	ᛚ	ल	लगु lagu	ᛥ	स्त	स्तान stān
ᛁ	ई	ईस is	ᛝ	इंग	इंग ing	ᚸ	ज	जार gār

फलक संख्या – ३६९

सैक्सन जाति के लोग भी ट्यूटोनी जाति के सम्बन्धी थे। सर्वप्रथम टॉलेमी ने दूसरी सदी के मध्य इनके विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त किया। यह लोग किम्ब्री के प्राचीन प्रायद्वीप में निवास करते थे (शिलेसविग प्रांत)। इन लोगों ने २८६ ई० से व्यापारी जलपोतों के लूटने का कार्य आरम्भ किया। चौथी सदी में इनकी सामुद्रिक डकैतियाँ अधिक होने लगीं। पाँचवी सदी में इन लोगों ने भी इंगलैण्ड के दक्षिणी – पूर्वी भागों पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। शनैः शनैः इन्होंने वहाँ अपने पंर जमा लिये। इसो कारण जो सैक्सन पूर्व में बस गये वह स्थान एसेक्स (East + Saxon = Essex), जो लोग पश्चिम में बस गये वह स्थान वेसेक्स (Wessex) तथा जो सैक्सन दक्षिण में बस गये वह स्थान ससेक्स (Sussex) कहलाने लगा। ऐंगिल जाति के लोगों के बसने के कारण

ऐंग्लो–सैक्सन रून का प्राचीनतम् अभिलेख

एक हल एवअमअसटईर हओलटईंगअर

एक ल्हैवागस्टीर होल्टिंगर

ह ओ र न अ ट अ व ई ड ओ

होर्नी टईडो

"I Luigast the Holting made (this) horn."

"मैंने, होल्टिंग का लुइगस्ट, सींग को बनाया"
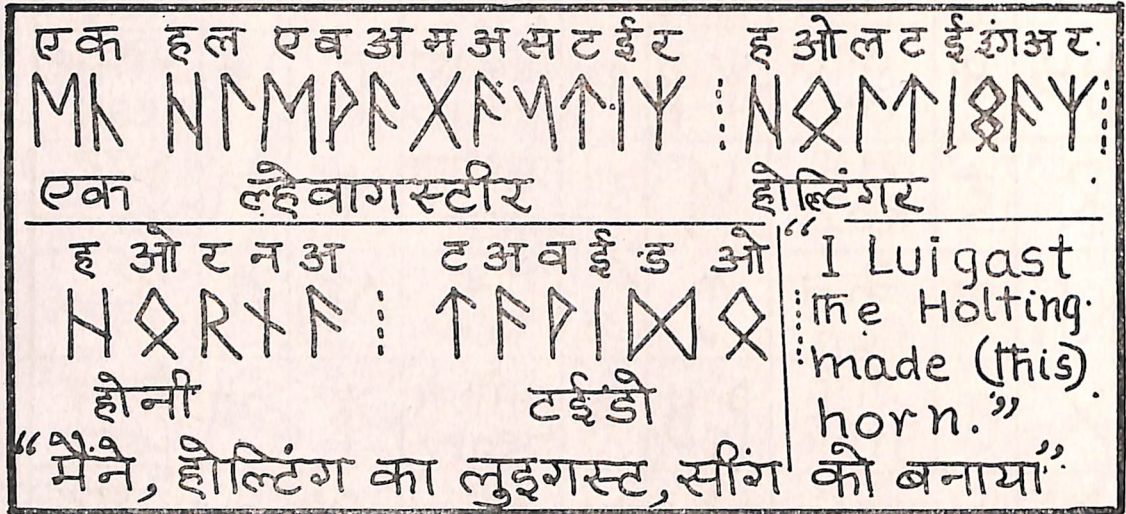
फलक संख्या – ३७०

ऐंगिल – लैण्ड तथा इंगलैण्ड कहलाने लगा। ऐंगिल तथा सैक्सन जातियों के सम्मिश्रण से जो लोग उत्पन्न हुये वे ऐंग्लो – सैक्सन[1] कहलाने लगे।

लिपि : पाँचवी सदी तक ऐंग्लो – सैक्सन जातियों के लोग प्राचीन जर्मनी के रून – वर्णों का प्रयोग करते रहे, परन्तु जब वे ब्रितानी लोगों के सम्पर्क में आये और कुछ अन्य ध्वनियों का भाषा में समावेश हुआ तब इन लोगों ने प्राचीन जर्मनी के चौबीस रून – वर्णों में चार[2] नई ध्वनियों के वर्ण और जोड़ कर अट्ठाईस रून बना लिये। सातवीं एवं आठवीं सदी में तीन वर्ण और जोड़ दिये और इसी प्रकार दसवीं सदी में दो अन्य रून वर्ण

1. यह नामकरण इंगलैण्ड के नरेश ऐल्फ्रेड द्वारा ८८ ई० में हुआ,
2. यह चार वर्ण 'फ० सं०--३६९' पर दो पंक्तियों के मध्य दिखाये गये हैं। अन्य तोन तथा दो वर्ण भी इसी प्रकार दिखाये गये हैं।

जोड़कर तैंतीस रूनों की एक वर्णमाला[1] बन कर प्रयोग में आने लगी। इसका प्रयोग अधिक दिनों तक न हो सका क्योंकि रोम के धर्म – प्रचारकों ने ईसाई – धर्म के साथ साथ रोम की लिपि का भी प्रचार किया और जैसे जैसे ईसाई धर्म में प्रगति हुई उसी के साथ रोमन लिपि की भी प्रगति हुई। फलस्वरूप रूनों का स्थान रोमन लिपि ने ले लिया (फ० सं०–३६९)। इसका प्राचीनतम अभिलेख[2] 'फ० स० – ३७०' पर दिया गया है।

बार्डी लिपि : केल्ट जाति के लोग मध्य यूरोप से चल कर लगभग ई० पू० की चौथी श० में आयरलैण्ड में आकर बस गये थे। इन लोगों में कुछ पुरोहित लोग भी थे जो ईश्वर के विषय में, आत्मा के विषय में तथा मरणोपरांत जीवन के विषय में खोज और चिन्तन – मनन किया करते थे। यह लोग बड़े विद्वान् समझे जाते थे। ज्योतिष विद्या तथा खगोल शास्त्र के भी ये पण्डित समझे जाते थे। ये लोग कविता भी करते थे तथा पूजन आदि की विधियों के भी ज्ञाता माने जाते थे। कुछ विद्वानों का विचार है कि ये लोग केल्ट नहीं पिक्ट (आयरलैण्ड के मूल निवासी) थे। इन पण्डितों का नाम ड्रूड था। इन्हीं विद्वानों की एक शाखा, जो इंगलैण्ड के पश्चिमी पर्वतों पर आकर बस गयी, बार्ड कहलाती थी।

इंगलैण्ड के पश्चिमी पर्वतों पर रहते रहते यह लोग वेल्श के नाम से ज्ञात होने लगे। यहाँ पर इन लोगों ने एक सुसंगठित समाज की स्थापना की जिसको इंगलैण्ड की सरकार ने मान्यता प्रदान कर दी। समय समय पर यह लोग अपने उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। महारानी एलिज़बेथ प्रथम के शासन काल से इनके रीति – रिवाज़ों में कुछ शिथिलता आने लगी परन्तु १८२२ ई० से उनका पुनरुत्थान होने लगा। अब उनके उत्सव निश्चित तिथियों पर मनाये जाते हैं। वर्तमान काल में कविता करना उनकी जीविका बन गई है।

इन्होंने बड़े गोपनीय ढंग से अपनी प्राचीन लिपि को सुरक्षित रखा है। इसका उद्भव रून – वर्णों द्वारा प्रतीत होता हैं। इस के उद्भव के विषय में विद्वान् एकमत नहीं हैं। इस लिपि की पद्धति में कुछ भारतीय लिपि पद्धति का समावेश भी दृष्टिगोचर होता है जो सम्भवतः मध्य एशिया से चल कर रून – लिपि के सम्पर्क में आकर इसको प्रभावित किया (फ० सं० – ३७१)।

रुमानिया

इतिहास : इसका प्राचीन नाम डाकिया है। इसके निवासी यायावर थे। लगभग १६३ वर्ष यह रोमन राज्य के अधीन रहा परन्तु २७१ ई० में रोमन सम्राट औरेलियन (Aurelian) ने अपना अधिकार हटा लिया। तीसरी से बारहवीं श० तक भिन्नभिन्न जातियों के आक्रमण होते रहे। कहीं गोथों के, तो कभी स्लावों के और कभी अवारों। ८६४ में बुल्गारों ने आक्रमण किया। यह लोग अपने साथ ईसाई धर्म लाये और रुमानिया निवासी ईसाई धर्म के अनुयायी हो गये। बुल्गारों को मैग्यारों ने परास्त कर दिया और ग्यारहवीं श० में हंगेरी के राजा स्टीफ़ेन ने इसको अपने अधीन कर लिया।

१२४१ में मंगोलों ने विध्वंसक आक्रमण करके सब कुछ नष्ट कर दिया। १७७४ में यह भूभाग दो राज्यों में – वालाचिया तथा मोलडाविया – विभाजित हो गया। १७ जनवरी १८५९ को यह दो भाग पुनः एक सूत्र में बंध गये। १८७९ में यह देश स्वतंत्र हो गया। १९४७ में यहाँ के शासक राजा माइकिल ने राजगद्दी छोड़ दी और देश समाजवादी हो गया।

---

1. Keller, W, : Angelsachs Paladeographie Palaestra, Vol, XLlll, (1960), P – 46,
2. यह Loom of The Language - Page 265 – से लिया गया है।

बार्डो लिपि

अ	आ	ए	ऐ	ई	ब
द. ड	क	ज	फ़	ग	ह
ल	म	न	ओ	प	र
स	त. ट	ती. टी	व	व	क्स
इंग	ज़	उ	ऊ	व	य

फलक संख्या – ३७१

रुमानिया की लिपि

अ	λ	द्ज़	S	न	H	त	T	त्स	Ч	इयू	Ю
ब	Б	ज़	Z3	क्स	Ꙁ	उ	Ȣ	श	Ш	इया	Ꙗ
व	B	इ	N	ओ	O	उ	Oy	श्त	Ψ	इये	IE
ग	Γ	फ़्त	Θ	प	П	फ़	Φ	ए	Ъ	इय	Ѧ
द	Δ	क	Ï	ऊ	Y	ख़	X	इ	Ы	ई	Y
ए	E	ल	Λ	र	P	प्स	Ѱ	य	Ѣ	पन	↑
ज	Ж	म	M	स	C	ओ	ω	ईया	Ѫ	द्श	Џ

फलक संख्या – ३७२

अल्बेनियन (अल्बेनो) लिपि

अ		त्स		र		गंज		प		श	
ए		द्स		ई		ग़		ब		श़	
इ		द्ंस		फ़		स		म्ब		श्त	
ओ		व		थ		ह		म्प		ते	
उ		ल		म		ख़		न		जं	
ईयु ü		ल्ज		ज		ज़		त्श		अस	
ऍ		क्ज		ग		त		द्श़		ओम	
स		क		गं		द		द्ंश़		जीयु	
द्ज़		क्स		ग्ज		न्द		स्त		व	५३ र्ण

फलक संख्या – २७२

रुमानियन लिपि : इस लिपि को सीरिलिक में आंशिक परिवर्तन करके बनाया गया परन्तु १६७० के पश्चात् रुमानिया ने रोमन लिपि का प्रयोग आरम्भ कर दिया। के० एम० मुसाइव (K. M. Musaiev) ने इसका वर्णन अपनी पुस्तक[1] में किया है। इसकी वर्णमाला एक पुस्तक[2] से ली गई है (फ०सं० – ३७२)।

अल्बेनिया

इतिहास : प्राचीन काल में अल्बेनिया को इलीरिया (Illyria)[3] कहते थे। यहाँ के लोग एक पहाड़ी जाति के थे। आठवीं श० में स्लाव लोगों ने इस भू-भाग पर आक्रमण किया तथा अपने अधीन कर लिया। जब प्राचीन ईसाई धर्म, रोमन चर्च तथा ग्रीक–आर्थोडाक्स चर्च में, विभाजित हो गया और कुस्तुनतुनिया की शक्ति का विस्तार होने लगा तब १२१४ तक यह एपरिस के अधीन रहा। १२२४ में बुल्गारिया के शासक इवान असेन ने इस पर अधिकार जमा लिया।

कुछ वर्षों पश्चात् यह पुनः बिज़ेन्टीन साम्राज्य का भाग बन गया। लगभग ४०० वर्ष यह ओटोमान तुर्कों के अधीन रहा। इसी काल में यहां के बहुत से लोग मुसलमान हो गये जो वर्तमान जनसंख्या के ७० प्रतिशत हैं। जब तुर्की और ग्रीस का युद्ध हुआ और तुर्की की पराजय हुई तो १९१२ में अल्बेनिया स्वतंत्र हो गया। प्रथम महायुद्ध में इसने बाल्कन राज्यों का साथ दिया। १९२१–२४ तक एक नृप-राज्य रहा। दूसरे महायुद्ध में इटली ने ग्रीस पर यहां से ही आक्रमण किया। इटली परास्त हुआ। ग्रीस ने अल्बेनिया पर आक्रमण कर दिया। १९४४ में बड़ी अशान्ति रही और देश कम्युनिस्ट हो गया। यह यूरोप का सबसे निर्धन देश है।

लिपि : यह लिपि विशुद्ध राष्ट्रीय मानी जाती है। इसकी खोज अल्बेनिया स्थित एक जर्मन राजदूत जी० वान् हब्न (G. Von Habn) ने की जिसके परिणाम स्वरूप १८५० में इसके अभिलेख उत्तरी अल्बेनिया के एक नगर एलबसन से प्राप्त हुये। केवल इसी नगर में इसका प्रयोग सीमित हो कर रह गया।

इसका आविष्कार थ्योडोर (Theodore) नाम के एक शिक्षक ने अठारहवीं श० के सातवें दशक में किया था। फ्रांज़ (Franz) के अनुसार इसकी उत्पत्ति[4] फ़नीशियन लिपि द्वारा, ब्लाउ (Blau) के अनुसार लीकियन लिपि द्वारा तथा गीटलर के अनुसार घसीट – रोमन – लिपि द्वारा हुई, जिसका प्रयोग सातवीं श० में होता था, (फ० सं०–३७३)।

□

---

1. Musaiev, K. M. : Alphavity yazkykov narodov S S S R – Moscow (1965)
2. Jensen, H : Syn, Symbol and Script – (London – 1970) p. – 5.2
3. इटली के मान चित्र में 'फ० सं०—३३५' पर इलीरिया नाम दिया गया है।
4. Halin : Albanesische Studien-(1854) p. 286.

पठनीय सामग्री

Arntz, H. : 'Origin of Runes' – Journal of German Philologie, 11., (1899).

Ibid : Die Runenschrift (1908).

Ibid : Handbuck Der Runenschrift (1902).

Atkinson, G. M. : 'Some Account of Ancient Irish Treatises on Ogham Writing' – Journal of Royal Historical and Archaeological Association of Ireland XIII (1921).

Bruce, D. : Runic and Heroic Poems of the Old Teutonic Peoples, (Cambridge – 1915).

Curtis, E. : A History of Ireland (1936).

Daustrup : A History of Denmark (Cop. – 1949).

Dunlop, R. : Ireland from Early Times (1922).

Gibbon, J. B. E. : Decline and Fall of the Roman Empire (1900).

Gjerset, K. : History of Norwegian People, (1932).

Grienberger : 'Die anglesächs Runenreihen' – Arkologie f. nord, Filol. XV (1898).

Hallendorff, C. : A History of Sweden (1938).

Halin : Albanesische Studien (1931).

Hodgkin R. H. : A History of the Anglo – Saxons, 2 Vols. (1939).

Joyee, P. W. : History of Ancient Ireland (1913).

Keller, W. : Angel – Sächs Palaeographie, XLIII, (1906)

Larsen, K. : A History of Norway (1948).

Macalister, S. : Studies in Irish Epigraphy (1907).

Ibid : Archaeology of Ireland, 3 Vols. (1928).

Macarteny, C. A. : Hungary (1934).

MacNeill : Phases of Irish History (1920).

Maveer, A. : The Vikings (1913).

Musalev, K. M. : Alphavity yazkykov narodov (Moscow – 1965)

Pedersen, H. : 'Runernes Oprindelse' – Aarboger f. nord, Old Kyndighed of Historic (3. R) Vol. 13. (1923).

Stephens, G. : Handbook of Runic Monuments (1884).

□□□

अध्याय : ८

अमरीकी देशों की लेखन कला का इतिहास

अमरीका

अमरीका की लिपियाँ इस आधुनिक अमरीका की नहीं हैं अपितु उन आदिवासियों की हैं जिनको आज 'रेड – इण्डियन' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। ये लोग उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका में फैले हुये थे। इनकी अपनी एक उच्च कोटि की संस्कृति थी। इनमें से कुछ रेड – इण्डियन जातियों ने अपनी लिपियों का स्वयं आविष्कार किया तथा कुछ जातियों के लिये ईसाई – धर्म – प्रचारकों ने उनकी भाषा के अनुरूप विचित्र प्रकार की लिपियों का आविष्कार किया। इन्हीं लिपियों का वर्णन इस पाठ में दिया गया है।

मैक्सिको

इतिहास : ईसा की सातवीं शताब्दी में नहुआ जातियाँ उत्तर की ओर से आकर बसने लगीं। उनमें से एक मुख्य टोल्टेक जाति ने एक नगर टोल्लन (आधु० टोला ग्राम) की आधारशिला रखी। एक अन्य चिचिमेक जाति ने आकर टोल्टेक जाति को नष्ट कर दिया परन्तु चिचिमेकों ने पराजित जातियों की संस्कृति को अपना लिया। चिचिमेकों की एक उपजाति अज़टेक (Aztec) थी जिसने एक दूसरे नगर की स्थापना की। इसका नाम अनाहुआक[1] (Anahuac) था जो आज मैक्सिको की राजधानी है।

१५१९ में हर्मन कोर्तेज़ ने अन्य जातियों के सहयोग से, जो अज़टेक राज्य के विरुद्ध थीं, इस राज्य को नष्ट कर दिया और मैक्सिको नगर की स्थापना की। शनैः शनैः सारी रेड – इण्डियन जातियों की सत्ता को नष्ट करके स्पेन निवासियों ने अपनी जागीरें स्थापित करना आरम्भ कर दिया। उधर स्पेन राज्य अपना पूर्ण अधिकार जमाना चाहता था। फलस्वरूप एक लम्बे समय तक विद्रोह की अग्नि जलती रही। १८२१ में मैक्सिको स्वतंत्र हुआ १८२२ में आगस्टिन दि ईतुरबिडे (Augustine de Ituribide) सम्राट बना परन्तु १८२३ में उसने राज त्याग दिया। १८२४ में मैक्सिको एक लोकतंत्र राज्य बन गया। १८४६ में अमरीका से युद्ध हुआ जिसमें मैक्सिको की पराजय हुई और कैलीफ़ोर्निया का भाग अमरीका ने डेढ़ लाख डालर देकर अपने अधीन कर लिया।

१८६३ में आस्ट्रिया के एक राजकुमार को मैक्समिलियन के नाम से सम्राट बनाया गया। कुछ दिन पश्चात् उसका वध कर दिया गया। कुछ दिनों की अराजकता के पश्चात् डायज़ राष्ट्रपति बनाया गया। १९११ में जब कई विद्रोह हुये तो उसको भागना पड़ा। तत्पश्चात् मदेरो राष्ट्रपति बना। १९१३ में उसका भी वध कर दिया गया। तदनन्तर सेनापति हुयेरतास राष्ट्रपति बना। उसने शासन को कड़ा किया परन्तु १९१४ में उसे भी भागना पड़ा। अमरीका के सहयोग से करांज़ा को नियुक्त किया। १९२० में उसका वध कर दिया गया। १९२४ में दूसरे राष्ट्रपति आब्रेगोन का वध कर दिया गया। १९२४ से कालेज़ राष्ट्रपति बना। इसने कुछ सुधार किये। १९२८ में पोर्टेज़ गिल राष्ट्रपति बना जिसने कालेज़ को देश से निर्वासित करा दिया। इसी प्रकार अनेक राष्ट्रपति बने और कुछ सुधार होते रहे।

लेखन कला : स्पेन के निवासियों के आने के पूर्व अज़टेक राज्य बड़ा शक्तिशाली एवं समृद्ध था। यहां कई प्रकार की कला जैसे पत्थर का काम, मिट्टी के बर्तन, बुनाई तथा बहुत सुन्दर रंगाई के काम होते थे। साथ

---

1. कुछ विद्वानों का विचार है कि टिनाक्टिलन नगर, जो अज़टेकों ने बसाया था वर्तमान मैक्सिको है।

साथ लेखन कला की भी उन्नति हुई। इन लोगों ने भी सर्वप्रथम दैनिक जीवन सम्बन्धी वस्तुओं के चित्रों से अपनी लिपि का आविष्कार किया। इसका प्रयोग यह लोग बड़े पशुओं की खालों पर लिख कर किया करते थे। मैक्सिको का पंचांग ६१३ ई० से आरम्भ होता है और तभी से लिपि का जन्म भी माना जाता है (फ० सं० – ३७४)।

अज़टेक – पंचांग का एक उदाहरण : इसका उल्लेख निम्नलिखित है (फ० सं० – ३७६ के नीचे)।

१. १८०० में इकोटा जाति के ३० लोगों को क्राउन जाति ने मार डाला।
२. १८०१ में, चेचक की महामारी फैल गयी।
३. १८०२ में घोड़ों की चोरी हो गयी।
४. १८०३ में खांसी का रोग फैल गया।

अज़टेक – अंक : ये आदिवासी अंक – गणित[1] का भी पर्याप्त ज्ञान रखते थे जो 'फ० सं० – ३७४' पर दिया गया है।

अज़टेक चित्र – लिपि : 'फ० सं० – ३७५ – ७६' पर अज़टेक चित्र – लिपि दी गयी है तथा प्रत्येक चित्र के ऊपर उसके अर्थ दिये गये हैं।

अज़टेक गणित
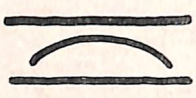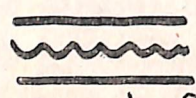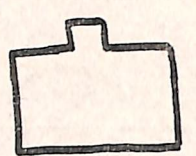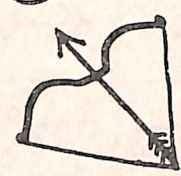
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१५ २० ३० ४० ५० ६६

८२ १००.२००.४०० १००० ८०००

फलक संख्या – ३७४

1, संख्यायें और रेखायें' – पीपुल्स प० हाउस, नई दिल्लो पृष्ठ – २७

अज़टेक जाति की चित्र–लिपि

आकाश	वर्षा	बादल	बिजली	बिजली-वर्षा	सूर्य
चन्द्र	प्रकाश	ग्रहण लगना	तारे	प्रातः काल	प्रातः
मध्याह्न	संध्या	रात्रि	रात्रि	समय	वर्ष
एक दिन	दो दिन	तीन दिन	एक माह	पर्वत	द्वीप
सागर	नदी	पुरुष	स्त्री पुरुष	मृत स्त्री पु०	जीवन मृत्यु
देखना	पहनना	बातकरना	घर दिल	घोड़ा युद्ध	शान्ति

फलक संख्या – ३७५

अज़्टेक जाति के कुछ अन्यचित्र

शुद्ध जल	अशांत जल तथा आंधी	टांग	टूटी टांग	चेचक
निवास स्थान	शक्ति	गोरा मनुष्य	जल प्रपात	अत्याधिक
बोलना	युद्ध करो	युद्ध करो	युद्ध करो	पत्थर
मिट्टी का बर्तन	विधवा	जल	शिकरा	रात्रि

अज़्टेक पंचांग का एक उदाहरण

१	२	३	४
१८०० में	१८०१ में	१८०२ में	१८०३ में

विश्वोत्पत्ति की कहानी

अमरीका की एक प्राचीन (रेड – इण्डियन) जाति लेनी – लेनापे के लोगों ने स्वयं अपनी चित्रात्मक लिपि द्वारा, 'विश्व की उत्पत्ति की कहानी' को अंकित करके निर्माण किया। विश्वोत्पत्ति को उनकी भाषा में 'वलम ओलम' (Walam Olum) कहते हैं।

इन चित्रों के अर्थ निम्नलिखित हैं :—(फ० सं० – ३७७)

१—सर्वप्रथम किसी स्थान पर, कहीं, पृथ्वी के ऊपर।

२—पृथ्वी के ऊपर कोहरा ही कोहरा था और उसमें मनीटो[2] था।

३—सर्वप्रथम अन्तरिक्ष में प्रत्येक स्थान पर केवल वही महान् मनीटो था।

४—उसने आकाश तथा पृथ्वी का निर्माण किया।

५—उसने सूर्य, चन्द्र और तारे बनाये।

६—उसने उनको गति प्रदान करके चलाया।

७—तदनन्तर पवन के झोंके चलने लगे।

८—उसने पानी को और तब कई छोटे बड़े द्वीपों को उत्पन्न किया।

९—तत्पश्चात् मनीटो अन्य छोटे मनीटों से बोला।

१०—वह अन्य प्राणियों से, आत्माओं से और सबसे बोला।

११—वह सबका, सब मनुष्यों का पितामहा था।

१२—उसी ने सब प्राणियों के लिये सर्वप्रथम माँ दी।

१३—उसने मछली, कछुये, पशु तथा पक्षी दिये।

१४—परन्तु एक दुष्ट मनीटो भी था जिसने दुष्टों की तथा दानवों की उत्पत्ति की।

१५—उसने मक्खियों तथा कीड़े – मकोड़ों को उत्पन्न किया।

१६—तब सब मिल – जुल कर निवास करने लगे।

१७—मनीटो बड़ा कृपालू था।

१८—उसने सबसे पहली वाली माताओं को तथा उनकी सन्तानों को आशीर्वाद दिया।

१९—उनके लिये भोजन लाया (उनकी इच्छानुसार)।

२०—तब सब प्राणी प्रसन्न थे, सब आराम से रहते थे और सब प्रसन्नता – पूर्वक विचार करते थे।

२१—बड़े गोपनीय ढंग से एक दुष्ट शक्तिमान जादूगर पृथ्वी पर उतरा।

२२—उसी के साथ बुराइयाँ, झगड़े तथा दुःख भी आये।

२३—वही अपने साथ हानिकारक जलवायु, रोग तथा मृत्यु लाया।

२४—यह सब कहीं बीच में हुआ।

उपर्युक्त कहानी के रेखा – चित्र डैनियल जी ब्रिन्टन (Daniel G. Brinton) की एक पुस्तक[2] से लिये गये हैं।

---

1. एक शक्ति का रूप, कोई सृष्टि – कर्त्ता, ईश्वर आदि।
2. Brinton, G. Daniel : Library of Aboriginal American Literature (1885), p – 295.

विश्वोत्पत्ति की कहानी

फलक संख्या – ३७७

एक रेड-इण्डियन की कहानी

फलक संख्या - ३७८
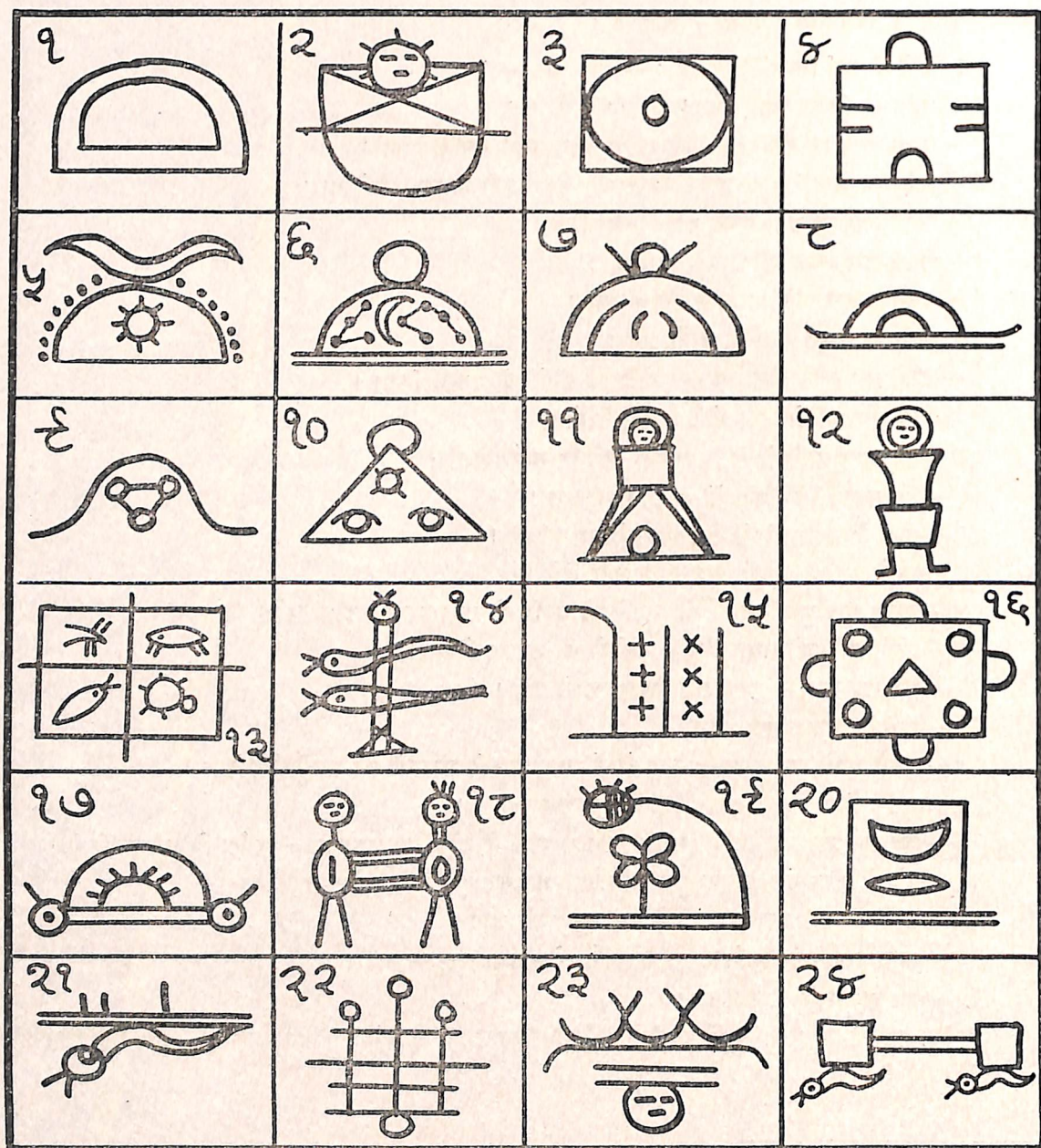
चित्र-लिपि में एक अन्य कहानी : उन्नीसवीं सदी के आरम्भ तक उत्तरी अमरीका के कुछ रेड – इण्डियन जाति के लोग चित्र – लिपि का प्रयोग करते रहे । उनमें से एक मनुष्य ने अपनी एक कहानी[1] चित्र – लिपि में लिख दी जिसको मध्य से आरम्भ किया गया है और जिसके अर्थ निम्नलिखित हैं :—

एक रेड – इण्डियन ने अपनी पत्नी से झगड़ा कर लिया । वह शिकार को जाना चाहता था । उसने अपना धनुष – बाण उठाया और जंगल की ओर चल दिया । रास्ते में बर्फ गिरने लगी । उसने बचने के स्थान की खोज की । उसको दो डेरे दिखायी दिये । एक में एक बालक तथा दूसरे में एक मनुष्य – परन्तु दोनों चेचक से पीड़ित थे । उनको देखकर वह भागा और एक नदी के किनारे पहुँचा । नदी में उसने मछलियाँ देखीं । उसने उनको मारा और खा गया । दो दिन ठहरा और पुनः चल पड़ा । तब उसने एक रीछ देखा और उसको मार कर खा गया । वह फिर चल दिया । चलते – चलते उसने एक गाँव देखा । वहाँ लोग उसके दुश्मन निकले इस कारण वह वहाँ से भागा और एक झील के किनारे होता हुआ आगे बढ़ा । वहाँ उसने एक हिरण देखा । उसको मार दिया और घसीट कर अपने घर ले गया । वह पुनः अपने बच्चे एवं पत्नी से जा मिला (फ० सं० – ३७८) ।

यूकेटान

इतिहास : प्राचीन काल में ई० पू० की प्रथम शताब्दी में मय (Maya)[2] जाति के लोग यहाँ आकर बसने लगे । अमरीका में संस्कृति के तीन केन्द्र थे । मैक्सीको में अज़टेकों का, मध्य अमरीका में मय लोगों का तथा दक्षिण अमरीका (पीरू) में इन्का लोगों का निवास था । विद्वानों का मत है कि यह तीनों जातियाँ सम्भवतः एशिया के उत्तर – पूर्वी कोने से गुज़र कर अलास्का होते हुए अमरीका पहुँची होंगी । इस बात का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है परन्तु फिर भी यह धारणा मान्य होने लगी है । दो प्रख्यात ब्रिटेन निवासी पुरातत्व वेत्ताओं, जे० एरिक (J, Eric) तथा एस० थाम्पसन (S. Thompson), के अनुसार, जिन्होंने अपने जीवन के अनेक वर्ष मय – सभ्यता – केन्द्रों के आस पास की भूमि का उत्खनन करने तथा खोज करने में अर्पण कर दिये, मय लोग लगभग ई० पू० की पाँचवी शताब्दी में यहाँ आकर बसने लगे थे । उन्होंने अपनी एक भिन्न प्रकार की संस्कृति को जन्म दिया, जो चौथी ईसवी में पर्याप्त दृढ़ हो चुकी थी ।

छठी शताब्दी तक उनका यूकेटान[3] के आसपास की भूमि में एक राज्य स्थापित हो चुका था । नवीं शताब्दी तक उन्होंने कई नगरों का निर्माण कर लिया था । दसवीं शताब्दी में मय लोगों ने तीन राज्यों का एक संघ स्थापित कर लिया था जिसका केन्द्र उक्षमाल (उसमल) था । इस संघ का नाम मयपान – संघ था ।

इतनी सभ्य तथा शक्तिशाली जाति पुरोहित वर्ग के अंकुश से दबी हुई थी । प्रत्येक व्यक्तिगत तथा सामूहिक समस्या का हल तथा कारण का ज्ञान पुरोहितों के ही पास था । वे लोग ज्योतिष – विज्ञान के भी ज्ञाता माने जाते थे । आपसी फूट के कारण ११९० ई० में मयपान – संघ नष्ट हो गया । सत्ता विभाजित हो गई । तेरहवीं सदी में मैक्सिको की ओर से अन्य जातियों के आक्रमण होने लगे और चौदहवीं सदी में अज़टेकों ने मय राज्य पर अपना

---

1. Tomkins, W. : Universal Indian Sign Language of the plain's Indians of North America, San Diago – (California-1927), P. – 219.
2. मय (Maya) का उच्चारण कनाडा निवासी 'माईया' करते हैं, कुछ विद्वान् 'माया' (श्री भूपेंद्रनाथ सन्याल ने अपनी पुस्तक 'आदिम मानव समाज – १९६१' में 'माया' का ही प्रयोग किया है) करते हैं तथा कुछ विद्वान 'मे' करते हैं।
3. युकेटान = युक का देश; 'युक' एक प्रकार के छोटे मृगों को कहते थे जो यहाँ अधिक संख्या में फिरते रहते थे ।

मध्म–अमरीका (मैक्सिको एवं यकेटान)

फलक संख्या – ३७९

अधिकार कर लिया। इन्होंने अपना एक सुन्दर मुख्य नगर टिनोक्टिटलन का निर्माण किया और दो सौ वर्ष तक राज्य किया।

इन जातियों में देवताओं को प्रसन्न करने के लिये बलि दी जाने की प्रथा थी। प्रत्येक वर्ष लगभग सैकड़ों मनुष्यों के पेटों को चीर कर दिल निकाल लिया जाता था और उनको इसी प्रकार तड़पता छोड़ दिया जाता था। इनका राज्य डण्डे के ज़ोर से चलता था। शासक स्वयं एक देवता स्वरूप माना जाता था।

यूकेटान का इतिहास उस अभियान से आरम्भ होता है जो हर्नेन्दीज़ दि कार्दोवा (Hernandez de Cardova) के अधीन आरम्भ हुआ। वह क्यूबा में निवास करने लगा था। इसी को १५१७ को फरवरी को युकेटान का पूर्वी किनारा ज्ञात हुआ जब कि यह दासों को पकड़ने के लिए इधर – उधर जाया करता था। १५१८ में जुआन दि ग्रीजाल्वा ने भी वही मार्ग अपनाया। १५१९ में एक तीसरा अभियान उसी हर्मन कोर्तेज़ के अन्तर्गत आया जिसने मैक्सिको को परास्त किया था। इसने कई युद्ध किये। **१५२५** में युकेटान प्रायद्वीप को पार किया गया और अभियान – दल होन्डु राज़ पहुँचा। फ्रांसिस्को दि मोन्तेज़ो को कार्तेज़ से अधिक कष्ट उठाने पड़े तथा युद्ध करने पड़े। अन्त में **१५४९** में स्पेन का शासन स्थापित हुआ। आगे का इतिहास मैक्सिको के साथ ही है। क्योंकि युकेटान उसी देश का एक भाग है।

लिपि : यहाँ की प्राचीन लिपि का सम्बन्ध मय जाति के लोगों से है। आदिम जातियों की अन्य सभ्यताओं से इनकी जाति की सभ्यता को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्री भूपेन्द्रनाथ सन्याल के अनुसार इन लोगों ने भारत से पूर्व 'शून्य' का आविष्कार कर लिया था। ज्योतिष विज्ञान तथा गणित यहाँ प्रचलित था। मिस्र जैसे पिरामिडों का निर्माण भी इन लोगों ने किया था। इनकी आरम्भिक लिपि हित्ती व मिस्र जैसी ही चित्रात्मक थी जो पत्थरों पर उत्कीर्ण की जाती थी परन्तु आज तक इसका रहस्योद्‌घाटन न हो सका। लिपि के विषय में जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त हो सका वह केवल एक धर्म प्रचारक दियेगो दि लान्दा (Diego de Landa) के, जिसने १५६५ में मय सभ्यता का एक इतिहास लिखा था, द्वारा ही प्राप्त हो सका। कुछ विद्वानों का विचार है कि लान्दा ने ही उनके प्राचीन अभिलेखों को, जो कागज़ तथा खालों पर अंकित किये गये थे, नष्ट किया।

१८६३ में एक फ्रांस-निवासी ब्रासिओर दि बोर्गबोर्ग (Brasseur de Bourgbourg) को मैड्रिड (स्पेन) से एक पाण्डुलिपि प्राप्त हुई जो लान्दा[1] द्वारा १५६६ में लिखी गई थी। इसमें लान्दा ने मय के हैरोग्लिफ्स की एक वर्णमाला तैयार की थी जिसको पुरातत्व-वेत्ताओं तथा भाषा-विशेषज्ञों ने काल्पनिक कृति मान कर कोई मान्यता प्रदान नहीं की (फ० सं०–३८०)।

मय लोगों ने अपना पंचांग भी बनाया था। वे एक माह के बीस दिवस तथा एक वर्ष में १८ माह मानते थे। पांच दिन जो शेष रह गये वे उनको अशुभ मानकर अपने पंचांग को अपवित्र नहीं करते थे। उन दिनों वे अपने घरों से निकल कर कुछ दूर पर बाहर रहा करते थे। तत्पश्चात् मन्दिर की अग्नि लेकर वे अपने घर में अग्नि का

---

1. Landa, Diego de : Rlacion de las coesas de yukatan (1566)
(Republished by Brasseur in 1864).

मय चित्र लिपि के वर्ण (लान्दा द्वारा)

अ	अ	आ	ब	बा	क़	त	ए
ह	इ	क	ल	ला	म	व	ओ
औ	प	प्प	क्व	क्सू	उ	ज़	त्स

फलक संख्या – ३८०

मय जाति का पंचांग

फलक संख्या – ३८१

प्रयोग करते थे। पुरोहितवाद के कारण अनेक देवताओं की पूजा होती थी। उनकी लिपि में भी देवताओं की मुखाकृतियों का अधिक समावेश है। उन्होंने भी चित्रात्मक से वर्णात्मक की ओर प्रगति की थी परन्तु अज़टेक के आक्रमणों ने सब नष्ट – भ्रष्ट कर दिया। मयपान का विशाल साम्राज्य सिकुड़ कर पेटेन की झील के एक छोटे से द्वीप व्यासल पर सीमित रह गया था।

अंक : अंकों के निर्माण तथा गणित का उदाहरण 'फ० सं० – ३८०' पर नीचे की ओर दिया गया है।

पंचांग का विवरण : 'फ० सं० – ३८१' पर ऊपर की ओर १८ महीनों के नाम दिये हुए हैं। नीचे पांच चित्र निम्नलिखित हैं:—

१— **किन** – एक दिन अथवा सूर्य।

२— **उइनल** – एक माह बीस दिन का।

३— **तुन** – एक वर्ष ३६० दिन का।

४— **काटुन** – जिसमें २० तुन होते हैं अथवा ७२०० दिन।

५— **बक्टुन** – जिसमें २० काटुन होते हैं अथवा १४४००० दिन।

अलघेनो

इतिहास : अलघेनी का आधुनिक नाम ओक्लाहोमा है। दसवीं सदी के लगभग यहां रेड – इण्डियनों[1] की एक जाति चेरोकी (Cherokee) उत्तर की ओर से आकर बस गई थी। 'चिरोकी' शब्द के अर्थ हैं कंदरा – निवासी। यह भू – भाग अमरीका के (संयुक्त राष्ट्र संघ) के दक्षिण में स्थित है। सर्वप्रथम ग्यारहवीं सदी में एरिक्सन इस देश के पूर्वी किनारे पर पहुँचा तत्पश्चात् कोलम्बस, जाँन कैबट, जैक्स कार्टियर आदि पहुँचे जिन्होंने यूरोप निवासियों के लिये एक रास्ता खोल दिया। बहुधा स्पेन, इंग लैण्ड तथा फ़्रांस के लोग यहाँ आकर बसने लगे। १५६५ से इन लोगों ने अपनी – अपनी जागीरें बनाना आरम्भ कर दिमा। फ़्रांस और इंग लैण्ड में, आधिपत्य जमाने के कारण १६८९ से १७६३ तक युद्ध होते रहे। फ्रांस की पराजय के पश्चात् इंगलैण्ड की सरकार सारे अमरीका को अपने अधीन रखना चाहती थी जिसके कारण जागीरदारों ने इंगलैण्ड की सरकार के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। ४ जुलाई २७७६ को अमरीका ने स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी। उस समय केवल तेरह जागीरों ने मिल कर एक संघ स्थापित किया।

अब उत्तर एवं दक्षिण के जागीरदारों में १८६१ – ६५ के मध्य गृह – युद्ध छिड़ गया जिसमें उत्तरी पक्ष की विजय हुई। चेरोकी जाति के लोगों ने इस गृह – युद्ध में उत्तरी पक्ष वालों का साथ दिया। इन लोगों के सम्पर्क में आने वाला पहला यूरोप निवासी दि सोटो था जो यहां १५४० में आया। इंगलैण्ड से युद्ध के बाद जब अमरीका एक सूत्र में बँध गया तब चेरोकी जाति के लोग सिमट कर ओक्लाहोमा में आ गये। अमरीका की सरकार ने इनकी जाति को सभ्य समझ कर मान्यता प्रदान कर दी और तब १८२० में इन लोगों ने अपना एक राज्य स्थापित कर

---

१. यह नाम एक भूल के फलस्वरूप पड़ गया जो क्राइस्टोफ़ोर कोलम्बस ने १४९२ में यह समझकर की थी कि वह इण्डिया के देश में पहुँच गया।

चेरोकी लिपि के वर्ण

स्वर- अ-Ꭰ		ए-Ꭱ		इ-Ꭲ		ओ Ꭳ		ऊ Ꭴ	
गा	गे	गी	गो	गू	ड्ला	ड्ले	ड्ली	ड्लो	ड्लू
Ꭶ	Ꭸ	Ꭹ	Ꭺ	Ꭻ	Ꮬ	Ꮮ	Ꮯ	Ꮰ	Ꮱ
हा	हे	ही	हो	हू	ज़ा	ज़े	ज़ी	ज़ो	ज़ू
Ꭽ	Ꭾ	Ꭿ	Ꮀ	Ꮁ	Ꮳ	Ꮴ	Ꮵ	Ꮶ	Ꮷ
ला	ले	ली	लो	लू	वा	वे	वी	वो	वू
Ꮃ	Ꮄ	Ꮅ	Ꮆ	Ꮇ	Ꮹ	Ꮺ	Ꮻ	Ꮼ	Ꮽ
मा	मे	मी	मो	मू	या	ये	यी	यो	यू
Ꮉ	Ꮊ	Ꮋ	Ꮌ	Ꮍ	Ꮿ	Ᏸ	Ᏹ	Ᏺ	Ᏻ
ना	ने	नी	नो	नू	औ	गौ	हौ	लौ	नौ
Ꮎ	Ꮑ	Ꮒ	Ꮓ	Ꮔ	Ꭵ	Ꭼ	Ꮂ	Ꮈ	Ꮕ
ग्वा	ग्वे	ग्वी	ग्वो	ग्वू	ग्वौ	सौ	डौ	ड्लौ	ज़ौ
Ꮖ	Ꮗ	Ꮘ	Ꮙ	Ꮚ	Ꮛ	Ꮢ	Ꮫ	Ꮲ	Ꮸ
सा	से	सी	सो	सू	वौ	यौ	का	न्हा	नाह
Ꮜ	Ꮞ	Ꮟ	Ꮠ	Ꮡ	Ꮾ	Ᏼ	Ꭷ	Ꮏ	Ꮐ
डा	डे	डी	डो	डू	स	ट	टे	टी	ट्ला
Ꮣ	Ꮥ	Ꮧ	Ꮩ	Ꮪ	Ꮝ	Ꮤ	Ꮦ	Ꮨ	Ꮭ

फलक संख्या – ३८३

लिया । इनकी राजधानी का नाम तैलेहकुआ था । इनका राज्य १९०६ ई० तक चलता रहा तत्पश्चात् इस जाति के सब लोग अमरीका के नागरिक हो गये ।

लिपि : चेरोकी लिपि का आविष्कार, एक इन्हीं की जाति के विद्वान् सिक्वई (Sikwayi) अथवा सेक्यू – ओयाह (Sequoyah) ने (एक चित्र – लिपि) किया । तत्पश्चात् इस में सुधार कर के १८२४ में मातृ-भाषा के अनुरूप एक वर्णमाला[1] तैयार कर दी । इसमें ८५ वर्ण हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि सिकवई को रोमन वर्णों का ज्ञान था । १९०२ तक इसका प्रयोग होता रहा परन्तु बाद में इसका स्थान रोमन लिपि ने ले लिया और इसका लोप हो गया (फ० सं०—३८२) ।

मैनीटोबा

इतिहास : मैनीटोबा आधुनिक कनाडा देश का एक प्रांत है जो हुडसन[2] खाड़ी के दक्षिण में स्थित है । इसी के उत्तर पश्चिम में एक नदी है जिसका नाम चर्चिल है । नदी के दक्षिण की ओर तथा मैनीटोबा में रेड-इण्डियन जाति कीं एक उपजाति निवास करती है । इस जाति का नाम 'क्री' है । यह लोग जंगल में निवास करते थे तथा जंगली भैंसों का शिकार करते थे । अब इस जाति के लोगों ने आधुनिक सभ्यता को अपना लिया है ।

लिपि : १८४० ई० में क्री जाति के लोगों के साथ एक ईसाई मेथॉडिस्ट – धर्म – प्रचारक जे० ईवान्स (James Evans) रहता था । उसी ने जॉन मैक्लीन (John Mclean) के सहयोग से यहाँ की क्री (Cree) भाषा के अनुरूप एक लिपि[3] का आविष्कार किया । उसने इस लिपि में नई बाइबिल (New Testament) के कुछ भागों का अनुवाद किया । उसने इस कार्य के लिये एक मुद्रणालय को भी स्थापित किया जिसमें इस लिपि के वर्णों में मुद्रण कार्य होता था । क्री लिपि में ४४ चिह्न हैं, जो एक ईशु[4] की प्रार्थना के पाठ के साथ 'फ० सं० – ३८३' पर दिये गये हैं ।

एलास्का

इतिहास : सर्वप्रथम स्पेन को इस भूभाग के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ । तत्पश्चात् १७२८ में वाइटस बेरिंग ने इस जलसंयोजी को पार किया और उन्हीं के नाम पर इसका नाम बेरिंग जलसंयोजी पड़ा । १७३१ में गिरोसडेफ़्ट (Girosdeft) ने अमरीका की ओर का किनारा देखा । १७४१ में बेरिंग ने पुनः अलेक्सी चिरीकोव, जो साइबेरिया का निवासी था, के साथ यहाँ के कई द्वीप की यात्रा की परन्तु इस अभियान में बेरिंग का जलपोत नष्ट हो गया और उसकी शीत के कारण ८ दिसम्बर १७४१ को मृत्यु हो गई । तीस पैंतीस वर्ष के पश्चात् रूस ने कई अभियान एलास्का भेजे जिनके कारण वहाँ के निवासियों से सम्पर्क बढ़े तथा उनके साथ सुन्दर, मुलायम तथा बालवाली खालों का व्यापार भी आरम्भ हो गया ।

---

1. Pickering : Über die indianischen sprachen Amerikas, (Leipzig – 1834), p – 58.
2. हेनरी हुडसन पहला व्यक्ति था जो घने जंगलों में घूमा । यह सोलहवीं श० के मध्य क्री जाति के लोगों के सम्पर्क में आया था । इसी के नाम पर हुडसन खाड़ी का नाम पड़ा
3. Pilling, J. C. : 'Bibliography of the Algonquin Languages' – Bureau of Ethnology Misc. Pub. XIII (1891). Page 284.
4. 'ट्शेसो' ईशु (जीसस) के लिये प्रयोग किया गया है ।

शनैः शनैः इंगलैण्ड के यात्री आने लगे जिनमें से मुख्य जेम्स कुक, जॉर्ज वैंकोवर तथा सर एलेक्ज़ेण्डर मिकेंज़ी थे। कुक का अभियान १७७६ में यहाँ आया था। जब व्यापारियों ने अपने स्वार्थ के कारण यहाँ के रेड – इण्डियन निवासियों को बहुत तंग करना आरम्भ कर दिया, उनको मारने एवं लूटने लगे तो रूस की सरकार ने इस खुले व्यापार पर प्रतिरोध लगा दिया। १७९९ में रूस – अमरीका में एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर हुये और अमरीका की कम्पनी का एक निदेशक यहाँ का प्रांतपाल बना दिया गया। इसने १८०४ में सिटका नगर की स्थापना की। अब यही नगर राजकाज का मुख्य नगर बन गया। १८२१ में रूस ने अमरीका एवं इंगलैण्ड के नाविकों को रोका जिस पर उन देशों ने आपत्ति की। तदनन्तर १८२४ में दोनों देशों के साथ सन्धि हो गयी। यह सन्धि ३१ दिसम्बर १८६१ को समाप्त हो गई। अब राजकुमार मक्सूटोव यहाँ का प्रांतपाल नियुक्त कर दिया गया और पुनः अमरीका एवं इंगलैण्ड को व्यापार करने की अनुमति प्रदान कर दी गयी। रूस और एलास्का से दूर – भाष्य के लिये तार जोड़ दिये गये। ३० मार्च १८६७ को एक सन्धि द्वारा एलास्का अमरीका के हाथ बेच दिया गया और अमरीका को ७२ लाख डालर देना पड़ा। अब एलास्का अमरीका के राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो गया।

लिपि : यहाँ की लिपि के विषय में ए० शिमत (A. Schmitt) तथा जे० हिंज़ (J. Hinz) के द्वारा १८८० में विद्वानों को सूचना प्राप्त हुई। १८८५ में हेरनहूटर (Herranhuter) द्वारा ज्ञात हुआ कि यहाँ एक भावात्मक लिपि प्रचलित थी जिसको यहाँ के एक स्कीमो निवासी नेक (Neck) ने तैयार किया था। इसका एक उदाहरण 'फ० सं०– ३८५' पर नीचे की ओर दिया गया है जिसका अर्थ निम्नलिखित है : – (यह सामुद्रिक शेर के शिकार के विषय में है)

१—शिकार का पथ प्रदर्शन करता है।
२—नाव चलाने का चप्पू लिये है जिसके द्वारा संकेत है कि सामुद्रिक यात्रा को जाना है।
३—अब एक रात विश्राम करना है।
४—एक द्वीप मिला जिस पर दो झोपड़े बने थे।
५—अब पुनः पथ प्रदर्शन करता है।
६—एक दूसरा द्वीप मिला।
७—पुनः रात्रि को विश्राम करना है – उंगली से दो रात्रि का बोध होता है।
८—बायें हाथ में सामुद्रिक – शेर मारने का काँटा है।
९—सामुद्रिक – शेर है।
१०—उस शेर को मार कर ले चले।
११—नाव में दो मनुष्य बैठ कर नाव खेने लगे।
१२—पथ प्रदर्शक का निवास स्थान है।

उपर्युक्त बारह चित्रों के अर्थों का भावार्थ है :– **"मैं उस द्वीप, जहाँ एक (सामुद्रिक शेर) था, मैं दूसरे द्वीप पर गया जहाँ दो सो रहे थे। मैंने एक शेर मारा और लौट पड़ा।"**[1] इसके अतिरिक्त नेक ने एक रोमन पद्धति के अनुसार वर्णमाला का भी आविष्कार किया जो ३८५' पर ऊपर की ओर दिया गया है।

1. Hoffman, M. : Transactions of the Anthropological Society, Washington, Vol. II (1883.)

क्री लिपि

अ	बा.पा	टा	का	ट्शा	ला	मा	ना	वा	सा	या
ᐊ	ᐸ	ᑕ	ᑲ	ᒐ	ᓚ	ᒪ	ᓇ	ᐘ	ᓴ	ᔭ
ए	बे.पे	टे	के	ट्शे	ले	मे	ने	वे	से	ये
ᐁ	ᐯ	ᑌ	ᑫ	ᒉ	ᓓ	ᒣ	ᓀ	ᐌ	ᓭ	ᔦ
ई	बी.पी	टी	की	ट्शी	ली	मी	नी	वी	सी	यी
ᐃ	ᐱ	ᑎ	ᑭ	ᒋ	ᓕ	ᒥ	ᓂ	ᐎ	ᓯ	ᔨ
ओ	बो.पो	टो	को	ट्शो	लो	मो	नो	वो	सो	यो
ᐅ	ᐳ	ᑐ	ᑯ	ᒍ	ᓗ	ᒧ	ᓄ	ᐒ	ᓱ	ᔪ

प्रार्थना-पुस्तक का शीर्षक

ᐊᓇᒥᐃ ᒪᓯᓇ ᐃᑲ ᒉᓱ ᐅ ᐃᓯᑕᐏᐅ
अनामीई मासीना इ का ट्शेसो ओ ई सीटावीओ

ᑲᔦ ᐊᓇᒥᐃ ᓇᑲᒧᓐ ᑕᑯᐱᐃᑲᑌᐧᐣ
कापे अनामीई नाकामो ना(न) टाकोपी ई काटे वा(न)

ᒥ ᐁᓯᑕᐤ ᑲᑐᓕᐠ ᐊᓇᒥᐃᒋᐠ
मी एसी टा व (ह) का टो. ली(क) अ ना मी ई ट्शी (क)
प्रार्थना पुस्तक जीसस धर्म के भक्ति पूर्ण गाने इसमें छपे हैं

एलास्का
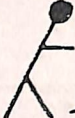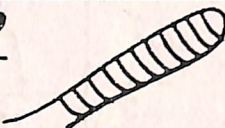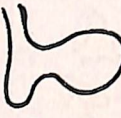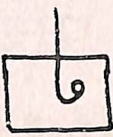
फलक संख्या – ३८४

एलास्का की वर्ण माला

अ	इ	ऊ	पा	पे	पू	वा
वे	वू	मा	मे	मू	टो	टे
त्सा	से	सू	ना	ने	नू	का
के	कू	गा	गे	गू	नंगा	नंगे
नंगू	क़ा	क़े	क़ू	रा	रे	रू
मा	ये	यू	ला	ले	लू	टू

कुछ मुख्य चिन्ह

अर	अग	इग	मिक	टिट	इड़त	कुट
काक	ट्लू	उगा				

प्राचीन लिपि चित्र

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

मोटजेबू क्षेत्र की चित्र लिपि

जीसस निपलेतेल्लगाह ईलाह ऊवा नंगा

SUS

जीसस बोलते हैं उसको मैं

टू मोरू नंगा । सूली ईलू मू टू रोक

ही मार्ग हूँ और (मैं ही) सत्य हूँ

सूली ईन्यूलिक ई नूक टी के चूमीनेचूक

और (मैं ही) जीवन हूँ। मनुष्य नहीं आता

अब पा मून ऐंगलन ऊवुप कून

(जॉन १४:६)

पिता (ईश्वर) के पास सिवाय मेरे द्वारा

फलक संख्या – ३८६

यह दोनों प्रकार की लिपियाँ तो कुस्कोविम नदी के दक्षिण की ओर प्रचलित हुईं परन्तु उत्तर को ओर लगभग ४५० मील दूर कोटज़ेबू के निकट श्मित द्वारा ही एक अन्य चित्रात्मक लिपि का पता लगा। इस लिपि का रहस्योद्घाटन तथा अनुवाद एक पुस्तक[1] से लिया गया है। 'फ० स० – ३८६' पर उसका एक आंशिक पाठ उदाहरणार्थ दिया गया है।

इस पाठ के भावार्थ हुये :—जीसस कहते हैं **"मैं ही मनुष्य को मार्ग दिखाने वाला हूँ, मैं ही सत्य हूँ, मैं ही जीवन हूँ और मेरे बिना मनुष्य अपने पिता (ईश्वर) के पास नहीं पहुँच सकता।"**

ईस्टर द्वीप

इतिहास : इसका प्राचीन नाम रपानुई था। यह एक वृक्षरहित पथरीला, लगभग पचास वर्ग-मील क्षेत्र का प्रशांत महासागर में स्थित एक छोटा सा द्वीप है। दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी किनारे के चिली देश, जिसके अब यह अधीन है, से लगभग २५०० मील है। संयोगवश १७२२ के ईस्टर-दिवस पर एक डच्छ नाविक जैकब रोग्गवीन (Jacob Roggeveen) यहाँ पहुँचा जिसके कारण उसने इस द्वीप का नाम ईस्टर द्वीप रख दिया। तदनन्तर १७७० में गोंज़ालिस (Gonzales) ने, १७७४ में कैप्टेन कुक (Captain Cook) ने तथा १७८६ में ला पीरोज़ (La Perouse) ने इस द्वीप की यात्रा की। १९१४ में इस क्षेत्र का सर्वप्रथम निरीक्षण करने तथा पुरातात्विक सर्वेक्षण करने एक महिला श्रीमती कैथ्रीन रोटलेज (Katherine Routledge) आई। इन्होंने इस द्वीप की पूरी यात्रा की तथा लगभग चार सौ प्रस्तर की मूर्तियों का, अनेक शिलालेखों का तथा कई लकड़ी की उत्कीर्ण पाटियों का निरीक्षण किया। १९३४ में बेल्जियम के एक पुरातत्त्व-वेत्ता हेनरी लावाचेरी (Henry Lavachery) फ्रांस के अल्फ्रेड मेत्रो[2] (Alfred Mtraux) के साथ आये। इन्होंने इस द्वीप की चित्र-लिपि पर, जो अनेक शिलाओं पर उत्कीर्ण थी, अपना शोध कार्य किया। १९३५ में नार्वे से विद्वानों की एक टोली आई जिसके नेता थोर हेयरदहल (Thor Heyrerdahl) थे। इस टोली के एक पुरातत्त्व-वेत्ता ए० स्कयोल्सवोल्ड (A. Skjolsvold) ने रानो रोरार्कू (Rano Rorarku) के निकट कई स्थानों पर उत्खनन कार्य किये।

उपर्युक्त पुरातत्त्व – वेत्ताओं के सर्वेक्षणों के तथा कार्बन – १४ के परीक्षणों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सर्वप्रथम चौथी शताब्दी[3] में पृथ्वी की नाभि ढूंढते ढूंढते यहाँ एक जाति के लोग आये जिनका राजा होतू मतुआ था। यही लोग इस द्वीप की प्रस्तर-मूर्तियों के निर्माता थे। इन्हीं लोगों ने अपने नेताओं की समाधियों पर बड़े सुन्दर सोढ़ीदार ऊँचे ऊँचे चबूतरे बनवाये, जिनको आहू (Ahu) कहते है। इनकी संख्या २६० है। इनमें लगभग सौ मूर्तियों को रोकने के लिए निर्माण किये गये थे। एक आहू पर एक से पन्द्रह मूर्तियाँ तक बनाई गईं थीं। इन मूर्तियों द्वारा यहाँ के प्राचीन निवासी अपने पूर्वजों का आदर एवं सम्मान करते थे। मूर्तियों की ऊँचाई बहुधा बारह से बीस फुट है परन्तु एक सबसे ऊँचो मूर्ति है जिसकी ऊँचाई ६९ फुट है। उसका भार लगभग पचास टन हैं। इनका एक पवित्र ग्राम भी था जिसका नाम ओरंगों था। ऐसा प्रतीत होता हैं कि चेचक के व्यापक रोग से यहाँ के लोग या तो मृत्यु के ग्रास बन गये या भाग गये।

इसके पश्चात् पुनः एक दूसरी जाति यहाँ आकर बस गयी। इनमें आपसी गृह – युद्ध होने के कारण १६८० में समाप्त हो गये। तत्पश्चात् पॉलीनेशिया की जाति के लोग अठारहवीं सदी में आकर बस गये जो अब भी यहाँ निवास करते हैं। इनकी संख्या लगभग एक सहस्र है।

1. Schmitt, A. : Alaska Schrift, (1903), p – 172. 2. यह नृतत्त्व शास्त्री था।
3. कुछ विद्वानों का मत है कि ये लोग बारहवीं सदी में आये और इन लोगों ने ही काष्ठ फलकों को अंकित किया।

लिपि

यहाँ की चित्र लिपि जो काष्ठ – फलकों या पाटियों पर उत्कीर्ण की गई है, पॉलीनेशिया में अपने ढंग की अनोखी है। इसको बाएँ से दाएँ तथा दाएँ से बाएँ, दोनों ओर से उत्कीर्ण किया गया है अर्थात् हल – चलाने की पद्धति में। इसी कारण पाटिया को एक ओर से पढ़कर पुनः पलट कर (एक ओर का ही, ऊपर का भाग नीचे की ओर करके) पढ़ना पड़ता है। ऐसी पन्द्रह पाटियाँ वर्तमान निवासियों के घरों से प्राप्त हुई। इनका काल लगभग सत्रहवीं श० माना गया है। कुछ विद्वान् इनको बारहवीं अथवा तेरहवीं श० का मानते हैं। कुछ पाटियाँ छः फुट लम्बी भी हैं। इनको "कोहाऊ रोंगो –रोंगो" अर्थात् "बोलते जंगल" कहते हैं। यह पाटियाँ हड्डी द्वारा उत्कीर्णकी गई थीं।

प्राचीन निवासियों की पैतृक कन्दरायें थीं। ऐसी ही एक कन्दरा से एक काष्ठ – फलक थोर को प्राप्त हुआ। उस काष्ठ – फलक को टॉमस बर्थेल (Thomas Berthel) ने पढ़ने का प्रयास[1] किया तथा मरवीन सवील (Mervyn Savill) ने अनुवाद किया तथा इस प्रकार पढ़ा[2] **"आकाश और पृथ्वी का देवता रंगो है जिसने प्रकाश बनाया"** (फ० सं०— ३८७)। जी. द हेवसे नामक हंगेरियन विद्वान् ने इस लिपि की तुलना सिन्धु – घाटी – लिपि[3] से की हैं। इस कथन का समर्थन अन्य विद्वाद् नहीं करते। थामस बर्थेल नामक जर्मन मानवजाति वैज्ञानिक ने इस लिपि का अध्ययन करके बताया कि यह भाषा पॉलीनेशियन है और ईस्टरद्वीप के प्राचीन निवासी १५०० मील दूर स्थित फ्रेण्डलो द्वीप समूह के रंगोतिया नामक द्वीप से आये थे।

ईस्टर द्वीप की चित्र लिपि
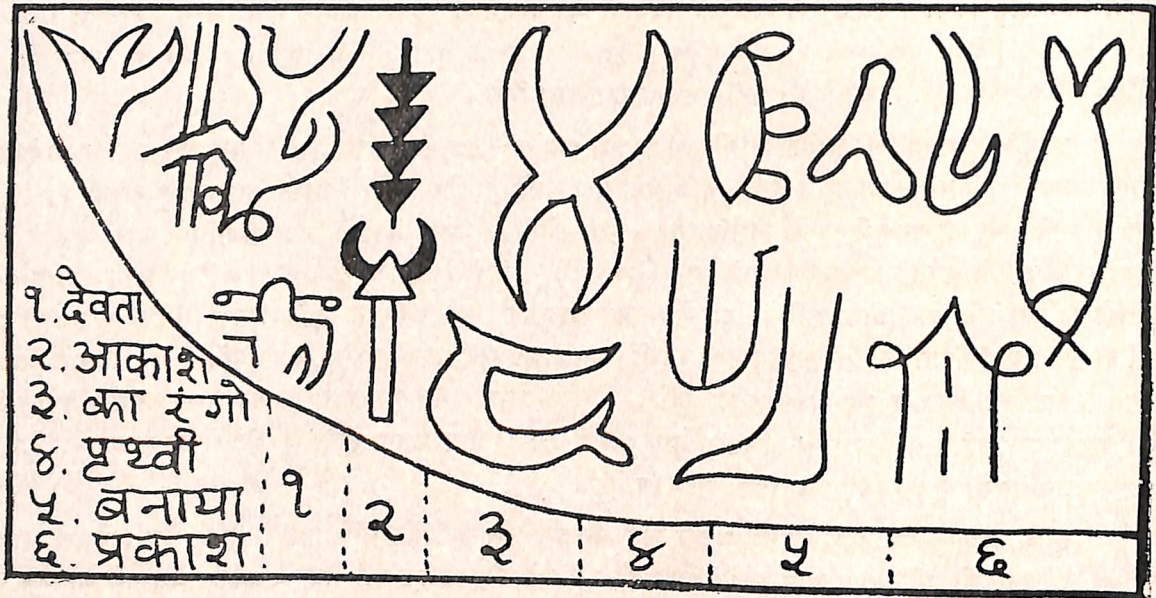
फलक संख्या – ३८७

1. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), p – 310.
2. Rango, Lord of the Sky and earth who created light".
3. देखिये : पृष्ठ 62 – , फ० सं० – 21.

पठनीय सामग्री

Beyer, H. : 'The Analysis of the Maya Hieroglyphs' – Internationales Archiv für Ethnographie, XXXI (1932).

Brinton, D. G. : A Primer of Mayan Hieroglyphs (Boston – 1895).

Chamberlain, R. S. : The Conquest and Colonization of Yucatan (1948).

Diffie, J. W. : Latin American Civilization and Colonial Period (1945).

Greely, A. W. : Handbook of Alaska (1925).

Heyerdahl, T. : Aku Aku; London – (1658).

Joyce, T.A. ; Mexican Archaeology (1922).

Knorozov, Y. V. : 'The Problem of the Study of the Maya Hieroglyphic Writing' – American Antiquity Vol XXIII (1958).

Mallery, G. : 'Picture Writing of the American Indians' – Tenth Annual Report of the Bureau of Ethnology (Washington – 1893).

Metaux, A. : Easter Island (London – 1957).

Morley, S. G. : An Introduction to the Study of the Maya Hieroglyphs, (Washington – 1915).

Ibid : The Ancient Maya (1956).

Nichols, J. P. : Alaska (1928).

Parkes, H. B. : A History of Mexico (1950).

Pickering : Über die indianischen Sprachen Amerikas (Leipzig – 1834).

Prescott, W. H. : History of the Conquest of Mexico (1843).

Schlenther, U. : Die geistige Welt der Maya (Berlin – 1965).

Spinder, H. J. : Ancient Civilizations of Mexico and Central America (1922).

Thompson, J. E. S. : The Rise and Fall of the Mayan Civilization (London – 1956).

Ibid : The Civilization of the Mayas (Chicago – 1927).

Ibid : Maya Hieroglyphic Writing (Washington – 1960).

Ibid : A Catalogue of Maya Hieroglyphs (1962).

Vaillant, G. C. : The Aztecs of Mexico (1950).

Wadepuhl, W. : Die alten Maya und ihre Kulture (Leipzig – 1964).

William, T. Universal Indian Sign Language of the Plains Indians of North America (California – 1927).

□□□

कुछ अन्य लिपियां

यह लिपियाँ किसो देश से सम्बंधित नहीं हैं। इनका प्रयोग विभिन्न देशों में किया जाता है।

आशुलिपि : सबसे प्राचीन आशु लिपि[1], जिसका काल ई० पू० की चौथी श० निर्धारित किया गया है, सगमरमर के प्रस्तर पर उत्कीर्ण एथेंस के ऐक्रोपोलिस से प्राप्त हुई है। (फ० सं० – ३८८)।

१६०२ में जॉन विल्लिस (John Willis) ने एक वर्णात्मक आशु लिपि का आविष्कार किया जो सत्रहवीं सदी में प्रचलित रही (फ० सं० – ३८८)।

१७६७ में बाईरोम (Byrom) ने इसका एक और प्रकार बनाया। अन्त में पिट्मैन (ज० १८१३– मृ० १८९७) ने कुछ संशोधन करके पूर्ण रूप प्रदान किया जो आज भी सारे विश्व में प्रयोग की जाती है (फ० सं० – ३८८)।

१९५१ में भारत ने अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिये, देवनागरी वर्णों के लिये, एक आशु लिपि का आविष्कार किया जो 'फ० सं० – ९८' पर दी गयो है।

ब्रेल लिपि : इसके विषय में 'पृ० सं० – १९९' पर वर्णन तथा 'फ० सं० – ९९' पर देवनागरी – ब्रेल – लिपि दी जा चुकी हैं। यहाँ रोमन वर्णों की ब्रेल दी गयी हैं (फ० सं० – ३८९)।

पिक्टो लिपि : मानव की तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति ने विश्व को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। पाषाण युग में अग्नि तथा गोल चक्के का आविष्कार कितना महान् तथा आश्चर्यजनक आविष्कार था परन्तु आज मानव चन्द्रलोक की यात्रा पूरी करके लौट आया जिसको प्राचोन काल से कुछ दिन पूर्व तक एक देवता के रूप में समझा जाता रहा। इन प्रगतियों के कारण विश्व अब छोटा दृष्टिगोचर होने लगा। विचारकों ने एकता की ओर दृष्टि उठाई। अब मानव प्रत्येक वस्तु का, प्रत्येक विचार का तथा प्रत्येक पद्धति का एकीकरण करना चाहता है। वह चाहता है संसार की एक सरकार बन जाये, एक मुद्रा, एक व्यापक डाक – टिकट, एक भाषा तथा एक लिपि बन जाय और मानव मानव के निकट आ जाय। इस ओर यूरोप में कुछ प्रयास, भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय बनाने के लिये एस्पैरेन्टो भाषा का आविष्कार किया गया है। लिपि का एकीकरण करने के लिये भी दो विद्वानों ने प्रयास किया है। उनमें एक डच्छ पत्रकार करेल यानसन (Karel Janson) तथा दूसरे जर्मनी के एक प्राध्यापक डॉ० ऐन्द्रे एक्कार्ड (Andre Eckhardt) हैं। इन दोनों ने एक 'पिक्टो लिपि' का आविष्कार किया है। इसको देख कर यह प्रतीत होता है कि मानव पुनः प्राचीनता की ओर जाने का प्रयास कर रहा है। इस लिपि का एक प्रतिदर्श 'फ० सं०–३९१' पर दिया गया है।

विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग : इतनी प्रगति होने के पश्चात् भी चिह्नों का प्रयोग, जो मानव ने कई सहस्र वर्ष पूर्व लिपि के उद्‌भव – क्रम के प्रथम चरण के रूप में, प्राचीन काल में किया था, आज भी किया जाता है। चिह्नों के बिना कार्य चल ही नहीं सकता। कुछ चिह्न निम्नलिखित हैं :– (फ० सं० – ३९०)।

---

1. (Short Hand)
2. Gardthau sen : Gricehische Palagraphic, Vol. II, page -- 204.

अंग्रेज़ी की आशुलिपि

एथेंस की प्राचीनतम् आशु लिपि

A I C IS P MI NI RI CHI

जान विल्लिस की आ० लिपि

A B C D E F G H I J

K L M N Q R S T U V W X

O P Y Z CH TH

पिटमेन की आ० लि.

P B T D CH J K G F V TH DH

S Z SH ZH M N NG MB L R R

W Y H ā ē ī ō ǭ ū ŏ ó ŭ ei

au iw palm ape pay talk gate get

रोमन वर्णों की ब्रेल लिपि

बिन्दु	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J
	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T
	U	V	W	X	Y	Z	अंक			
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

ब्रेल लिपि के कुछ शब्द
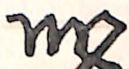
HELP THE BLIND TO

HELP THEMSELVES

नेत्रहीनों की उनकी मदद के लिए सहायता कीजिये

खगोल शास्त्र :

⊙	सूर्य
☾	चन्द्र
✳	तारा
☄	पुच्छल तारा
☿	बुध ग्रह
♀	शुक्र
⊕	पृथ्वी
♂	मंगल ग्रह
♄	शनि
♃	बृहस्पति

राशि चक्र :

♈	मेष (Aries) – मेढ़े के सींग ।
♉	वृष (Taurus) – बैल का सिर व सींग ।
♊	मिथुन (Gemini) – दो काष्ठ के टुकड़े ।
♋	कर्क (Cancer) – केंकड़े के पैर ।
♌	सिंह (Lion) – बाघ की पूंछ ।
♍	कन्या (Virgo) – कन्या अर्थात् विरजिन का संक्षिप्त ।
♎	तुला (Libra) – तुला का रूप ।
♏	वृश्चिक (Scorpio) – बिच्छू के पैर एवं पूंछ ।
♐	धनु (Sagittarius) – धनुष तथा बाण ।
♑	मकर (Capricornus) – बकरा ।
♒	कुम्भ (Aquarius) – जल ।
♓	मीन (Pisces) – मछलियाँ ।

कुछ अन्य चिह्न :–

$ – अमरीका की मुद्रा डालर का चिह्न जो 'थेलर' से बना ।

£ – युनाइटेड किंगडम की मुद्रा पाउण्ड का चिह्न जो बड़े 'एल' से बना ।

@ – इसके अर्थ हैं 'प्रति' अर्थात् इतने दर से ।

δ – इसके अर्थ हैं 'निकाल दो' । बहुधा मुद्रणालय में यह चिह्न प्रयोग में आता है । यह अंग्रेज़ी शब्द डीलिट (Delete) का संक्षिप्त रूप है ।

पिक्टो लिपि का प्रतिदर्श
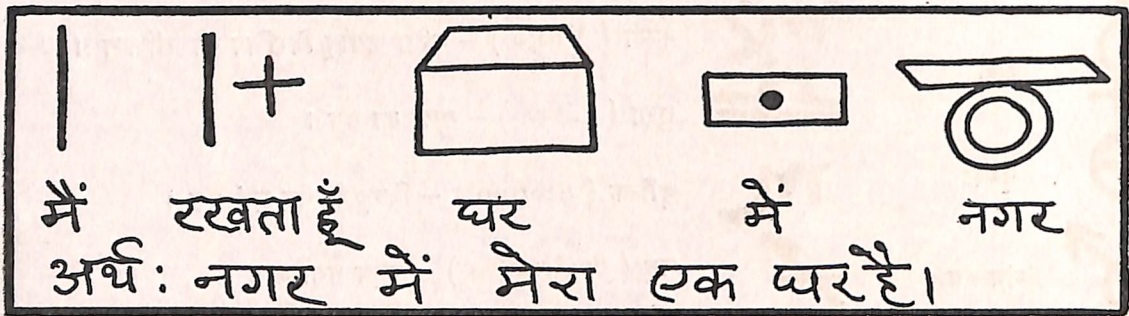
फलक संख्या – ३९१

उद्बोधन

जब से संसार में लिपि का उद्भव हुआ है, तब से अब तक विद्वानों का तथा लिपि – आविष्कारकों का यही प्रयास रहा है कि भाषा की ध्वनियों के साथ नवनिर्मित चिह्नों या वर्णों का ऐसा साम्य हो जाय कि जो बोला जाय वह लिखा जाय तथा जो लिखा जाय वह पढ़ा जाय परन्तु सारे प्रयासों के पश्चात् ऐसा न हो सका। संसार की लगभग प्रत्येक लिपि में कुछ न कुछ पॉलीफ़ोन (Polyphones) अर्थात् बहुस्वर वर्ण (एक वर्ण में अनेक ध्वनियाँ) तथा मोनोफ़्थांग (Monophthong) अर्थात् एक स्वर के अनेक वर्ण दृष्टिगोचर होते हैं।

आज विश्व में लगभग ४००[1] लिपियाँ और २७९६[2] बोलियाँ प्रचलित हैं जो मानव एकता में पर्वत की भांति राह में खड़ी हैं। तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगतियों के कारण संसार का कोई देश अब दूर नहीं लगता। दो शताब्दियों पूर्व भारत से इंगलैण्ड पहुँचने के लिये छः माह लगते थे परन्तु अब छः घण्टे में पहुँचा जा सकता है। अन्तरिक्ष में मानव की गति लगभग बीस सहस्र मील प्रति घण्टा से भी अधिक हो गयी है परन्तु राष्ट्रवाद संकीर्णता के कारण एक देश के मानव को अपने राष्ट्र की दस गज़ चौड़ी सीमा को पार करने में छः माह लग जाते हैं। इसी राष्ट्रवाद – संकीर्णता के कारण लिपियों में समन्वय नहीं हो पाता। अब तो देशों में प्रान्तवाद – संकीर्णता भी दृष्टिगोचर होने लगी है जो एक देश की मानव – एकता में भी बाधक सिद्ध हो रही है। भाषा एवं लिपि की समानता न होने से एक देश का निवासी दूसरे देश के निवासी के साथ अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता। इसी राष्ट्रवाद – संकीर्णता तथा प्रांतवाद – संकीर्णता के कारण बालकपन से ही ऐसे विचारों का विष मस्तिष्क में प्रवेश कराया जाता है, जैसे, "जो हमारा है वह अच्छा है"। इस विष के कारण वह अपने प्रांत या देश की प्रत्येक वस्तु को सर्वोच्च-समझने लगता है और मानव एकता के लिए किसी प्रकार का संशोधन सहन नहीं करता चाहे वह संशोधन कितना ही व्यापक रूप से लाभदायक सिद्ध हो। इस विषय में मेरा नवयुवकों से निवेदन तथा अनुरोध है कि वे राष्ट्रवाद तथा प्रान्तवाद के इस सिद्धान्त "जो हमारा है वह अच्छा है" को अपने मस्तिष्क से निकाल कर मानव समाज की एकता एवं प्रगति के लिये इस "जो अच्छा है वह हमारा है" सिद्धान्त को धारण करें। कुटुम्ब का, समाज का, प्रांत का, राष्ट्र का तथा सारे विश्व के मानव समाज की प्रगति का तथा एकता का भार अब आप पर है। आप ही इस सिद्धान्त को मान्यता प्रदान करके मानव एकता एवं प्रगति का उत्थान कर सकते हैं।

क्या आज के वैज्ञानिक युग में मानव एकता, सद्भावना की समस्या, समस्या ही बनी रहेगी ? मानव एकता की राह में, जहाँ विश्व के विभिन्न देशों की राजनीति, अर्थ व्यवस्था, बोलियाँ बाधक हैं वहाँ लिपि भी एक अवरोध है। विश्व की लिपियों के एकीकरण का अर्थ है एक नयी लिपि का आविष्कार, जिसके द्वारा विभिन्न देशवासी पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित कर सकें। नयी लिपि के आविष्कार का परिणाम क्या होगा ? नयी लिपि के निर्माण से विश्व के लाखों पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों में सुरक्षित रखे ग्रन्थों की उपयोगिता का अन्त,

---

1. इनमें से बहुत सी ऐसी हैं जिनमें नाम मात्र की भिन्नता है।
2. Gray, G. F. : Foundations of the Languages (1861), p – 418.

लाखों मुद्रणालयों का टाइप परिवर्तन, टंकणों का नव निर्माण आदि। इस उपयोगिता को स्थिर रखने के लिये उन ग्रन्थों का नवनिर्मित लिपि में पुनः अनुवाद तथा मुद्रण और उसके लिये अथाह धन का व्यय, जिसका अनुमान लगाना असंभव है। यही नहीं लाखों विद्वानों का परिश्रम एवं समय भी इस दुर्लभ कार्य के लिये अर्पित करना होगा। क्या यह संभव है ?

संभव क्यों नहीं ? एक ओर विश्व के लगभग सभी देश पारस्परिक सम्बन्ध बनाये रखने की चेष्टा रखते हैं परन्तु दूसरी ओर पारस्परिक भय के कारण निःशस्त्रीकरण के नाम पर शस्त्रीकरण, शान्ति के नाम पर युद्ध की तत्परता में उद्दत हैं। इसके लिये सभी देश सुरक्षा के नाम पर मानव के संहारक तथा विध्वंसक शस्त्रों का या तो निर्माण कर रहे हैं या संग्रह कर रहे हैं। क्या इस सुरक्षा के नाम पर बेहिसाब धन का व्यय, परिश्रम व समय का दुरोपयोग नहीं हो रहा ? विश्व के देश मानव संहार के लिये जितना धन आज लगा रहे हैं, संभवतः उसका केवल दस प्रतिशत यदि मानव एकता पर, मानव की पारस्परिक सद्भावना पर, मानव के आपसो प्रेम तथा समझदारी पर, विश्व – बन्धुता पर व्यय किया जाय, तब यह निश्चय है कि दो पीढ़ियों अर्थात अर्ध शतक के पश्चात् सारे संसार का यह भयभीत मानव सुख की नींद सो सकेगा। अपनी सांस्कृतिक प्रगति का, पारस्परिक प्रेम का तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धारणा का उत्थान करके अभाव – रहित तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत कर सकेगा।

यह कल्पना तभी साकार हो सकती है जब विश्व के देशों के शासनाध्यक्ष अपने सुरक्षा कोष से केवल दस प्रतिशत व्यय कम करके उस धन को ऐसी सोसायटियों को, ऐसी सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों को, लिपियों की समानता पर विचार तथा शोध करने वाले संगठनों को तथा वर्तमान युग की सर्वोपरि अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, 'संयुक्त राष्ट्र – संघ' को प्रदान कर दे जो मानव एकता और विश्व बन्धुता की ओर अग्रसर होने की चेष्टा कर रहे हैं।

मुझे न केवल आशा है अपितु पूर्ण विश्वास है कि लिपि के एकीकरण के लिये एक नवनिर्मित लिपिद्वारा, जिसका निर्माण आज के वैज्ञानिक युग में असंभव नहीं है, मानव सद्भावना को बढ़ाने में एक नया प्रयास होगा। इस प्रयास को प्रगतिपथ पर लाने के लिये वर्तमान राष्टों के शासनाध्यक्षों की, मानव हितों के लिये, इक्कोसवीं सदी की एक महान् भेंट होगी।

□□□
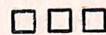
परिशिष्ट

परिमार्जिका

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
२१	अन्तिम	सौजन्यता	सौजन्य
५०	३	२३	१५
५३	२१	२६००	१६००
७८	१	मौय	मौर्य
	३	पुनर्मठन	पुनर्गटन
८७	९	साम्राज्य	साम्राज्य
९०	२६	बहाहुर शाह	बहादुर शाह
९१	अन्तिम	संवर्ष	संघर्ष
९५	१	व्राण	ब्राह्मण
	१५	भू-गर्म	भू-गर्भ
	२१	१५०० ई० पू० में अन्त हो गया	१५०० ई० पू० में हो गया
	२२	होता	होना
९६	१४	सेसिटिक	सेमिटिक
९९	३०	पश्चिमात्तर	पश्चिमोत्तर
१०१	५	पहलबी	पहलवी
१०४	शीर्षक	संलिष्ट	संश्लिष्ट
११३	१०	स्पयं	स्वयं
१२५	६	इनने	इसने
	७	बड़	बड़े
	नोट	yazdaui	Yazdani
	२३	कलीहार्न	कीलहार्न
१२९	१०	१५०	५०
१३२	१२	तास्रपत्रों	ताम्रपत्रों
१५२	१	कामरूप की बंगला की असम लिपि	कामरूप की बंगला लिपि
१५७	१३	सामान्त	साम‍ंत
१८६	३	७४७ ७५३	७४७ से ७५३
१८८	१५	डा० कलिहार्न	डा० कीलहार्न
	२१	अ अ ण ण झ झ	अ ग्र ण रा‍ा झ
	अन्तिम	तीन से	तीन सौ से
२०४	१६	विभाजित होते	विभाजित होते होते
२०६	१७	नुलेख	सुलेख

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
२१२	११	जाज़ेफ़ हूकर जो	जाज़ेफ हूकर का जो
२२७	अन्तिम	राज्या	राज्य
२३२	१३	निनेव	निनेवः
२३५	५	Tosblets	Tablets
	नोट	जनुवाद	अनुवाद
२३८	१०	बेबीलोनिया नव –	बेबीलोनिया में नव –
२३९	२६	पृरातत्त्व	पुरातत्त्व
२४१	४	विश्ब	विश्व
२४३	नोट – 1	लूग़ विइव	लूग़े विश्व
२४८	२०	एकबहान	एकबटान
	२८	पुरोहित – राजा	पुरोहित ने – राजा
	अन्तिम	परसगादे	पसरगादे
२५०	२८	म्रष्ट	भ्रष्ट
२५७	नोट – 7	सारे धिइव	सारे विश्व
२६१	७	उद्भय	उद्भव
	११	परसगादे	पसरगादे
	नोट – २	जेण्ट	ज़ेण्ड
२६२	१	फ० सं० – २७	फ० सं० १२७
२६३	९	निकलीं	निकले
२६४	४	असीकीज़	अर्साकीज़
२६४	१४	कोपेनगेन	कोपेनहेगेन
२६५	३	दि सेमी	सेसी
२६६	७	ऐन्तोने यान	ऐन्तोने इयान
२७२	१६	फ० सं० – १४१	फ० सं० – १३६
२७३	३१	भेद	भेज
२७६	१६	हख़ानीशीय	हखामनीशीय
२७९	११	शर्‌रुड	शर्‌रउ
२८२	७	आरम्भ किया (से) १४१ तक	
२८९	अन्तिम	वर्गों	वर्णों
२९०	५	Halvey	Halevy
३०२	११	राज्थ	राज्य
	१९	पटिया	पाटिया
३०३	३	षामरा शमरा	शामरा शामरा
३०७	६	१७१	१५७

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
३०८	६	Hitii	Hitti
३०९	३	सूल	मूल
	१५	प्रयम	प्रथम
	अन्तिम	६००	९००
३१०	मानचित्र	हत्ती	हित्ती
३१३	१५	सेसो	सेसी
	१९	अभिशेखों	अभिलेखों
३२१	२०	१८०	१६६
३२५	२	उसको	उसका
३२६	१	अमोज़ेज़को	मोज़ेज़ को
३३१	९	१४५	१६९
३३२	११	एक्र	एक
	नोट–२	Fisler	Fisher
३४०	१५	१८९	१७५
	१७	बन	बस
	अंतिम	१८९	१७५
३४३	२०	प्रयम	प्रथम
३५०	मानचित्र	क़ोरिया	कैरिया
३५९	१९	माम	माल
	२२	रोम के कारण सम्राट	रोम के सम्राट
	अंतिम	५१६ ई०	५१५ ई०
३६१	३३	मंगलों	मंगोलों
३६३	४	अनेकों	अनेक
	१५	नप्ट	नष्ट
३६६	१३	ब	एवं
	अंतिम	लघ	लघु
३७९	२८	दिथे	दिये
३८३	८	किया जाता ।	किया जाता था ।
	१७	तो, ज़ो	तोय, ज़ोय
३८५	१५	था, के विरुद्ध	था, विरुद्ध
	२१	चौंथि	चौथी

पृष्ठ सं	पंक्ति सं	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
३९९	१५	तिश्बत	तिब्बत
	नोट–	हसका	इसका
४००	९	प्रथान	प्रधान
४०२	१८	प्रतिदर्ज्ञ	प्रतिदर्श
	२५	अुमेद का लिपि का	अुमेद लिपि का
४०६	२	नाम पौराणिक	नाम की पौराणिक
४१४	१	वैंसे वसे राज्वंश में	वैसे वैसे राजवंश में
४२७	२८	शेर	शर
४२९	११	Shn	Shu
४३२	२०	रक्त भरा थाला	रक्त भरा प्याला
४४१	१७	२५५	२३०
	२६	डसी	उसी
	२८	दसरे	दूसरे
४४३	५	di	bi
४५२	शीर्षक	रेखाओं का (ट्रोक)	रेखाओं के (स्ट्रोक)
४५४	८	भिंग वंश	मिंग वंश
४६६	२२	वर्षो	वर्षों
४७३	नोट–३	Palaeoraphy	Palaeography
	१२	गेंन्थियट	गौथियट
४७६	२७	बर्णसाला	वर्णमाला
४७९	शीर्षक		पटनीय सामग्री
४८०	१६	सिल्ला का राज्य	सिल्ला राज्य का
४८६	१२	२५२	२५१ क
	१६	Meeune	McCune
	अंतिम	Ecardt	Eckardt
४८६	२	८०५ से हो गया	८०५ में हो गया
	१६	बाहर	बारह
४९३	१५	२५३, २५४	२५४, २५४ क
	१८	लगभश	लगभग
४६६	६	ध्वनी	ध्वनि
	२२	D–1811	D–1911
५००	२	२५८ दिये गये हैं	२५८ पर दिये गये हैं
५१५	१९	पह	यहाँ
५१८	१	ब्रह्मा	ब्राह्मी

पृष्ठ सं०	पक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
५२७	२४	१९ मार्च १६२१	१६ मार्च १५२१
	२६	स पबन्तु	से परन्तु
५४१	अंतिम	Rule	Royal
५५०	२७	१८२८ तक	१९२८ तक
	२८	१९९५ तक	१८९५ तक
५५१	२	इथ	इथ-तवी
	१७	थीबीज़ इनकी राजधानी थी	
	१९	१६०३ ई० पू०	१६७९ ई० पू०
	२१	१६७१	१६७८
५५२	१५	१४९० से १४३६ तक	१४६९ से १४३६ तक
५५३	२	सिस्र	मिस्र
५५५	प्रथम	उन्हें	उसके
	अन्तिम	आपने	अपने
५५८	प्रथम	७५१ से ६६३	७१५ से ६६२
	२३	पिपांच्वी	पियांखी
	२४	७१६	७१५
५६०	प्रथम	तिपास	तियास
	९	३३६ से ३२२ तक	३३६ से ३३२ तक
	११	किया	करने
	२१	टॉलेमी	टाँलेमी
५६१	२०	वूटस	ब्रूटस
	२६	ने भी अपनो	ने अपनी
५६२	८	सम्राट, जब मिस्र	सम्राट मिस्र
५६७	२७	बिलासी	विलासी
५९७	१७	फ० सं०–३०६	फ० सं०–३०५ क
६०३	शीर्षक	बामतुन	बामुन
६४७	१८	लाइनियर-एवं बी	लाईनियर–ए एवं बी
६५७	८	पिसिसट्रेटस	पिसिट्रेटस
६८८	२७	११	१७७१
७२१	१६	४५	४५१
७५३	२१	२७७६	१७७६
७६०	१	मोटजेबू	कोटज़ेबू
७६२	१०	जी० द० हेवसे	जी० डी० हेवेंसी
७६४	१०	फ० सं० – ९८	फ० सं० – ९९
	११	फ० सं० – ९९	फ० सं० – ९८

□

पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

Alphabetic	वर्णात्मक
Anthropology	मानव विज्ञान; नृतत्त्व
Archaeological Finds	पुरातात्त्विक सामग्री
Archaeologist	पुरातत्त्ववेत्ता
Archaeology	पुरातत्त्व
Archaic	प्राचीन
Bas - relief	उद्भृत; उभरे हुए चित्र
Bibiliography	पठनीय सामग्री
Biconsonantal	द्विवर्णिक (एक वर्ण दो ध्वनियाँ)
Biliteral	,, ,, ,,
Boustrophoden	हल चलाने वाली पद्धति; दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ लिखने की पद्धति
Classical period	साहित्यिक काल
Cylinder Seal	वर्तुल मुद्रा
Decipherment	रहस्योद्घाटन
Demotic (from 'Demos')	जनता - लिपि
Determinative	निर्धारित शब्द
Embryo Writing	भ्रूण लिपि
Engrave	उत्कीर्ण करना
Excavation	उत्खनन
Flint	चकमक पत्थर
Horizontal	क्षैतिज
Ideographic	भावात्मक
Index	पृष्ठबोधनी; अनुक्रमणिका
Indo – European	भारोपीय
Inscribe	उत्कीर्ण करना
Inscription	अभिलेख

Linguistics	भाषा विज्ञान
Logographic	रेखाक्षरात्मक
Map	मानचित्र
Monophone	एक ध्वनि अनेक वर्ण
Museum	संग्रहालय
Observatory	वेधशाला
Phonographic	ध्वन्यात्मक
Pictographic	चित्रात्मक
Polyphone	एक वर्ण अनेक ध्वनियाँ
Pottery	मिट्टी के बर्तन
Sacrofagus	पत्थर की कब्र
Scribe	प्राचीन लिपियों को उत्कीर्ण करने वाला
Seal	मुद्रा
Short - hand	आशुलिपि
Specimen	प्रतिदर्श
Stele	कब्र पर लगाने वाला पत्थर
Syllabic	अक्षरात्मक
Syllable	एक वर्ण में व्यंजन + स्वर
Tablet	पाटिया
Test	परख
Text	पाठ
Transliteration	लिप्यन्तरण
Triconsonantal (Triliteral)	त्रैवर्णिक (एक वर्ण तीन ध्वनियाँ)
Type-Writer	टंकण
Uniconsonantal (Uniliteral)	एक वर्ण एक ध्वनि
Vertical	शिरोवृत
Vowel	स्वर

□

अनुक्रमणिका

यह अनुक्रमणिका वर्णानुक्रमानुसार तथा निम्नलिखित विषयानुसार प्रस्तुत की गयी है :—

१. अभिलेख
२. काल
३. खोजकर्ता
४. ग्रन्थ
५. ग्राम
६. जातियाँ
७, झीलें
८. द्वीप
९. देवता
१० देश
११. धर्म
१२. धर्म प्रवर्तक
१३. धर्म प्रचारक
१४. नगर
१५. नगर राज्य
१६. नदियाँ
१७. पदवियाँ
१८. पदाधिकारी
१९. पर्वत
२०. प्राँत
२१. भाषायें
२२. भूभाग
२३. महाद्वीप
२४. युद्ध
२५. राजकुमार, राजकुमारियाँ
२६. राजवंश
२७. राजवंशों के संस्थापक
२८. राज्य
२९. लिपियाँ
३०. लोग एवं निवासी
३१. विद्वान्
३२. विशिष्ट मनुष्य
३३. शासक
३४. संघ
३५. स्मारक
३६. सरकारें
३७. संस्कृतियाँ
३८. संस्थान
३९. साम्राज्य

ब्रैकेट के अन्दर लिखे गये शब्द या तो दिये गये नाम से सम्बन्धित हैं या नाम का दूसरा रूप हैं ।

□

अभिलेख

अक्काद की मुद्रा ६४
अमरना पाटियाँ ३०३
अरज़वा लेख-पत्र ३१९
अरमायक अभिलेख ३४०, ३४१
अशोक शिलालेख ९६
अहिराम अभिलेख २९३, २९८
आर्तमोन अभिलेख ३५३
आंशिक (*बड़ली*) १०२
एलवेन्द शिलालेख २६६
कनिष्क अभिलेख ११३
कुरम (*कुरुम*) अभिलेख १२९
कोहाऊ रोंगो रोंगो ७६२
गंजेनामा २६१, २६६
गिरनार शिलालेख १०७, १२, १३
गीज़र प्लेट (*कृषक पंचाङ्ग*) ३०२
छोटा अभिलेख (*पिप्रावा*) १०७
छोटे छोटे अभिलेख ९९
जाँघों पर अंकित अभिलेख २९७, ९९
ताम्र-पत्र (*सुइ विहार*) १०२
तारकोण्डेमस मुद्रा (*चांदी की*) ३१४
तिरुमलाई शिलालेख १२९
त्रैभाषिक अभिलेख २५५, ६७
दान-पत्र (*शिवस्कन्द वर्मा*) १२५
दिल्ली अशोक स्तम्भ ९९
द्विभाषिक २५५, ६३२
द्विभाषिक अभिलेख ३१६, २२
पशुपति मुद्रा ६९
पाइलस की पाटियाँ ६४७, ४८
पाटिया (चूने की) ५७१
प्युनिक लिपि अभिलेख २९९, ३००
प्रयाग स्तम्भ ९९, ११३
फ़िनीशियन अभिलेख ६२९
फ़ैस्टास चक्रिका ६४८, ४९, ५६
बिबलास का लघु अभिलेख २९३, ९५
बेहिस्तून शिलालेख ९७
महाकाव्य (*युगारिट*) ३०४
माइसीनिया अभिलेख ६४८
मेशा का अभिलेख २९७, ९८
मोआब का शिलालेख २९७
युगारिट-मिस्र द्विभाषिक पाटियाँ ३०२
राजकीय मुद्रायें ३२१
रुम्मिन देई स्तम्भ लेख १०९, १२
रोसेटा शिलालेख ९७
लघु अभिलेख (*नवीं श०*) ७२०
लीकिया का द्विभाषिक अभिलेख ३४८, ९
लीडिया का प्रतिदर्श ३५२
वज्र हस्त पंचम के लेख १५४
विलक्षण लिपि शिलालेख ३१२
शह्बाज़ गढ़ी शिलालेख १०२
सत्यकी शिलालेख १५७
सुखौताई अभिलेख ५१५, १८
सुमेर की मुद्रा ७१
सुमेर की रेखा-चित्र पाटियाँ २३५
सिन्धु-घाटी मुद्रायें २९
सोमेश्वर मन्दिर शिलालेख १३८
स्तम्भ लेख (*नारायण पाल*) ९७
हम्मूराबी के शिलालेख २४१, ४२, ४३
हित्तो-चित्र लिपि शिलालेख ३११
हेब्रू-युगारिट द्विभाषिक पाटियाँ ३०४
हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श ३३०, ३१

काल

अन्तवर्तीय काल २९५
अमरना काल ५५४
उत्तर काल ५३
ईसा पूर्व काल ४९२

कुषाण काल २५, ११३
क्रान्ति युग ७६
गुप्त काल ११८
गृह-युद्ध काल ४९१
ग्रीक-रोमन युग ६७०
ग्रीक साहित्यिक काल ६६४, ६५, ८७
डोरियन काल ६५८
पूर्व विकसित काल ५३
पौराणिक काल ४८०
मेईजी शासन काल ४९१
विकसित काल ६४५
शासन काल ५५२

खोजकर्ता

आलमस्टेड ३१३
ईयन चार्दिन २६२
एन्तोनियो दि अन्द्रादा ४००
ऐलियस गैलस ३५९
कॉसमस ३७५
कुक, जेम्स (कैप्टेन) ७५६, ६१
गिरोसडेफ़्ट ७५५
गोंज़ालिस ७६१
चार्ल्स ३१३
जॉन कैबट ७५३
जुआन दि ग्रीज़ाल्वा ७५०
जक्स कार्टियर ७५३
दान गार्शिया दि सिल्वा फ़िग्यूरोआ २६१
पीरोज़, ला ७६१
पेद्रो दि किन्तरा ६०४, १३
फ़रदीनन्द मैगलेन ५२७
फ़ासिस्को दि मोन्तेज़ो ७५०
बेरिंग, वाइट्स ७५५
बोन्देल मोन्ते ५६५
मेसरश्मिद ३१३
मोरियर २६६
योरिस स्पिलबर्ग २१८
रेंच ३१३
रोग्गवीन, जैकब ७६१
लुदोविका दि वरथेमा ५३५
वास्कोडिगामा ९१
विलियम वर्बर्टन ५६६
वीयाल ४५०, ५४
शेष इब्राहिम हाजी (बर्कहार्ड) ३११
सोटो, दि २५३
हर्नेन्दीज़ दि कार्दोवा ७५०
हर्बर्ट, टॉमस २६२
होगर्थ-वूली ३१३
ज्ञासोफ़त बारबरो २६१

ग्रन्थ

अष्टाध्यायी व्याकरण ६५
ओल्ड टेस्टामेन्ट (बाइबिल) ३०४
उपनिषद ९५
एतिहासिक पाठ (द्विभाषिक) ३२१
एशियाटिक रिसर्चेज़ ११८
कोजिकी ४८७
कुरआन शरीफ़ ३७९
ग्रीक-डिमाटिक शब्दावली ५६९
छांदोग्य उपनिषद ९५
जैन ग्रन्थ ९५
ताउ-ते-किंग ४११
तुंग चीह ४३२
तैत्तिरीय उपनिषद ९५
त्रैभाषिक शब्दकोष (सुमेरीयन-अक्कादीयन-हित्ती) ३२१
निरुक्त ६९
निहोंगी ४८७
बाइबिल २४७, ५७०, ६९३, ९८
बौद्ध ग्रन्थ (ललित विस्तर) १०१

बौद्ध ग्रन्थ ९५
भगवद् गीता ८८, ९४
बौद्ध-धर्म साहित्य ४८८
महाभारत महाकाव्य ७६, ९५
रामायण महाकाव्य ७६, ९५
विधि संहिता ४८८
विधान (*जापानी*) ४१९
विश्व कोष ४१७
वीरकाव्य (*होमर के; इलियाड, ओडिसे*) ६४५
शूजिंग ४०९
शब्दकोष (*४४ हज़ार शब्द*) ४१७
शुइजी हिवूमीदेन ४९२
सुमेरियन शब्दकोष ३२१
स्क्रिप्टा मिनोआ ६४७

ग्राम

अबूसिम्बल २८७, ३५३, ५५६
अरक-अल-अमीर ३३०
अरलुरु ७६१
ओरंगों १४५
इपानो इंगलियानिस ६४७
उदय इन्द्रम १३८
उरैयुर ८७
एब्रोमन २८२
एलवेन्द २६६
एलिचपुर ८७
कड़व १४२
कल्याणी ८६
कषकुडी १३८
कालीबंगन २६
कुरम (कुरुम) १२, ९३४
कुल्ली २५
कोटियन ६२९
केन्डूर १४२
कोटजेवू ७६१
कोणार्क ८८
कोरुमिल्लो १४२, ४५
खजुराहो (खर्जुरवाहक) ८४
गिरनार ९९
चण्डलूर १४२, ४५
जम्बूकेश्वर १३२
तोपरा ९७
डेबरी—कोटी १५७
देवपारा (देवपाड़ा) १५०, ५४
देवलगाँव १२७
निशा २८६
पागनवरम १४५
पिप्रावा १०७
बचकुला १९४
बड़ली १०२
बादल ९७
बेहिस्तून (*बिसीतून; बिसूतून*), २६, ९७, २५७, ५९, ६०, ६७, ६८, ७१, ७३, ७६, ७९
बोगरा १०९
बोर गाँव १९४
मइडवोलु १४२
मुइरुकोडु (*आ० कोडुनल्लूर*) १३२
सुरग्राव २४८, ५७
मानिकियाल १०१
मामल्लपुर ९९
रशीद ५६७
रूम्मिनदेइ १०९, १२
रोसेटा २६
वमा ग्राम ६१३
वत्स गुल्म ८६
वादिये मुकत्तब ३७५
वेप्पम बट्टू १३८
शहबाज़गढ़ी १०१
शोरइक्कवूर १३२
सराहाँ १५७

सांँची ९९
सियोनी १२५
सुइविहार १०२
सेबास्टिया ३३२
सोगड़ा १०७
हरिहड़गल्ली १२५
हिल्ला (प्राचीन बेबीलोन) २२९

जातियाँ

अक्काइयन ६४५
अज़टेक ७४१
अमोर (*अमूरू*) २२९, ३२५
अरामियन (*अराम*) २३८, ९९, ३२५, ३७
अहोम १६०
आर्मेनियन ३८५
आयोनियन्स ६३६
आयोलियन्स ६३६
आस्ट्रोगोथ (*ओस्ट्रोगोथ*) ६८८
इकोटा ७४२
इंगियावोन ७१८, २१
इजेब्रू ६१५
इन्का १०, ७४८
इस्तायवोन ७१८
ईफ़े ६१५
ईफ़ो ६१५
ईबो ६१५
उइगुरी ४६२
उग्रियन ७१५
एग्बा ६१५
एट्रस्कन ६७१
एवार ७१५
ऐंगिल ७२१
ऐनु ४८७
ओटोमन (*ओथोमन*) ६३१, ५८, ६०
ओयो ६१५
ओस्की ६७४
करेन ५०७
कलम्भर ८७
कसाइट २३०, ४७
किन ४१४
किरात २०४
क्री ७५५
कुरेंश ६०४
कुषाण (*कुइशांग*) ७७
कोल २६
कैलडियन (*अरबी खालेदीन*) २३२, ३२५, २७, ३७
खाम्ती १६८
खिम्बस २०४
खेमिर ५२६
गूटी २२८
गेपिदाइ ७१५
गोइडेल ७०७
गोथिक (*गोथ*) ६७४, ८८, ७१५
चकमा ५०९
चिचिमेक ७४१
चिरोकी ७५३
जर्मन ७१५
जूट ७२१
जूडा १३३, ३३०
टिटोनिक ६८८
टोल्टिक ७४१
डोंगरा ४००
डोरियन्स ६३६, ४१, ४५
तगोला ५३२
तिमने ६१३
तुर्क ७१५
तुंगू ४६९
तुंगूसी ४५४
तोखारी ४६९

थाई १६०, ६८, ५२६
द्रविड़ २६
नहुआ ७४१
नीग्रो ६१३
नेवार २०४. ६
पर्नी (पर्णों) २५२
पश्चिमी गोथ ६८८
पार्थव २५२
पॉलीनेशिया ७६१
पूर्वी गोथ ६८८
पेलासगियन ६३६, ६४
फुलानी ६१५
बटावी ७२१
बर्बर ६६०
बवरियन ७२१
ब्राइथन ७०७
ब्राह्मण ९५
बुल्गार ६९७
बेंजिमन २३३
भारोपीय ७०७
मध्य-पूर्वी स्लाव ६९९
मय (माइया, माया) ७४८, ५०, ५१, ५२
मंगोल ८०, ४१४, ६९
मागी २५०
मूर (मोरो) ५३२
मेण्डि ६१३
मैग्यार ७१८
मैत्रिक १३८
मोन ५०७
यरूबा ६१५
यूची ७८
राजपूत ८२
रेड-इण्डियन ७४१, ४७, ४८, ५५, ५६
लम्बार्ड ७१५
लाओताई ५१५
लिम्बस २०४
लेप्चा २१५
वई नीग्रो ६०७, ९, १०
वारंगियन ६९९
विल्लोनोवन ६६७
विसीगोथ ६८८
वैण्डल ६९३
शक ७८
शिया ५६३
शेकलर ७१८
सिकाम्ब्री ३०९
सुखोताई ५१५, १८
सूर ८८
सेमिटिक २२५, २७, ३८, ८७, ९९, ६१७, २०
सेल्टस (केल्टस) ६७०
सैक्सन ७२१
सैमिनी (समीनी) ६३२, ७४
स्कॉटी (केल्ट) ७०८
स्लाव ७१५
हर्मीनोन ७१८, २१
हिक्सॉस (हिकाउ खासुत) ५५१, ५५
हित्ती ३३५
हिमारी ३७७
हुरियन २२७, २८, ३०९, ३५
हूण ७८, ७१५
हेब्रू २९९, ३२६, ३५, ७३, ५५६
हेलास ६३६
हौसा ६१५

झीलें

उर्मिया ३४०
पेटेन ७५३
बैकाल ४६५
म्योरिस ५५१, ९१
वान ३४०, ८५
सुदर्शन १०९

द्वीप

अन्द्रोस ५३५, ६५
ईस्टर द्वीप ६२, ७६१, ६०
कोर्सीरा ६५८
जावा ५३४, ३५
टोंकिल ५३२
पुलोपिनाँग ५१५
फ़ारमूसा ४९२
फ़िलिपाइन्स ५२७, ३१
फ्रेण्डली (द्वीप समूह) ७६२
ब्रिटिश ७०७
मकाओ ४१७
माल्डीव २१७
रंगीतिया ७६०
रोड्स ६६८
श्री रंगम १३२, ३८
साइक्लेड्स ६५८
सिंगापूर ४२३
सिलेबीस ५४१
सिसली ६६०
सुमात्रा ५३५
हांगकांग ४१९

देवता

अतेन ५५४, ५५
अपोलो (सूर्य) ६३२
अमातिरासू (सूर्य देवी) ४८७
अमोन (अमुन) ५५४, ५५
अल्लाह ८, ३८३
अशुर (असुर) ५८, २३३
अहुरामज्द २५८
आकाश ४१६, ४०, ६०
आर्तेमिस (देवी) ३५१
ईरास ६२२
उमा ७१, ३
ओगमा ८, ७१२
कम्बू ५२६
केमोश २८७
क्रोनस ६४१
खम्मू २३०
खाल्दी ३८५
खुदा ३५७
चेन-रे-सी ३८८
जेहोवा (यहोवा) ९, ३२६, २७, ३०, ७३
जिब्राइल (फरिश्ता) २९३
जुपिटर ५९७
जूनो ५९७
ज्यूस ६४१, ४९
टॉट (थाट) ९, ५७०, ७२
ड्रैगन (स्वर्ग का दरबान) ४२५, २७
नेबू ९, २३३
पशुपति ५८, ६९, ७०
ब्रह्मा ९
बैजनाथ १५७
मनीटो ७४५
मर्करी ९
मिनर्वा (देवी) ५९७
मिनोटौर (दैत्य) ६४४
मीरा ५२६
यजदान ३५७
युरोपा (देवी) ६४४
योगेश्वर २७
रंगो ७६२
रा(रे = सूर्य) ५४९, ५४, ५५, ७०
रिया (देवी) ६४१, ४४, ४९
वेनचाँग ९
वीरुपक्ष १३८
शमा (शम्मा) ४१६, ६०

शारदा (देवी) १५७
शिव ५, ८२, १५७
सुसुनू ४८७
सूर्य ८२, २३०
सोमेश्वर १३८
हदाद ३३७
हर्मिस ९
हेवत (ख़ेबत) ३२२

देश

अक्काद ६२९
अदलस (आ० सुमाला) ५३५
अन्तावर्ती तिब्बत ४०
अन्नाम ४१२, १६, ५१८, २६, २७
अपर-गिनी ६०७,
अपोलोनिया ६५८
अफ़गानिस्तान ९९, २५२, ३७९, ६९९
अफ़ार्स-ईसास (फ्रेंच सामाली लराड आ० जिबुती) ६०४
अबीसीनिया (एबीसीनिया) ३५९, ७७, ६१७, १८, २०
अमतू ३२२
अमरीका (अमेरिका) १०, ३२७, ५१, ४१९, २१, २९, ३१, ४३, ८१, ९१, ९२, ९३, ९६, ५३२, ६४७, ९९, ७४१, ४५, ५३, ५५
अरमेनिया (अर्मेनिया) ३८५, ८६
अरब (अरेबिया, अरबजह, अरबइहा) ९, २५२, ३४३, ५६२, ६३१, ४४
अल्जीरिया ५९५
अल्प फ्रीजिया ३४३
अल्बेनिया ५६३
असीरिया १४, ४३, ५८, २३२, ३३, ३८, ४५, ४८, ७३, ९७, ३०३, ९, १८, २७, ३२, ३५, ३७, ३८, ७७, ८५, ८६, ५५६, ५८, ५९, ६१७, २९
आईबेरिया ३८७
आयरलैण्ड (ऐवर्ना, हैबर्नी) ९, २३९, ७०७, ८, ९, १०, ११, १२, १४
आस्ट्रिया ३२९, ६९७, ७२१, ४१
आस्ट्रेलिया ९
इंगलैण्ड (ऐंगिल लैराड, ऐल्बियन, ब्रिटैनिया) २६, ९१, ९४, २१८, ६२, ६६, ६७, ६८; ३२१, ४१९, ९१ ५५५, ६७, ६८८, ९९ ७०८, ११, २१, ५३, ५६
इटली १०, २६१, ३२१, ३८, ५३, ६४, ७५, ५३५, ६०४, २०, ३१, ४८, ५८, ६०, ६७, ६९, ७१, ७४, ७८, ८५, ९३, ७०७, १५, २१
इथियोपिया ३५३, ५५८, ६२, ९५, ६१७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५
इरीट्रिया ६२०
इस्राइल (इस्रायल) ९, २३२, ६८, ९७, ३२५, २६, २७, २८, ३०, ३२, ३५, ३७, ४०, ६२०
ईराक (देखिए मेसोपोटामीया)
ईरान (देखिए पर्शिया) २६, ७६, ७७, २५५
ईस्ट इण्डीज़ (देखिए हिन्देशिया)
उत्तर-पूर्वी चीन ४१७
उत्तरी अमरीका ७४८
उत्तरी इटली ६८५
उत्तरी कोरिया ४८१
उत्तरी मिस्र ५४०, ४६
उत्तरी मोयशिया (सर्बिया) ६९७
एनाटोलिया (देखिए तुर्की) ३४३, ६४५, ४९
एरमी ३१३
एशिया माइनर (देखिए तुर्की) २३० ४८, ३२१, ३८, ५१, ८६, ५४५, ६४६
ऐल्बियन; देखिए इंगलैण्ड
ऐवर्ना; देखिए आयरलैण्ड
ओमान ३६३
कटार ३६३

कनआन (काडेश) २२८, ८७, ९९, ३०१, ९, २५, २७, ५५१, ५६
कनाडा ७५५
कम्पूचिया (कम्बोज, कम्बोडिया) ४१२, ५१५, १६, १७, २६, २७
क्यूबा ५३२, ७५०
क्लीशिया (किलाशिया, अस्लान्तश) ३२२, ३८, ५३, ८६
क्रीट (क्रीटा, कारिडया) ९, २८७, ३०२, ४७, ६३२, ४०, ४१, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५५
कुयेत ३६३
कैमेरून ८०२
कैरिया (कारिया) ३५१, ५३
कोरिया (कोजूरियो, कोरिया, चीनी भाषा में चाउ शनि) ४०९, २३, ८०, ८१, ८२, ८७, ८९, ९१, ९२
गाल ६९३
ग्रीस ९, ७६, २८७, ८९, ९९, ३३५, ४०, ४३, ५१, ७९, ५५९, ६०, ६५, ९१, ६२०, २५, ३१, ३२, ३६, ४०, ४४, ४६, ५७, ६०, ६२, ६७, ६८, ८५, ९३
ग्रेट ब्रिटेन (युनाइटेड किंगडम) देखिए इङ्गलैण्ड
चिली ७६१
चीन (अरबी भाषा–सीन; अंग्रेजी–चाइना) ९, १०, १४, ७८, २०४, ३२४, ८३, ९७, ९९; ४००, १, ९, १०, ११, १३, १४, १५, १६, १७, १९, २०, २१, २२; २३, २५, ३४, ४६, ५०, ५४, ६९, ७३, ७६, ८०, ८१, ८६, ८८, ८९, ९१, ९२, ९६, ५०७, १८, २६, २७
जर्मनी २६७, ३२१, ४९२, ५१५, ६३, ६४४, ५८, ७८, ८८, ९७, ९९, ७१५, १८, १९, २१
जर्मेनिया (देखिए जर्मनी)
जार्जिया ३८७, ८९, ९०, ९१, ९२, ६९९
जार्डन (यार्दन) ३६३
जापान १४, ४१७, २१, २३, ४६, ८०, ८१, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२, ९६, ५०९, ३२, ६३, ६९९
जावा ४१७, ५२७, ३२, ३४, ३५
जावा माइनर (दे० सुमात्रा)
जिबुती (दे० अफ़ार्स ईसास)
जुगुरथीन ५९५
जेकोस्लोवाकिया ६९७
टप्रोबेन (दे० श्रीलंका)
टर्की (दे० तुर्की)
टियूनीशिया २९७, ५६३, ९५, ९७
ट्रांसिल्वैनिया ७१५
ट्रूशल ओमान ३६३
डेनमार्क ७४, २६३, ८२, ४७६, ६९४
डैकिया (दे० हंगेरी)
तारा ७०८
तिम्बो ६१३
तिब्बत (तिब्बत–बोद; भारतीय–भोट; मंगोल–तुबेत; चीनी–शी द्सांग) २०४, ३९७, ९८, ९९, ४००, १, २, १६, ६२, ५०७
तुर्की २३४, ३१९, २०, २२, ४३, ५१, ५३, ६३, ६६, ५३७, ६३, ६०४, ३१, ३६, ४५, ६०, ८८, ९७, ७१८
तुर्देतेनिया ६०२
तैवान (फ़ारमूसा) ४२१, २३
तोखारिस्तान ४६९
थाईलैण्ड ५१५
दक्षिण अरेबिया (अरब) ६१७, २०
दक्षिण कोरिया ४२१
दक्षिण चीन ४१७, २१
दक्षिण पश्चिम कोरिया (माहन) ४८०

दक्षिण पश्चिम चीन ७८
दक्षिण भारत ८६, ९९, १२१
दक्षिणी आस्ट्रिया ७१५
दक्षिणी गाल ७२१
दक्षिणी मिस्र ५४५, ४६
दक्षिणी मोयशिया (*बुल्गारिया*) ६९७
दक्षिणी यमन ३६३
दाहोमी ६१५
नाइजेरिया ६१३
नार्वे २६७, ६८८, ९९, ७०८, १२, ६१
नीदरलैण्ड (दे० *हालैण्ड*) ५३२, ३५
नुमीदिया ५९५
नेपाल ५०७, २ ४, ६, ७, १२, ३९७, ४०
पन्नोनिया (दे *हंगेरी*) ७१५
प्रथम जावा (दे० *सुमात्रा*) ५३५
पर्शिया ९९, २३३, ३४, ३९, ४७, ५२, ५४, ६१, ६२, ६३, ६४, ६७, ६९, ७०, ७७, ८२, ३३५, ३८, ७७, ८५, ९०, ४१६, ६५, ७६, ५५९, ६०, ६२, ६२९ ५७, ६२. ६४
पश्चिमी चीन ६९९
पश्चिमी तिब्बत ३९९
पश्चिमी तुर्किस्तान ४६२. ५५, ७६
पाकिस्तान २६. ७८. ९१, ९४, ९९, १०२, ७२
पार्थिया २५२, ४१२
पालीनेशिया ७६१. ६२
पीरू १०, १४, ७४८
पुर्तगाल १०, २१६, ९१
पूर्वी तिब्बत ३९९
पूर्वी तुर्किस्तान ४६९, ७३, ७६
पोलैण्ड ६९७, ९९
पैलेस्टाइन (*फ़िलिस्तीन*) १०, २९९, ३२७, ३२, ३५, ४०, ८६, ५५६
फ़लाबा ६१३
फ़ारमूसा (दे० *तैवान*) ४२१, ९२
फारस (दे० *पर्शिया*) २७७, ४१६
फ़िनलैण्ड ६९९
फ़िनीशिया (*होमर–फ़िनिक्स; रोमन–फ़नीकेस, प्युनीकस, प्युनी; इंगलिश–फ़िनीशिया*) ९, १४, ५८, ८७, ८८, ८९, ९७, २८७, ९५, ९६, ९९, ५५३, ९७, ६४ , ५७, ५८, ६८
फ़िलिपाइन्स ५२७, ३१, ३२
फ़ौन.न ५२६
फ्रांस १०, ७८, १९६, २१५, ६३, ६६, ६७, ८२, ९७, ३०२, ३५, ४१९, २१, ५०, ८१, ९१, ९२, ९३. ५०९, १५, १८, २७, ६३, ७१, ६०४, १३, २०, ३६, ८८, ९९, ७२१, ५३, ६१
फ्रीजिया ३४३, ४६, ४९, ५०
बंगला देश १०७, ५०९
बहामा १०
बाल्टिस्तान ४०२
बाह्य तिब्बत ४००, १
बिया ५९५
बुरियात ४६५
बुल्गारिया ६९७, ९८, ७१८
बेबीलोनिया २३०, ३१, ३८, ३९, ५७, ८९, ३१३, २७, ३५, ३७, ३८, ५५८
बेल्जियम ७६१
बेस्सबिया ६९७, ९९
बैक्ट्रिया (*बाख्त्रिया*) ७८, ९९, १०१, २५२, ४७३
ब्रह्मा (*बर्मा*) ५३, १६०, २१६, ४१६, २१, ५०७, ८, ९, १५, १८
ब्राज़ील १०
ब्रिटेन (*ब्रिटेनिया*) २५२, ८७, ३६३, ६४, ४४३, ९२, ५१५, ६३, ६८, ७०७, ८, २१, ४८
भारत ६, ९, १४, ४३, ७६, ७७, ८०, ८८, ९०, ९१, ९२, ९५, ९६, ९९, १२७, ६८, ७२, ७७, २०६, १२, २१, ५२, ६३, ६८, ३५९, ९७, ४००, १, १२, ६२, ९२, ९३, ५०९, १८, २६, ३२, ६२, ७२, ६०७, २५

मध्य चीन ४१२, २१
मलाया ३७९, ५२७, ३२
महा फ़्रीजिया ३४३
माल्टा २९७, ३११, ६६०
मालडीव २१७, २१, २२
मिस्र ९, १०, १४, १८, २६, ५८, ७७, ९७, २४८, ५०, ६६, ८९, ९३, ३०२, ३, ९, १८, २०, २४, २५, २६, २७, ३५, ४३, ५३, ५९, ६६, ७३, ४२३, ५४५, ४६, ४७, ४९, ५०, ५२, ५३, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ६८, ६९, ७१, ७४, ७७, ९१, ६०४, १५, १७, २०, २९, ४१, ४६, ४८, ८५
मिस्री सुडान ६०४
मोरा ३१३
मेसोपोटामिया (*आ० ईराक*) ९, ४४, ५८, ७१, ९७, २२५, ३१, ३५, ३८, ३९, ३४०, ८६, ४१६, ५५४, ६२९
मेनीटोबा (*आ० कनाडा*) ७५५
मैलेशिया ४८७
मोराविया ६९७, ७१५, ७२१
मोरीतैनिया ५९७
मंगोलिया ३६१, ४००, १६, ६०, ६२, ६५, ६९, ४७३
मंचाओ कुओ (*मंचूरिया*) ४६९
मंचूरिया ४१६, १७, ५८, ६०, ६९, ७२, ८१, ९२, ६९९
यतनाम-दानाओंई (*दे० सायप्रस*) ६२९
यमन ३५९, ६३
यमातो (दे० *जापान*) ४८७
युकेटान ७४८, ५०
युक्रेन ६९९
युगोस्लाविया ६९७
यूनान (दे० *ग्रीस*) ६३६
रूस (*सोवियत सोशलिस्ट गणतन्त्र राज्यों का संघ*) २५४, ३२०, ९ , ४१६, १९, ६०, ६५, ६९, ८१, ९२, ६३६, ९७, ९८, ९९, ७००, ४, ५, ६, १५, ५६
रोमा रंग दे० (*लिबेरिया*) ६०७
लाओस ५१५, १६, १७, १८, २५
लाइकोनिया ३८६
लिथूनिया ६९९
लिबेरिया ६०४, ७
लीकिया ३४३, ४८, ४९, ८६
लीडिया २४८, ५७, ३४३, ४७, ४९, ५०, ६६४, ६७, ७१
लीबिया ५५६, ५७
लेबेनान ५५६
लेसर अरमेनिया ३८५, ८६
लैटियम (*आ० मध्य इटली*) ६६७, ६८, ७२, ८९, ८७, ७०
लंका (दे० *श्रीलंका*) २१६
वियतनाम ४२३, ५१६, १७
श्याम (*आ० थाईलैण्ड*) ५०७, १५, १६, १७, १८
शिबिर (दे० *साइबेरिया*) ४७३
शी दूसाँग (दे० *तिब्बत*) ३९७
सबा ३७७, ७८, ६२०
सायप्रस (*क्रिप्रास*) २८९, ६२९, ३०, ३१, ३२
सायबेरिया (*साइबेरिया*) ४१६, ६०, ६५, ७३, ६९९, ७१८, ५५
सिंगापुर ४२३
सियरें (*सीरे*) ल्योन ६०७, १३
सोथिया ३९, ७०७, २१
सीरिया २३८, ५२, ८७, ८९, ३०२, ९, ११, ३५, ३६, ३७, ४०, ४३, ४४, ५३, ६३, ७९, ८५, ८६, ४६०, ६२, ५५३, ५६, ५८, ६२, ६३, ६४४
सीलोन (दे० *श्रीलका*) २१६
सूडान ५६३, ९५
सुमात्रा ५३५, ४१
सूसियाना २४७

सोग्दिया (*प्राचीन पर्शियन सुगुदा; ग्रीक-सोग्दियाना*) ४७३
सोमाली लैण्ड (*सोमालिस*) ६०४
स्वीट्ज़रलैण्ड ३२१, ६८५
स्वीडन २७२, ५६७, ६४७, ९९, ७०८
स्पेन १०, २६१, ३७९, ४९१, ५२७, ३२, ६०२, ८८, ९३, ७२१, ४१, ५०, ५३, ५५
हत्तूशा (*खत्तूशा*) ९, ३०९, १०, २४
हवाशित (*हबाशत*) ६१७, २०
हॉलैण्ड (दे० *नीदरलैण्ड*) २१८, ६२, ४८१, ९१, ५३५
हिन्द चीन ५१६, २७
हिन्देशिया ५३२, ३४
हेजाज़ २३४, ६४, ६६, ६७
हैबर्नी (दे० *आयरलैण्ड*) ७०७
होन्डुराज ७५०
हंगेरी ४१६, ६०, ६९७, ७१५, १६, १७, १८, २२, ३३
श्री लंका (*अरबी-सेरन दीव; पुर्तगाली ज़ीलोन; ग्रीस-टप्रोबेन; अंग्रेजी-सीलोन*) १३४, २१६, १७, १८

धर्म

इस्लाम २२८, ३५७, ५८, ६१, ६३, ८३, ४०२, १२, ५३५, ९१, ९५, ६१३, ९३
ईसाई ३६८, ७३, ७७, ८५, ८७, ४१२, १९, ५०, ६५, ८१, ९१, ५३२, ६६, ९१, ६१३, ४५, ७४, ९७, ९८, ७०८, २१, ४१
कनफ्यूशस वाद ४११
काप्टिक ईसाई ६२०
ग्रीक ऑर्थोडाक्स चर्च ४६५, ६९७
जिसूट ५६६
जैन २७, १२९, ३२
ताओ (*ताव*) वाद ४११
दीने इलाही ९०
नेस्टोरियन ३४३, ४६२
बौद्ध १२७, ४१२, ६०, ६२, ६५, ७६, ८०, ८७, ८८, ९१, ९२, ५०७, ९, २६
मज्दावाद ३५७
मेथाडिस्ट ७५५
यहूदी २२५, ३५९, ७७
लैटिन ईसाई ७१५
वहाबी ३६३
वैष्णव १२७, ५२६
शिन्तो ४८७, ८८
शैव १२५, २७, २९, ३२, ३४, ५०, २०४, ५२६
सिक्ख ९१, १७७
सूफ़ी २५२

धर्म प्रवर्तक

अब्दुल वहाब ३६३
इग्नेशस लोयला ५६६
ईसा ३३१, ६१, ७५, ७९, ८७, ९०, ४२९, ८६, ९२, ५०७, २६, २७, ३२, ३५, ९७, ६१७, २०, ८८, ९३, ९४, ९७, ९९, ७१५, ४१
कनफ्यूशस (*चियु कुङ्ग; कुङ्ग फूत्से*) ७६, ४११
गुरू गोबिन्द सिंह ९१
गुरू नानक ९१
जैकोबस बराडियस (*पादरी*) ३४०
ज़ोरोआस्ट्र (*ज़ोरथूस्त्र*) ७६, २८२, ४७६
नेस्टोरियस (*पादरी*) ३४३
बुद्ध (*महात्मा*) ७७, ८२, १०७, १८, ४६०, ८७, ८८
महावीर (*तीर्थंकर*) ७७, १०७
मानी ४७६
मुहम्मद (*हज़रत मोहम्मद रसूल सल्ल०*) ३६१, ३८३

मोज़ेज़ (*हज़रत मूसा*) ३२५, २६, २७, ३०, ७३, ७५, ५५६, ७०
मेन्शियस ४११
लाउत्से (*लाउत्सी; ली अर्*) ७६, ४११
वृषभ (*तीर्थङ्कर*) २७

धर्म प्रचारक एवं धार्मिक नेता

इब्राहीम (*अलह सलाम*) २२८, ३२, ३२५, ५५४
इस्माइल (*अ०स०*) ३२५, ५६४
ईसाई प्रचारक विलियम राइट ३१२
ईसाक (*अ० स०*) ३२५
उमर (*हज़रत खलीफ़ा*) २६१
उस्मान (*हज़रत उस्मान ख०*) ३८३
एमोन (*लूत के पुत्र*) २९७
कोर्तेज, हर्मन ७४१, ५०
खुदानन्द (*स्वामी*) ४६५
गुरू अंगद जी १७७
जगद्गुरू शंकराचार्य १३४
जशुआ ३२६
जैकब (*याकूब अ० स०*) ३२५
ताशी लामा ४००
दस्तूर (*पुरोहित दारा*) २६३
दलाइ लामा ४००, १
नूह (*हजरत, अ० स०*) २२५, ६०४
पंचेण लामा ४०१
फ़ातिमी ख़लीफ़ा ५६३
बौद्ध भिक्षु ११८, ४८७, ८९, ९२, ९६
भारतीय धर्म प्रचारकों ६२५
भृङ्गारकर बाबा १४२
महिन्दभिक्षु (*अशोक पुत्र*) २१६
युसुफ़ (*अ० स०*) ३२५
लामा ३९९, ४००, २
लूत (*अ० स०*) २९७
शैव संत अप्पर १३२
साम (*नूह के पुत्र*) २२५, ६२०
सेण्ट टॉमस ७८, ३४३
सेण्ट पाल ६५८, ६०
सेण्ट मार्क ५९१
सन्त उलफ़िलास (*वुलफ़िलास*) ६९३
सन्त पैट्रिक ७०८
सन्त मेस्राब (*मेस्राप*) ३८५, ९०
सन्त ज्ञानेश्वर ८८
सोनम ग्यात्सो ४००
हाम (*नूह के पुत्र*) ६०४, २०

नगरों के नाम

अकोला ८६
अक्काद ६४
अजमेर १०२
अदिस अबाबा ५९६, ६२०
अनाहुआक ७४१
अनुराधापुरा २१७
अपर्री ५३१
अबाइडोस ५४६
अब्रूजिनेमा ३७५
अम्बाला ९७
अमरावती ५२६
अयोध्या (*अयोध्या*) ५१५
अल-ऊला ३५८, ७७
अल हिजर ३६४, ६८
अलेप्पी २१७
अलेपू ३०९
अवारिस ५५१, ५२, ५७
असारलिक ३५३
असीयुक्त ५५७
आक्सफ़ोर्ड ६४५
आक्सफ़ोर्डशायर २६८
आर्ताक्सेटा ३८५

आराह १५४
आलमगीरपुर २५
आवा (*आ० मारडले*) ५०७
आस्रोपनी ३८६
इकारा ६३८
इथ एत तवी (*देखिए लिश्त*) ५५१, ६४
इनांग युङ्ग ५०८
इमरोज़ ६३८
इयाँस ६३८
इलाहाबाद ११३
इलो इलो ५३१
इस्तख़र २६१
इस्तमबोल (*देखिए कुस्तुनतुनिया*) ३१२
उज्जैन ७७
उज्जयनी ११३
उम्म-अल जमल ३६८, ७०
उर्गा (*आ० उलान बतोर*) ४६०
उरखिलीनू (*देखिए हमाथ*) ३२२
एकबटाना (*इकबटाना; देखिए हमादान*) २४८
एक्रोपोलिस ७६४
एक्ज़ेन्थस ३४७
एडेसा ३३५, ४०
एडोम ३२६, ६३
एड्रियाटिक ७०७
एदो (*इयदो; दे० टोक्यू*) ४८६, ६१
एन्द्राँस ६३८
एमार्गोस ६३८
एयुक ३१२
एलकाब (*दे० नेख़ेब*) ५४६, ६४
एलेक्ज़ेन्ड्रिया ५६२, ६९
ओनू (*मिस्री भाषा में; दे० हेलियो पोलिस; ग्रीक भाषा में*) ५४६, ४९, ६४
ओरंगो ७६१
अंकारा ३१२
अंकोर ५१५
कटबलोगन ५३१
कड़पा १५०
कनेम ५६६
कन्नोज ८५, १२७, ६४
कपिलवस्तु १०७
करनवू ३७७
करनाक ५५४
कराची ३८३
कर्ज़ीन ३३७
कर्पेथास ६३८
कफ़ूं-कर्कीरा ६३८
क्यांगिन ५०८
क्यांक्यादुंग ५०८
क्योतो ४८९, ९१
कृष्णा (*जनपद*) ११८, २१, ४२
कलकत्ता ५८, ९१
कलेवा ५०८
कांची (*कांजी वरम, दक्षिण काशी*) ८६, १२१, ३२
कांचीपुरम ८८, १४०
काठमण्डू २०४, ४००
का–डिंगर–रा (*अक्कादियन भाषा—बाब इलिम; बेबिल; बेबीलोन*) २२९
कानपुर ४४
कानिया ६४४
कानो ५९६
काय जुंग जू ४५८
काराकोरम ४१६, ७३
क़ारा बुल्गासुन ४७३
कारकेमिश (*आ० ज़ेराब्लूस*) ३०९, १२, १९, २० ३५, ३७
कार दुनियाश (*बेबीलोन*) २३०
कालीकट ९१
काशगर १०१, ४७३
काशी १८७
क़ाहिरा (*कायरो*) ५५३, ६३
किथनास ६३८

किमोलास ६३८
किरातिशी (*अरबी में कराची*) ३८३
कीव ६९९
कुचा ४७६
कुरकुम ३२२
कुस्तुनतुनिया (*कांसटैन्टी नोपिल; आ० इस्तमबोल*) ६९७, ७१८, २१
कूका ५९६
कूफ़ा (*आ० अलहीरा*) ३६१, ७९, ८३
केफ़ालोनिया ६३८
केरीगो ६३८
केलानिया २१७
केलिमनॉस ६३८
केसॉस ६३८
कैण्टन ४१२, १९
कैन्डी २१७, १८
कैथे ४७३
कैनोपस ५७१, ६६८
कैम्ब्रिज ५६६
कोचिन १३२
कोनोज़िनी ३८६
कोपेन हेगेन २६४, ६६
कोयमबटोर २१७
कोलम्बो २१६
कोल्हापुर १८६
कोलर १३८
कौनस ३५३
ख़ानबालिग (*आ० बीजिग*) ४१६
खोतान ४७३
ग़ज़नी ८८
गंजाम १५४
गया ९७
ग्याङ-से ४००
ग्लाटिया ३८३
गान्धार ७८
गारटोक ४००
गीज़र ३०१, २
गोज़ा ५४९
गुजरात ८०
गुजरानवाला ८०
गूजर खाँ ८०
ग्रैनोबिल ५६९, ७०
गोआ २१६
गोदावरी ८८
गोरखपुर १०७
गौहाटी ४४, १५०
चंगल नगर ५३५
चम्पारन १६०
चम्बा १५७
चाउशीन (*चोज़ेन; आ० कोरिया*) ४८०
चेब्रल १४५
चेलेल मीनार २६१
ज़ऊफ़ ३५९
ज़गरेब (*प्राचीन अगरम*) ६७१
जग्गयापेट १२१
जजाकार्ता (*जकार्ता*) ५३५
जबलपुर ८४
जम्मू ४०२
जम्बो आंगा ५३१
जलन्धर १५७
जार्डियम ३४३
ज़ान्ते ६३८
जाफ़ना २१६, १८
ज़ारिया ५६६, ६१३
ज़िनजर्ली (*समाल*) ३३७
जूनागढ़ १०७
जेद्दा ३११
जेनुवा (*जेनोवा*) ६६८
जेबेलद्रुज ३६४
जेराब्लूस (*दे० कारकेमिश*)
जेरुसलाम (*जेरूसेलम; यरुसलम*) २३३, ३२६, २७, ३५, ७९, ८३, ६३१

जैला ५९६, ६०४
जोधपुर ५०, ८०, ८२, १९४
जोलो ५३२
जोहान्सबर्ग ६४९
टयासल ७५३
टाइल ७०७
टिनोक्टिव टलन ७५०
टियूनिस २९७
टुटीकोरिन २१७
टेल एल अमरना ३१८, ३४३, ५५४
टेहढ़ी—गढ़वाल ४०२, ७
टैनिस (*मिस्री भाषा-पर रेमेसीज़*) ५४६, ५७, ५८, ६४, ७१
टोकियू (*टाक्यू; प्राचीन यदो*) ४९१
टोल्लन (*आ० टोला*) ७४१
ट्रायर ७२१
ट्रावनकोर १३४
ट्रिन्कोमली २१७
ट्रेन्ट ६७८
डबलिन ७०८
डिबान २९७
डैमसकस (*अरबी-दमिश्क*) ३१२, ३३५, ३७, ३८, ६३, ६६, ६८, ५३२
डोरसेट ५७०
तक्लोबन ५३१
तख्ते जमशीद २५७
तजरा ६०४
तजूरा ६०४
तलबन्दी (*आ० नानकाना-पाकिस्तान*) ९१
तादमूर (*टेडमोर*) ३३८
तिगरे ६१७
तिन्नेवेल्ली १२४
तिफ़लिस (*तिबलिस; त्बीलिसी*) ३८७, ९०
तिरुवेन्द्रम (*त्रिवेन्द्रम*) २१७, १४२
त्रिक्कोवलूर १२९
चुन हुआँग ४७३
तुवानूव (*तपान*) ३२२
तेजपुर १५०
तेनास ५३८
तेन्नासरिन ५१५
तेबेस्सा ५९७
तैमा ३६३, ६४
तैले हकुआ ७५५
तोंगू ५०८
तौगी ५०८
तौलेसप ५२६
तंजावूर (*तंजौर*) ८७, १३२
त्सान-त्सही-अंगाइ ४५४
थीबीज़ (*मिस्री भाषा—वेसी*) ५४६, ५०, ५१, ५४, ५५, ५७, ५८, ६४, ९६
थुग्गा (*आ० दौग्गा*) ५९६, ९७
थेरा ६४१
दमनहुर (देखिए बेहदेत)
दमिश्क (दे० डैमसकस) ३१२, ६६
दार्जिलिंग २१२
दाशुर ५४६, ५१
दिल्ली ८४, ९०, ९४, ९७, ५२७
दीनाजपुर ९७
देवगिरि १४०
देवनगर १८७
दोनेपुण्डी १४५
नई दिल्ली ३९, ४६५
नगादा ५४५
नन्दीनगर १८७
नपाता ५५८, ९१, ९६, ६१७
नर्सारावपेट १४२
नागाओका ४८९
नागासाकी ४९१
नानकाना (दे० *तलबन्दी*)
नानकिंग ४१७, १९, २१
नार्थस्पोरेड्स ६३८
नॉम पेन्ह ५२७

नारा ४८८, ८९
नालन्दा १५४
नासिक १०९, १८, ४०
न्यूरेम्बर्ग ७१८
निकोशिया ६३१
निगम्बो २१७, १८
निनेवः (*आ० कुयेंजिक*) २३३, ३६, ४८, ३४९
नूबिया (*आ० सबूसिम्बल*) ३५३, ५५१, ५६, ५८
नेखेब (*मिस्री भाषा में; दे० एल काब-ग्रीक भाषा में*) ५४६, ६४
नेखेन (*मिस्री भाषा में; दे० हेरेकोन पोलिस-ग्रीक में*) ५४६, ६४
नेफ़रूसी ५५२
नेबलेस (*आ० शिकिम*) ३३२
नेल्लोर १४२
नोवगोरोड ६९९
नौक्रेटिस (*मिस्री भाषा में; परमेरी-ग्रीक भाषा में*) ५५६, ६४
पररेमेसीज़ (*दे० टैनिस ग्रीकभाषा में*)
पसरगादे (*आ० मुरग़ाब*) २३१, २५७, ६१
पर्सीपोलिस (*आ० तख़्ते जमशीद*) २५७, ६१, ६२ ६५, ६६, ६८
प्रयाग ६६, ११३
प्लासी ९४
प्सीडिया ३८६
पागन ५०७, ५०८
पाटलिपुत्र (*आ० पटना*) ८०
पाण्डीचेरी ९१, १३८, २६३
पाण्डुरंग ५२६
पियोंगयाँग ४८०, ८१
पीकिंग (*आ० बीजिंग*)
पीगू ५०७, ८, ९, १५, १६, १७, १८, २१
पीलीभीत १२७
पीहिति (*आ० जाफ़ना*) २१६, ३१
पुताओ ५०८
पुत्तालम २१७
पुयेत्रोप्रिंसेसा ५३१
पुलोपिनाँग ५१५
पूना ९१
पे ५४६
पेट्रा ३६३, ७९, ८६
पेडाँग ५३५
पेरिस (*फ्रेंच भाषा में—पारी*) ५, २६७, ६९, ८२, ३३८, ५३२, ६८, ७०, ७१
पैठन १०६
पोर्टोनोवो ५९६
पोन्टस ३८६
प्रोम ५०७
पोलन्नारूवा २१७
फ़िगीक ५६९
फ्री टाउन ५६६, ६१३
फ़िलाई ५६१, ७०
फ्रोर्ट सेण्ट जुलियन ५६७
फ़ोरम रोमाना ६८७
बकूफू ४८६
बग़दाद २६६, ३६१, ४१६, ५३२
बगुईयो ५३१
बंगलौर १८६
बदामी १४२
बदायुं ९०
बनात ७१५
बनबासी ८८
बनारस ४४
बम्बई २०, ५८, ६१ ६४, २५२, ६३, ६८, ३५६
बर्कले ४३१
बरबेरा ६०४
बर्नो ६६७
बर्लिन ६९९
बल्ख़ २५२, ४६२, ६६
बसरा ३८३
बहरियत (*प्राचीन आइसिन*) २२९

बॉन २६७
बार्सीलोना ६९३
बारी ६१३
बावद्दीन ५०८
बित अदीनी ३३७
बिलासपुर १८९
बीजापुर ९१, १६०
बोजिंग (*देखिए पीकिंग*)
बुखारा ४६२, ७३
बुतुअन ५३१
बुद्ध (*बौद्ध*) गया ८९, ४०१
बुबास्ति (*बास्त*) ५५७, ६४
बुलहर ६०४
बुल्हर मैदेन ३१२
ब्रुकलिन ६४७
बूटो ५४६
बूदा ७१७
बेबीलोन[1] (*आ० हिल्ला*) ५८, २२९, ३०, ३१; ३३, ३९, ४१, ४२, ४७, ५५, ८९, ३८७, ४७६, ५५८, ६१, ६३२
बेहदेत ५४८
बेसीन ५०८, ९
बैकांक ५१५
बोगजकुई (*दे० हत्तुशाश*) ३०९, ११, २०
बोयन ७०८
बोर ३१२
भट्टी प्रोलू ११८, २९
भामो ५०८
भावलपुर १०२
मइनपगान १३२
मक्का (*शरीफ़*) ३११, ६१, ६३, ६६, ८३, ५६२
मछली पट्टम ९१
मथुरा ७८, १८९
मदोना ३११, ६१, ६६
मदीनत अबू ५५७
मद्रास ९१
मधुरा (*मदुराय*) १३४, ८७
मनीला ५२७, ३१, ३२
मन्दसौर १९४
मर्वदश्त २५७
मलाबार २२१
मसकट ३६३
महामल्लपुरम १२९
महीधरपुर ५२६
माईन ३७७
माण्टगुमरी २६
मातारम ५३५
माण्डले (*दे० आवा*)
माण्डव्यपुर (*आ० मराडोर*) ८०
मारिब (*मारबी*) ३५९, ७७
मारी (*आ० हरीरी*) २२७, ३०९
मार्सेइ २९७
माले २२१
मावची ५०८
मिकोनास ६३८
मिग्यान ५०८
मिनेत-एल-बैदा ३०२
मिरोइ ५९१, ९२
मिल्वर्टन ५६९
मीतकीना ५०८
मुआंग लंफून ५१५
मुज़फ़्फ़रपुर १६०
मुल्तान १७७

१. अक्कादियन भाषा में बाव = द्वार; इलिम = भगवान; बाबइलिंग; बाइबिल; बेबिल अर्थ हुए — भगवान का द्वार; ग्रीक भाषा में 'न' जोड़ने से हो गया 'बेबीलोन'। कसाइट शासकों ने इसका नाम कारदुनियाश रख दिया। अब केवल एक टीला रह गया है। उसी टीले के निकट हिल्ला ग्राम है।

मुवातली (*गुरगम्मा*) ३२२
मुसल ३४०
मेइदुम ५४९
मेगिगड्डो २८७
मेनकौरे (*माइसे रीनस*) ५४६
मेम्फ़िस (*ग्रीक भाषा में; मेन नेफ़र–मिस्री भाषा में*) ५४६, ५७, ५८, ६४, ६८, ९६
मेरठ ८७
मेलॉस ६३८, ६४१
मैक्सिको ७४१, ४२, ४८, ५०
मैड्रिड ७५०
मैदाने सालिब ३६३
मैसूर १५०
मोनरोविया (*मॅनरोविया*) ५९८, ६०७
मोसुल ३५७
मोहेंजो-दड़ो २७, ७४
मौलमीन ५०८
यथील ३७७
यदो (*देखिए टोक्यू*)
यशोधर पुर ५२६
यार्क ६८८
यार-लोंग ३९७
युटंग ४००
युबोइया ६३८
यूबिया ६७१
रंगपुर २५
रंगून ८०
रतनपुर १८९, ९४. २१७
राजमुन्द्री १४२
राजारत्ते २१६
राजाशाही **१५०, १५४**
रानो रोरार्कू ७६१
रॉस्टाक २४६
रोम (*रोमा*) ९, २५२, ८६, ९३, ३२७, ३५, ३८ ४७, ५३, ८५, ४१२, ५६१, ६२, ६६, ९५, ६३६, ४४, ६०, ६८, ७०, ७२, ७८, ८५, ९७, ७०८, ७१५, ७२१
रोहूना २१६
लओ आग ५३१
लखीमपुर १६८
लद्दाक़ (*लद्दाख़*) ३९७, ४००
लन्दन (*लन्डन*) २६, ९७, २६१. २७३, ६४७
लबरनाश (*तबरनाश*) ३०९
लशियो ५०८
ल्यूकास ६३८, ५८
ल्हासा ३९७ ४००
लारकाना २६
लिगमोर ५१५
लिनेरिक ७०८
लिश्त ५५१, ६४
लुआंग प्रबंग ५१५ १८
लुकेनिया ६७४
लुक्सर ५४५, ५४
लू कुआन हीन ४५४
लेगास्पी ५३१
लेमनास ६३८
लेसाबास ६३८
लैगास ५९६; ६१५
लोथल २६
वर्धा १९४
वाटरफोर्ड ७०८
वातापी (*बादामी*) १४२
वान २६६
वारंगल ८८
वाराणसी (*बनारस*) ८२
वाशिंगटन ४९२
विजय ५२६
विजय नगर १३२, ३४, ३८, ४२, ९४
विदिशा ७८
विशिखापटनम १५४
वीन चाँग **५१५**
वेंगी १४०

वेनिस (विनीज़िया) ८७, २६१, ६३१, ४४, ५८, ६०, ७४, ८५, ६८, ६९
वेस्तिनी ६७४
वेलूर १३८
वेसी (देखिए थीबीज़)
वैशाली २०४
वोलसिनीआइ (वोल सेना) ६६८, ६९
शंघाई ४००
शाकम्भरी (सांभर) ८४
शातेल अरब ३६८
शिमला ४००
शिवनेर १९
शीराज़ (आ० चेलेल मीनार) २६१
सक्कारा ५४६
संजान २५२
सतारा ९१
समारिया (आ० सिबास्तीया) २३२
समाल (ज़िनजर्ली) ३३७
सफ़ा ३६६
समरक़न्द ४६२, ७३
समोथ्रेस ६३८
सन्तोरिन ६३८
सराय ६६९
स्थानेश्वर (थानेश्वर) ८२
सलामिस (ग्रीस) २५०
सलामिस (सायप्रस; आ० एनकोमी) ६३१, ३२, ५७, ५८
स्केपेलास ६३८
स्काइरॉस ६३८
सहसराम १५४
साइस ५५१, ५७, ५८, ५९
सारन १६०
सिगीरिया २१७
सिपिलोस ३१२
सिकन्द्रिया ३७५, ५६०, ६१, ६३, ६८
सिटका ७५६
सिफ़नॉस ६३८
स्किया थोस ६३८
स्मिर्ना ६६७
सियोल ४८१
सिरवाह आ० (ख़रीबा) ३५९
सिरॉस ६३८
सी–एन–फू ४:२
सीरियम ५०८, ९
सुरीगाउ ५३१
सूरत ९१, २६३
सूसा (शूशा) २३०, ३१, ४१, ४७, ५५
सेमनियम ६७४
सेरीफ़ॉस ६३८
सैलोनिका ६९, ७८
सोमरसेट ५६९
हड़प्पा (हरीयूपा) २५, ४३, ७४
हत्तुशाश (आ० बोग़ज़कुई गोर्गे ग्राम) ३०९
हनमकोण्डा ८८
हमा ३११, १२
हमाथ ३३७
हमादान (देखिये एकबटाना)
हरन ३७९
हरार ५९६, ६०४,
हर्पीनी ६७४
हरीरी (दे० मारी)
हरूपेश्वर (दे० तेजपुर)
हवारा ५५१
हानयांग (दे० सीयोल) ४८०
हिज्र ३७९
हिरेक्लियोपोलिस ५५०, ५७
हिल्ला (दे० बेबीलोन) २२८
हिस्टोनिया (वास्ता) ६६८, ६९
हुगली ९१
हेबरोन (हेब्रोन) २२८, ३२५
हेलियोपोलिस (दे० ओनू) ५४, ६२
हेलीकार्नेसस ३५१; ५३, ६३६, ६७

हेलेसपाण्टस ३४३
हैदराबाद ९२
श्री कण्ठ ८२

नगर-राज्य

अक्काद (आ० एलदीर) २२६, २७, २८, ५५, ३३५
अगरम (आ० ज़गरेब) ६६८
अगादे (देखिए-अक्काद)
अग्नोन ६६८, ६६
अदाब २२५, २६
अपूलिया ६६८
अबूहबा (दे० सिप्पर)
अपोलोनिया ६३८, ५८
अम्ब्रिया ६७४
अम्ब्रेसिया ६३८, ५८
अर्गास ६३८, ६०
अरीकिया ६६८, ६६
अशकाब २२५, २६
अशुर (आ० शरकात) २२९, ३९
आईसिन (आ० बहरियत) २२९
आर्केडिया ६६४, ६५
आर्कोमिनास ६४५
आर्दिया ६६८, ६९
इगूवियम (आ० गुब्बियो) ६६८, ६९, ७४
इथाका ६३८
इयोलकास ६४५
इरीदू २२५. २६
उम्मा (आ० टेल जोखा) २२५, २६
उर (आ० मुकय्यर) ४४, २२५, २६, २७, ३२, ४३, ५५४
उरुक (आ० वरक) २२५, २६, २७, ३५, ४३
उक्षमाल (उसमल) ७४८
एजीना ६३८, ५८
एथेन्स २५०, ६३२, ३६, ४४, ४५, ५७, ५८, ५६, ६०, ६२, ६४
एनेक्टोरियम ६३८, ५८
एपोलोनिया (देखिए अपोलोनिया)
एफ़िसस ६३८
एल घेमिर (दे० किश)
एशनुन्ना (आ० टेल असमार) २२९
एस्की अदालिया (दे० सिडे)
ओम्ब्रिका ६६७
ओलिम्पिया ६३८, ६४
कइदोनिया ६३६
कपुआ (दे० कैसिलिनम)
कायरी (आ० कर्वेतरी) ६६७,६८, ६९
कालसिस (खालसीस) ६३८, ७१
किर्ता ५९५, ६६८
कियास ६६८
किश (आ० एल घेमिर) २२५, २६, २७, ४३
कुमाय (कीमाय, क्युसी) ६६८, ६९, ७१
कैसिलिनम (आ० कपुआ) ६६८, ६६, ७२
कोरिन्थ ६३८, ५८, ६०, ६१, ६२, ५७
कोस ६३६
क्नीडस ६३६
क्लूसियम ६६७, ६८, ६६, ७०
गबोआई ६६८, ६६
जेबाल (आ० जेबाइल) २६३
जेम्द नस्र २४३
टस्कोनेला (आ० टस्केनीया) ६६८, ६६
टायर (आ० सूर) २८७, ९३, ६२९, ४०, ४४
ट्रॉय ६३६, ४५
टीबुर (आ० टीवोली) ६६८, ६६
टूडर (आ० टोड़ी या तोड़ी) ६६८, ६६, ७४, ७८
टेडमोर (आ० तादमूर-पालमीरा)
टेल्लो (दे० लैगाश)
डेल्फ़ी ६३८
डेलियम ६३६

तारकुइनिया (*आ० तारकुइनी*) ६६७, ६८, ६९, ७०
तीगिया ६३८, ६४
थीबीज़ (*ग्रीस*) ६३६, ४०, ४५, ६०, ३२, ६४
नासास (*क्रीट*) ६३६, ४६
निकियास ६३८, ६०, ६२
निप्पुर (*आ० नूफ़र*) २२५, २६, २७, ४९
नियपोलिस (*आ० नेपिल्स*) ६४५, ६८, ६९, ७१, ७२
नोला ६६८, ७२
पाइलस ६३८, ४५, ४७, ४८, ५३, ५४, ५७
पापूलोनिया ६६७, ६८, ६९
पाफ़ोस ६२९, ३०, ३१
पायलिग्नी ६७४
पियासेंज़ा ६६८, ६९, ८५
पेक्सास ६३८
परास ६३८
पैलेसट्रीना (*दे० प्रायनेस्ते*)
पोतीदइया ६३६, ५८
पोम्पेआई ६६८, ६९, ७२
प्रायनेस्ते (*आ० पैलेस्ट्राइन; पैलेस्ट्रीना*) ६६८, ६९, ८८
फ़लेरीआइ (*आ० सिविटा कैस्टे लाना*) ६६८, ६९, ७०, ७८
फ़्लोरेंतिया (*आ० फ़ीरेंज़े*) ६६८, ६९
फ़ेन्तनी ६७४
फ़ैस्टास ६३६, ४८, ५६
बद-तिबिरा २२५, २६
बिबलॉस (*आ० जेबाइल; जेबाल*) २८७, ९४, ९५
बोल्ज़ानो ६६८, ७८
मराथन २५०, ६३६, ५७
मन्तीनियी ६३८, ६०, ६२, ६
मर्रुकिनी ६७४
माइसिनिया ६३८, ४५
माग्रे ६६८
मिलेटस ६३६
मुकय्यर (*दे० उर*)
मेगारा ६३८, ६०
मेगालोपोलिस ६३८, ६४
मेस्साना (*आ० मेसीना*) ६६८
मेसीडोन ६३६, ६०
मोआब २९७, ३२२
युगारिट (*आ० रास शमरा*) २८७, ३०२, ३
रोड्स ६६८
रोमा ६६८, ६९
लराक २२५, २६
लारसा (*आ० सेन ख़रीब*) २२५, २६, २९
लिन्डस ६३६
लुगानो ६६८, ६९, ८३, ८४
ल्यूकत्रा ६३८, ६२, ६४
लैगाश (*आ० टेल्लो*) २२५, २६, २७, ३५
विनीजिया (*आ० वेनीस*) ६६८
वी आइ (*आ० फार्मेलो*) ६६७, ६८, ६८, ६९, ७०
वेतूलोनिया ६६७, ६८, ६९
समोस ६३६
साइनास्की-फ़लाई ६३६
सार्डिस ३४९, ५१, ६३६
सिडान (*आ० सैदा*) २८७, ८९, ९३
सिडे (*आ० एस्की अदालीया*) ३५३
सिप्पर (*आ० अबूहबा*) २२५, २६, ३०, ४२, ४७
सिविटा कैस्टेलाना (*दे० फ़लेरी आइ*)
सीराकूज ६५८, ६०, ६८, ६९
सोन्द्रियो ६७८
स्पार्टा ६३८, ५७, ५८, ६०, ६२, ६४
हैगिया त्रियदा ६३६, ४७

नदियाँ

ओरहन ४७३, ७६
कावेरी १५७
कुस्कोविम ७६१
गंगा १५७
जार्डन ३३८
डैन्यूब ६६३, ९६, ७१५
दजला २२५
नर्मदा ८२, १२७
नील ५४६, ५१, ५६, ५९, ६७
फ़रात २२५, ३६१
मकाम १०१
मोकाँग ५२६
यनिसी ४७३
रावी २५
सरस्वती ८२

पदवियाँ

अम्बान ४००
एटीकोट्टी ७०८
एरेक्ट ७०७
ओइनक ७०७
कौटुम्बिक नेता ४८७
खेदिव ५६३
छोग्याल ३९९
तायरा ४८९
तोकूगावा ४९१
दाइमो ४८९
पादरी ३४३
पाशा ५६३
फ़ुजीवारा ४८९
फ़राओ ५५२, ६४४
मिनास ६४४
मीनामोतो ४८९
लामा ४००
वज्रधर ४००
वानप्रस्थी सम्राट ४८९
शरगाली शर्री २२८
सेइ–ई–ताइ शोगुन ४८९

पदाधिकारी

अगस्टस जाँन्सन (राजदूत) ३११
अर्नेस्ट दि साँर्ज़ोंक (राजदूत) २३५
अशिकाग तकाउजी (शोगुन) ४८९
अर्साकीज़ (सेनानायक) २५२
अहमद इब्न तुलुन (प्रांत पति ५६३
आर्त बेनस (अंग रक्षक २५०
ई–ताय–जो (जनरल) ४८०
ई–ये–यासू (शोगुन) ४९१
उमरी (सैनिक) ३२६
एन्ना तुम्मे (एन्सी) २२७
ऐन्ड्रोगोरस (प्रांतपाल) २५२
ओरोन्तेब्तोज़ (सेनानायक) ३५१
कर्बीग्रीन (राजदूत) ३१२
क्वीटन (ब्रीटीश) १६८
क्वीटन (ब्रिटिश) १६८
क्लाडियस जेम्स रिछ (प्रदूत) २६६
क्लाइव (ईस्ट इंडिया कं०) ९४
कामातोरी (फुजींवार) ४८८
कियोमोरी ४८९
कीत्से ४०९, ८०
खैरबेग़ (सैनिक) ५६३
गौमाता (पुरोहित) २५०
चर्चिल (प्रधान मंत्री) ३८३
चाणक्य (प्रधान मंत्री) ७७
चीनी ४१९, ८०

जंग मियाओ ४२६
जव्हार (सेनापति) ५६३
जॉन मैलकॉम (प्रांतपाल) २६८
जेसप (राजदूत) ३११
ट्राट्स्की ६६९
टिकेन्द्र सिंह (सेनापति) १६८
तरगोंमास ३८७
तर्शतिल (अरबी में; देखिये चाचंल) ३८३
तशरशिला (अरबी में; दे चर्चिल) ३८३
तिमुचिन (चगेंज़ खान-मंगोल नेता) ४१४
तेती (जनरल) ५५२
थोन-मी-साम-भोटा (मत्री) ४०१
दुत्तेगुम्मू २१६
नर्गल युसेज़िब (प्रतिनिधि) २४७
नीधम (ज़िलाधीश) १६८
नेपियर (सैनिक) ६२०
नेबू ज़रादन (सैनिक) ३२७
नेबू नयद (पुजारी) २३३
नेबू निडस (लैटिन दे० नेबू नयद) २३३
नेलसन (सेनानायक) ५६७
नोबू नागा ४८६
पाम्पेई (संरक्षक) ५६१
पाल एमाइल बोता (राजदूत) २३६
पोर्कियस काटो ६३१
फ़ाया तख़सिन ५१५
फ़ा नरेत ५१५
फ़ूजीवारा (कामातारा) ४८८, ८६
बाला आवाजी चितनिस (मंत्री) १६०
बोस्सार्ड (कप्टेन) ५६७
मनेथो (पुरोहित) ५४५, ७०
मारडोनियस (सेनानायक) २५०
मोर्दमान, ए० डी० (राजदूत) ३११
युगेन बर्नोफ़ (संस्कृत अध्यक्ष) २६६, ६७
योरीतोमो (शोगुन) ४८९
रॉलिन्सन हेनरी (सैनिक) २६८
लार्ड कैनिंग (वाइसराय) ९७
ली हुआँग चाँग (प्रांत पति) ४१९
लुगाल ज़ग्गेसी (एन्सी) २२७
लैमिनी (इस्लामी नाम—मोहम्मद अलअमीन अल कनेमी) ६१५
वाँग अन शर (प्रधान मंत्री) ४१४
वाँग कीन (सैनिक) ४८०
वी मान् (मानक) ४८०
वू सान कुई (वाइसराय) ४१७
शिलहक इन्शु शिनाक (एन्सी) २२८
सरगोन (मुख्य साक़ी) २२७
सहूरे ५४९
सागौ—नो—ईरुका ४८८
सेल्यूकस (सेनानायक) २५२
सैमुयल फ़्लावर २६२
हमीद खां (वज़ीर) ९०
हिदेयोशी ४८९
हिरेक्लीटस ७६
हुँग शीन जुआन ४१९
हेपगिस (जनरल) ३४७
होजो तोकी मासा (शोगुन) ४८९

पर्वत

अरारत २३२, ३३
आल्प (एल्पस) ६६४, ७०७, २
ईदा ६४४
काकेशस (कोहकाफ़) ३८७, ५६७
कारटेपे (के पहाड़) ३२२
कोहेतूर ३२६, ३०, ७३
गिरनार १०७, १०९
टारस ३५१
तिरुमलाई १२९
बाल्कन पर्वत ६४५
माउण्ट अलवेन्द २६१
माउण्ट गिरजिन ३३२

माउण्ट सिनाई (*देखिए–कोहेतूर*) ३२६, ३०, ७३
युराल ७१५
हेबरोन (*की पहाड़ियाँ*) ३०९

प्रांत

अण्डमन ५३
अन्तावर्ती तिब्बत ४००
अम्दो ३९९
अलघेनी ७५३
असम ६८, ५०९
आन्ध्र ७७, ७८, ८७, ९१, ११८, २१, २५, ४५, ५०
उड़ीसा १५७
उत्तर प्रदेश २१, २५, ९७
एरीज़ोना १०
एलास्का ६९९, ७४८, ५५, ५६, ५८, ५९
ओकलाहोमा ७५३
कच्छ ७४
कर्णाटक ८७
कर्नाटक १५०
कषकुडी १३८
काठिया वाड़ ९९, १०९, ३८
कामरूप १५४
क्रीट ६४४
कुर्डिस्तान २५७, ६८, ८२
केदू ५३५
केरल १३४
कैलीफ़ोर्निया ७४१
कोहाऊ रोंगो रोंगो ७६२
गुजरात २५, ७४, ८०, १०७, १०९, ३८
गोआ ९१
चीनी ४१९
ज़ेकवान ४५०
तेलंगाना ८८
तोण्डेय नाड १२१
पंजाब ७८, ८०, १५७, ७७
पिगूरिया ६७८
पूना १६०
फ़य्यूम ५९१
फान्सू ७८
बंगाल ८४, ८८, २६३, ५०९
बरार ८६, ८७
बलूचिस्तान २५
बिहार ९९, १६०
बुन्देलखण्ड ८४
मिथिला १६०
युनान (*चीनी प्रांत*) ४५०, ५४, ५२६
राजस्थान (*राजपुताना*) २५, ५०, ९९
वेल्स ७०७, ११
शंघाई ४००
शान्तुंग ४९२
संयुक्त प्रांत ९७
स्काट लैण्ड ७०८
सखालिन ६९९
सिन्ध (*शक द्वीप*) २५, ७८, ८८, १०२, ७२, ७७, ३७९
सिनाई ९, ३२६, ३०, ६३, ६६, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ५५१, ६४१, ८५
सिसली २२१, ६५८, ६०, ७०, ७१, ९३
सीक्याँग ४००
सोंग ३९९
हवाई ४२१
हिमाचल प्रदेश १७२
हैब्स बर्ग ६७८
होनान ४२९, ५८

भाषायें

अक्कादियन ३२०
अखमिनिक ५९१
अंग्रेज़ी २७८, ९५, ३४९, ५५, ६८, ४२१, ४०, ४१, ४६, ९६, ६३१, ७१२
अफ़्रीकी ६०४, ६०७
अम्ब्रिया ६७४, ७८
अरबी ५, १६८, २२५, ३२, ६६, ६८, ३८१
अरमायक १०१
अरामी ३०२
असीरियाई २७३, ३१३
आर्य ६४८
इंगलिश ६०३, ४४४, ६०४, ७०८
इटालियन ६७४
ईग पिंग (टोन) ४३१
उत्तरी मण्डारिन ४२२
उर्दू १६८, ७२
एट्रस्कन ६८७
कनआनो ३०२
कनोन ५ ०
कानहक्का ४२२
काप्टिक ५७०
कियाओ कियो ४५४
कुकीचिन १६८
कुन ५००
कुर्दिश ३५७
केल्टिक ७१२
केल्टिक-लैटिन ७१२
कैण्टोनीज़ ४२२
क्री ७५५
गोज़ (घेर्ज़) ६२०
गुरमुखी १७७
गुआन ह्वाह ४२१
ग्रीक १८, ३४०, ४७३, ५४५, ४६, ६२६, ३१, ६८
ग्रीक-नव्ती ३६४
चीनी १०१, ४३२, ९२, ९३
चीनी-इंगलिश ४३१
जापानी ४६१, ५०१, २, ३
ज़ेण्ड-अवेस्त २६३, ६६
तमिल ९९
तमाशेक (तिफ़नार) ५९७
तिब्बती ३९९, ४०१ ४०२, ५४
तिब्बत-बर्मी ४५०
तुर्की १६८, ४७६
तेलुगु १४०, ४५, ५४
तोखारी ४६९
द्रविड़ ३४, १२७
दक्षिणी मण्डारिन ४२२
द्वि-ध्वन्यात्मक ४४३
ध्वनि-बल (टोन) ४२९, ३३, ५१८
नव-असीरियाई २७३
पर्शियन २४८, ६६
पाली ७७, १०२, १०७, २६६,
पाली-प्राकृत १०७
प्राकृतिक ७७, १०२, १०७, १०९, ७७
प्राकृत-संस्कृत १२५
प्राचीन पर्शियन २६०, ४७३
प्राचीन फ़ारसी २७१, ३५९
पियू (प्यू) ५०७
पोकिंग ४२२, २५, २९
पू-टंग-ह्वा (साधारण) ४२२
पूर्वी मण्डारिन ४२२
फ़्यूमिक ५९१
फ़ारसी २६८, ३१३
फ़ारसी-भारती १७२
फ़्रेंच १८७
बर्मी १६८

बर्मी-तिब्बत ४५०
बैक्ट्रियन २६४
भारती १७२
भारोपीय (इण्डो-यूरोपियन) ५३, ३११, ५१, ८५, ६७१
मण्डारिन ४२१, २९, ३१
मराठी ८८
मिस्री २६२, ३१३, ५४६, ४९, ५७, ६५, ७५
मीडियन २६४, ६७
मीन ४२२
यांग पिंग (टोन) ४३१
यूनानी २ ८, ७९. ८२,
रूसी ४६९
रोमन उच्चारण ४३२
लिंगुआ-ओस्की ६७४
लैटिन (लातीनी) २४८, ६३, ३३८, ६९८, ८५, ९८
वू ४२२
वेडनिंग ४५४
शांग पिंग शंग (प्रथम-टोन) ४३१
शांग शंग (तृतीय-टोन) ४३२
शियापिंग शंग (द्वितीय-टोन) ४३१
संस्कृत ९०, ९९, १००, १०२, १०९, १३, २७, ३४, ५४, ७७, ८७, ९४, २३६ ३ ३, ४०, ६६, ७३
स्लाव ६९७
सिडेटिक ३५३
सीरियाई २७१
सोरियाक ३६१
सुमेरियन ३२०
सुमेरी २७३
सूसियन (एलामाइट; अमारदियन) २६७
हित्ती ३११
हिन्दी १७९, ४३१, ३२, ४४, ४६, ५००
हिन्दुस्तानी २६६
हुई यांग ४२२
हेब्रू ५, १०१, २२८, ४८, ६३, ७१, ९७ ३११, ५९, ६८५, ९८

भू भाग

गैलिली ३३१
चुनी भूमि ४०९
पम्फ़ेलिया ३४७, ५३
माहन ४८०
रेशिया ६७८
स्कैण्डीनेविया ७०७
सिन्धु घाटी २५, २६, २८, २९, ५८, ७४, ८६, ९७, ९८
सुमेर २७, ४३, २२५, २७, ३५, ३६, ३७, ४५, ३२४, २५, ३५, ७०७

महाद्वीप

अफ्रीका १०, २८५, ३५९, ७७, ४३, ९१ ९५, ९६, ६०७, १७, २१
अरेबिया २३३, ३४, ६३, ३११, ४०, ५९, ६०, ६१, ६३, ६६, ७३, ७९, ८३, ५९५, ६०४
एशिया ४१२. १७. ५६, ६६०, ६७, ७४८
दक्षिण अमेरिका १०; ७४८, ६१
दक्षिण-पश्चिम अरेबिया ६०४
दक्षिण-पूर्वी-एशिया ९६, ४९२
दक्षिणी-पूर्वी-यूरोप ६९७
पश्चिमी एशिया २४९, ३११, ३८, ८५; ५४५; ५३, ५४, ५६
फ्रेंच अफ्रीका ६०७
मध्य अमरीका ७४८, ४९
मध्य एशिया ३९७, ४१४, १६, २१, ३, ६२, ६५, ७३

मध्य यूरोप ७१५
यूरोप (योरोप) ४००, १२, १६, १७, ६३, ७३; ९१, ५२७, ३२, ३५; ६३, ९५, ६०७, १७, ९२, ७५३

युद्ध

कोरिंथियन ६५७
गृह-युद्ध ४२१
चीन-जापान ४२१
चीन-फ्राँस ४२१
जिहाद (इस्लाम का धार्मिक युद्ध) ६१५
थर्माप्ली ६५७
दूसरा महायुद्ध ४८१, ४९२
प्युनिक ५७५, ६७८
पेलीपोनेशियन ६६२
प्रथम महायुद्ध ४९२
बाल्कन ६९७
मराथन ६५७
रूस ४९२
रूस-जापान ४८१
श्याम-कम्पूचिया ५५१
सामुद्रिक ४८९

राजकुमार, राजकुमारियाँ

अरियाद्ने (राजकुमारी) ६४४
आहोत्सू (राजकुमार) ४८८
कारू (राजकुमार) ४८८
कुमार देवी (राजकुमार) ११३, २०४
कैथरीन (राजकुमारी) ९१
थ्यूसियस (राजकुमार) ६४४
दजू शी (रानी) ४२१
नाका (राजकुमार) ४८८
प्लेसीडिया (राजकुमारी) ९१
पेसीफ़ो (रानी) ६४४
महिन्द (राजकुमार) २१६
मेरी अतेन (राजकुमारी) ५५५
रज्यश्री (राजकुमारी) ८२
शौतुकू तैशी (उमयादो-राजकुमार) ४८८
सुयीको (राजकुमारी) ४८८

राजवंश

अंकोर ५२६
अखामेनीय (अखमेनी) २७९
अट्ठाईसवाँ ५५८
अठारहवाँ ५५२
अयूबी ५६३
अरसासिड (आर्सासिड) २८२, ६५२
अलंग पाया ५०७, ९
आठवाँ ५५०
इक्कीसवाँ ५५७
इन ४०९
इक्ष्वाकु १२१
ई ४८१, ६५
उत्तर चाओ ४१४
उत्तर चीइन ४१४
उत्तर ताँग ४१४
उत्तर लियांग ४१४
उत्तर हाँग ४१४
उन्तीसवाँ ५५९
उन्नीसवाँ ५५५
एक्तीसवाँ ५६०
कदम्ब ८८, १४०, ४२
कपिलेन्द्र १५७
कल्याणी-चालुक्य ८६
कलचुरी ८४, १८९
काकतीय ८८, १४५
काण्व ७७

कार्दमक १०६
किन ४१४, १६
कुषाण ७७, १०१, ८६
खिलजी ९०
गंग ८६
ग़ज़नी ८८
गहड़ वाल ८२
ग्यारहवाँ ५५०
ग्रीक १०१, ५६०
गुर्जर ८०
गुप्त ८०, १३८
गुहिलोत ८०
गोर ८८
चतुर्थ ४५०
चन्देल ८४
चाउ ४०, ११६, २७, ८०
चालुक्य ८४, ८६, १२१, १२९, १३४, १४०, १४२, ४५
चीइन ४११
चींग ४१७
चोल ८७, १२६, १५४
चौदहवाँ ५५१
चौबीसवाँ ५५७
चौहान ८४
छठवाँ ५४६
छब्बीसवाँ ५५८
जगुये ६२०
ताँग ४१२, १३
तीसवाँ ५५९
तुंगू ५०७
तुग़लक ९०
तुर्क ५६३
तृतीय ५४६
तेईसवाँ ५५७
तेरहवाँ ५५१
तैलंग १२६
तोकूगावा ४९१
दसवाँ ५५०
दास ८८
द्वितीय ५४६
नवाँ ५५०
नाकातोमी ४८८
पच्चीसवाँ ५५८
परमार ८४, १८६, १६४
पश्चिमी चालुक्य १४२
प्रतिहार ८२, १६४
प्रथम ५४६
पल्लव ८६, ८७, १२८, २९, ३२, ३४, ४०
पन्द्रहवाँ ५५१
पह्लव ७८
पागन ५०७
पांचवाँ ५४९
पाण्ड्य ८६, ८७, १३४
पार्थिया १०१
पाल ८४
पूर्वी गंग १५४
पूर्वी चालुक्य १४२
बनी अब्बास ३६१
बनी उम्मिया ३६१
बसीम १२५
बाइसवाँ ५५७
बारहवाँ ५५०
बीसवाँ ५५६
बॅक्ट्रिया १०१
मंगोल ४१६, ६०, ६१, ५०७, २६
मंचू (दे० चींग) ४१७, २१, ६९, ८१
मनखेड १४२
ममलूकी ५६३
मल्ल २०४
मलेच्छ १५०
मिंग ४१६, ५४, ८१
मुग़ल ९०

मैत्रक ८०
मोनो नोबे ४८८
मौखरि ८०
मौर्य ७७, २५२
यादव ८८
युआन (*मंगोल*) ४१६, २१
राष्ट्रकूट ८७, १६४
राष्ट्रकूट–राठौर १४२
रोमा नोव ६९९
लिच्छवि ११३, २०४, ३
लोदी ६०
वर्धन ८२
वलभी १३८, ४०
वाकाटक ८३, १२५
वातापी–चालुक्य ८६
विष्णु कुण्डी ८६
वेंगी–चालुक्य ८७
शक ७७
शांग (इन) ४०९, २७, ८०
शान ५०७
शिया ४०९
शुंग ७७
सत्ताइसवाँ ५५६
सफ़वी २५२
सस्सानी २६१
सत्रहवाँ ५५१
सातवाँ ५५०
सातवाहन ७७, ७८, १०६, २१
सिल्युकिड ३४३
सिसोदिया ६०
सिंहल १३४, २१६
सुई ४१२
सूंग ४१४, १६
सैयच ६०
सोगा ४८८
सोलंकी ८४
सोलहवाँ ५५१
हख़मनी (दे० *अख़मेनी*) २७८
हान ४१२, ३८
हितायत ५५६
हेमेटिक ६०४, २०
हैहय (दे० *कलचुरी*) ८४
होयसाल १४२
क्षहरात १०९

राजवंशों के संस्थापक

अमेनर तायस ५५९
अमेनेमहत प्रथम ५५०
अहमोस ५५२
उर नम्मू २२८
एलेटीज़ ६५८
कंडुगोन ८७
कपिलेन्द्र २५७
काओत्सू ४१२
कुतुबुद्दीन ऐबक ८८
कृष्ण राज (*उपेन्द्र*) ८४, १८६
कीवकल्ल ८४
खिज्र ख़ाँ ६०
खेत्ती द्वितीय ५५०
ग़यासुद्दीन तुग़लक ९०
ग़ाज़ी तुगलक (दे० *गयासुद्दीन*) ६०
चन्द्रगुप्त ८०, ११३
चन्द्रदेव ८२
चाउ कुआंग इन ४१४
चीन ४११
चुटू पल्लव १२१, २५
जफ़ेत ३८७
जलालुद्दीन खिलजी ८८, ९०
जू युयान जाँग (*हुंग वू*) ४१६, ५४
जोसेर ५४६

त अंग ४०९
तेती प्रथम ५४९
तेफ़ नेख़्त ५५७
दन्ति दुर्ग ८७
दुर्विनीत ८७
नन्नुक (नन्नुक) ८४
नागभट्ट प्रथम ८२, १३४
नीको ५५९
नेक्ता नेबो प्रथम ५५६
नेटरबाउ ५४६
पियाँखी ५५८
पेदूपास्त ५५७
बेट्टा प्रथम ८८
बहलोल लोदी ९०
भिल्लन यादव ८८
मयूर शर्मा ८८
माधव वर्मन ८६
मूलराज ८४
युसेर काफ़ ५४९
यू ४०६
रूरिक ६९९
रेमेसीज़ प्रथम ५५५
लियू पाँग ४१२
लीसु (*लीद्ज़ू*) चेंग ४१७, ६६
वसुदेव कण्व ७७, ७८
वासुदेव ८४
विन्दफ़र्न ७८
विंध्य शक्ति ८६
वू वाँग ४०६
श्री गुप्त ८०
सर्व सेन ८६
स्नेफ़ू ५४६
स्मेन्दीज़ ५५७
सामन्त सेन ८४
सिंह विष्णु ८६, १२६
सेने खेन्त्रे ५५१
सेहर तवी इन्तेफ प्रथम ५५०
हरिचन्द्रब्राम्हण ८०, ८२
हुंग वू (*दे० जू युयान जांग*) ४१६, ५४

राज्य

अक्सुम ५९२, ९६, ६१७, २०
अज़टेक ७४१, ५३
अट्रिका ६४५, ५७
अदाब २२५
अन्तावर्ती तिब्बत ४००
अनशन २४८
अरज़वा ३१८
अरमेनिया (*अर्मेनिया*) २४८, ६३, ३८५, ८७, ८८, ८६
अराकान ५०७, ५०६
अरामियन ३३७
अरियादने ६४४
अलवर १६४
अवन्ती १०९
अवार ७१५
अशकाब २२५
अहोम १५०, ५०६
आर्केडिया ६६४, ६५
इटरूरिया ६६७, ६८, ७०, ७१, ७८, ८५
इटालियन ६७२
इलूरिया ६७४
उत्तर २२६
उरार्तू २३२, ३३
एपीडेमनस ६५८
एलाम २२७, २८, ३०, ४२, ४७, ४८, ५५, ५६
ओस्टमार्क ७१५
कतसीना ६१३
कताबान ३५६, ३७७
कनेम ६१३, १५

कम्पेनिया ६७२
कम्बोज ५२६
कलिंग ७७, ८७, १५०, ८६
कश्मीर (काश्मीर) १५७, ३७६, ४००, २
काकेशस ६६६
कानो ६१३
कामरूप १५०, ५४
कारटेपे ३२२
कार्थेज २८७, ९७, ५६५, ६७, ६८, ६७०
कार्थेदश्त (दे० कार्थेज)
किम्बरी ७१२
किश (कुश) ६१७, २२७
कुर्ग १३२, १७७
कुश्शार ३०९
कुषाण ७८
केदा ५१५
केब्बी ६१५
केज़ूरियो ४८०
कोशल १८६, ३६७
कोर्सीरा ६५८
क्रोशिया ७१५
गंगावड़ी ८७
गायकवाड़ ९१
गोथिया ६८८, ९३
गोबिर ६१३, १५
गोरखा २०४
चम्पा ५२६
चानकिंग ५२६
चालुक्य ८६
चेन-ला ५२६
चोल ८७
जगाताई ४१६
जापान ४८८
जूडा ३२६, ३२७
जोबाह ३३७
टर्की ६४५
थातोन ५०७
थेसली ६३२, ४५, ७०७
थ्रेस ३४३, ७०७
दलमतिया ७१५
दिल्ली ९०
दौरा ६१३
नज्द ३६१, ६३, ६४, ६६, ६७
नमारह ३७९
नबात ९, ३६४, ६५, ७५
नानचाउ ५०७, १८
पम्फ़ेलिया ३५३, ८६
परसूमाश (दे० अनशन) २४८
पश्चिम राज्य २२९
पश्चिमी तिब्बत ३९९
पार्थिया ७८, १०१, २५२, ४१२
पारसा (दे० परसूमाश) २४८
पालमीरा ५६२
पूर्वी तिब्बत ३९९
पेल (डबलिन) ७०८
पेलोपानेसस ६४५
पेलोपोनेशिया ६६२
पैक्ची ४८०
पोनूँ (दे० कनेम) ६१३
फ़लाशा ६२०
फुलानी ५९६
बन्ताम ५३५
बवरिया ६७८
बाह्य तिब्बत ४००, ४०१
बोयेशिया ६४०, ४५, ६२, ६३
बोनूँ ६१५
बोहेमिया ६९७, ७२१
भोसला ९१
मगध ७७
मंगोल ३९०
मंचू ४६०
मजापाहित ५३५

मणिपुर १६८, ५०७, ९
महाराष्ट्र ५८, ९०, ९२
माइसीनिया २८७, ३०२, ६२९, ३१, ३२, ४१, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५२
मालवा ८२, ८४, १३८, ८९
मितन्नी (मित्तानी) २२७, ३०, ३१८, ५५३
मिनायन (माईन) ३७७
मीडिया २३३, ४७, ४८, ५०, ५७, ६६, ३२७, ४९, ८५
मीनियन (माईयन) ३५९
मुख्य तिब्बत ३९९
मेवाड़ ८०, ९०
मेसीडोनिया ३४३, ६३६, ६२, ६४, ७०७
मैसूर ८८, ९२
मोआब ९७
मौखरी १२७
रोमन २९९, ३३८, ५९, ५९५, ९७, ६३१, ४४
वत्स गुल्म ८६
वलभी ८०, १२७, ४०
वातापी ८६
वेई ४१२
वेंगी ८७
वू ४१२
शान ५०७
शू ४१२
सबा ३७७
समारिया २३२, ३०२, २६, ३२, ३३
सरहिन्द ९०
स्लाव ७१५
स्लैवोनिया ७१५
सानो ५१५
सिक्किम २१२, १३, १४, ४००, ४०२, ४०७
सिन्धिया ९१
सिल्ला ४८०
सिलीशिया ७१५
सैबियन (दे० सबा) ३५८
सोफ़ीन (लेसर अरमेनिया) ३८५, ८६
हवासत ६१७
हित्ती ३१०, ३४३
हिमारी ३५९, ७७
हिन्दू ५१५, २६ ३२
हीरा ३६१
हैदरमौत ३०९, ७७
होल्कर ९१

लिपियाँ

अक्कादी (अक्कादियन) २३९, ७१, ७२, ७३ ७९, ३०२, २०, २१
अज़टेक-चित्र ७४२, ४३,४४
अनशियल ६८८
अम्ब्रियन ६७४, ७५
अमरीको ७४२
अरबी ९, १६, २६१, ३७५, ७६, ७९, ८०
अरबी-सिन्धी १७२, ७३
अरमायक ९६, ९७, ९९, १०१, २३८, ८२, ३३०, ३५, ३७, ३८, ३९, ४१, ५१, ६४, ६८, ४७३, ७६, ७१८
अरसाकिड पहलवी २८२
अल्बेनियन ६९८
अवेस्त २८२, ८४, ८५, ६९८
असीरियन (असीरियाई) २३९, ४४, ४५, ६४, ३१९
असीरियन कीलाकार ९६, २४३
अहरू ४९२
अहोम १६७, ६८
अक्षरात्मक ९, १६, ४३, ४५८, ९३, ६४७
आधुनिक ५२७
आधुनिक गोलाकार (रस-लोह) ५०९, १२, १८, २३, २४
आधुनिक थाई ५१८, २२, २३
आर्मेनियन ३१९

आशुलिपि १९६, २००, २०१, ७६४, ६५
इटेलियन ६०४
ईनीशियल्स ४४१, ४३
उइगुरी ४०२, ६२, ६३, ६५
अु-चेन ४०१, २, ४, ७
उड़िया १६, १५४, ७७, ८२, ८४
उत्तरी ब्राह्मी १०७, १४, १५, १६, १७
उत्तरी सेमिटिक ९, १४, ९७, २६३, ९७, ३२२, ३७, ५७३
उर्दू १७१, ७२, ५७२
उत्कीर्ण पवित्र लिपि ५६५
अु-मेद ४०१, २, ३, ७
एक-वर्णिक ५७२
एट्रस्कन ६७१, ७२, ७४, ७५, ८५
एर्कत-अजिर ३८७
एलामाइट २६२, ६९, ७१
ऐन्द्रजालिक ४५७, ५८
ऐस्ट्रेंजलो ३४०, ४२
ओगम ९, ७११, १३
ओनमुन ४८४, ८५, ८६
ओरहन ४७३, ७६, ७७, ७१८
ओस्कन ६७२, ७४, ७६
कताकाना ४९३, ९४, ९५, ९६, ५००
कदम्ब ५०७
कनआनी ३३२
कन्नड़-पांचवीं श० १४२, ४३, ४४, ४५
,, छठी श० १४०, ४१, ४२, ४३, ४४
,, सातवीं श० १४२, ४३, ४४
,, आठवीं श० १४२, ४३, ४४
,, नवीं श० १४२, ४३, ४४
,, ग्यारहवीं श० १४२, ४३. ४४
,, तेरहवीं श० १४२, ४३, ४४
,, पन्द्रहवीं श० १४२, ४३, ४४
,, आधुनिक १४३, ४४, ८४
क्योक्त्स ५०९
कवि ५३५, ३६
क्वेमोल २०२
क्रम-द्वारा निर्मित चित्र ४२७, ३२
कॉप्टिक ५६६, ७६, ८७, ९२, ६९८
काय शू (काइ शू) ४२९, ९३, ५००, ५०२
कारापाल ४२७
कालमुक ४६५, ६८
किताव मुरब्बा ३३०
क्रो ७५५, ५७
कुटिल १२७, २८
कुर्शुनी (मलाबारी) ३४३, ४४
कुटाक्षर २०८
कूफ़ी ३८४
कूंमोल २०८
कैरियन (क़ारी) ३५३, ५४
कैरोलीन ६८८
कोकूतेई-रोमा जी पद्धति ४६६
खगोल शास्त्र ७६७
खरोष्ठी ९६, ९९, १०२, ६, २८२
खाम्ती १६८, ६९
खुतसुरी ३९०
खेमिर ५२७
ग्रन्थ—सातवीं श० १३२, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८
,, आठवीं श० १३७, ३८
,, नवीं श० १३७, ३८
,, दसवीं श० १३७, ३८
,, ग्यारहवीं श० १३७, ३८
,, बारहवीं श० १३७, ३८
,, तेरहवीं श० १३४, १३६, ३७, ३८
,, पन्द्रहवीं श० १३७, ३८
ग्रहण किये चित्र ४३८
गालिक ४६२, ६४
गिरनार (शिलालेख) ११२, १३
ग्राज़दांसकाया ७००
ग्रीक ९. ३१५. ९०. ५६८. ६९. ७०. ७१. ६४२. ४३. ६४. ७१. ८७. ८८. ९४. ७१८

ग्रीक—साहित्यिक-काल ६६४, ६५
गुजराती १६, १६०, १७७, ८३, ९४
गुप्त ११७, २७, ७७, २०६, ४०१
गुरमुखी १७७ ७६
गू-वन ४३२
ग्लेगोलिथिक ६९७, ७०१, १८
गोलमोल २०८
चकमा ५०९, १४
चतुष्कोण पाली ५०९, १०, १८
चाउवन ४२७
चित्र ५६५, ६६, ६७, ६९, ७०, ७४८, ६१, ६२
चित्रात्मक १०, ८६, १३८, ५००, ७१, ७२, ७४, १०७, ४८, ५१, ७५०, ५३, ६१
चिरोकी ७५४, ५५
चिन्हात्मक २३५, ३८
चीतान ४५४, ५७, ५८
चीनी ८, ४२३, २७, २९, ३०, ३३, ५३, ५८, ५००, ५०२, ४३३, ४१, ४३, ४४, ४७, ४८, ४९, ५०, ८०, ८६
चेर-पाण्ड्य १३२
चोल १३२
चौकोर हेब्रू ३३०
छोटी ४५४, ५८
जबाली टूरा २२१, २२
जर शर (सांकेतिक चित्र) ४३२
जाटकी (लाण्डा) १७७
जापानी ५००
जार्जियन ६९८
जावा की दूसरी ५३५, ३७
जिया गू बन ४२७
जिया जीह (ग्रहण किये चित्र) ४३८, ३९
जुआन जू ४३२
जेण्ड २६४
जेण्ड—अवेस्त २८४, ८५
जेबेद ३४०, ७९, ४२
जैकोबाइट (सातवीं श०) ३४०, ४२
जैकोबाइट (ग्यारहवीं श०) ३४०, ४२
टाइरेनियन ६७२
टाकरी १५७, ७२, ७६
डा जुआन ४२७
डिमाटिक ५६७, ९, ७१, ७३, ८६, ९१, ९२
तगाला ५३२, ३३
तमिल १२७, २९, ३०, ३१, ३२, ३४, ८४
" (सातवीं श०) १२९, ३१
" (आठवीं श०) १२९, ६०, ३१
" (दसवीं श०) १२९, ६१
" (ग्यारहवीं श०) १२९, ३१
" (तेरहवीं श०) १२९, ३१
" (चौदहवीं श०) १३१, ३२
" (पन्द्रहवीं श०) १३०, ३२
" (आधुनिक) १३१, ३२
तिरहुतिया १६०, ६३
तुर्देतेनियन ६०२
तुलु १८१
तेलुगु—कन्नड़ १४०, ६०, २२१
तेलुगु १६, ७७, ८४
" (सातवीं श०) १४५, ४९
" (दसवीं श०) १४५, ४६, ४९
" (ग्यारहवीं श०) १४५, ४७, ४९
" (तेरहवीं श०) १४५, ४८, ४९
" (चौदहवीं श०) १४५, ४९
" (पन्द्रहवीं श०) १४९, ५०
" (आधुनिक) १४९, ५०
थामुडिक ३६४, ६६, ६९
थौकन्हे २०८
दक्षिणी ब्राह्मी ११८, १९, २५
दक्षिणी सेमिटिक ९६, ३६९, ६१७
द्विभाषिक ५९७, ६३२
द्विवर्णिक ४९२, ९३
देवनागरी ११७, २९, ३४, ४०, ४५, ५०, ५४, ५७, ६०, ६८, ७७, ८६, ८७, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, २००, ३६९, ७९, ८९, ४०१, ४०,

देवनागरी ब्रेल १९६, ९९
देदेनाइट (लिथिनाइट, लिहियानिक) ३६९, ९६
देवेही, हकूरा २२१, २२
दैवी ४९२, ९३
ध्वन्यात्मक १४, ५२५, २७, ४१, ७०, ७१, ७२
ध्वन्यात्मक चिन्ह ४४५
ध्वन्यात्मक पद्धति ४४४, ४६, ४७, ४८, ४९, ९३
ध्वनि—सूचिक चित्र ४३२, ३७
नग्दीनागरी १८६, ८७
नब्ती ९, ३६३, ६४, ६५, ६८, ७९, ८१, ८२
नव एलामाइट २७९
नव बेबीलोनी २७९
नवीन ३८७
नस्तालिख़ २६१
नस्ख (नस्ख़ी) ३७९, ८१, ८२
नाच्छ ७१८
निकोल्सबर्ग ७१८, २०
निर्धारिक ५७२, ७३, ७४, ७५
नुमीदियन ५९५, ९७, ९७, ९८, ९९, ६०२
नेवारी २०८
नेस्टोरियन ३४२, ४३, ६१
नोत्र—अजिर ३८७
पंजाबी १६, १८३
पतीमोखा ५१८, २०
पश्चिमी १३८, ३९
पश्चिमी सीरियाक (दे० जकोबाइट) ३४०
पस्सेपा ४०२, ५
पहलवी १०१, २६४, ६५, ६६, ८२
प्यूनिक २९७, ९९, ३००, ५९७
पाकोसिपा (पासिपा; दे० पस्सेपा) ४०२
पाचूमोल २०८
पालमीरा ३३८, ३९, ५६
पाली ५०९
प्राचीन थाई ५१८, २१
प्राचीन पर्शियन (फ़ारसी) २६६, ६८, ७९
प्राचीन बेबीलोनियन २४३
प्राचीन लैटिन ६८७, ८९
प्राचीन सीरिलिक ६९८, ७०२
प्राचीन हंगेरी ७१८
पिक्टो ७६४, ६८
पुमसो ४८३, ८६
पेगुअन ५०९, १३
पेलासगियन ६७१
प्रोटो—टाइरेनियन ६७१
फ़ाइनल्स ४४१, ४३, ४४
फ़ारसी १६, २७३
फ़िनीशियन—(दे० उत्तरी सेमिटिक) ९६, ३३५, ३७, ६४०, ४१, ८८
फ़िनीशियन—सिप्रियाटिक ६३२
फ़िनिशियन—हित्ती ३२१, २२
फ़िनीशियन—हेब्रू ६९८
फ्रेंच ४२३
फ़ैलिस्कन ६७८, ७९
बंगला १६, १५०, ५१, ७७, ८४
,, (सातवीं श०) १५३, ५४
,, (नवीं श०) १५३, ५४
,, (दसवीं श०) १५३, ५४
,, (ग्यारहवीं श०) १५३, ५४
,, (बारहवीं श०) १५१, ५३, ५४
,, (पन्द्रहवीं श०) १५३, ५४
,, (आधुनिक) १५३, ५४
बड़ी मुद्रा ४२७
बर्बर ५९५, ९७, ६००, ६०१
बा गुआ ४०९, २५
बाफ़न शू ४२९
बामुन ६०२, ६०३
बाल्टी (भोटिया) ४०२, ६
ब्राह्मी ९, ४०, ७७, ९६, ९७, ९८, १०७, २७, ४५, ५७, ८९, २०६, ७८, ५१८
बुरियाती ४६५, ४७०
बुल्गारियन ग्लेगोलिथिक ६९८
बुल्गारिक सीरिलिक ६९८, ७०३

बेबीलोनियन २३९, ६२, ७१
बेबीलोनी (नव एवं प्राचीन) २७८
ब्रेल (इंगलिश) ७६४, ६६
बोल्ज़ानो ६७८, ८०
बोरोमात ५१८, १९
बोलर अजिर ३८७, ८८
भारती १९४
भावमूलक २३८
भावात्मक १४, ९६, ५००, ६४७, ७५६
भावात्मक—चित्र ३११
भुंजिमोल २०६, २११
भ्रूण १०
भोजपुरी १६०, ६४
मंगोल ४६२
मग़रिबी ३७६, ८०
मण्डायक ३६८, ७०, ४६२
मनीकी ४७६, ७८
मलयालम १३२, ८०, ८४
मलाबारी ३४३, ४४
म्याओत्से ४५४, ५६
मागधी (मगही) १६०, ६५
माग्रे ६७८, ८१
मिरोइटिक ५८८, ९१, ९२
मिरोइटिक—डिमाटिक ५८९, ९२
मिस्रा २७९; ३१३
मुड़िया १७२
मूल अक्षर ५२७, २८
मेई-थेई १६८, ७०
मेण्डे ६१३
मस्रोपी ६८७
महद्रूली ३९०, ९२
मैनियस कटार ६८७, ९०
मैथिली १६०,६०, २०६
मोआब के लेख ९६,९७
मोनो सिलेबिक ४४३
मोसो ४५४, ५७
मौड़ी १६०, ६१
यज़ोदी ३५६, ५७
यनसिब्दी ६१६, १७
यनिसी ४७३, ७५
युगारिटिक ३०४, ६
युनानी ९६, ३४९, ५३
यू चेन ४५४, ५८
रंजना २०६, १०
रेखा चित्र २३७
रेखाचित्रात्मक २३५, ३६, ५६
रेखाक्षरात्मक १६
रून (रूनी) ६९४, ९८, ७२१
रोंग-लेप्चा २१४, १५
रोमन ९, १६, १८७, ३९०, ४२४, ३१, ६९, ५३२, ५७४, ६८७, ७१२, ७५५
रोवंस-इरंस (दे० प्राचीन हंगेरी) ७१८
लाइनियर-ए ६४७, ४८, ५५
लाइनियर-ए, बी ६३१
लाइनियर-बी ६३१, ४७, ४८
लातीनी ६७२, ८७, ८८, ५९७, ६९३, ९४
लाण्डा १७८
लितुमोल २०८
लिथिनाइट (दे० देदेनाइट) ३६९, ७१
लिहियानिक (दे० लिथिनाइट) ३६९, ७१
ली शू (दे० कारापाल) ४२७, ३०
लीकियन ३४७, ४८, ४९
लिडियाकी ३५१, ५२
लीबियन ६०२
लुगानो (लेपोन्टाइन) ६८५
लेप्चा (दे० रोंग) २१४, १५
लैटिन (दे० लातीनी)
लैटिन-एट्रस्कन ६७१
लैटिन-फ़ैलिस्कन ६७१
लोगो ग्राफ़िक १६
लोलो ४५०, ५४, ५५
वई ६०७, ८, ९, १०, ११, १२, १३

वनियाकर १७२, ७४
वट्टेलुत्तु (चेर-पाड्य) १३२, ३३
वर्णात्मक (प्राचीन पर्शियन) २६९
वर्णात्मक १६, ४३, ९६, ४४६, ८६, ५६८, ६९, ७०, ७३, ६०२, ७५३
वस्तु चित्र ४३२, ३४
व्यंजनात्मक ४४६
वेनिती ६८४, ८५
वेस्ट-गोथिक ६६४
शाब्दिक चित्र ४४६
शारदा १५७, ७२
शारदा (दसवीं श०) १५७, ५८
,, (ग्यारहवीं) १५७, ५८
,, (बारहवीं श०) १५७, ५९
,, (तेरहवीं श०) १५७, ५९
,, (चोदहवीं श०) १५७, ५९
,, (सोलहवीं श०) १५७, ५९
शिंग शू ४२९
शियाओ जुआन ४२७
शिये शंग (ध्वनि सूचक चित्र) ४३२
संकेतात्मक १४, ४२५, ४४, ५६६, ७१, ७२, ७४ ६१७, ४७, ४८
संकेतात्मक चित्र ६४८
संयुक्त-सांकेतिक चित्र ४३२, ३६
संयुक्तात्मक ४४६
सफ़ातैनी ३६८, ६८, ७०
सफ़ायटिक ३६९
सबा की ३७७, ६२०
संशोधित ५२७, २९
ससानिड पहलवी २८४, ८५
सांकेतिक ७१२
सांकेतिक चित्र ४३२, ३५
त्साओ शू (सोशो) ४२९, ८६
सिडेटिक ३५५
सिन्धी (आधुनिक) १७२
सिन्धी (प्राचीन) १७२
सिन्धु-घाटी ३८, ४४, ५०, ६२, ७२, ७३, ९५, ७६२,
सिनाइ की ३७२, ७३, ७४, ७५
सिनाइ की प्राचीन ३७३, ७४
सिनाइ की अरबी ३७५, ७६
सिनायटिक ९
सिप्रियाटिक ६३२, ३४, ३५, ४७
सिप्रो-मीनियन ६३२
सिंहली २१९, २०
सीरिलिक ४६९, ९९, ६९८, ९९
सुमेर के रेखाचित्र ९६
सुमेरियन कीलाकार २४३
सूलेख पाली ५०९, ११
सूत्रात्मक १०, १३
सूसियन (एलामाइट) २६८, ७१, ७९
सेमिटिक ४७२, ४७६
सेमिटिक (प्राचीन) ८६, ३६६
सेल-औजर ३८७
सोग्दी ४६२, ६५, ७४, ७६
सोन्द्रियो ६७८, ८२
सोमाली ६०४, ५, ६
हित्ती ९, २३०, ३०९, १०, ११, १५, १८, १९, २०, २१, २२, ७५०
हिन्दी-सिन्धी १७२, ७५
हिन्दुकी (लाण्डा) १७७
हिमोल २०८
हीरागाना ४९३, ९६, ९७, ९८, ९९, ५००
हीरोग्लिफ़्स ९
हुतसुरी (खुतसुरी) ३९०
हेब्रू ८, ३२९, ३०, ३१, ३४०
हेब्रू (आधुनिक) ३२९
हेब्रू प्राचीन ३२८, ३०
हेरोग्लिफ़्स (हेरोग्लिफ़िक्स; ग्रीक-हैरोग्लिफ़िकन) ५३५, ३६, ३८, ३९, ७०, ७१, ७४, ७५, ७६, ७८, ७९, ८१, ८३, ८४, ८५, ९१, ९३, ७५०

हेमिरायट ९६
हेरेटिक ५७३, ७५, ७६, ७८, ८३, ८४, ८५, ९२, ९३
त्रिपद पाटिया ६४८, ५३, ५४
त्रैध्वन्यात्मक ४४३
त्रैवर्णिक ५७२, ७५

लोग एवं निवासी

अकाइयन ६२९, ४५, ६०
अंग्रेज़ ४१९, ९१, ५६६, ६०२, ४७
अंग्रेज़ों ९४, ५०९, ६३
अन्नामियों ५२७
अफगान ८८
अमेरिकन ६४७
अमेरिका के ३२१, ६०७
अरब २१६, ५७, ५६९
अरबों २६१, ४१२, ५९१
अरामियन ३३७
अरामियों ३३५
अरामी ३२६
अलमुराक
अलामन (अलामनों) ७२१
अलमुराक ७०८
आइबेरिनों ७०७
आर्केडियन्स ६६४
आर्य २६, २७, २८
आयोलियन्स ६३६
आस्ट्रोगोथों ७२१
इटली के ६४८
इब्री ३२५
ईरानी १०१
ईसाइयों ३६८, ५३२, ८१, ६६०
उरार्तो (अरमेनिया के) ३८५
ऐंग्लोसेक्सनों ७२१
एट्रस्कनों ६७८, ८५, ५७
कनआनी २८७
कार्टलियन ३८७
काप्ट्स ५९१
काफ़िरों ६१५
कालमुक ४६५
कुषाणों १०९
केल्ट्स (सेल्ट्स) ६७०, ७०७, ८
केल्टों ७०७, ८
केल्टो-बेरियन ७०७
केल्टो-सीथी ७०७
केली ७०७
ख़ाल्दी ३८५
खेमिर (खेमर) ५१८
गाल ७१२
ग्रीक ६४६, ४७
गुर्जर ८०
गोरखों ४००
गोथ्स (गोथों) ६५८, ६०, ७९, ७२१
चालुक्य ८६, ८७
चलुक्यों ८८
चीनियों ४००, १२, १६, २०
चीनी ५२६
चेरुसी ७२१
जर्मन २६२, ४७३, ७६, ५७१, ६०२
जापानियों ४८७, ५३५
ट्यूटन ७२१
टियूटन्स ६६४
डच (डच्छ) २६२, ४१९, ९१, ५१५, ३२, ३५, ६०२, ४, ७६१
डच्छों ५१५
ड्रूड्स ७०८

डोंगरा ४००
डोगरों १७२
डोरियन ६५८
डोरियन्स ६३६
तमिल २१८
तातारी ख़ान ६६६
तिब्बत के ३९७, ४०१
तुर्क खुरासानी २१२
तुर्क ९०, ३८७
तुर्कों ८८, ३८७, ६३१, ७१५
तैलंग ५०७ ९
थाई ५१८
थ्रेशियन ६६७
द्रविड़ २७
नार्डिक ७०७
नार्स ७०८
नार्सेज़ ६७४
नार्सों ७०८
पंजाबी १७७
पल्ह्वव ७८
पश्चिमी गोथों ६६३
पारसी २५२
पिक्ट ७०७
पुर्तगाली २१६, ४००, १७, ९१, ५१५, २७, ३५, ६०२, ४, १३
पुर्तगालियों ४१७ ५२७, ६०४
पेलासगियन ६३६, ६७२
पैलेस्टेनियन ३१२
प्रतानी ७०७
फ़न्नी ५८
फ़िनीशियन ६२९
फ़िनीशिया के २९
फ़िनीशियनों ६८५
फ्रीजियन ७१२
फ़्रेंच ६०२
फ़्रैंक ७२१
फ़्रैंकों ७२१
बर्गण्डियों ७२१
ब्राह्मणों ९६
बुरियात ४६९
बुरियातों ४६९
भारतीय ३९७, ९९
भारतीयों ५२६, ३२
मंगोल ३६७, ४७३
मंगोलों २५२, ३६१, ८५, ४००, ५८ ६९, ८०, ८९, ६९९, ७१५, २१
मंचुओं ४१७, ८१
मण्डाइन ३६८
मरहठों ६०
मनीकियों ४७६
मनीकी ४७६
माइसीनिया के ६२६
मिंग्रेली ३८७
मीडीज़ ३३७
मुसलमान ३७३, ८३, ४१६, ५२७, ३२, ३५, ९१
मुसलमानों ४१२, ५३२, ३५, ६२, ६१५, ३१, ४४, ४६, ७२, ७२१
मैग्यार ६९७, ७१५
यज़ीदी ३५७
यहूदियों ३५३, ५६२, ६३१
यहूदी २३३, ३३०, ३४०, ७३
यूरोपियन ६१३
योरोप के ५३५
रूसी ४९१
रेड-इण्डियनों ७५३
रोमन ५६२, ७०८
रोमनों ५६२
लाओशियनों ५१८
वण्डाल ७२१

वण्डालों ७२१
विल्लोनोवन्स ६६७
विसीगोथों ७२१
वेड्डा २१६
वेण्डलों ५९५
वेनिस के ६५८
वेल्श ७०८
सबाई ३७७
सबीनी ६६७
समीनियों ६७२
साबी ३७७
सिन्धु-घाटी के २९, ५३
सीथियन ३३७
सीरियक ५६५
सुन्नियों ५६३
सुमेर के ८८
सेल्जुक (तुर्कों) ३८५, ८७
सैबियन ३६८,
स्काटिश ७०८
स्लावों ६९७, ९८
हंगेरियन ७६२
हिक्सास ३७३, ५५१, ५२, ५५
हिन्दुओं ५३५
हिन्दू ५३२
हित्तियों ५५४
हूणों ८०, ८२, ६९३, ७२१
हेब्रू ३७५, २५

विद्वान

अगस्टस जॉन्सन ३११
अग्रवाल, ऋषि लाल १९६
अग्रवाल, धर्मपाल २०, २१
अग्वाँ दोर्जीव (रूसी भाषा में;
दे० नाग्द बां दोर्जे ने) ४६९
अचोकी ४९२
अथानासियस किर्चर ५६६
अथेनियस २६१
अन्द्रियास २८२
अफुगस-पा ४०२
अबिट ६९८
अबूमूसा इब्ने क़ैस ३८३
अब्बे बार्थलेमी ५६६
अबेल रेमुसत ४६२
अमारदियन २६७
अमुन्द सेन ४०१
अरंज़ ७११
अलफ्रेड मेत्रो ७६१
अलेक्सी चिरीकोव ७५५
आइज़क टेलर ९६
आइज़क पिटमैन १९६
आर्कीबाल्ड हेनरी सेसी ९, ३१३
आटो पुख्सटाइन ३२१
आर्थर ईवान्स ९, ६४५
आल्टो, पी० २८
आस्टिन लेयर्ड २३२, ३९, ४६२
इदरियास ३५३
इन्द्रजी, भगवान लाल १२१
इस्रुअल क़ैस ३७९
ईट्स, जी० १०२
ईवान्स, आर्थर (देखिए आर्थर ईवान्स)
ईवान्स, जे० ७५५
ईस्लर ६४०
एकियास ३५१
एङ्गिलबर्ट कैम्फ़र २६२
एडवर्ड क्लॉड ९६
एडवर्ड टॉमस ९६
एडवर्ड मीयर ६४६
एडवर्ड हिन्क्स २३९
एडविर्ड्स, आई० ई० एस० ४०
एडविन नॉरिस २६८, ७१

एडोल्फ अर्मन ५७१
एण्टिग ३६९
एन्द्रियास, एफ़० सी० ४७३
एयुक ३१२
एरिक, जे० ७४८
एरिक्सन ७५३
एरियन २६५
एलाह ३१६
एलियस कोपीविच ७००
एल्थीम ७१८
एल्वर्ल एलबर ६१३
ऐन्तोने यान सेन्त मार्तिन २६६
ऐन्द्रे एक्कार्ड ७६४
ऐलेक्ज़ेण्डर फ़ैल्कनब्रिज ६१३
ऐल्डस ५६५
ऐल्फ्रेड ९६
ओकर ब्लाड, जे० डी० ५६८, ६९
ओझा, गौ० ही० १०२, १०७, १९४
ओपर्ट २७३
ओरोग्नी, पी० एल० डी० ५६७
ओलोन, डी ४५०, ५४
ओल्शा ६७१
ओल शान्सेन २८२
औफ़रेख्त, यस० टी० ६७४
ओलाव गेरहार्ड टाइखज़ेन २६३, ६५
कर्चीनर, जे० ६४१
कनिंघम, कर्नल ए० ९६, ९७, ९९
करेल यानसन ७६४
कलाड, एफ० ए० शेफ़र ३०२
कलाडियस जेम्सरिच्छ २६६
क्लाप्रोथ, जे० ४६२, ५७१
कलिन्क २६०
कर्न, ओ० ६४१
कर्बी ग्रीन ३१२
कस्ट ९६
क्नुद्ज़ोन, जे० ए० ३१९
काउण्ट कैलस २६२
कान्तेली ३७५
कार्नेलेयस वान ब्रूइन २६२
कावले, ए० ई० ६४७
कार्ल हियूमान ३२१
कासीन, एन० ५६६
कान्सटैन्टाइन ६९७, ९८
किर्चोफ़, जे० ड० एच० ६४१, ५८, ६०, ६२, ६४, ७१, ७४
किन्नाइर, जे० एम० २६८
क्लिगेनहेबेन ६०७
किसिमी कमाला ६१३
कीता साते ४९२
कीबी—नो मकीबी ४९३
कीलहार्न १८९
कुइन्टस कर्टियस २६१
कुक, एस० ए० ३३७
कुंग फूत्से ४११
कुरुनियातिस ६४७
क्रुष्टो चन्द्र ५०९
क्रुष्णा राव, एम०. वी०. एन. २८, ५८, ६०, ६९
केदार नाथ शास्त्री २७
कैकस, एपियस क्लाडियस ६८७
कैथ्रीन रौटलेज (श्रीमती) ७६१
कैरातिल्ली, जी०, पी० ६४७, ४८
कोच, जे०, जी० ५६७
कोर्ट, कैप्टेन ९९
कोण्डर ३२०
कोबर, एलिस ई० ६४७, ४८
कोबो दैशी ४९६
कोयल्लो, एफ़०, डब्ल्यु० ६०७
कोसकेन्निमी २८
क्रौज़ ७१२
गाइट्लर ६९८
गाइल्स ४०९, २९
गार्डथौसर २९०

गार्डिनर, इ० ए० ६४१
गार्डिनर, ए० एच० २९०, ९३, ३७३, ५७३, ७४
गायरट्रिंगन ६४१
गारस्टांग, जॉन ३२०
ग्राहमबेली १७७
ग्रिफ़िथ ५९१
ग्रिम, ई० २९०
ग्रिम, जे० ३६८, ६९८
ग्रियर्सन, जी० १६८
ग्रीनबर्गर ७१२
गुइग्नीस, डी० ५६७
गुण्डर्ट १३२
गुस्टाफ़सन ४०२
गूटर्सलाब ६४०
ग्रूबीसिख़ ६९८
ग्रूबे, डब्ल्यु० ४५८
गेबेलिन, सी० डी० ५६७
गेल्ब, आई० जे० ३१३, २२
ग्रे, जी० एफ़० ३७५
ग्रेपो, एच० ५७१
ग्लेई ३२०
ग्लेन विल्ले ५४६
ग्रेविले चेस्टर ६४५
गैड, सी० जे० ४०
गैबन, ए० वान ४६९, ७६
गैस्टर ६९८
गोरीयून ४४३
गोल्डमान ६७१
ग्रोटेफ़ेण्ड, जार्ज फ्रेड्रिक ९, २६५, ६६, ६८
गौथियाट (गोथियत) ४६२, ७३
चाड्को ६६८
चार्ल्स टैक्सियर ३१२
चार्ल्स विलकिन्सिन ६७, ६६
चैडविक, जान ६४७
चैबोट २९९
चेम्बर लेन ५६६
चोंग ख-पा ३९९
जबलोण्सकी, पी० ई० ५६७
जयेश्के ४०१
जाई लून ४३८
जार्ज ग्रोट ६४५
जार्जेज़ चेनेत ३०२
जॉन न्यूबेरी २८, ६४, ६५
जॉन मार्शल २७
जॉन मैलकाम २६८
जॉन विलिस ७६४
जार्डन, ए० ५६७
जार्डन, एफ़० सी० ६४९
जार्डन, सी० एच० १०४, ६४८
जायसवाल, के० पी० २०४
ज़िमर ७१२
ज़ुबेन विल्ले, अर्बोइस दि ७१२
ज़ुलिस, एम० १३८
जेम्स टॉड १०६
जेम्स प्रिंसेप ९, १०९, ११८
जेम्स होरे ११८
जेसप ३११
जेसेनियस ३६९, ७७
जैकुयेट, ई० वा० एस० २६७
ज़ोयगा, जी० ५६७
ज़ोवे दि ज़ंग्रोनिज़ ६०२
टाइकसेन, टी० सी० ५६७
टान चुंग ४२९
टॉर्प ६७१
टॉमस २८२
टामस, इ० जे० ६४
टॉमस बर्थेल ७६२
टामस यंग ५६९
टामस वेड ४४३, ४६
टामस हाइड २६३
टाम्सन, एच० ५७१
टाम्सन, आर० एस० ३२०

टेलर, आइज़क २२१, ४६२, ६७१, ९८
टैलबाट, विलियम हेनरी फ़ाक्स २७३
टैसिटस ७१८
डब्लोफ़र, एरस्ट २८
डाइशी ४२७
डाउसन, जे० १०२
डार्पफ़ेल्ड ६४६
डायडोरस (सोकुलस) २६१, ५४५
डायोनिसियस ६६७
डॉसन ९६
डिकी ९६
डिके २९०
डिरिंजर, डे० ५७४
डुनान्ड २९३, ९५
डुपोण्ट ३२२
डेविड, एस० ६४९
डेविड्स, राइस ९६
डेविस, ई० जे० ३१२
ड्रेक ३१२
डैनिएल्सन ६७०
ता–सीन–को १३२
तेरियन डी लकाउपेरी ४५४
थाउसेन, गार्ड ६७१
थाम्पसन, एस० ७४८
थामसेन, वी० ६६७, ७१८
थियोफ़िलास ६२५
थ्यकीडाइडीज़ ५४६
थेलेन्दी, जे० ७१८
थोर, हेयरदहल ७६१, ६२
दयाराम साहनी ९६
दाइमल २३५
दामन्त १६८
दियुलाफ़ी, एम० २४३
दि सेसी २६५, ६६, ८२
दुगास्ट ६०२
दुपेरों, अनकुयेतिल २६५, ६६
देलाफ़ोस्से ६०७
देवेरिया ४५८
द्रौनिन २८२
धर्मपाल ३९९
धोरमे, एदुअर्द ३०३, ३०४
नथीगल ५९८
नबिया एबॉट ९
नागी, जेन्ट मिकलास ७१८
नाग्द बाँ दोर्जे ने ४६९
नाचीगिल ६०२
नारिस, एडविन (देखिए एडविन नारिस) ९९, १०१ २७३, ७९
नार्डन, एफ़० एल० ५६७
निकोलो निकोली ५६५
नीब्हुर, कर्सटन २६३, ६४, ६५, ३७५, ५६७
नील कण्ठ शास्त्री २७
नेक (स्कीमो) ७५६
नेमेथ ७१८
नोल्डेकी ३३८, ३४०
परपोला, एस्को ५०, ५२, ६९, ७४
परपोला, सीमो ५०, ५२, ६९, ७४
पर्गस्टाल, बैरन वान हैमर ५६९
पर्नियर, लुइगी ६४८
परीबेनी ३५३
पर्णवितान, एस० २८, ६९
पाइज़र ३१८
पाणिनि ५, ८०, ९५
पाँट ९६
पालमर ३१२
पाल एमाइल बोत्ता २३९
पालिन, काउण्ट एन० जी० दि ५६८
पाल आंगे लुई दि फार्दने २६८,
पावलो ६७०
पासकल कोस्ते २६७
प्राण नाथ २८, ४१, ४५

पिटमैन, आइज़क (देखिए आइज़क पिटमैन) १९६, ७६४
प्रिन्सेप, जेम्स (दे० जेम्स प्रिन्सेप) २२१
प्रिन्सेप सेनार्ट ९६
पीज़र २९०
पीरियस वलेरियेनस ५६६
पूरनचन्द नाहर १५४
पूरन चन्द्र मुकर्जी १०७
प्रधोक ३७५
पेण्डिलबरी ६४९
पेल्यफ़ ४६२
पैलोटिनो ६७१
पैवो, ए जे० एम० ५१८
पोकाक, रिचर्ड ३७५
पोकोकी, आर० ५६७
पोन्टियस ६९८
फ़क पा ग्याल--चेन ३९९
फ़तेह सिंह ५०, ५४, ५५, ५६, ६९, ७१
फ़र्ग्युसन ३३७
फ़्योरेली, जो० ६७४
फ़ाइयान ८०
फ़ाग--पा (अफ़गस·पा) ४०२
फ़ाँगुई ली ४२१
फ़ादर एच० हेरास २८, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९
फ़्राइड ३५५
फ़्लिण्डर्स पेट्री, डब्ल्यु० एम० ९, २८,२९, ३१, २९०, ३७३, ७५
फ़िगूला, एच० एच० ३२०
फ़िशर ३३२
फ़ीज़ल ६७१
फ़ुरुमार्क ६४७
फ़ुरुमेन्शियस ६२०
फ़ेलिक्स वान लूशर ३२१, ७५
फ़्रेड्रिक डी लिश २९०
फ़्रेड्रिख ६२०
फ़्रेड्रिख़ मूलर ९६
फ़्रेरेह एन० ५६७
फ़ैन चिय ४४४
फ़ोकनर, आर० ई० ४०
फ़ोन्ताना, दोमिनिको ६७४
फ़ोर्बेस, एफ़० ई० ६०७
फ़ोरर ३२१, ३२२
फ़ोरियन, जीन बैप्टस्ट ५६९, ७०
फ़ौलमान ५२७
बक, एस० दि ५७१
बकलर ३५१
बरनेल ९६
बर्कहार्ड, योहान लुडविग ३११, ७५
बर्ग्रेस १०९
बर्नोफ़, युगेन ६७, ६९, ८२, २६६
बरुआ, डी० एम० २८, ६९
बबिंगटन, बी० जी० ९९
बाईरोम ७६४
बांके बिहारी चक्रवर्ती २८, ५८, ६३
बॉट लिस्ती ६८५
बाण ८२
बावर, हन्स २९०, ३०३, ३०४
ब्रान्डेस्टीन ३५१
ब्रासिओर दि बोर्ग बोर्ग ७५०
बिवलकर १६०
बिहारूप सिंह १६८
बियर, ई० एफ़० एफ़० ३७१
ब्रिन्टन, डैनियल जी० ७४५
ब्रील, एम० ६७४, ८८
ब्लीडेन, एडवर्ड डब्ल्यु० ६१३
बुखेलर ६७४
बुग्गे, एस० ३१९, ५७१, ७१२
बुग्श, एच० ५९१
बुल्हर (ब्हूलर) ११८, १२१
बुल्हर मैदेन ३१२
बेनफ़ी ९६

बेनेट, एमेट एल० ६४७, ४८
बेवर ९६
ब्लेगेन सी० डब्ल्यु० ६४७
बेंक्स, डब्ल्यु० जे० ५७०
बैली नोट ७१२
बोर्क, एफ़० २५५, ३५३
बोस्सार्ट ३२२, ५३, ५५, ६४९
बोन्देल मोन्ते ५६५
बोलज़नी, जी० वी पी० ५६६
बौनामिकी, जी० ६७०
भण्डारकर १२१
भूपेन्द्र नाथ सान्याल ४२५, ७५०
मरवीण सवील ७६२
मर्सियर ५९७
माइनहोफ़ ५९७, ६०२
माकीडीज़, एम० ६३१
मारस्ट्राण्डर ६९४, ७१२
मायर्स,एस० ल० ६३१, ४९
मार्गन, जे० डी० २३०
माधो स्वरूप बत्स २६
मार्शम, जे० डी० ५६७
मार्तिन, ऐन्तोने यान सेन्त २६६, ६७
मिकेंज़ी, एलेक्जेण्डर ७५६
मित्र ९९
मिलर १५७
मुकुन्दराम ६६८
मुण्टर, फ़्रेडरिख क्रिश्चियन कार्ल हाइनरिख २६५
मूरगट २२९, ३०
मूलर, ओतफ़्रीड ६७४
मूलर, एफ० डब्ल्यु० के० ४६२, ७३
मेकेंज़ी ६४९
मेंज़ २९०, ६४०
मेथाडियस ६९७
मेरकटी ५६७
मेरिग्गी, पी० २८, ५०, ५१, ३२१, ३२२
मेशरश्मिड, लियोपोल्ड ३१९
मेसरस्मिथ ४७३
मैकग्रेगर ६१७
मैकलीन, जॉन ७५५
मैकालिस्टर ३०२, ६४३, ७१२
मैके, ई० जे० एच० २५
मैक्सवेल ६१७
मैरियो शीपान्स २६१
मैरीनैटस ६४७
मैसन १०१
मैस्प्रो, जी० ५७१
मोर्डमान २६७
मोंतेग ३७५
मोदंमान, ए० डी० ८२, ३११, १२
मोमरू दाउलू बुकेरे (मोमोलू दुवालू बुकेले) ६०७
मोरियर, जेम्स जस्टिन २६५, ६६
याओसन ३६९
यागिक ६९८
यास्क ९५
युयेन रन चाउ ४३१
युगेन फ़्लान्दीन २६७
यूलिस ओपर्त २३९
येनसेन, पीटर ३१९
येनसेन २९५, ३२०, २१
राइसनर ३३२
राउलिंग्स ७१२
राखल दास बनर्जी २५
राजमोहन नाथ २८, ४४, ४६, ६३
राधा कांत शर्मा ९७
राधेलाल त्रिवेदी १९६
राबर्ट गुर्लें ६०७
राबर्ट कर पोर्टर २६८
राबर्टंस, ई० एस० ६४१
रामनिवास १९६
रालिन्सन, हेनरी क्रेसविक ९, ९७, २३८, ७१, ७३, ३११
रासमुस क्रिश्चियन रस्क २६६

राव, एस० आर०	२८, ५३, ५७	लेनोरमॉन्ट	६९८
रिखतर, ओ०	६३१	लेप्सियस, रिचर्ड	९६, ३५३, ५७१, ९१, ६७४
रिचर्ड बर्टन	३१२	लेमान	२९०
रीन्सर, जी०	५९१	लेयान	३३२
रूडोल्फ़ एन्थीस	५४६	लेयेऊन	६७८
रूश	३२०	लेलोर मॉन्ट	९६
रेप्सन	९६	लैन्कोरन स्की	३२१
रोज़िएर	३७५	लैंग, आर० एच०	६३१, ३२
रोडिगर, ई०	३७७	लैंगे, दि	३०४
रोमानेली	३५३	लैंग्डन; एस०	७१
रोशे, डी०	२६०	लैण्डर	३५५
रोसलिनी, एच०	५७१	लैसन	९६
रोहेल	६४१	लोफ़्तस, डब्ल्यु० के०	४२
लांगपेरियर	२८२	लोवेनस्टर्न, इसोदर	२६७
लान्दा, दियेगो दि	७५०	वड्डेल, एल० ए०	२८
लाबोर्दे	३७५	वाड्डेमान	६४०
लाल, बी० बी०	२६, १९६	वाकणकर, एल० एस०	२८, ५८, ६१, ७१, ७४
लासेन, क्रिश्चियन	२६७, ६९	वाडिंगलन	३५५
लिज्ब्बार्सकी	९, २९७, ९९	वाथन, डब्ल्यु० एच०	९९
लिटमन	३५१, ६१७, २०	वान् विऊक	१०२
लिण्डनर	६९८	वानी	४९२
लिण्डब्लम	२९०	वालवाल्कर	७९
लिब्बी, डब्ल्यु० एफ़०	२०	वाल्टर इलियट	९९
ली काक	४७३	विन्सेन्ट स्मिथ	१०७
ली ग्राँड जेकब	१०६	विम्मर, एल०	६६४
ली, फांगुई	४२१	विलियम ग्रेगरी	२१६
ली ब्रून (दे० कार्नेलियस वान ब्रूइन)	२६२	विलियम जोन्स	९६, ९७
ली शी	४२७	विलियम गोरे आउस्ले	२६६
ली शुइन	४२४	विलियम रामसे	३२१, ४३
लीक	३४३	विलियम राइट	३'२
लुई ब्रेल	१९६	विलियमसन	४३२
लुकास, पी०	५६७	विल्सन	९६
लुडविग स्टर्न	५७१	वीरोलियूद, चार्ल्स	३०३
लूशियन	७१२	वुल्फ़	३२१

वेन्टूरा (जनरल) १०१
वेन्ट्रिस (एवं) चैडविक ६३२, ४८
वेन्ट्रिस, माइकिल ६४७
वेरियस फ़्लेकस ६८८
वेस्टर गार्ड, नील्स लुडविग ९६, १०९, २६७
वेस ६४७
वैलिस बज ५७४, ७९
वोण्ड्राक ६९८
शंकर हाजरा २८, ६४, ६६
शंकरानन्द, स्वामी २८, ४४, ४७, ४८, ४९, ६९
शिनीदर, एच० २९०, ६४०
श्मित, ए० ७५६, ६१
शिलीमान, हाइनिरख़ ६४५, ४६
शिलोज़र २२५
शील ७१
शूमेकर, जे० एच० ५६७
शू शन ४२९
शैम्पोलियों, जीन फ्रेंको ९, १८, ९७, ५६९, ७०, ७१, ७५, ९१
स्कयोल्सवोल्ड, ए० ७६१
सत्यभक्त, स्वामी १९४, ९५
सफ़ारिक ६९८
सरकार, दिनेशचन्द्र १ २
स्कूतश ६७१
स्टाइन, ओरेल ४७३, ७६
स्टावेल (कुमारी) ६४९
स्टीवेन्सन ९६
स्टेसीनास ६२६
स्पोहन, ए० डब्ल्यु० ५७१
संसुरं, एफ़० दि ६६७
साक्य पण्डित ३९९, ४६२
सार्जेक, अर्नेस्ट दि २३५
सार्ज़ी, काउण्ट दि २६७
स्ट्राबो ६७२
साल्सी, लुई कैगनत दि ६९७
सिकवई ७५५
सिक्स ३५५
स्मिथ, जी० ६३२
सिमोनाइड्स, सी० ५७१
सिल्तिक ६४७
सीरिल, संत ६९८
सुकरात ६५७
सुधांशु कुमार रे २८, ३९, ४०, ४१, ४३, ६९, ७१
सुण्डवल ६४०, ४८, ४९
सूंग ४२७, ३१, ३२
सेथे, कर्ट २९०, ९३, ५७१, ७३
सेफ़ार्थ, जी० ५७१
सेर्सी, सिल्वेस्त्रे दि ९६, २६३, ६५, ६७, ९०, ३१९, २०, ५१, ५३, ५६८, ६९, ७०
सेन्ट निकोलस, अबे तैन्दु दि ५६८
सेल चोंग ४८६
सेसनोला, एल० पी० दि ६३१, ३२
सेण्ड्विध, टी० बी० ६३१
सेमुयल बर्क ३११
सैविगनाक ३६९
सोर्ज़ी ओसिर ४६२
सोमर ३२२, ५१
सोलोन ६५७
हन्टर, जी० आर० २८, २९, ३२, ३३, ३४
हण्टिग ३७७
हर्थ ४५८
हर्बिग १७०, ७१
हरिंग्टन, जे० एच० ९९
हलेवी ५९७
हाइनरिख़, शिलोमान ६४५
हानुस ६९८
हाम ६९८
हावर्ड कार्टर ५५५
ह्वांग जिये ४२३
ह्वांग दसो जंग ४२९
हिंज़, जे० ७१६

ह्विन्क्स, ए० २७३
हियूगो विन्कलर ३२०
हिराता ४९२
ह्विट्ने ९६
हिलर वान ६४१
हीरेन, आरनल्डि हरमन लुडविग २६४
हुसिंग, जी० २६७
हूबर ३६९, ७७
हेनरी लावाचेरी ७६१
हेनरी स्मिथमैन ६१३
हेरन हूटर ७५६
हेरोडोटस ३४९, ५४५, ६१७, ४०, ४६, ६७
हेल्वी ९६
हेवेसी, एम० जी० डी० २८, ५८, ७६२
हैनमेल २९०
हैमर स्ट्रोम ६७१
हैमिल्टन, डब्ल्यु० ३१२
हैलभर ६४७
होमर ६४५, ४६
होरापोला ५६५
ह्रोज़्नी, बेदरिख २८, ६४, ६७, ३२०
हौप्ट २९०
श्रवण कुमार १९६
श्रीमती चाउ ४४६

विशिष्ट मनुष्य

कालीदास (कवि) ८०
टेरा (मूर्तिकार) २२८, ३२५
तोकू गावाइये यासु (राज्य प्रबन्धक) ४८९
नोबू नागा (राजनीतिज्ञ) ४८९
पेत्रो देल्ला वल्ले (यात्री) २६१
फ़ाह्यान (यात्री) ८०
महात्मा गान्धी (राष्ट्रपिता) ९४
मोर्कोपोलो (यात्री) ८७, ४७३, ५३५
मैरियो शीपान्स २६१
यहूदी अशमून (सामाजिक कार्यकर्ता) ६०७
लुदोविको दि वरथेमा (यात्री) ५३५
वैंकोवर, जार्ज (यात्री) ५६७
हन्स देरूशवान (यात्री) ७१८
ह्वान सांग (यात्री) १२७
हिदे योशी (राजनीतिज्ञ) ४८९
हुईओ, जीन निकोलस (शिल्पकार) ५७०
हुयेन त्सांग (यात्री) १३४

शासक

अकबर ८९, ९०, ९९, ३६१
अख़मेनिज़ २४८, २६९
अखेतातेन ५५५
अखेनातेन ५५४, ५५
अखोरिस (ग्रीक भाषा में) ५६४
अंख का इब रा (मिस्त्री भाषा में) ५६४
अच्युत १५०
अट्टिला ६९, ७१५, २१
अताउल्फ़ ६९१
अती ६६०
अदाद निरारी द्वितीय २३०
अनंगभीम ८८
अनन्त वर्मन (वर्मा), चोड़गंग ८८, १५४
अनवर सादात ३२७, ५६४
अनित्ताश ३०९
अनुरुद्ध ५०७
अपरमाजित वर्मा ८६
अपराजित १२५, १३४
अपिलसिन २२९
अब्दुल करीम कासिम २३४
अब्दुल्ला ३६६
अबी-एशु २२९
अबी जाह १२६

अबोदियस कैसियस ५६२
अमालारिक ६९३
अमासिस द्वितीय (ग्रीक भाषा में)
खेनुम इब रा (मिस्री भाषा में) ५५८, ६४
अमीन दीदी २२१
अम्मी ज़दूगा २२९
अम्मी दिताना २२९
अमेनहोतेप-प्रथम ५५२, ५३
अमेनहोतेप द्वितीय ५५२, ५३, ५४
अमेनहोतेप तृतीय ५५ , ५
अमेनहोतेप चतुर्थ ५५२, ५४
अमेनेमहत प्रथम ५५०. ५१
अमेनेमहत द्वितीय ५.०
अमनेमहत तृतीय ५५०, ५१
अमेनेमहत चतुर्थ ५५०
अय द्वितीय ७८
अयी ५५२, ५५
अरतास ३६३
अरमसिन २२८
अरशाम (अर्शाम—प्राचीन पर्शियन भाषा में) २६९, ७६
अरहदिना (अरहदत्त) ११८
अर्तज़रक्सीज़ २६१
अर्देशायर २८२
अर्यारमन २६९
अर्साकोज़ २५०
अर्यारमन २६९
अर्साकोज़ २५०
अर्सामीज़ (ग्रीक भाषा में; देखिए अरशाम)
अलंगपाया ५०७, ९
अलहकीम ५६३
अलाउद्दीन आलम शाह ९०
अलाउद्दीन खिलजी ८७, ९०, १३४, ८९
अलाफनपुरी ६१५
अलारिक ६६०
अल्तमश ८२
अशुर उबालित ३३५
अशुर उबालित प्रथम २३०
अशुर नसीर पाल द्वितीय २३०
अशुर (असुर) बनीपाल १३१, ३२, ३८, २८६, ३४६, ५५८, ६१७, २६
अशुरहेदेन २३२, ८६, ५५८
अशीकागा तका उजी ४८९
अशोक ७७, ९६, ९७, ९९, १००, १०२, १०९, १३, २१६
अश्तगीज़ २४८
असा ३२६
अस्किया ६१५
अस्त्रा खान ६६६
अहमद इब्न तुलुन ५६३
अहमीज़ नेफ़रतारी (शासिका) ५५३
अहमोस (एहमोस) ५५२, ५३, ५५
अहाब ३०२, ३२, ३७
अहिराम (अखिराम) २९३
अहोतेप ५५३
आक्टेवियस ५६१
आगस्टिन दि इतुरबिडे ७४१
आगस्टस ६३०, ७२
आगामोहम्मद ३९०
आदित्य प्रथम ८६
आनन्दमाहिडोल ५१५
आर्त्र गोन ७४१
आर्डिस ३४६
आर्तज़रक्सीज़ प्रथम २५०, ५५९
आर्तज़रक्सीज़ द्वितीय २५०, ५६०
आर्तज़रक्सीज़ तृतीय ५६०
अतिज़रक्सीज़ चतुर्थ २५२
आर्तबेनस चतुर्थ २५२
आर्सीज़ ५६०
इकाली द्वितीय ३९०
इक्ष्वाकु १२१
इख्तयार उद्दीन १५०

इन्द्रवर्मा ८७
इपामिनोडस ६६२
इब्राहीम पाशा ५६३
इब्राहीम लोदी ९०
इब्ने सऊद ३६३, ६६
इब्बी सिन २२८
इल खान ४१६
इलाहून ५५१
इवान चतुर्थ (जार प्रथम) ६९९
ई-ताय-वांग ४८१
ईये यासू ४९१
ईशान वर्मा ८२
ईशुमुनाजार २९७
उदयादित्य १८९, ६४
उदेनाथस ३३८
उन्ताश उबन २४७
उपेन्द्र ८४, १८६
उमयादो ४८८
उमर ६१५
उमरी २६७, ३२
उम्बा दारा २०७
उम्मा मेनान २४७
उर ज़बाबा २२७
उर नम्मू २२८
उसमान (तुर्क ६३१, ५८
उसुमान दन फ़ादियो ·१५
उस्मान युसुफ़ ६ ४
एजियस ६३२
एट्रस्कन ६६८, ७०
एन्नातुम्मे (एन्नातुम) २२७, २३५
एन्तेमना २२७
एप्रोज़ ५५८, ६४
एमीलियेनस ५६२
एराटस ६६०
एल्फ्रेड ७१·
एलारिक (देखिए अलारिक) ६९३
एलारिक द्वितीय ६९३
एलिजाबेथ ८१
एलिसा २९९
एलेक्जेन्डर ५६२, ६९
ऐजेनोज़ ५९२
ऐटियस ७२१
एतुलमुल्क १८९
ऐण्टी ओकस द्वितीय ९९
ऐण्टी ओकस तृतीय ३३५, ३८५
ऐण्टी गोनस ३५१, ६३
ओगमियस ७१२
ओगोताइ ६१६
ओजिन ४९२
ओटो प्रथम ७ ५
ओडोसर ७२१
ओलजैतू ४९२
ओस कोर्न द्वितीय ५५७
औरंगजेब ९०, ९१, १६०
औरेलियन ५६२
औसेरे अपोपी ५५१
कर्क द्वितीय ८६, ८७
कज़ान ६९९
कनिष्क ७८, १ २, ९, ८९
कन्नर देव (कृष्ण राजा तृतीय) १२९
कपिलेन्द्र १५७
करांज़ा ७४१
का (देखिए केबेह) ३७७
क री बू लू ३७७
काइण्सेलस ६५८
कांग शी ४१७, २९
कांग ही ४१९
कांस्टैटियस ७२१
कान्सटैन्टाइन ६९७, ९८
कामाकूरा ४८९
कामोस ५५२
कारु (कोतोक़) ४८८

कार्टलास ३८७
कालेज ७४१
क्रामवेल ७०८
कार्नेलियस गैलस ५६१
कार्ल मैगना ६८८, ९७, ७१५
क्लाइव ९४
क्लादियस ५६२
क्वाम्मू ४८९
क्ल्योपेत्रा ५६०, ६१, ६७, ७०, ७५
क्लोविस ७२१
कृष्ण ८७
कियोमोरी ४८९
किरूश (पर्शियन में; देखिए सायरस) २३३, ४८
क्लिस्थनोज़ ६५७
किशपिश २४७
कीर्ति वर्मन द्वितीय १४२
कीर्ति वर्मा ८६
कुजूल कदफ़िस ७८
कुतुबुद्दीन ८४
कुतुर नाखुण्टे २४७
कुदुर नाखुण्टे २४७
कुब्ज विष्णुवर्धन ८७
कुबलई ख़ान ३९९, ४०२, १६, ५०७, १५, २६
कुबिरका ११८
कुमार गुप्त ८०
कुमार पाल १५०
कुरीगालज़ू द्वितीय २३०
कुरीगालज़ू तृतीय २४७
कुरु ११८
कुरेश २४८
कुलोत्तुग ८७
कुलतिजिन ४७६
कूफ़ू (खूफ़ू—मिस्री भाषा; क्योप्स-ग्रीक) ४९, ६४, ५४६
कूलिग ४६२
केफ़्रेन (ग्रीक भाषा में; देखिए खेफ़्रे) ६४५
केबेह ५४६
कैडमस ९, ६४०, ८५
कैमूर्स ८८
कैम्बेसिज़ २५०, ५५९, ६२९
कैरकला ५६२
कैवरस ७०७
कैसर ३२०
कोकेन (शासिक) ४८८
कोज्यूको (शासिका) ४८८
कोट्टा २१६
कोनराड द्वितोय ६७८
क्रोशस २४८
कौण्डिन्य ४२६
कौन्दिया ५२६
खत्तुसिली ३०९, ५५६
ख़लीफ़ा उमर ५६२
खल्लूसू २४७
खियान ५५१
खुर्बातिला २४७
खुम्बा खालदस द्वितीय २४८
खुम्बा निगस २४७
खुमैनी २५४
खुशरो ५६२
खेत्ती द्वितीय ५५०
ख़ेफ़्रे (मिस्री भाषा; देखिए केफ़्रेन) ५४९, ६४
गणपति ८८, १४५
गम्भीर सिह १६८
गयाकरण चंदेल ८४
ग़यासुद्धीन तुग़लक ९०
ग्रह वर्धन १२७
ग्रह वर्मा ८२
गाइयस पेत्रोनियस ५६२
गायसेरिक ६७२
गुआराम ३८७
गुदफ़र्न ७८
गुलाब सिंह ४०२

गुहदत्त ८०
गुहासेन ८०, १३८
गूडिया (जूडिया) २२८
गे–दुन त्रुप–पा ३९९, ४००
गैलियेनस ५६२
गैलेरियस ५६२
गोपाल ८४
गो माता (गोमाता) २५०, ५८
ग़ोरी ८४
गोविन्द राज तृतीय १४२, १९४
चकदोर नांगे २१५
चक्रायुद्ध ८२
चंगेज़ ख़ान (तिमु चिन) ३८७, ४१४, १६, ६०, ६२
चन्द्र गुप्त प्रथम २०४
चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य, द्वितीय ८०, ११८
चन्द्र गुप्त मौर्य ७७, १०९
चराइरोगबा १६८
चष्टक १०९
चाउशीन ४०९, ८०
चांग–चुप ग्याल–छेन ३९९
चार्ल्स दि ग्रट ६८८
चार्ल्स द्वितीय ९१
चार्ल्स मोर्तेल ७२१
चियांग काइ शेक ४२१
चीय कुयेइ ४०९
चूड़ा चन्द १६८
चेन च्याओ ४३२
चेन लुंग ४००
छोग्याल ३९९
जंग बहादुर २०४
जटावर्मन १३४
जटा वर्मा सुन्दर पाण्ड्य ८७, १३४
जबूम २२९
ज़मल अब्दुल नासिर ५६४
जमामा सुमुद्दीन २४७
जय चन्द्र १५७
जय दामन १०९
जय देव प्रथम २०४
जय प्रकाश मल्ल २०४
जय पाल ८८
जयवर्मन द्वितीय ५२६
जय वर्मन सप्तम ५२६
जय वर्मन अष्टम ५२६
जय सिंह ८६, १८९
जय स्थिति मल्ल २०४
ज़रक्सीज़ २६१, ६६, ६७, ६८
ज़रक्सीज़ प्रथम २५०, ५५९, ६३१, ५७
ज़रक्सीज़ द्वितीय २५०
जहाँगीर ९१, ११८
ज़हीरुद्धीन मोहम्मद (उपनाम : बाबर) ९०
जाजल्लदेव १८९, ९४
जामोतिक १०९
जॉर्ज तृतीय ४१९
जिमरी ३२६
जिंगो (शासिका) ४८७
जिम्मू तेन्नू ४८७
जियार्जो पंचम ३९०
जियार्जी बारहवाँ ३९०
जियेन लुंग ४१९
जुआन डी सलकैडो ५२७
जुस्टीनियन ६६०
जूना खाँ ९०
जूलियस सीज़र ५६१
ज़ेडेकिया ३२७
जेन्टियस ६७४
ज़ेनोबिया (शासिका) ३३८, ५६२
जेम्म्यो (शासिका) ४८८
जेम्स द्वितीय ७०८
ज़ेरियाड्स ३८५
जेहू ३३२
जे ोईयाकिस (याकिम) २३३, ३२७
टाइरेनस ६६७

टॉलेमी २८९, ३३५, ५९, ५७५, ६३१
टॉलेमी प्रथम–लैगास ५६०, ६१, ६९, ६३१
टॉलेमी द्वितीय–फ़िलेडीफ़स ९९, ५४५, ६०, ६१
टॉलेमी तृतीय–योरिगेटिस (प्रथम) ५६०, ६१, ७१
टॉलेमी चतुर्थ–फ़िलोपेतर ५६०, ६१
टॉलेमी पंचम–एपीफ़ेन्स ५६०, ६१, ६८
टॉलेमी षष्ठम–फ़िलोमेतर ५६०, ७०
टॉलेमी सप्तम–योरिगेटिस (द्वितीय) ५६०
टॉलेमी अष्टम–सोतर (प्रथम) ५६०
टॉलेमी नवम–सिकन्दर (प्रथम) ५६०
टॉलेमी दशम–सोतर (द्वितीय) ५६०
टॉलेमी एकादश–सिकन्दर (द्वितीय) ५६०, ६१
टॉलेमी द्वादश ५६०, ६१
टॉलेमी त्रयोदश ५६०, ६१
टॉलेमी चतुर्दश ५६०, ६१
टिंगया देव १५०
टुट-अंख-आमेन (आमुन, आमोन) ५५२, ५५
टुट-अंखातेन (अंख + अतेन) ५५५
टुटमिस ५७०, ७५
टुटमोस प्रथम ५५२
टुटमोस द्वितीय ५५२, ५३
टुटमोस तृतीय ५५२, ५३, ५४
टुटमोस चतुर्थ ५५२, ५३
टोटमिस तृतीय २८७
डायज़ ७४१
डायडोटस (दयोदत) २५२
डेमेट्रियस ६३१
डेविड (दाउद) ३२६, ३७
डेविड द्वितीय अग़माशेरबेली ३८७
डैरियस २५७, ५८, ६१, ६६, २६७, ६८, ७६
डैरियस प्रथम २५०, ५५९, ६२९
डैरियस द्वितीय ५५९
डैरियस तृतीय २५०, ५६०
तामारा (शासिका) ३८७
तमिल इलाला २१६
तमीरा दई ६२९
तहमास्प २५२
तहारका ५५८
तांजुन ४८०
तानूतामोन ५५८
तारकूमूवा ३१३
ताराबाई (शासिका) ९१
ताशी नंगयाल २१२
त्याग सिंह १५०
तिगलत पलेसर प्रथम २३०, ७३, ३३५, ३७, ३७
तिगलत पलेसर तृतीय २३२, ८९, ३३७
तियास ५५९, ६०
तिरिदेतिज़ (तिरिदात) २५२
त्रिभुवन वीर विक्रम शाह २०६, १२
तिशपिश २४८
तुकुल्टी निनुरता द्वितीय २३०
तुग़लक ९९
त्सुक–चेन ३९९
तॅची (नाका) ४८८
तेती प्रथम ५४९
तेफ़नख़्त ५५८
तेम्मू ४८८
तेस्पीज़ (चिशपिश) २६९
तैमूर ९०, ३९०
तैलप ८६, ८७
तोमर ८४
त्रिडेट्स प्रथम ३८५
त्रिडेट्स तृतीय ३८५
त्रिसोंग दे चेन ३९९
थ्योडोर ६२०
थालून ५०७
थियो डोरिक प्रथम ६९३
थियो डोसियस ६९३
थीबा ६०९
थेमिस्टाकिल्स ६५७
थेसियस ६३२
द्ज़ूशी (शासिका) ४२१

दन्तिदुर्ग द्वितीय १८६
दन्तिवर्मन १२९, ८६
दन्तिवर्मा ८७
दयोदत (दे० डायडोटस) २५२
दाइगो द्वितीय ४८६
दाऊद (डेविड) ३२६, ३७
दामोजद ११३
दारा (प्राचान पर्शियन-दरयूश; ग्रीक, डैरियस) २५०, ६३
दिनेकोव पोटर ६९८
दूदू २२८
देवगुप्त १२७, ८२
देवभूति ७७, ८६, ८७
देक्यिस ५६२
द्रोणसेन १३८
धंग ८४
धरनीन्द्र वर्मन ५२६
धरसेन प्रथम १३८
धरसेन द्वितीय १३८
ध्रुवसेन प्रथम १३८
ध्रुवसेन द्वितीय ८०, १२७, ४०
नहपान १०९
नन्दी वर्मन १२६, ३४, ३८
नन्नुक (नन्तुक) ८४
नरम सिन २२७, २८, ४७, ३३५
नर वर्धन ८२
नरवर्मा ८४
नर्गल युसेजिब २४७
नरसिंह ८८, १२६, ३४
नरसिंह वर्मन द्वितीय १३४,४२
नरायण पाल ६७, १५४
नहपान १०९
नाका ४८८
नागपाल १५७
नागभट्ट प्रथम ८२, १९४
नागभट्ट द्वितीय ८२
नादिर शाह (नादिर कुली) २५२
नाम–री सोंग च ेन ३९७
नामा नायक १४५
न्या–त्रि च ेन पो ३६७
नार्मन रॉजस द्वितीय ६६०
निकेफ़ोरस फ़ोकस ६४४
निदित्तुबेल २३३
निरसिम्ह द्वितीय १४२
नीको (निकाउ - ग्रीक; वाह इब रा - मिस्री) ५५८, ५८, ६४
नेक्ता नेबू प्रथम (ग्रीक; नेख़्तने बेफ़ - मिस्री) ५५६, ६०, ६४
नेक्ता नेबू द्वितीय (ग्रीक; नेख़्त होर हेब - मिस्री) ५५९, ६०, ६४
नेटरबाउ ५४६
नेडुम चेलियान १३४
नेफ़रीतिस प्रथम ५५६
नेफ़रीतिस द्वितीय ५५९
नेफ़ेरकारे (मिस्री; पेपी द्वितीय - ग्रीक) ५६४
नेफ़्त इब रा (मिस्री; सामतिक द्वितीय-ग्रीक) ५६४
नेबू कदनेज़ार २३३, ३०९, २७, ३०, ३५
नेबका ५४६
नेबूनयद (नेबूनिडस - रोमन) २३३, ४८
नेबू पलासर २३३, ४८, ३२७, ३७, ५५८
नेम्बाना ६१३
नेसूबेने बदेद (स्मन्दीज़) ५५७
नैपोलियन २६३, ५५३, ६३, ६७, ६८, ६६
नोकियल ६४९
नोरदम प्रथम ५२७
पमहीबा १६८

परकेशरी वर्मन १२९
पर्नवाइ ३९०
परमार्दी (परमल) ८४
परमेना ३४९
परमेश्वर वर्मन १२६, ३४
परमेश्वर वर्मन द्वितीय १३४
पृथ्वी देव प्रथम १८६
पृथ्वी नरायग शाह २०४
पृथ्वी पति द्वितीय १३८
पृथ्वी राज ८४
प्रजाधिपाक ५१५
प्रतापरुद्र प्रथम १४५
प्रताप रुद्र द्वितीय ८८
प्रभाकर वर्धन ८२
प्रवर सेन प्रथम ८६
प्रसेन जीत ३०७
प्राक्रम बाहू २१६
पिगमैलियन २९९
पिजुशतिश ३०६
पिनोजदेंम ५५७
पियाँखी ५५७, ५८, ६१७
पीटर प्रथम ६९९, ७००
पुवलियस अक्लियस हैद्रियानस ३३८
पुरुष दत्त प्रथम १२१
पुरुषोत्तम १५७
पुलकेशिन द्वितीय १२६
पुलकेशी प्रथम ८६, ८८
पुलकेशी द्वितीय ८६
पुलोमावि तृतीय ७८
पुष्य गुत १०९
पुष्यमित्र शुंग ७७
पुष्य वर्मन १५०
पेदपास्त ५५७
पेपी प्रथम (ग्रीक;मरीरे-मिस्री) ५४९, ६४
पेपी द्वितीय (ग्रीक; नेफ़रकारे-मिस्री) ५४६, ६४
पेरिकिलस ६५७
पेरियण्डर ६५८
पैक्ची ४८७
पोर्टेज़गिल ७४१
प्रोवस ५६२
फ़क-मो-द्रू ३९९
फ़रनवाज़ ३८७
फ़्लोरेन्स ५६५
फ़स्टीडा ६६३
फ़्लेमिनस ६६०
फ़ाया चक्कारी ५१५
फ़ारुख़ प्रथम ५६३
फ़िलिप ६६०
फ़िलिप द्वितीय ५२७
फ़ीरोज़ शाह तुग़लक ९७
फ़ुआद द्वितीय ५६३
फ़ुआद प्रथम ५६३
फ़ूशी ४०९, २५
फ़ैज़ल ३६६
फ़्रांसिस्को डो साण्डे ५३२
फ़िथीगर्न ६९३
फ़्रेड्रिक द्वितीय ६७२
बक्कहीस ६५८
बग़रात तृतीय ३८७
बग़रात चतुर्थ ३८७
बग़रात पंचम ३९०
बहराम शाह ८८
बहादुर शाह ९०
बहादुर सिंह १५७
बाईबुरेह ६१३
बाथ ज़ेबाज़ (देखिए ज़िनोबिया) ३३८
बाशा ३२६
बिम्बसार ७७
बुक्का द्वितीय १२८
बेइनंग ५०७
बेल्लो सोकोतो ६१५
बोक्क होरिस (ग्रीक; बेकेन्रेनिफ़ - मिस्री)५५७,५८

बोनीफ़ेस ६४४
बोरिस ६६७
बृहद्रथ ७७
ब्रम्हपाल १५०
ब्रूटस ५६१
भटार्क १३८
भद्र वर्मा ५२६
भाव वर्मन प्रथम ५२६
भास्कर रवि वर्मन १३२
भास्कर वर्मन १५०
भीम द्वितीय ८४, १४५
भूमक १०९
भोज १८९
मंगलेश १४२
मंग-स्त्रोंग मंग-चे़न ३६७, ६६
मंगी युवराज सर्वलिकाश्रय १४२, ४५
मंगू खान ४१६
मक्सूटोब ७५६
मट्टन २६६
मथियास कोर्वीनस ७१५
मदेरो ७४१
मनीशतुम २२७
मनेज़ ६६७
मनोहरी १२९, ३२
ममलूक ५६७
मलिक काफूर ८७, ८८
मसीनिस्सा ५९५
महमूद ग़ज़नवी ८८
महमूद शाह ९०
महेन्द्र वर्मन १२६, ३२
महेन्द्र वर्मन द्वितीय १२९, ३४
माओ ४२२, २४
माई ६१५
मार्क एन्टोनी ५६१
मार्कस औरेलियस ५६२, ५९७
मानदेव २०४
मिकिप्सा ५९५, ३२
मिडास ३४३
मिण्डान ५०९
मिनास ६४४, ४६
मिरियानी ३८७
मुइज़ुद्दनी (मोहम्मद ग़ोरी) ८८
मुत्सी हितो ४९१
मुनी-चे़न-पो ३६६
मुबारक खिलजी ९०
मुरसिली प्रथम ३०९
मुरसिली द्वितीय ३०६
मुहम्मद ग़ोरो ८२, ८४
मुहम्मद, रज़ा पहलवी २५४
मृगेश वर्मन १४०, ४२
मेन्तुहोतेप प्रथम ५५०
,, द्वितीय ५५०
,, तृतोय ५५०
,, चतुर्थ ५५०
,, पंचम ५५०
मेने (मेनेज़–ग्रीक; नारमर–मिस्री) ५४६, ६४, ६५
मेनेलिक ६२०
मेमियस ६६०
मेरीरे (देखिए पेपी प्रथम) ५६४
मेरेन्रे प्रथम ५४९
मेरेन्रे द्वितीय ५५०
मेरेनटा ५५५, ५६
मेरोदोख़ बलादन ३३७
मेशा २९७, ९८
मेहमत अली (मोहम्मद अली) ५६३
मैक्समिलियन ७४१
मैगनस ७०८
मैनफ़्रेड ६७२
मोअ (मोयस) ७८
मोम्मू ४८८
मोहम्मद तुग़लक ९०
मोहम्मद नजीव ५६३, ६४

मोहम्मद बिन क़ासिम ८८, १७२
मौथिस अखोरिस ५५९
यकोवर्मन प्रथम ५२६
यज़्दगर्द तृतीय २५२
यनजोया ६०२
यशपाल ८२
यशोवर्मन ८४
यसूगी बागातुर ४१६
यज्ञश्री शातकर्णि ७८
यादव भिल्लम ८६
युंग लो ४१७
युनिस ५४९
युरिक ६९३
युसुफ़ अली ६०४
युसेज़िब २४७
युसेर काफ़ ५४९
योदित (जूडिथ-शासिका) ६२०
योमी ४८८
योरोतोमो ४८९
रज़ा शाह पहलवी २५४
रणराग ८६
रतन राज प्रथय १८९
रबाव ज़ुबैर ६१५
रल-पा-चेन ३९९
राज राज ८७, १३२
राज राज द्वितीय १४२
राजा जय चन्द्र ८२
राजा धिराज १३८
राजा नन्द ७७
राजा नरेन्द्र ११३
राजा मार वर्मा ८७
राजा राम ९१
राजा राम गंग १५४
राजा रूआंग ३१८
राज्य पाल १५४
राज्य वर्धन ८२
राजेन्द्र प्रथम ८७, १५४
राजेन्द्र तृतीय ८७
राम कम्हेंग ५१५
राम खोमहेंग ५१८
राम चतुर्थ ५१५
रामचन्द्र ८८
राम पाल ८४, १५०
रिचर्ड प्रथम ६३१
रुद्र दामन १०९, ११३
रुद्र वर्मन ५२६
रेमे सीज़ प्रथम ५५५, ७०
रेमेसीज़ द्वितीय (रामेसीज़) ३२०, २६, ५३, ५५५, ५६
रेमेसीज़ सीटा ५५५, ५६ ७५
रेमेसीज़ तृतीय ५५६, ५७
रेमेसीज चतुर्थ ५५६, ५७
रेमेसीज़ पंचम ५५६
रेमेसीज़ षष्टम ५५६
रेमेसीज़ सप्तम ५५६
रेमेसीज़ अष्टम ५५६
रेमेसीज़ नवम ५५६
रेमेसीज़ दशम ५५६
रेमेसीज़ एकादश ५५६, ५७
रोमुलस ६६८
रोमोलस आगस्टलस ७२१
रोस्टिस्लाव ६९७
लंगदर्मा ३९९
लम्पोंग ५२६
ललेगीज़ ३५१
लाइकोमिडीज़ ६६४
लाव साँग ग्यात्सो २१२
लार्स पोर्सेन्ना ६७०
ल्हाथो थोरी न्यान चेन ३९७
लिनपेई ४१२
लियो तृतीय ६८८
ल्योविगिल्ड ६९३

ली हुआँग चाँग ४१९
लुगाल जगेस्सी २१७
लुल्ली २८९
लेगाज़पी ५२७
लेनिन ६९९
लोब-सोंग गया-त्सो ४००
व्रजहस्त पंचम १५४
वाकपति भुंज १८९
वांग चेंग ४११
वालक्कायम महामण्डलेश्वर १३२
वालिया ६९३
वालियस ६९३
वाशिष्ठि पुत्र पुलमायी द्वितीय १२१
वाह इब रा (देखिए नोको) ५६४
विक्टोरिया (शासिका, ९४
विक्रमादित्य १०९, १३४
विग्रहराज चतुर्थ ८४
विजय २१६
विजय बाहू चतुर्थ २१६
विजय राय उडियार १४२
यिजय सेन १५०
विजयादित्य ८७
विजयालय ८७, १६४
विदग्ध १५७
विरूकुरू पल्लव १२५
विश्तास्प २७८
विश्तास्पीज़ २६८
विस्णु वर्धन १४५
विष्णु वर्मन १४०
विसीमार ६९३
वीर पुरुषदत्त १२१
वीरू पाक्ष १३२
वूती ४१२
धुंवृका १०७
वैद्य देव १५०, ५४
शत्रुक नाखुन्टे २४२,४७
शम्भा जो ९१
शर त्सुंग ४५८
शबाका ५५८
शबातका ५५८
शलमनासर द्वितीय २३१
शलमनासर तृतीय २३२, ६८, ३३७
शलमनासर चतुर्थ २३९, ३२६, ३२
शशांक ८२, १२७, १५४
शाइस्ता खाँ ९१
शान्ति वर्मन १४०
शापुर प्रथम २६१
शाहजहाँ ९०
शाहज जी (भोंसले) ९१, १६०
शाहू ९१
शिमिर ३३२
शिलहक (शिलाक) इन्शु शिनाक २२८, ४७, ५५
शिलादित्य १३८
शिवमार प्रथम ८७
शिव स्कन्द वर्मन १४२
शिवाजी ९१, १२०
शिवाजी द्वितीय ९१
शिशांक ५५७
शिशांक चतुर्थ ५५७
शोगा चेन ४००
शी हुआँग ती ४११, १२, २७, ८०
श्री रंग १३४
श्री विजय ५३५
शुदरल २२८
शुप्पि लूली माश २३०
शुप्पि लूली उम्मा २३०, ३३५
शू सिन २२८
शंव नुङ्ग ४०९
शेप सेस कॉफ़ ५४६
शोगुन हिदेयोशी ४८१
शोतुको तैशी ४८८
शोमू ४८८

स्कन्द गुप्त ८०
स्कन्द नाग १२५
स्कन्द वर्मन १२५
सत्यकी १५७
सनयात सेन ४२१
समुद्र गुप्त ६६, ११३, १८, ८६
सरगोन प्रथम (अक्कादियन भाषा-सारुकेनु) २२७, २८, ३६, ४७
सरगोन द्वितीय २३२, ४७, ३०९. २६ ३०, ३२, ३७, ८५, ६२९
सलस्तम्भ १५०
सलीम प्रथम ५६३
सस्सू इलूना २२९
सस्सू दिताना २२९, ३०
स्मेन्दीज़ (ग्रीक; नेसूबेनेबदेद - मिस्री भाषा) ५५७
स्टैलिन ६९९
साइमी (शासिका) ४८८
सांग-का-पा ३९९
सादात, अनवर ५६४
सामन्त सेन १५०
सामतिक प्रथम ५५८, ५९
सामतिक द्वितीय (देखिए-नेफ़्रेत इब रा) ५५८, ६४
सामतिक तृतीय (दे०-अंख का इब रा) ५६८, ६४
सामथेक द्वितीय ३५३
साम-सेन-ताई ५१८
सामोथिस ५५९
सायरस (दे० कुरुश) २३२, ४८, ५०, ५७, ६५, ३३० ३५, ४७, ४९
साल ३२६
सालोमन (ग्रीक; सुलेमान-अरबी) २६१, ६५, ३२६, ६२०
सिकन्दर २५, २५०, ५२, ५३, ७८, ८९; ९३, ३२७, ४३, ५३, ८५, ८७, ९०, ५६०, ६३१, ६०, ६२, ६४
सिकन्दर तृतीय ५६०
सिकन्दर चतुर्थ ५६०
सिगिसमण्ड ७१५
सिदेरिज ३४९
सिद्धराज जयसिंह ८४
सिनमुन ४८६
सिनमुबालित २२९
सिमुक (शिशुक या सिन्धुक) ७७
सिमेरी ३४९
सियाक्सरीज़ २४८
सियुरिशकुन २३२
सिंह वर्मा ८६
सिंह वर्मा द्वितीय ८६
सी चोंग ४८६
सीज़र आगस्टस (देखिए आक्टेवियस) ५६१,
सीज़र जूलियस ५६१, ६६०, ७०७, २१
सीज़र बोर्गियो ६७२
सीमियन, ज़ार ६९७
सीयक द्वितीय ८४
सुज़ून ४८८
सुबुक्तगीन ८८
सुभी पाशा ३१२
सुम्मू अबूम २२९
सुम्मू लाइलुम २२९
सुयोको ४८८
सुल्तान अहमद २५४
सुल्तान तुमन ५६३
सुल्ला ६७२
सुशर्मा ७७
सुसेमीज़ ५५७
सूर्य वर्मन-प्रथम ५२६
सूर्य वर्मन-द्वितीय ५२६
सेकेसुरे ५५२
सेत नख़्त ५५६
सेती प्रथम ५५५, ५६
सेना ख़रिब २३२, ४७, ८९, ३७७, ५५८
सेबेक नेफ़्रे ५५०, ५१
सेल्युकस २५२, ६३, ३३९

सेसास्त्रीज़ प्रथम ५५०, ५१
,, द्वितीय ५५०, ५१
,, तृतीय ५५०, ५१
सेहर तवी इन्तेफ़ प्रथम ५५०
सैफ़ुद्दीन ८८
सोगा-नो-इरूका ४८८
स्रोंग च़ेन गम्पो ३९७, ४००, १
सोमेश्वर ८४, ८६
सोमेश्वर चतुर्थ ८६
हकोरिस ५५९
हतशेपसुत ५५२, ५३, ५४
हत्तुसिलिस तृतीय ३०८, ८०, ५५६
हदाद तृतीत ३३७
हदादेज़ेर ३३७
हम्मूराबी २२९, ४१, ४२, ४३, ४७,
हरिवर्मा ८८
हरी वर्मन १४०
हर्मियस ७८
हर्मेनिक ६९३
हर्षवर्धन ८०, ८२, ८३, १२७, ६४
हा इब रा (देखिए—एप्रीज़) ५६४
हिरकैनस ३३२
हिरेकिल्स ६७२, ७१२
हिरेविलयस ५६२
हुआंग तो ४०९
हुनियादी ७१५
हुयेरतास ७४१
हुलागू ४१६
हुविष्क ७८
हुसैन २३४, ६६
हूनी ५४९
हेकर (देखिए अखोरिस) ५६४
हेनरी द्वितीय ७०८
हेरीहोर ५५७
होजो तोकीमासा ४८९
होतू मतुआ ७६१
होरे महब ५५२, ५५

संघ

अकाइयन ६६२, ६४
आनोगुर ७१५
पेलोपोनेशियन ६५७, ५८, ६०
बोयेशिया ६६२
मयपान ७४८, ५३
हेलेनिक ६६०

स्मारकों के नाम

अल हज़र मस्जिद ५६३
अशोक स्तम्भ (दिल्ली) ६६
आहू (चबूतरे ईस्टर द्वीप) ७६१
खजुराहो के मन्दिर ८४
जगन्नाथ पुरी मन्दिर १५४
ताजमहल ६०
नागेश्वर मन्दिर १४५
नासिक गुफ़ा ११८
पिरेमिड ५४९
पोताल राजगृह ४००
बकूफ़ू (सैनिक मुख्यालय) ४८९
बड़ी दीवार ४११, १६
बैजनाथ मन्दिर १५७
बौद्ध मठ ४८९, ९१
बौद्ध स्पूत २६
मियाज़ेदी स्तम्भ ५०६
यहूदी मन्दिर (सिनेगाग) ३३१
विशाल मन्दिर ३९९
शिला स्तम्भ ५७०
शिव मन्दिर १५७

स्मारक

स्तूप ९९
स्मारक स्तूप ११८
स्वर्ण मूर्ति (बुद्ध) ४८७
स्फिंक्स ३७३, ५४९
हैंगिंग गार्डन्स २३३
होरियूजी (बौद्ध) मन्दिर ४८८

सरकारें

केन्द्रीय सरकार ४८९
चीनी सरकार ४१७, ४३, ६९
जापान सरकार ४८८
ब्रिटिश सरकार २३४, ३६६, ४१८, ५०८, ५१५, ६०४, १३, २०, ३१, ३६
बैज़ेन्टाइन (बैज़ेन्ताइन) २५२, ८८, ३४३, ८५, ८७, ६३१, ३६, ६०, ८७, ८८
भारत सरकार ५०८

संस्कृतियाँ

आयोनियन ६३६
एजियन ६३२
एट्रस्कन ६६७
ग्रीस की ६३६
चीन की ४१७
द्रविड़ २६
प्राचीन एशिया माइनर की ६४६
प्राचीन संस्कृति (क्रीट की) ६४४, ४५
फ़िनोशियन ६४६
माइसीनियन ६४४, ४५
मिनोअन ६४६
यनानो ६३६
रोमन ६९३
वैदिक २७
सायप्रस का ६२८
सिन्धु घाटी २६, २७, २८, ४३, ९६
सुमेर की २७
हिन्दू ५३२
हेलेनिस्तक ६३२

संस्थायें

अकादमी दि इन्सक्रिपशन्स ३३८
अमेरिकन कालोनाइज़ेशन सोसाइटी ६०७
अमेरिका पैलेस्टीनियन एक्सप्लोरेशन सोसायटी ३१२
अमरीकन स्कूल एट एथेन्स ६६२
अजमेर संग्रहालय १०२
आक्सफ़ोर्ड रॉयल सोसायटी ३३८
आक्सफर्ड विश्व विद्यालय २८
आर्कैयोलॉजिकल सर्वे डिपार्टमेन्ट ९७
इण्डियन नेशनल कांग्रेस ९४
ईस्ट इण्डिया कम्पनी २६८, ४१९, ५१५, ३५
एकादमी आफ़ साइन्सेज़ ५७०
एफ़ीसस धार्मिक समिति ३४३
एशियाटिक सोसायटी ९७, २६९
एशमोलियन संग्रहालय ६४५
एल विश्व विद्यालय ४४३
चाइना रिवाइवल सोसायटी ४२१
टाटा इन्स्टीट्यूट आफ़ फण्डामेण्टल रिसर्च २०
पीपिल्स नेशनल पार्टी ४२१
पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग ८७
पेनसेल्वियन विश्व विद्यालय ५४६
फ्रेंच एशियाटिक सोसायटी २६८
बंगाल एशियाटिक सोसायटी १८४
बर्लिन ओरिएण्टल सोसायटी ३२०
ब्रिटिश स्कूल आफ़ आर्कैयोलाजी ३२७
ब्रिटिश संग्रहालय ४८, २३२, ४८, ३११, १२, ७३, ५६८

भाषा विज्ञान परिषद ५
मिडिल ईस्ट सोसायटी ३२०
राज्य संग्रहालय १५४
रॉयल अकादमी २६४
रायल आयरिश अकादमी २६७
रॉयल एशियाटिक सोसायटी ९७, २६८, ७३, ४५४
रोआयल नाइजर कम्पनी ६१५
स्किैण्डिनेवियन इन्सटीटियूट आफ़ एशियन स्टडीज़ २८
स्क्रिप्ट स्टडी ग्रूप ५८
रोमन स्क्रिप्ट सोसायटी (रोमाजीकाई) ४९६
लीग आफ़ नेशन्स ६२०
लूग्रे संग्रहालय २४३, ९७
विट वाटर्स रैण्ड विश्व विद्यालय ६४७
सोसायटी आफ़ बिबलीकल आर्कयोलाजी ३१३
सोसायटी फ़ार ऐन्टीक्वेरीज़ ५६१
हार्वर्ड विश्व विद्यालय ३३२
हिन्दी साहित्य सम्मेलन १९६

सागरों के नाम

इंगलिस चैनेल ६८८
काला सागर २८५, ६९९
केप माउण्ट ६०४
केप मेसूरेडो ६०४, ६०७
कैरीबियन सागर १०
कैस्पियन सागर २५२, ४१२
डेड सी ३३०
फ़ारस की खाड़ी ३६३
बाल्टिक सागर ६९१
भू-मध्य-सागर २९९, ३०२
लाल सागर ५५१, ५६, ६२०
हुडसन खाडी ७५५

साम्राज्य

इलखान ४१६
ओटोमन ६३६, ९७
गुप्त ८०
चीन ४१६
जगाताई ४१६
जापान ४८१
टर्की ६४४
तांग ४१२, १३
पर्शियन २५२, ३८७, ४७३
पाण्ड्य ८७
पार्थिया २५२
बेज़न्टाइन ३४३, ६३६
मुग़ल ९०
मौर्य ७८
यूरोप ४१६
राष्ट्रकूट ८७
रूसी ३९०
रोमन ३४७, ४१२, ६४४, ४७
वर्धन ८२
वाकाटक ८६
विजय ५३५
विशाल २५७
सिबिर ४१६
हान ४ २

INDEX

A

Abicht 698
Abott, Nabia 379, 93
Abraham 554
Abu Simbel 556
Abydos 546
Abyssinia 617
Academy des Inscriptions et Belles letters 570
Academy of Sciences 570
Achaean 629 45. 57
Achamenes 248, 69, 78
Acropolis 664
Ada 353
Aegeus 632
Aeizanes 592
Aelius Gallus 359
Aemilianus 562
Agnone 674
Agvan Dordjiev 469
Aḥiram 293
Ahmes Nefertari 553
Ahmos 552
Ahu 761
Åkerblad, J. D. 568
Aksum 617
Alaric 693
Alaska 699
Albright, W. F. 307, 73 93
Aldred, Cyril 593
Aldus 565
Alexander 254, 353
Alexandria 560
Ali Khan, H. M. 393
Allen, A. B. 246, 357, 486, 649
Allyattes 349
Almurach 708
Altheim 698, 718
Alto, P. 28
Amalaric 693
Amarna 318
Amasis II 558
Ambracia 658
Amenertaic 559
Amenesses 555
Amen hotep-1 552
American Colonization Society 607
American Oriental Society 293, 307
American School at Athens 662
American School of Oriental Research 334
Amsterdam 272
Anactorium 658
Anastase, P. 357
Anatolia (Turkey) 645
Andhra Historical Research Socicty 53
Andreas, F.C. 473
Androgorus 252
Ankh-ib-ra (Psamtik iii) 564
Antiochus–III 385
Antony, Mark 561
Apollonia 658
Apries (Ha–ib–ra) 558, 64
Apulia 674
Arabic 286
Aramaic 337
Araq–el–Amir 330
Aratus 664
Arberry, A. J. 254, 86, 93
Arcadia 664
Archaic Latin 687
Ardea 668
Ariadne 645
Aricia 668
Arkwright, W. 357
Arntz, H. 722, 25, 38
Arsaces 250, 52

Arsames 269, 78
Artabanus 250
Artabanus–iv 252
Artaxerxes–1 250
Aryaramnes 248, 69
Aryds 349
Ashmolean Museum 645
Asiatic 375
Assiut 557
Assyria 246
Astle, T. 17
Ataulf 693
Atecotti 708
Athenaeus 261
Athens 657
Atkinson, G. M. 738
Attica 657
Aufrecht, S. T. 674
Aurelian 562, 733
Ausere Apopi 551
Avalishivili, Z. 393
Avaris 551
Avery, John 408
Avesta 282, 86
Avidius Cassius 562
Ay 552

B

Babylonia 246
Babylonian 258, 286
Bacchis 659
Bacot, J. 458
Bai Bureh 613
Baikie, J. 649
Banerji, R. D. 102
Bankes, W. J. 570
Barnet, R. D. 324
Barno 697
Barth, H. 625
Barthelemy, Abbe 338, 566, 67
Barton, G. A. 234 46, 86
Barua, D. M. 75
Bast (Dubastis) 557, 64
Baur, H. 290, 307, 604
Beer, E. E. F. 267, 375
Behdet (Bamanhur) 545
Behistun 286, 318
Bekeurenef (Bocchoris) 564
Bell, Sir Charles 408
Bendell 206
Bennett, Emmett L. 647, 48 49
Berlin 320, 55
Berheimer, C. 393
Berthel, Thomas 762
Bessarbia 699
Bevan, Edwyn 593
Bhandarkar, D. R. 121
Bhattacharya, S. 203
Birch, S. 311, 593
Bittner 357
Black, Robert 459
Blackney, R. B. 427, 58
Blakeway 687
Blegen, C. W. 647, 48, 49
Bloch, R. 694
Blyden, Edward W. 613
Bocchoris (Bekenrenef) 564, 57
Bodmer, F. 7, 694
Boetia 640, 62
Bolzani, G. V. P. 566
Bolzano 678
Bombay 278
Bondelmonte 565
Boniface 644
Booth, A. J. 278, 86
Bork, F. 234, 55, 86, 347
Bossert, H, T. 322, 55, 87, 90, 649
Botsford, G. W. 666
Botta, P. E. 239
Boudet, P. 541
Bourgbourg, B.de 750
Bourgeois, R. 541
Boussard (Bouchard), M. 567

Bowring, Sir John 541
Bradely, H. 307
Bradley, C. B. 541
Brandt, J. J. 458
Bray, W. 19
Breal, M. 674
Breasted, J. S. 243, 593
Brice, W. C. 234, 86
Brinkley, F. 504
Brinton C. 472
Brittani 707
Brown, P. 324
Browning, R. 649
Bruce, D. 738
Brugsch, H. 591
Bruyn, C. Van 262
Brynjulfsson 722
Bucheler, F. 674, 94
Buck, S.de 571
Buckler 351
Buckley, C. 666
Budge, E. A. W. 246, 57, 86, 318, 592, 93, 625
Budha 107
Bugge, S. 319, 671, 712, 22
Bühler 107, 13, 21, 203
Buonamici, G 670, 94
Burckhardt, J. L. 307, 11, 57, 64
Burens 722
Buresch 357
Burnell, A. C. 203
Burney, C. F. 334
Burnhouf, E. 266
Burns. Sir Alam 625
Burton, R. 312, 57
Bury, J. B. 666
Buryat (A, S, S. R[1]) 465
Bushell, S. W. 408
Buto 546

1. *Autonomous Soviet Sacialist Republic.*

Byblos 293, 703

C

Cadmus 9, 640
Caecus, Appius Claudius 687
Caere (Carveteri) 667
Caesar Borgio 672
Cairo 553, 76
Cambyses 250
Camerson, G. C. 254
Campbell 687
Canaan 334
Canaanite 287
Canopus 571
Cantinean, J. 393
Cantineu 338
Capua 670
Caracalla 562
Cardova, H. de 750
Carleton, P. 334
Carnelius Gallus 561
Caroline 688
Carpentar, R. 666, 94
Carratelli, G. P. 647, 48
Casson, S. 649, 66
Cathay 473
Caussin, N. 566
Cavarus 707
Celi 707
Celts 670
Cerum, C. W. 307, 22, 24
Ceruli 625
Cesnola, L. P. di 631
Ceylon 216
Chabot, J. B. 299, 338 597
Chadwick, John 632, 48, 50
Chadzko 698
Chakarvorty, B. B. 75
Chaldean 286
Chalfant, F. H. 427, 58

Chamba 157
Chamberlain, B. H. 504
Chamberlayne 566
Champollion, J. F. 18, 569
Chan, Shan Wing 458
Chantre, E. 319
Chao 409
Chao (Mrs.) 432
Chao K'uang Yin 414
Chao, Y. R. 458
Charlemagne 683
Charles II 262
Chefren (See Khafre) 564
Chenet, G. 202
Cheng Miao 429
Cheops (See Khufu) 765
Chiang Kai Shek 421
Chicago 246, 321
Chieh Kuei 409
Chien Lung 419
Chiera, E. 234, 46
Chih Pei Sha 458
Ch'i-tan 454
Ch'in 411
China Revival Society 421
Ch'iu K'ung 411
Chosen 409
Chou Hsin 409
Ch'ou Wen 427
Christia, J. L. 542
Chung, Tan 424
Chu Yuan Chang 416
Chwolson 334
Cintra Pedrode 604
Clark, C. 234, 46
Claude, J. 19
Claudius 347, 562
Cleater, P. E. 257, 61, 68, 86, 307, 12, 19, 24, 575, 93, 649
Cleisthenes 657
Clodd, E. 246, 334, 700
Clusium 667
Cock, H. 307
Codrington, H. W. 218
Coedes, G. 542
Cohen 469
Colledge, M. A. E. 254
Confucius 411
Conrad-II 678
Costantine 697
Constantinople 343
Conway 694
Cook, Captain 761
Cook, S. A. 337, 57
Cooke, Rev. G. H. 807, 34, 57
Coptic 566
Copts 562
Copenhagen 246
Corinth 658
Cornelius V. Bruyn 262
Cosmus 375
Coste, P. 267
Cottrell, L. 19, 246, 593, 700
Count Caylus 262
Cowley, A. E. 324, 57, 75, 647
Creel H. G. 458
Crawford, O. G. S. 625
Croesos 248, 349
Cromwell 708
Cronos 641
Crosby, J. 542
Cross, F. M. 307, 334
Cumae 671
Cuneiform 9, 246, 63, 78, 86
Curtis, E. 738
Cyaxares 233, 48
Cyclades 658
Cynosce Phalae 657
Cypselus 658
Cyrillic 698
Cyrus 248

D

Dacia 715
Damascus 363
Dani A. H. 203
Daniel, G. 307
Daniel, J. F. 632, 49
Daniels, O. 504
Danielson 670
Darius-1 250, 78, 86
Daustrop 738
Davids, R. 107
Davis, E. J. 312
Davis, Nathan 625
Decius 562
Decters, G. 390
Deecke 290
Delafosse 607
Delitzsch, F. 273
Deorad 708
Deruschwan, Hans 718
Deuel, L. 320
Dhorme E. 303
Diamond, A. S. 7
Diemal, A, 235, 43
Dieulafoy, M. 243
Dillman 625
Dinokov, Peter 698
Diodorus, S. 261, 545
Diodotus 252
Dionysius 667
Diringer, D. 203, 93, 307, 486, 542, 93, 700
Djibuti 604
Djoser (See-Zoser) 546
Doblhofer, Erust 28, 75, 246, 307, 11, 12, 18, 19, 21, 24, 566, 74, 76, 93, 762
Dominico, F. 674
Don Garcia de Silva 261
Dorian 645
Dorpfeld, W. 646
Doughty, C. 364, 66
Dowson, J. 203
Drake 312, 24
Drive, G. R. 307, 34
Drower, E. S. 393
Druids 708
Dugast 602
Dunand 293
Dunlop. R. 738
Duperron, A. 263, 82
Dupont 322
Duroiselle, C. 542
Dussaud 293, 97, 302, 68
Dutta, B. 7

E

Eckardt, P. A. 486
Egbert, J. C. 694
Egypt 576
Egyptian 290, 375, 576
Eisler, R. 632
Elam 227, 47
Elbert, Elber 613
Embryo-Writing 10
Empson, R.H.W. 357
Engelbert, K. 262
Englianos, Epano 647
Enkomi (Salamis) 632
Enting, J. 364, 66, 93
Epaminodus 662
Eric, J. 748
Erichsen, W. 593
Erman, Adolf 571, 76, 93
Erskine, S. 625
Eski Adalia 353
Ethiopia 617
Etruscan 667
Euphrates 225, 361
Euric 693
Evans, A. J. 645, 48, 49, 755

F

Falconbridge, A. 613
Falerii 670, 78
Faliscan 678
Fan Ch'ieh 444
Fastida 693
Fateh Singh 75
Faulmann 438, 527, 42, 671
Fell, R. A. 694
Fergusson 267
Fiesal 671
Figeac 569
Figulla, H. H. 320
Finegan, J. 234, 307, 24, 34
Fiorelli, G. 674
Fitzgeral, C.P. 458
Flaminus 660
Flandin, E. 267
Fleet J. F. 11, 40, 86
Forbes, W. C. 542
Forde, C. D. 625
Fork, A. 443
Forrer, E. 321
Forster, Rev. Charles 375
Fourier, J. B. 569
Francke, Rev. A. H. 402
Frankfort, H. 234, 57
Frunkfurter, O. 542
Franks 693
Fransico de Almeida 216
Fraser, J. 357
Frederick-II 672
Freese, J. H. 649
Free Town 613
Freret N. 567
Fried 355
Friedrich, J, 243, 307, 24, 47, 49, 53, 55, 574, 75, 602, 13, 20, 32
Frithigern 693
Frumentius 625
Frycr, R. N. 282
Fu Hsi 425
Furumark 647

G

Gabain, A. von 469, 76, 79
Gabii 668
Gadd, C. J. 75, 234, 48
Gaertringen 641
Gailerius 562
Gaiseric 672
Gaius Petronius 562
Gallienus 562
Gardanne, P. A. L. de 268
Gardiner, A. H. 290, 307, 73, 574, 75, 93
Gardiner, C. 425
Gardiner, E. A. 641, 66
Gardner, F. 542
Gardthauser 290
Garstang, J. 320
Gauthiot, R. 462, 73, 79
Gebal 293
Gebelin, C. de 567
Geitler 698
Gelb, I. J. 17, 203, 46, 86, 307, 21, 22, 24, 446, 58, 649, 700
Gepidae 715
Gesenius, W. 377
Ghirshman, R. 254, 82
Giasofat B. 261
Gibbethon 326
Gibbon, J. B. E. 738
Giles, H. A. 409, 43, 79
Girosdeft 755
Gierset, K. 738
Glagolithic 698
Glanville, S. R. K. 593
Glotz, G. 666
Godard, T. N. 625
Goidels 707

Goldmann 671
Gonzales 761
Goodrich, E. A. 641
Goodrich, L. C. 443, 58
Gordon, A. 567
Gordon, C. H. 286, 303, 304, 8, 11, 13, 18, 19, 20, 22, 24
Gordon, F. C. 649
Gould, B. 408
Graff, W. L. 7
Graham 368
Gray, G. F. 375
Green, K. 312
Greenwall, H. T. 625
Gregory, W. 216
Grenoble 569
Greville Chester 645
Grienberger 712, 38
Grierson, G. 157, 203, 15, 402, 408, 542
Griffith, F. L. 592, 93
Grimme, E. H. 290, 364, 66, 68
Grimme, J. 698
Grimme, W. 700, 22
Grohmann 625
Grote, George 645
Grubissich 698
Gudea 228
Gugushivili, A. 393
Guignes, De 567
Gurley, Robert 607
Gurmani, C. 364
Gurney, O. R. 324
Gutenbrunner 694
Guterslob 640
Gyges 349
Gyles, M. F. 234, 357

H

Habsburg 678
Haburni 707
Hadrianus, P.A. 338
Hagia Triada 647
Ha–ib–ra (Apries) 564
Haker (Akhoris) 564
Hakoris 559
Halbherr 647
Halevy 290, 368
Halicarnasus 667
Halin 737, 38
Halis 349
Hall, H. R. 7, 649, 66
Hallendorff, C. 738
Ham 698
Hamilton, W. 312, 632
Hamlyn, P. 234
Hammerstrom 671
Han 412
Hanmel 290
Hanoteau E 597
Hanus 698
Harappa 64
Harden, D. 308
Harland, J. P. 666
Harrer, A. 357
Harris, Z. S. 308
Harvey, G. E. 542
Hatshepsut 552
Hauran 363
Haupt 290
Hawai 421
Hawara 551
Heberdey, R. 358
Hebrew 302, 30, 34
Heeran, L. 264
Helene 7
Heliopolis (see Onu) 549, 64
Hellenic League 660
Hemraj, S. V. 206
Henning, W.B. 479
Henry, A. 450
Heracles 672

Heraclius 562
Heras, H. (Rev.) 28, 75
Herbig 670, 71
Herder, J. G. 264
Herecleopolis 550
Herihor 557
Hermanic 693
Hermann, A. 264
Hermes 9
Herodotus 545
Herpini 674
Heumann, K. 321
Heyrerdahl, Thor 761
Hieratic 573
Hieroglyphikon (Gr..k) 565
Hieroglyphs (...phics) 9, 321, 22, 24, 565
Hikau Khasut 551
Hiller, von 641
Hillier 443
Hincks, Edward 239, 67
Hiraclitus 76
Hissarlik 645
Hitti, P. K. 308, 57
Hittite 320, 21, 24
Hockley, F. W. 220
Hodgkin, R. H. 738
Hoffman, M. 393, 496, 756
Hogarth, D. C. 313, 57
Homer 645
Hood, M. S. F. 666
Hooke, S. H. 486
Hopkins, L. C. 458
Horapollo 565
Hoıemhab 552
Howard Carter 555
Hrozny, B. 320, 24
Hsiao Chuan 427
Hsiking 469
Hsing Shu 429
Hsun, Lu 424
Hsi–Tsong 397
Huang Ti 409
Huber 366
Hultzseh, E. 134, 203
Humphrey, H. N. 542, 625
Hung Hsin Chuan 419
Hung Wu 416
Hunter, G. R. 28, 75
Huny 549
Hüsing, G. 255, 67
Hussey, D. M. 218
Hutchinson, R. W. 650
Huyot, Jean Nicolas 570
Hyksos 290, 551
Hymarite 359
Hystaspes 268, 78

I

Iberians 707
Ibis 572
Iguvium 674
Illahun 551
Illiad 287
India 113
Iran 254, 82
Iraq 246
Isemonger, N. E. 504
Israel 334
Ith–at–Tawi (Lisht) 564
Ivan–iv 699

J

Jablonski, P. E. 567
Jack, J. W. 308
Jackson, A. V. W. 282, 86
Jacob 331

Jacobus Baradacus 340
Jacquet, E. V. S. 267
Jaeschke 40
Jagi 698
Jansen, Hans 243, 46, 82, 302, 13, 18, 21, 24, 58, 99, 446, 62, 574, 93, 602, 25, 94, 737
Jaussen, H. 366
Jean Chardin 262
Jehoiachim 327
Jehoiachin 327
Jehova 9
Jehudi Ashmun 607
Jensen, P. 319
Jessup 311
Johannesson, A. 725
Johnson, A. 311
Johnston, M. A. 694
Jones, A. H. M. 625
Jones, G. I 625
Jordon, C. H. 331, 647, 48, 49
Joyee, P. W. 738
Judaism 359
Judith (See Yodit) 620
Jugurthine 595
Julius Caesar 561

K

K'ai Shu 429
Kalinka, E. 290, 347, 49, 58
Kamil, V. 68
K'ang Hua 421
Kao–Tsu 412
Karageorghis, V, 650
Karkash 393
Karlgren, B. 458
Karnak 554
Kapilvastu 107
Kashyap, A. C. 94
Keans 334
Kebeh (Ka) 546
Kelet Szemeli 465
Keller, W. 733, 38
Kennedy, G. A. 504
Kennemi, K. 28
Kent, R. 286
Kern, O. 641
Khefre (Chefren) 549, 64
Khetty-II 550
Khian 551
Khnum-ib-ra (Amasis) 564
Khufu (Cheops) 549, 64
Kiao Kio 454
Kiev 699
King, L. W. 229, 34, 46, 86
Kinneir, J. M. 268
Kirchar, Athansius 566
Kirchiner, J. 641
Kirchoff, J. W. H. 641, 74, 94
Ki-Tse 409
Klaproth 462, 571
Klingenheben, A. 607
Knossos 646
Knudtzon, J. A. 319
Kober, Alice E. 647
Kochachiro Miyazaki 492
Koch, J. G. 567
Koestler 334
Konig, F. W. 286
Konow, S. 102, 203, 408
Kopivitch, E. 700
Kraeling, E. J. H. 393
Krause 712
Kuan Hua 421
K'ung Fu-Tze 411
Kuruniotis 647
Kushan 102

L

Lacouperie, T. de 409, 54

Laird, C. 7
Lalaian, J. 393
Länder 355
Landa, Diego de 750
Lang, R. H. 493, 631, 32
Langdon, S. 71
Langhe de 307, 308
Lao Tze 411
Larsen, K. 738
La Society de Linguistique 5
Lassen, C. 267
Latium 667, 85
Latourette, K. S. 459
Laufer, B. 408, 59, 65, 79
Lavachery, Henry 761
Layard, Sir Austin 232, 39
League of Nations 620
Leak, W. M. 666
Leake 343
Le Coq A. Von 437, 76, 79
Lejeune, M. 678
Lendoyroo, C 542
Lenormont 698
Leo III 688
Leob, E. M. 542
Leovigild 693
Lepontine 685
Lepsius, J. 393
Lepsius, Richard 571
Lescot, R. 357
Lessing, F. 479
Leucas 658
Lgoio, G. C. 700
Libby, W. F. 20
Liberia 607
Libzbarski 293, 97, 302, 308, 31, 32, 34, 38, 58, 77
Lieche, F. de 290
Li Erh 411
Li Hsi 427
Li Huang Chang 419
Lilijegren 722
Lindblom 290
Lindner 698
Lingua Osca 674
Lin Pei 412
Li Tzu Cheng 469
Lithemia 699
Littmann, E. 293, 338, 51, 58, 64, 66, 68, 93, 617, 20
Liu Pang 412
Logographic 14
Loftus, W. K. 234, 42, 86
London 246, 54, 57, 65, 78, 82, 86, 302, 11, 13, 38
Longperier 278
Louvre Museum 243, 97
Lӧwenstern, I. 272
Lucania 674
Lucas, P. 567
Luce, J. 542
Luckenbill, D. D. 234, 46, 358
Lu Hsün 424
Lu-K'uan-hien 454
Luschar, V. F. 321
Luxor 554
Lybia 557
Lycian 349
Lydian 349

M

Macalister, R. A. S. 302, 308, 649, 738
Macdonald, D. 402
Macedon 657
Macgillivray 443
Mackay, E. J. H. 75
Mackenzie 649
Mac Neill 738
Madden, F. 473, 79
Mader, E. 393
Madona, A. N. 694
Magellan, F. 527

Magre 678
Mahalingam, T. V. 203
Majumdar, R. C. 94
Malcolm, Sir J. 268
Manchu 417
Mandarin 421
Manfred 672
Manios Clasp 687
Manthis Akhoris 559
Marathon 657
Marcus Aurelius 562, 97
Marguerson 19
Marinatos 647
Mario Schipans 261
Marrucini 674
Marsden, W. 542
Marshall, Sir John 75
Marsham, J. D. 567
Marstrander, C. T. S. 694, 712
Martin, St. A.J. 266
Martin, W. J. 308, 334, 542, 700
Masinissa 595
Mason, W.A 694
Maspero, G. 358, 571
Mass, Aquoi 626
Massey, W. 286, 393
Mastaba 546
Mathews, R. H. 443, 59
Mathias Corvinus 715
Maveer, A. 738
Maxwell 617
Maya 748
Mc Cune, G. M. 486
Mc Farland, G. B. 542
Mc Gregor, J. K. 617, 25
Mc Lean, John 755
Megalapolis 664
Mehrotra, R.M. 7
Meidum 549
Meillet 469, 73
Meinhof, C. 597, 602
Melos 641
Memmius 660
Menant, J. 318, 57
Mencius 411
Mende 607
Menes (see Narmer) 546, 64
Men Nefer (Memphis) 564
Mentuhotep-1 550
Mentz 290, 640
Mercati 567
Mercer, S A.B. 17, 246
Mercier 597
Mercury 9
Merenptah 555
Merenre–1 549
Merenre–II 550
Meriggi, Pierro 28, 75, 321
Meryre (Pepi–1) 549, 64
Mesha 297
Meesana 674
Messerschmidt, L. 313, 19
Methodius 697
Metropolis 664
Meyer, Eduard 229, 646
Micipsa 595
Miller 698
Milverton 569
Ming 41
Minos 644
Minotaur 644
Mirashi, V. V. 94, 203
Moab 297
Moesia 697
Mogeod, F. W. H. 626
Mohenjo–Daro 64, 71, 75
Möller, G. 576, 93
Momru Doalu Bukere 607
Mono–Syllabic 421, 23
Monroe, E. 625
Montet. Pierre 293, 593
Moorgat, A. 229

Moorhouse, A. C. 246, 86, 308, 11, 73, 626
Mordtmann, A. D. 267, 311
Morgan, J. de 243
Morris, J. 215
Moses 556
Mount Sinai 373
Mtraux, Alfred 761
Mukherji, P. C. 1o7
Müller, D. H. 368, 77
Muller, F. W. K. 462, 79
Muller, Outfried 674
Munshi, K M. 94
Münter, F. C. H. 264
Murray, M. A. 593
Mursili–1 309
Musaiev, K. M. 737, 38
Myers, S. L. 631, 49
Mystic Trigrams 409

N

Nabataean 364
Nachtigal 602
Nagada (Luxor) 545
Nagy, S. M. 718
Napata 558
Naples 671
Narain, A. K. 203
Narmar (Menes) 564
Nath, Rajmohan 75
Nathigal 698
Nebu 9
Nebuchadnezzar 233
Nebu Nedus 233
Nebu Palasar 248
Necho (See Wah–ib–ra) 564, 58
Neckel 725
Necropolis 664
Nectanebo–1 (See–Nekht Nebef) 559, 64
Nectanebo–II (See–Nekht Horheb) 564
Neferitis–1 559
Neferkare (Pepi–II) 549, 64
Nefret–ib–ra (Psamtik–II) 564
Nehru, J. L. 459
Nell, J, G. O. 666
Nekheb (El Kab) 546, 64
Nekhen (Hierokonpolis) 546, 64
Nemeth 718
Nepal 107, 206
Nestorian 361
Nestorius 343
Nesubenebded 557
Neubaur 331, 34
Newberry, J. 28
Newman, P. 650
Newton, C. T. 353
Newyork 246
Niccolo Nicoli 565
Nicephorus Phocas 644
Nicholas, S. E. N. 218
Nicias 660
Nicolas, Abbe T, de 568
Nidintu Bel 233
Niebuhr, C. 263, 567
Nineveh 248
Njoya 602
Noah 225
Nola 672
Nöldeke 334, 38, 40, 58
Norden, F. L. 567
Norris, Edwin 268
North Arabic 379
North Semetic 307
Noth, M. 302, 34
Novgrod 699
Nubia 551
Nuremburg 718
Nya–tri Tsen–po 397
Nyein Tun 542

O

Oberman, J. 308
Octavius 561
Odenathus 337
Odoacer 721
Odyssey 287
Ogg, Oscar 694
Oghma 9
Oinach 707
Ojha, G. H. 102, 203
Oligarchy 658
Olmstead 313
Ollone, H. M. G. d' 459
Olympia 664
Olzscha 671
Onu (Heliopolis) 549, 69
Oppenheim, A. L. 234
Oppert, J. 239
Origny, P. A. L. d' 567
Orontes 261
Oscan 672
Osgood, C. 486
Oskorn 557
Ostrogoths 688
Ouseley, W. G. 266
Övre Dalarne 728
Owen, G. 459

P

Paeligni 674
Pa Fen Shu 429
Pa Kua 409
Pale 708
Palestine 307, 26
Pallatiuvo 694
Pallis, S. A. 234, 46
Palmer, L. R. 312, 24, 650
Pa'myre 338
Palotino 671
94
Pandey, C. B. 302
Pandey, R. B. 715
Pannonia 414
Pao Chia 629
Paphos 700
Pares, B. 353
Paribeni 263, 97, 366
Paris 423
Parker, B. M. 454, 59
Parker, E. H. 28, 75
Parpola, A. 254, 82
Parthian 644
Pasiphae 700
Pazkiewiez, H. 353
Paten, W. R. 7
Pathak, D. B. 670, 72, 94
Pauli, W. 518
Pavie, A. J. M. 546
Pe 738
Pederson, H. 557
Pedupast 594
Peet, T. A. 678
Peguria 459
Pei-sha, Chih 671
Pelasgian 462
Pelliof 657
Peloponnesian League 649
Pendlebury 421
Peoples National Party 549, 64
Pepi-I (See Meryre) 549, 64
Pepi-II (See Neferkare) 658
Periander 657
Pericles 564
Per Meri (Naucratis) 648
Pernier, Luigi 564
Per Rameses (Tanis) 311, 58
Perrot, G. 254
Persepolis 254, 6?, 78, 82
Persia 258, 86
Persian 650
Persson, A. W. 594
Petrie, Hilda

Petrie, W. M. Flinders 28, 290, 363, 594
Pett, T. A. 393
Phaistos Disk 648
Philae Obelisk 570
Phillip-II 657
Phoenicia 287, 89
Phoenician 293, 307
Piankhy 557
Pickering 755
Pictographic Script 10
Pieser 290
Pietro della Valle 261
Pitman, I. 196
Pike, E. R. 234, 46, 650
Pilcher, D. 593
Pilling, J. C. 755
Pinojdem 557
Placidia 693
Pococke, Richard 375, 567
Polin, Count N. G. de 568
Pompeii 672
Pompey 561
Pontius 698
Pope, M. 255, 65, 338, 565
Populonia 667
Porcius Cato 629, 31
Porter, R. K. 268
Potidaea 658
Poucha, P. 479
Praetorius 368
Pran Nath 75
Prinsep, James 221
Pritani 707
Probus 562
Proto–Tyrrhenian 671
Psammouthis 559
Psamtik–1 558
Psamtik–II (Psalmthek) 297, 353, 564
Psamtik–III 564
Psusemes 557
Ptolemy Lagos 560
Puchstein, O. 321
Purgstall, Baron Von Hammer 569
Puri, B. N, 94
Pylos 647

Q

Quintus Curtius 261

R

Radlove, V.V. 479
Raetia 678
Raffles, Sir S. 542
Rameses Siptah 555
Ramesses–I 555
Ramsay, W. 321, 43
Ramstedt, G.T. 479, 86
Randall, D. 694
Ramo Rorarku 761
Rao, M. R. 94
Rao, S. R. 75
Rask, R.C. 266
Ras Shamra 307
Raulings 712
Rawlinson, H.C. 94, 268
Ray, S.K. 75
Regmi 206
Reinser, G. 591
Reisner, F. L. 332
Remusat, Abel 462
Rhea 641
Rich, C, J, 266
Richardson, H, R, 408
Richter, O. 631
Ridgeway, W. 666
Roberts, E. S. 641, 66
Robinson, C. A, 666
Rockhill, W. W. 408
Rodiger, E. 364, 77
Roehl 641

Roges–II 660
Rogers, R. W. 234
Roggeveen, Jacob 761
Romaji Kai–Roman Script Society 496
Romanelli 353
Romulus 668
Rosellini, H. 571
Rosetta 567
Rosetta Stone 18
Roughe, de 290
Routlage, Katherine 761
Roux, G. 234
Roy, S, 203
Royal Asiatic Society 282, 86, 454
Royal Niger Co, 615
Royal Society of Literature 375
Runciman 700
Rurik 699
Ryckmans, G. 369

S

Sabine 667
Safaric 698
Saggs, H. W. F. 234
Sahidic 591
Sahni, Swarn 542, 626
Sahure 549
Sais 551, 57
Sakkara 546
Salamis (Enkomi) 632, 57
Salonica 697
Samaria 332
Samson, G. B. 504
Samuel Flower 262
Sandberg, Rev. G. 401
Sandwith, T. B. 629
Sandys 687
Sankar Hajra 64
Sankaranand 75
Sanyat Sen 421
Sarzec, de 236
Sarzy, Count de 267
Sassanian 282, 86
Saulcy, L. C. de 267. 597
Savignac 366
Savill, Mervyn 762
Sayce, A, H, 313, 24, 58, 594
Sayce, Sylvestre de 263, 90, 568
Schaeffer, C. F. A. 302, 8
Scheil 71
Scherer 650
Schiffer, S. 358
Schliemann, H. 645
Schlozer 225
Schmidt, A. 761
Schmidt, E. F. 254
Schneider, H. 290, 640
Schubert, R 358
Schumacher, J. H. 567
Schwnrz, B. 666
Scotti 708
Sebeknefrure 550
Sehertawi Intef–1 550
Seleucus 252
Seliścev 698. 700
Semen Khare 552
Semitic 225, 307, 34
Sen, S. 286
Senanaik, R. D. 408
Senart, E. 121
Sensure F. de 667
Sesostirs–1 550
Sethe, Kurt 290, 93, 571
Seti–1 555
Setnakht 556
Seyfarth G. 571
Shabaka 558
Shabatka 558
Shapur–1 261

Sharpe, S. 594
Shastsi, N. K. 75, 94
Shen Nung 409
Shepses Kaf 549
Sheshonk (Sheshak) 557
Shih Huang Ti 411
Shivramamurti, C 203
Shu 412
Shuppululimash 309
Shu Shen 429
Si–an–fu 412
Sicily 670
Sikwayi (Sequoyah) 755
Siltiq 647
Simeon 697
Simonides, C. 571, 94
Sinaitic 375
Sircar, D. C. 102, 21, 203
Six 355
Skensure 552
Ski, L. 321
Skinner, F. N. 462
Skjolsvold, A. 761
Skutsch 671
Smeathman, H. 613
Smendes 557
Smerdes 250
Smith, A. D. 626
Smith, G. 312, 632
Smith, S, 229, 34
Smith, V. 94, 102, 13, 21, 40
Snefru 549
Sobelman, H. 295, 308
Sobolewskij 698, 700
Socieiy of Antiquaries 569
Socrates 657
Sogdian 462
Solomon 261, 620
Solon 657
Somalis 604
Somer 322
Somerset 569
Sondrio 678
Sothill 443
Sparta 657
Spigelburg, W. 571, 94
Spilberg, J. 218
Spohn, A. W. 571
Sporry, J. T. 594
Springling, M. 373, 626
St.[1] Cyril 698
St. Mark 591
St. Patrick 708
St. Paul 658
Stark, F. 393
Stasinos 629
Stawell, F. M. 649
Stegemann, V. 576, 91
Stein, Aurel 473, 76
Steinberr 353
Stephens, G. 738
Stern, Ludwig 571
Stillwell 666
Stolte, E. 678
Strabo 672
Strange, E. F. 542
Stuart, Pigott 650
Stungnar Runir 725
Sturtevant, E. H. 324
Subramaniam, T. N. 203
Sui 412
Sulla 672
Sumner, A. T. 626
Sung 414
Sung, Yu Feng 427, 40, 50, 59
Susian 258
Susiana 286
Swain, J. E. 234, 258, 478
Swinton 338
Syracuse 658

1. Saint

Syria 307, 11

T

Ta Chuan 427
Taharka 558
Tai Hsi 427
Talbot, P. A. 626
Talbot, W. H. F. 273
Tamiradae 629
Tan Chung 427
T'ang 409, 12
Tanis 557, 64
Tanutamone 558
Tao-Teh-King 411
Tarn, W. W. 666
Tarquinia 667
Tata Institute of Fundamental Research 20
Taylor, Issac 203, 21, 69, 462, 79, 671, 98
Taylor, William 650
Tegea 664
Teispes 248, 69
Tell-El-Amarna 554
Teos 559
Teti-1 549
Teutons 694
Texier, C. 312
Thausen, G. von 671
Thebes (Greek) 640
Thebes (Egyptian) 549, 64
Thelegdi, J. 718
Theomistocles 250, 657
Thedore 620
Theodoric 693
Theodosius 693
Theophilos 625
Thera 641
Thesius 632
Thomas, E. J. 64, 286
Thomas Hyde 263
Thompson, Sir H. 571
Thompson, R. C. 320, 24
Thompson, S. 748
Thompson, V. L. 542
Thomsen, V. 476, 667, 718
Thomson, E. M. 666
Thomus, Herbert 262
Thorsen, P. G. 725
Thoth (Thot) 9, 572
Thotmes-III 287
Thucydides 646
Thugga (Dougga) 597
Thumb, A. 650
Thutmose-1 552
Tigris 225
Tin, P. M. 542
Tiridates 252
Tiwari, B. N. 7
Todi 678
Tomkins, W. 748
Torp, A. 319, 670
Torrey, A. 293
T'oung Pao 459
Treuber, O, 358
Trier 721
Tripathi, R. S. 94
Trondheim 724
Troy 645
Trump, D. 19
Tsai Lun 438
T'sao Shu 429
Tsordji Osir 462
Tuath 707
Tudor 674, 78
Turkey 645
Tutankhamen 552
Tutmis (Tutmosis) 553
Tychsen, O. G. 263
Tychsen, T.C. 567
Tyle 707

Tyrhenus 667
Tzu Hsi 421

U

Ugaritic 304
Ulfilas 693
Ullman, B. L. 334, 666
Umbrica 674
Unis 549
Upasak, C. S. 203
Urrad 708
Usman Dan Fodio 615

V

Valerianus, P. 566
Valeus 693
Varthema, L. di 535
Vasu, N. N. 203
Vats, M. S. 57
Vaux, W.S.W. 254
Veii 667
Venice 644
Ventris, Michael 632, 47, 4
Verma, T. P. 203
Vestini 674
Vetulonia 667
Vienna 118
Villonovans 667
Virolleaud, C. 303, 308, 13
Visigoths 688
Visimar 693
Vogel 157
Vogüe, de 338, 14, 68
Vondrak 698

W

Wace, A. J. B. 647, 48, 50
Waddell, L. A. 28, 75, 402
Wade, Sir Thomas 443, 46
Wah-ib-ra (Necho) 564
Wallace, A. R. 542
Wallia 693
Wandinglon 355, 64, 68
Wang An-Shih 414
Wang Cheng 411
Wang Chieh 423
Wardrop, O. 393
Wei 412
Wei Nung 454
Wellsted 364
Wen Chang 9
Wesi (Thebes) 564
Westergard, N.L. 267
Wetzstein 368
Wheeler, M. 75
White, J. C. 215
Whymant, A.N.T. 469
Wiedmann, F. 640
Wieger, L. 459
Wilber, D. N. 254
Wild, R. 625
William, A.M. 542
Williams 443
Williamson, H. R. 422, 41, 50, 59
Wimmer, L. 694, 722
Winckler, H. 320
Winnett, F. V. 368, 69, 93
Winter, F. 353
Wolfe 321
Woolley, C. L. 234, 313, 58
Wormius 722
Worrell, W. H. 549
Wrench 313
Wright, J. 694
Wright, W. 312
Wu 412
Wu Sankwei 417
Wu Ti 412
Wu Wang 409
Wurburton, W. 566

Wylie, A. 469

X

Xerxes–1 250

Y

Yamagiva, J. K. 504
Yamato (Japan) 487
Yazdani, G. 94, 121, 25
Yodit 620
Young, J. C. 626
Young. Thomas 569, 94
Yu 409
Yuan 416, 21
Yu Chen 454
Yung Lo 417
Yunnan 450
Yutang, Lin 443

Z

Zangroniz, Z. de 602
Zeitlin, R. J. 357, 331
Zenobia 562
Zeus 641
Zide, A. 68
Zimmer 712
Zoega, G. 508
Zoroaster 76, 476
Zoser 546
Zvelebil 68
Zwetaieff, J. 674

□

रंजना लिपि के कुछ शब्द
महाराज धिराज परमेश्वर
अज़्टेक पंचांग का एक उदाहरण